बढ़िया शराब

ई-पुस्तकें



ब्लाइंड विलो,

सोती हुई महिला

चौबीस कहानियाँ

हारुकी मुराकामी

हारुकी मुराकामी

चौबीस कहानियाँ

ब्लाइंड विलो, सोती हुई महिला

जापानी से फिलिप गेब्रियल और जे रुबिन द्वारा अनुवादित

विंटेज इंटरनेशनल
विंटेज बुक्स,
रैंडम हाउस, इंक., न्यूयॉर्क का एक
विभाग

अंतर्वस्तु

एक शिनागावा बंदर
लेखक के बारे में
हारुकी मुराकामी द्वारा भी लिखित।
हारुकी मुराकामी की कृतियों*:* ब्लाइंड विलो, स्लीपिंग वुमन को मिली प्रशंसा
कॉपीराइट

अंग्रेजी संस्करण का परिचय

सरल शब्दों में कहूँ तो, मुझे उपन्यास लिखना एक चुनौती लगता है, जबकि लघु कथाएँ लिखना एक आनंद है। यदि उपन्यास लिखना जंगल लगाने जैसा है, तो लघु कथाएँ लिखना बगीचा लगाने जैसा है। ये दोनों प्रक्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं, जो एक संपूर्ण परिदृश्य का निर्माण करती हैं, जिसे मैं संजो कर रखता हूँ। पेड़ों की हरी-भरी पत्तियाँ धरती पर सुखद छाया डालती हैं, और हवा पत्तियों को सरसराती है, जो कभी-कभी सुनहरे रंग में रंग जाती हैं। वहीं, बगीचे में फूलों पर कलियाँ खिलती हैं, और रंग-बिरंगी पंखुड़ियाँ मधुमक्खियों और तितलियों को आकर्षित करती हैं, जो हमें एक ऋतु से दूसरी ऋतु के सूक्ष्म परिवर्तन की याद दिलाती हैं।

सन् 1979 में एक कथाकार के रूप में अपने पदार्पण के बाद से, मैं लगातार उपन्यास और लघु कथाएँ लिखता रहा हूँ। मेरा तरीका कुछ इस प्रकार रहा है: एक उपन्यास पूरा करने के बाद, मुझे लघु कथाएँ लिखने की इच्छा होती है; जब कहानियों का एक समूह पूरा हो जाता है, तब मुझे उपन्यास पर ध्यान केंद्रित करने का मन करता है। मैं उपन्यास लिखते समय कभी लघु कथाएँ नहीं लिखता, और लघु कथाओं पर काम करते समय कभी उपन्यास नहीं लिखता। लेखन के ये दोनों प्रकार मस्तिष्क के अलग-अलग हिस्सों को सक्रिय करते हैं, और एक शैली से दूसरी शैली में जाने में समय लगता है।

मैंने अपने करियर की शुरुआत दो लघु उपन्यासों, 'हियर द विंड सिंग' और 'पिनबॉल' (1973) से की, और फिर 1980 से 1981 के बीच लघु कथाएँ लिखना शुरू किया। मेरी लिखी पहली तीन कथाएँ थीं: "अ स्लो बोट टू चाइना", "अ 'पुअर आंट' स्टोरी" और "न्यूयॉर्क माइनिंग डिजास्टर"। उस समय मुझे लघु कथा लेखन का बहुत कम ज्ञान था, इसलिए शुरुआत थोड़ी मुश्किल भरी रही, लेकिन यह अनुभव मेरे लिए बेहद यादगार रहा। मुझे लगा कि मेरी काल्पनिक दुनिया की संभावनाएं कई गुना बढ़ गई हैं। और पाठकों ने एक लेखक के रूप में मेरे इस दूसरे पहलू की सराहना की। "अ स्लो बोट टू चाइना" मेरी पहली अंग्रेजी लघु कथा संग्रह, 'द एलिफेंट वैनिशेस' में संकलित है, जबकि अन्य दो कथाएँ इसी संग्रह में हैं। यहीं से मेरी लघु कथा लेखन की शुरुआत हुई, और यहीं से मैंने उपन्यासों और लघु कथाओं के बीच बारी-बारी से लिखने की अपनी प्रणाली विकसित की।

“द मिरर”, “अ परफेक्ट डे फॉर कंगारूज़”, “डैबचिक”, “द ईयर ऑफ स्पेगेटी” और “द राइज़ एंड फॉल ऑफ शार्पी केक्स” ये सभी लघु कथाओं के संग्रह में शामिल थीं, जिन्हें मैंने 1981 से 1982 के बीच लिखा था। जैसा कि पाठक आसानी से समझ सकते हैं, “द राइज़ एंड फॉल ऑफ शार्पी केक्स” एक दृष्टांत के रूप में मेरे साहित्यिक जगत के उस दौर के अनुभवों को प्रकट करती है, जब मैंने पहली बार साहित्यिक रचना की थी। उस समय मैं जापानी साहित्यिक जगत में सहजता से घुल-मिल नहीं पाया था, और यह स्थिति आज भी बनी हुई है।

लघु कथाएँ लिखने का एक आनंद यह है कि इन्हें पूरा करने में ज़्यादा समय नहीं लगता। आम तौर पर मुझे एक लघु कथा को ठीक-ठाक रूप देने में लगभग एक सप्ताह लग जाता है (हालाँकि संशोधन अंतहीन हो सकते हैं)। यह उपन्यास लिखने में लगने वाले एक या दो साल के शारीरिक और मानसिक समर्पण जैसा नहीं है। आप बस कमरे में जाते हैं, अपना काम पूरा करते हैं और बाहर निकल जाते हैं। बस इतना ही। कम से कम मेरे लिए, उपन्यास लिखना कभी न खत्म होने वाला लगता है, और कभी-कभी मुझे चिंता होती है कि क्या मैं इसे पूरा कर पाऊँगा। इसलिए मुझे लघु कथाएँ लिखना एक ज़रूरी बदलाव लगता है।

लघु कथाओं की एक और अच्छी बात यह है कि आप छोटी-छोटी बातों से भी कहानी बना सकते हैं—आपके मन में आया कोई विचार, कोई शब्द, कोई छवि, कुछ भी। ज्यादातर मामलों में यह जैज़ संगीत की तरह होता है, जिसमें कहानी मुझे जहाँ ले जाना चाहती है, ले जाती है। और एक और अच्छी बात यह है कि लघु कथाओं में आपको असफलता की चिंता नहीं करनी पड़ती। अगर विचार आपकी उम्मीद के मुताबिक सफल नहीं होता, तो आप बस कंधे उचकाकर खुद से कह सकते हैं कि हर कहानी सफल नहीं होती। एफ. स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड और रेमंड कार्वर जैसे विधा के उस्तादों—यहाँ तक कि एंटोन चेखव—की भी हर लघु कथा उत्कृष्ट कृति नहीं होती। मुझे इससे बहुत राहत मिलती है। आप अपनी गलतियों से सीख सकते हैं (दूसरे शब्दों में, जिन्हें आप पूरी तरह सफल नहीं कह सकते) और उसका उपयोग अपनी अगली कहानी में कर सकते हैं। मेरे मामले में, जब मैं उपन्यास लिखता हूँ तो लघु कथाएँ लिखने में मिली सफलताओं और असफलताओं से सीखने की पूरी कोशिश करता हूँ। इस अर्थ में, लघु कथा मेरे लिए एक उपन्यासकार के रूप में एक प्रकार की प्रायोगिक प्रयोगशाला है। उपन्यास की सीमाओं के भीतर अपनी पसंद के अनुसार प्रयोग करना कठिन

है, इसलिए लघु कहानियों के बिना मुझे पता है कि उपन्यास लिखना मेरे लिए और भी मुश्किल और चुनौतीपूर्ण काम होगा।

असल में मैं खुद को एक उपन्यासकार मानता हूँ, लेकिन बहुत से लोग कहते हैं कि उन्हें मेरे उपन्यासों से ज़्यादा मेरी लघु कथाएँ पसंद हैं। इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता और न ही मैं उन्हें समझाने की कोशिश करता हूँ। बल्कि मुझे तो यह सुनकर खुशी होती है। मेरी लघु कथाएँ दुनिया में छोड़ी गई मेरी कोमल परछाइयों की तरह हैं, मेरे छोड़े हुए धुंधले पदचिह्नों की तरह हैं। मुझे ठीक से याद है कि मैंने उनमें से हर एक को कहाँ रखा था और उस समय मुझे कैसा महसूस हुआ था। लघु कथाएँ मेरे दिल के लिए मार्गदर्शक की तरह हैं और एक लेखक के रूप में अपने पाठकों के साथ इन अंतरंग भावनाओं को साझा कर पाना मुझे खुशी देता है।

'द एलिफेंट वैनिशेस' 1991 में प्रकाशित हुई और बाद में कई अन्य भाषाओं में अनुवादित हुई। भूकंप के बाद, अंग्रेज़ी में एक और संग्रह 2002 में प्रकाशित हुआ (जापान में 2000 में)। इस पुस्तक में छह लघु कथाएँ थीं, जो किसी न किसी रूप में 1995 के कोबे भूकंप से संबंधित थीं। मैंने इसे इस उम्मीद में लिखा था कि ये सभी छह कहानियाँ पाठक के मन में एक एकीकृत छवि बनाएंगी, इसलिए यह लघु कथाओं के संग्रह से अधिक एक अवधारणा एल्बम की तरह थी। इस अर्थ में, वर्तमान पुस्तक, 'ब्लाइंड विलो, स्लीपिंग वुमन', लंबे समय बाद विदेशों में प्रकाशित होने वाला मेरा पहला वास्तविक लघु कथा संग्रह है।

इस पुस्तक में स्वाभाविक रूप से वे कहानियाँ शामिल हैं जो मैंने 'द एलिफेंट वैनिशेस' के प्रकाशन के बाद लिखी थीं। "बर्थडे गर्ल", "मैन-ईटिंग कैट्स", "द सेवंथ मैन" और "आइस मैन" इनमें से कुछ हैं। मैंने "बर्थडे गर्ल" तब लिखी थी जब मैं जन्मदिन के विषय पर अन्य लेखकों की कहानियों का संकलन तैयार कर रहा था और संपादक ने मुझसे ऐसा करने का अनुरोध किया था। संकलन के लिए कहानियाँ चुनते समय लेखक होना मददगार होता है, क्योंकि अगर आपके पास एक कहानी कम पड़ जाए तो आप खुद एक कहानी लिख सकते हैं। "आइस मैन" मेरी पत्नी के एक सपने पर आधारित है, जबकि "द सेवंथ मैन" का विचार मुझे तब आया जब मैं सर्फिंग कर रहा था और लहरों को निहार रहा था।

सच कहूँ तो, 1990 की शुरुआत से लेकर 2000 की शुरुआत तक मैंने बहुत कम लघु कथाएँ लिखीं। ऐसा नहीं था कि लघु कथाओं में मेरी रुचि खत्म हो गई थी। मैं कई उपन्यासों के लेखन में इतना व्यस्त था कि समय ही नहीं मिल पाता था। मेरे पास लेखन बदलने का समय नहीं था। कभी-कभार जब मजबूरी होती थी, तो मैं एक-आध लघु कथा लिख देता था, लेकिन मैंने कभी उन पर ध्यान केंद्रित नहीं किया। इसके बजाय, मैंने उपन्यास लिखे: द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल; साउथ ऑफ द बॉर्डर, वेस्ट ऑफ द सन; स्पुतनिक स्वीटहार्ट; काफ्का ऑन द शोर। और इनके बीच में, मैंने गैर-काल्पनिक रचनाएँ भी लिखीं, वे दो रचनाएँ जो अंडरग्राउंड के अंग्रेजी संस्करण का हिस्सा हैं। इनमें से प्रत्येक में बहुत समय और ऊर्जा लगी। मुझे लगता है कि उस समय मेरा मुख्य संघर्ष यही था - एक के बाद एक उपन्यास लिखना। शायद मेरे जीवन का वह दौर ऐसा ही था। बीच में, एक विराम की तरह, भूकंप के बाद का संग्रह आया, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, यह वास्तव में लघु कथाओं का संग्रह नहीं था।

लेकिन 2005 में, लंबे समय बाद पहली बार मेरे मन में लघु कथाओं की एक श्रृंखला लिखने की तीव्र इच्छा जागी। आप कह सकते हैं कि मुझ पर एक प्रबल आवेग हावी हो गया। तो मैं अपनी डेस्क पर बैठ गया, लगभग हर हफ्ते एक कहानी लिखता गया, और एक महीने से कुछ ही अधिक समय में पाँच कहानियाँ पूरी कर लीं। सच कहूँ तो, मैं इन कहानियों के अलावा किसी और चीज़ के बारे में सोच ही नहीं पा रहा था, और मैंने इन्हें लगभग बिना रुके लिखा। ये पाँच कहानियाँ, जो हाल ही में जापान में टोक्यो कितांशु (टोक्यो की विचित्र कहानियाँ) नामक एक संग्रह में प्रकाशित हुई हैं, इस पुस्तक के अंत में संकलित हैं। हालाँकि इन सभी कहानियों का विषय विचित्र कहानियाँ होना है, फिर भी प्रत्येक कहानी को स्वतंत्र रूप से पढ़ा जा सकता है, और ये भूकंप के बाद की कहानियों की तरह एक स्पष्ट इकाई नहीं बनाती हैं। वैसे, अगर सोचें तो, मैं जो कुछ भी लिखता हूँ, वह कमोबेश एक विचित्र कहानी ही है।

"केकड़े", "गरीब चाची की कहानी", "शिकार का चाकू" और "अंधी विलो, सोती हुई औरत" कहानियों के अनुवाद से पहले उनमें काफी संशोधन किए गए हैं, इसलिए यहाँ दिए गए संस्करण जापान में प्रकाशित पहले संस्करणों से काफी भिन्न हैं। कुछ अन्य पुरानी कहानियों में भी मुझे कुछ कमियां मिलीं, इसलिए मैंने उनमें कुछ छोटे-मोटे बदलाव किए हैं।

मुझे यह भी बताना चाहिए कि मैंने कई बार लघु कहानियों को पुनर्लिखित करके उन्हें उपन्यासों में शामिल किया है, और इस संग्रह में इनमें से कई मूल रचनाएँ मौजूद हैं। "द विंड-अप बर्ड एंड ट्यूजडेज़ वुमेन" (जो "द एलिफेंट वैनिशेस" में शामिल है) उपन्यास "द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल" के शुरुआती भाग का आधार बनी, और इसी तरह "फायरफ्लाई" और "मैन-ईटिंग कैट्स" को कुछ बदलावों के साथ क्रमशः उपन्यास "नॉर्वेजियन वुड" और "स्पुतनिक स्वीटहार्ट" में शामिल किया गया। एक समय ऐसा भी था जब मेरी लिखी लघु कहानियों को प्रकाशित करने के बाद वे मेरे मन में विकसित होती रहीं और उपन्यासों का रूप ले लेती थीं। बहुत पहले लिखी गई कोई लघु कहानी आधी रात को मेरे घर में घुस आती, मुझे जगा देती और चिल्लाती, "अरे, यह सोने का समय नहीं है! तुम मुझे भूल नहीं सकते, अभी और लिखना बाकी है!" उस आवाज़ से प्रेरित होकर, मैं खुद को उपन्यास लिखते हुए पाता। इस लिहाज से भी, मेरी लघु कहानियां और उपन्यास मेरे भीतर बहुत ही स्वाभाविक और जैविक तरीके से जुड़ते हैं।

कई लोगों ने मुझे प्रोत्साहित किया और लघु कथाएँ लिखने के लिए प्रेरित किया। जब भी मैं आईसीएम में अपनी एजेंट अमांडा अर्बन से मिलती हूँ, वह एक मंत्र की तरह यही कहती हैं: “हारुकी, और लघु कथाएँ लिखो!” नॉफ में गैरी फिस्केटजोन, जिन्होंने ‘द एलिफेंट वैनिशेस’ का संपादन किया था, ने इस संग्रह का संपादन भी किया और ‘ब्लाइंड विलो, स्लीपिंग वुमन’ को प्रकाशित करवाने में उनकी अहम भूमिका रही। मेरे मेहनती और कुशल अनुवादक जे रूबिन और फिलिप गैब्रियल, दोनों की अपनी अनूठी शैली है, और उनके शानदार अनुवादों में अपनी कहानियों को दोबारा पढ़ना मेरे लिए बहुत सुखद अनुभव रहा है। द न्यू यॉर्कर की साहित्यिक संपादक डेबोरा ट्रेइसमैन और उनकी पूर्ववर्ती लिंडा एशर से भी मुझे बहुत प्रेरणा मिली है, जिसने मेरी कई कहानियाँ प्रकाशित की हैं। इन सभी के प्रयासों से लघु कथाओं का यह नया संग्रह अब प्रकाशित हो चुका है और एक लघु कथा लेखक के रूप में, मैं इस उपलब्धि से बेहद प्रसन्न हूँ।
—एच.एम.

अंधी विलो, सोती हुई औरत

जब मैंने अपनी आँखें बंद कीं, तो हवा की सुगंध मुझ तक पहुँची। मई की हवा, एक फल की तरह फूलती हुई, जिसकी बाहरी परत खुरदरी, गूदा चिपचिपा और दर्जनों बीज थे। गूदा हवा में ही फट गया, और बीज हल्के छर्रों की तरह मेरी बाहों की नंगी त्वचा पर छिटक गए, जिससे हल्का दर्द हुआ।

“कितने बजे हैं?” मेरे चचेरे भाई ने मुझसे पूछा। मुझसे लगभग आठ इंच छोटा होने के कारण, उसे बोलते समय ऊपर देखना पड़ता था।

मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। "दस बजकर बीस मिनट।"

क्या वह घड़ी सही समय बताती है?

"हां मुझे लगता है।"

मेरे चचेरे भाई ने घड़ी देखने के लिए मेरी कलाई पकड़ ली। उसकी पतली, चिकनी उंगलियां आश्चर्यजनक रूप से मजबूत थीं। "क्या यह बहुत महंगी थी?"

“नहीं, यह काफी सस्ता है,” मैंने समय सारिणी पर दोबारा नजर डालते हुए कहा।

कोई जबाव नहीं।

मेरे चचेरे भाई भ्रमित लग रहे थे। उनके होंठों के बीच के सफेद दांत ऐसे दिख रहे थे मानो हड्डियां सिकुड़ गई हों।

मैंने उसकी ओर देखते हुए, शब्दों को सावधानीपूर्वक दोहराते हुए कहा, "यह काफी सस्ता है। यह काफी सस्ता तो है, लेकिन समय भी सही बताता है।"

मेरे चचेरे भाई ने चुपचाप सिर हिलाया।



मेरे चचेरे भाई को अपने दाहिने कान से ठीक से सुनाई नहीं देता। प्राथमिक विद्यालय में दाखिला लेने के कुछ ही समय बाद उसे बेसबॉल लग गई, जिससे उसकी सुनने की क्षमता खराब हो गई। हालांकि, इससे उसके रोज़मर्रा के कामों पर कोई असर नहीं पड़ता। वह नियमित स्कूल जाता है और एक सामान्य जीवन जीता है। कक्षा में वह हमेशा आगे की पंक्ति में दाहिनी ओर बैठता है, ताकि उसका बायां कान शिक्षक की ओर रहे। और उसके अंक भी

ठीक-ठाक हैं। लेकिन दिक्कत यह है कि कभी-कभी उसे आवाज़ें अच्छी तरह सुनाई देती हैं, और कभी-कभी नहीं। यह ज्वार-भाटे की तरह चक्रीय है। और कभी-कभी, शायद साल में दो बार, उसे दोनों कानों से लगभग कुछ भी सुनाई नहीं देता। ऐसा लगता है जैसे उसके दाहिने कान में सन्नाटा इतना गहरा हो जाता है कि बाएं कान की कोई भी आवाज़ सुनाई नहीं देती। जब ऐसा होता है, तो उसका सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और उसे स्कूल से छुट्टी लेनी पड़ती है। डॉक्टर भी इस समस्या को लेकर असमंजस में हैं। उन्होंने ऐसा मामला पहले कभी नहीं देखा, इसलिए वे कुछ नहीं कर सकते।

“सिर्फ इसलिए कि घड़ी महंगी है, इसका मतलब यह नहीं कि वह सही समय बताएगी,” मेरे चचेरे भाई ने खुद को समझाने की कोशिश करते हुए कहा। “मेरे पास एक महंगी घड़ी हुआ करती थी, लेकिन वह हमेशा गलत समय बताती थी। मैंने उसे तब खरीदा था जब मैंने जूनियर हाई स्कूल में दाखिला लिया था, लेकिन एक साल बाद ही वह मुझसे खो गई। तब से मेरे पास घड़ी नहीं है। वे मुझे नई घड़ी नहीं दिलाएंगे।”

मैंने कहा, "इसके बिना काम चलाना मुश्किल होगा।"

“क्या?” उसने पूछा।

“घड़ी के बिना काम चलाना कितना मुश्किल होता है?” मैंने उसकी ओर देखते हुए दोहराया।

“नहीं, ऐसा नहीं है,” उसने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। “ऐसा तो है नहीं कि मैं पहाड़ों में कहीं दूर रहता हूँ। अगर मुझे समय जानना होता है तो मैं किसी से पूछ लेता हूँ।”

“बिल्कुल सही,” मैंने कहा।

हम कुछ देर के लिए फिर चुप हो गए।

मुझे पता था कि मुझे कुछ और कहना चाहिए, उसके प्रति दयालुता दिखानी चाहिए, अस्पताल पहुँचने तक उसे थोड़ा शांत करने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन उसे देखे हुए पाँच साल हो गए थे। इस बीच वह नौ से चौदह साल का हो गया था, और मैं बीस से पच्चीस साल की हो गई थी। और समय के इस अंतराल ने हमारे बीच एक ऐसी धुंधली दीवार खड़ी कर दी थी जिसे पार करना मुश्किल था। यहाँ तक कि जब मुझे कुछ कहना होता था, तो सही शब्द मुँह से नहीं निकलते थे। और हर बार जब मैं हिचकिचाती, हर बार जब मैं कुछ कहने से पहले ही अपने

मन में रोक लेती, तो मेरा चचेरा भाई मुझे थोड़े उलझन भरे भाव से देखता। उसका बायाँ कान थोड़ा सा मेरी तरफ झुक जाता।

“अभी कितना समय हुआ है?” उसने मुझसे पूछा।

मैंने उत्तर दिया, “दस सौ उनतीस।”

जब बस आखिरकार नजर आई तब दस बजकर बत्तीस मिनट हो चुके थे।



जो बस आई, वो एक नए प्रकार की थी, वैसी नहीं जैसी मैं हाई स्कूल जाने के लिए इस्तेमाल करता था। ड्राइवर के सामने का विंडशील्ड बहुत बड़ा था, पूरी गाड़ी किसी विशालकाय बमवर्षक विमान जैसी लग रही थी, बस उसमें पंख नहीं थे। और बस मेरी कल्पना से कहीं ज़्यादा भरी हुई थी। गलियारे में कोई खड़ा नहीं था, लेकिन हम साथ-साथ नहीं बैठ सकते थे। हमें ज़्यादा दूर नहीं जाना था, इसलिए हम पीछे के दरवाज़े के पास खड़े हो गए। दिन के इस समय बस इतनी भरी क्यों थी, यह समझ से परे था। बस का रूट एक निजी रेलवे स्टेशन से शुरू होता था, पहाड़ियों में एक रिहायशी इलाके में जाता था, फिर घूमकर वापस स्टेशन पर आ जाता था, और रास्ते में कोई पर्यटक स्थल नहीं था। रूट पर कुछ स्कूल होने के कारण जब बच्चे स्कूल जाते थे तो बसें भरी रहती थीं, लेकिन दिन के इस समय बस खाली होनी चाहिए थी।

मैं और मेरा चचेरा भाई पट्टियों और खंभों को कसकर पकड़े हुए थे। बस एकदम नई थी, सीधे कारखाने से आई थी, धातु की सतहें इतनी चमकदार थीं कि उनमें आपका चेहरा प्रतिबिंबित हो सकता था। सीटों का रोआं एकदम मुलायम था, और यहां तक कि छोटे से छोटे पेंच में भी वह गर्व और उम्मीद भरी अनुभूति थी जो केवल नई मशीनरी में ही होती है।

नई बस और उसमें अप्रत्याशित भीड़ देखकर मैं थोड़ा घबरा गया। शायद पिछली बार जब मैंने इस बस में सफर किया था, तब से इसका रूट बदल गया था। मैंने बस के चारों ओर ध्यान से देखा और बाहर भी नज़र डाली। लेकिन वही पुराना शांत रिहायशी इलाका दिख रहा था, जो मुझे अच्छी तरह याद था।

“यही सही बस है ना?” मेरे चचेरे भाई ने चिंता से पूछा। बस में चढ़ने के बाद से ही मेरे चेहरे पर उलझन का भाव था।
मैंने खुद को और उसे आश्वस्त करने की कोशिश करते हुए कहा, "चिंता मत करो। यहाँ से केवल एक ही बस रूट गुजरता है, इसलिए यही रूट होना चाहिए।"
“क्या तुम हाई स्कूल जाते समय इस बस से यात्रा करते थे?” मेरे चचेरे भाई ने पूछा।
"हां, बिल्कुल सही।"
“क्या आपको स्कूल पसंद था?”
मैंने कहा, "खास तौर पर नहीं। लेकिन मैं वहां अपने दोस्तों को देख सकता था, और यह कोई बहुत लंबी यात्रा भी नहीं थी।"
मेरे चचेरे भाई ने मेरी कही हुई बातों पर विचार किया।
क्या आप उन्हें अभी भी देखते हैं?
“नहीं, काफी समय तक नहीं,” मैंने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए कहा।
“क्यों नहीं? आप उन्हें क्यों नहीं देखते?”
“क्योंकि हम एक दूसरे से बहुत दूर रहते हैं।” यह कारण नहीं था, लेकिन मुझे इसे समझाने का कोई और तरीका नहीं सूझा।
मेरे ठीक बगल में बूढ़े लोगों का एक समूह बैठा था। लगभग पंद्रह लोग रहे होंगे। अचानक मुझे एहसास हुआ कि बस में इतनी भीड़ का कारण यही लोग थे। वे सभी धूप में तपे हुए थे, यहाँ तक कि उनकी गर्दन के पीछे का हिस्सा भी काला था। और वे सभी दुबले-पतले थे। ज़्यादातर पुरुषों ने पहाड़ चढ़ने वाली मोटी कमीज़ें पहनी हुई थीं; महिलाओं ने सादे, बिना किसी सजावट वाले ब्लाउज़। उन सभी की गोद में छोटे-छोटे बैग थे, जैसे पहाड़ों पर छोटी-मोटी पैदल यात्राओं के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे कितने एक जैसे दिखते थे। जैसे किसी दराज में किसी चीज़ के नमूने करीने से रखे हों। लेकिन अजीब बात यह थी कि इस बस रूट पर पहाड़ चढ़ने का कोई रास्ता नहीं था। तो आखिर वे कहाँ जा रहे होंगे? मैं वहाँ खड़े-खड़े बस की सीट बेल्ट पकड़े इस बारे में सोचती रही, लेकिन कोई तर्कसंगत कारण समझ में नहीं आया।



"मुझे आश्चर्य है कि क्या इस बार इलाज में दर्द होगा?" मेरी चचेरी बहन ने मुझसे पूछा।
मैंने कहा, "मुझे नहीं पता। मैंने कोई भी जानकारी नहीं सुनी।"
क्या आप कभी कान के डॉक्टर के पास गए हैं?
मैंने अपना सिर हिलाया। मैं अपनी पूरी जिंदगी में कभी कान के डॉक्टर के पास नहीं गया था।
मैंने पूछा, "क्या पहले भी दर्द हुआ था?"
"नहीं, ऐसा नहीं है," मेरे चचेरे भाई ने उदास स्वर में कहा। "यह पूरी तरह से दर्द रहित तो नहीं था; कभी-कभी थोड़ा दर्द होता था। लेकिन कुछ ज्यादा नहीं।"
"शायद इस बार भी ऐसा ही होगा। तुम्हारी माँ ने कहा कि वे हमेशा की तरह कुछ खास अलग नहीं करने वाले हैं।"
लेकिन अगर वे हमेशा की तरह ही करते रहे तो इससे क्या फायदा होगा?
खैर, कुछ भी हो सकता है। कभी-कभी अप्रत्याशित घटनाएँ घटित हो जाती हैं।
"तुम्हारा मतलब है जैसे किसी चीज़ का कॉर्क निकालना?" मेरे चचेरे भाई ने कहा। मैंने उसकी तरफ देखा, लेकिन मुझे उसमें कोई व्यंग्य नहीं दिखा।
"नए डॉक्टर से इलाज करवाना एक अलग अनुभव होगा, और कभी-कभी प्रक्रिया में थोड़ा सा बदलाव भी बहुत फर्क ला सकता है। मैं इतनी आसानी से हार नहीं मानूंगा।"
"मैं हार नहीं मानूंगा," मेरे चचेरे भाई ने कहा।
"लेकिन आप इससे ऊब चुके हैं?"
"शायद," उसने कहा और आह भरी। "डर ही सबसे बुरी चीज है। जिस दर्द की मैं कल्पना करता हूँ, वह असल दर्द से कहीं ज्यादा बुरा होता है। समझ रहे हो ना?"
"हाँ मुझे पता हे।"



उस बसंत में बहुत कुछ घटित हुआ था। काम पर एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि मुझे टोक्यो की एक छोटी सी विज्ञापन कंपनी में अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी, जहाँ मैं दो साल से काम कर रहा था। लगभग उसी समय मेरा अपनी प्रेमिका से भी ब्रेकअप हो गया; हम कॉलेज के समय से ही एक-दूसरे को जानते थे। उसके एक महीने बाद मेरी दादी का आंतों के कैंसर से निधन

हो गया, और पाँच साल में पहली बार मैं अपने छोटे से सूटकेस के साथ इस शहर में वापस आया। मेरा पुराना कमरा बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने छोड़ा था। जो किताबें मैंने पढ़ी थीं, वे अभी भी शेल्फ पर थीं, मेरा बिस्तर, मेरी मेज और वे सभी पुराने रिकॉर्ड जो मैं सुना करता था, सब वहीं थे। लेकिन कमरे में सब कुछ सूख चुका था, उसका रंग और गंध बहुत पहले ही गायब हो चुका था। मानो समय थम सा गया था।

मैंने अपनी दादी के अंतिम संस्कार के कुछ दिनों बाद टोक्यो वापस जाने की योजना बनाई थी ताकि नई नौकरी के लिए कुछ संभावित अवसरों की तलाश कर सकूँ। मैं एक नए अपार्टमेंट में शिफ्ट होने की भी सोच रहा था; मुझे माहौल में बदलाव की ज़रूरत थी। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मुझे लगा कि उठकर कुछ करना बहुत मुश्किल काम है। सीधे शब्दों में कहूँ तो, अगर मैं उठकर कुछ करना भी चाहता, तो भी नहीं कर पाता। मैंने अपना समय अपने पुराने कमरे में बंद रहकर, उन रिकॉर्ड्स को सुनते हुए, पुरानी किताबें दोबारा पढ़ते हुए और कभी-कभार बगीचे में थोड़ी-बहुत निराई करते हुए बिताया। मैं किसी से नहीं मिला, और जिन लोगों से मैंने बात की, वे सिर्फ़ मेरे परिवार के सदस्य थे।

एक दिन मेरी चाची अचानक आईं और मुझसे मेरे चचेरे भाई को नए अस्पताल ले जाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि उन्हें खुद उसे ले जाना चाहिए था, लेकिन अपॉइंटमेंट वाले दिन कुछ काम आ गया था इसलिए वे नहीं जा सकीं। अस्पताल मेरे पुराने हाई स्कूल के पास ही था, इसलिए मुझे पता था कि वह कहाँ है, और चूंकि मेरे पास और कोई काम नहीं था, इसलिए मैं मना भी नहीं कर सकती थी। मेरी चाची ने मुझे एक लिफाफा दिया जिसमें कुछ पैसे थे, जिन्हें हम दोपहर के भोजन के लिए इस्तेमाल कर सकते थे।

उसे नए अस्पताल में इसलिए भेजा गया क्योंकि पुराने अस्पताल में जो इलाज चल रहा था उससे कोई फायदा नहीं हो रहा था। बल्कि, उसकी हालत पहले से भी बदतर हो गई थी। जब मेरी चाची ने अस्पताल के प्रभारी डॉक्टर से शिकायत की, तो उन्होंने सुझाव दिया कि समस्या का संबंध चिकित्सा से ज़्यादा लड़के के घर के माहौल से है, और फिर दोनों ने इस पर चर्चा की। वैसे तो किसी को भी अस्पताल बदलने से उसकी सुनने की क्षमता में तुरंत सुधार की उम्मीद नहीं थी। किसी ने खुलकर ऐसा नहीं कहा, लेकिन सबने लगभग उम्मीद ही छोड़ दी थी कि उसकी हालत में कभी सुधार होगा।

मेरा चचेरा भाई पास में ही रहता था, लेकिन मैं उससे उम्र में लगभग दस साल बड़ा था और हम कभी इतने करीबी नहीं थे। जब रिश्तेदार इकट्ठा होते थे, तो मैं उसे कहीं ले जाता या उसके साथ खेलता, बस इतना ही। फिर भी, कुछ ही समय में सब लोग मुझे और मेरे चचेरे भाई को एक जोड़ी की तरह देखने लगे, यह सोचकर कि वह मुझसे बहुत जुड़ा हुआ है और मेरा लाडला है। लंबे समय तक मुझे समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों था। लेकिन अब, जिस तरह से वह अपना सिर झुकाता था, उसका बायां कान मेरी तरफ होता था, उसे देखकर मुझे अजीब सा सुकून मिला। जैसे बहुत पहले सुनी बारिश की आवाज़, उसकी झिझक मेरे दिल को छू गई। और मुझे धीरे-धीरे समझ आने लगा कि हमारे रिश्तेदार हमें क्यों मिलाना चाहते थे।



बस सात-आठ बस स्टॉप पार कर चुकी थी कि मेरी चचेरी बहन ने फिर से चिंता से मेरी तरफ देखा।

क्या यह बहुत दूर है?

“हां, अभी काफी समय है। यह एक बड़ा अस्पताल है, इसलिए हमें इसकी कमी महसूस नहीं होगी।”

खुली खिड़की से आती हवा बुजुर्गों की टोपियों के किनारों और उनके गले में लिपटे दुपट्टों को धीरे-धीरे हिला रही थी, मैं यूँ ही देख रहा था। ये लोग कौन थे? और वे कहाँ जा रहे होंगे?

“क्या तुम मेरे पिताजी की कंपनी में काम करने जा रहे हो?” मेरे चचेरे भाई ने पूछा।

मैंने हैरानी से उसकी तरफ देखा। उसके पिता, मेरे चाचा, कोबे में एक बड़ी प्रिंटिंग कंपनी चलाते थे। मैंने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था, और किसी ने कभी इसका संकेत भी नहीं दिया था।

मैंने कहा, "इस बारे में किसी ने कुछ नहीं कहा है। आप क्यों पूछ रहे हैं?"

मेरे चचेरे भाई का चेहरा लाल हो गया। उसने कहा, "मुझे लगा था कि शायद तुम ऐसा करोगे। लेकिन क्यों नहीं? तुम्हें जाना भी नहीं पड़ेगा। और सब लोग खुश रहेंगे।"

रिकॉर्ड किए गए संदेश में अगले स्टॉप की घोषणा की गई, लेकिन किसी ने भी उतरने के लिए बटन नहीं दबाया। बस स्टॉप पर चढ़ने के लिए भी कोई इंतजार नहीं कर रहा था।

"लेकिन मुझे कुछ काम निपटाने हैं, इसलिए मुझे टोक्यो वापस जाना होगा," मैंने कहा। मेरे चचेरे भाई ने चुपचाप सिर हिलाया।

मुझे कुछ भी करने की जरूरत नहीं थी। लेकिन मैं यहाँ रुक भी नहीं सकता था।

जैसे-जैसे बस पहाड़ी ढलान पर चढ़ती गई, घरों की संख्या कम होती गई। घनी शाखाओं की छाया सड़क पर पड़ने लगी। हम कुछ विदेशी शैली के, रंगे हुए, नीची दीवारों वाले घरों के पास से गुज़रे। ठंडी हवा सुखद लग रही थी। हर मोड़ पर जब बस मुड़ती, नीचे समुद्र दिखाई देता, फिर गायब हो जाता। जब तक बस अस्पताल के पास नहीं रुकी, मैं और मेरा चचेरा भाई बस वहीं खड़े रहे और नज़ारे देखते रहे।

"परीक्षा में थोड़ा समय लगेगा और मैं इसे अकेले संभाल लूंगी," मेरी चचेरी बहन ने कहा, "तो तुम कहीं जाकर मेरा इंतज़ार क्यों नहीं करती?" डॉक्टर को जल्दी से नमस्कार करके मैं परीक्षा कक्ष से बाहर निकली और कैंटीन चली गई। मैंने नाश्ते में बस थोड़ा सा ही खाया था और मुझे बहुत भूख लगी थी, लेकिन मेनू में कुछ भी ऐसा नहीं था जिससे मेरी भूख बढ़े। मैंने एक कप कॉफी से ही काम चला लिया।

सप्ताह के बीचोंबीच की सुबह थी और हम दोनों, एक छोटा सा परिवार, घर में अकेले थे। पिता लगभग चालीस वर्ष के थे, उन्होंने गहरे नीले रंग की धारीदार पजामा और प्लास्टिक की चप्पलें पहनी हुई थीं। माँ और उनकी जुड़वां बेटियाँ उनसे मिलने आई थीं। दोनों बेटियों ने एक जैसी सफेद पोशाक पहनी हुई थी और मेज पर झुकी हुई थीं, उनके चेहरे पर गंभीर भाव थे और वे संतरे का रस पी रही थीं। पिता की चोट या बीमारी ज्यादा गंभीर नहीं लग रही थी और माता-पिता और बच्चे दोनों ही ऊबे हुए लग रहे थे।

खिड़की के बाहर एक लॉन था। एक स्प्रिंकलर घूमता हुआ टिक-टिक कर रहा था, जिससे घास पर चांदी जैसी फुहार पड़ रही थी। दो तेज़ आवाज़ वाले लंबी पूंछ वाले पक्षी स्प्रिंकलर के ठीक ऊपर से उड़े और नज़र से ओझल हो गए। लॉन के आगे कुछ सुनसान टेनिस कोर्ट थे, जिन पर नेट नहीं लगे थे। टेनिस कोर्ट के आगे ज़ेलकोवा के पेड़ों की एक कतार थी, और उनकी शाखाओं के बीच से समुद्र की झलक दिखाई दे रही थी। गर्मियों की शुरुआत की धूप

छोटी-छोटी लहरों पर कहीं-कहीं चमक रही थी। हवा ज़ेलकोवा के नए पत्तों को सरसरा रही थी, जिससे स्प्रिंकलर से गिरती फुहार हल्की सी झुक रही थी।

मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने यह दृश्य कई साल पहले देखा हो। घास का एक विशाल मैदान, जुड़वां लड़कियां संतरे का रस पी रही थीं, लंबी पूंछ वाले पक्षी न जाने कहाँ उड़ रहे थे, बिना जाल वाले टेनिस कोर्ट, दूर समुद्र... लेकिन यह एक भ्रम था। यह काफी सजीव था, वास्तविकता का एक तीव्र एहसास था, लेकिन फिर भी एक भ्रम ही था। मैं अपने जीवन में कभी इस अस्पताल में नहीं गया था।

मैंने अपने पैर सामने वाली सीट पर फैलाए, गहरी सांस ली और आंखें बंद कर लीं। अंधेरे में मुझे सफेद रंग का एक पिंड दिखाई दिया। चुपचाप वह फैलता गया, फिर सिकुड़ता गया, जैसे सूक्ष्मदर्शी के नीचे कोई सूक्ष्मजीव। रूप बदलता गया, फैलता गया, टूटता गया, फिर से बनता गया।

आठ साल पहले की बात है, मैं उस दूसरे अस्पताल में गया था। समुद्र के किनारे एक छोटा सा अस्पताल। खिड़की से बस कुछ कनेर के फूल ही दिखते थे। अस्पताल था, और वहाँ बारिश की महक आती थी। मेरे दोस्त की प्रेमिका का वहाँ सीने का ऑपरेशन हुआ था, और हम दोनों उसका हालचाल जानने गए थे। हाई स्कूल में हमारे जूनियर साल की गर्मियों की बात है।

दरअसल, यह कोई बड़ा ऑपरेशन नहीं था, बस उसकी एक पसली की अंदर की ओर मुड़ी हुई स्थिति को ठीक करने के लिए किया गया था। यह कोई आपातकालीन प्रक्रिया नहीं थी, बस ऐसी चीज थी जो आखिरकार करनी ही पड़ती, इसलिए उसने सोचा कि क्यों न इसे अभी ही करवा लिया जाए। ऑपरेशन तो जल्दी ही हो गया, लेकिन वे चाहते थे कि उसे आराम करने के लिए समय मिले, इसलिए वह दस दिन अस्पताल में रही। मैं और मेरा दोस्त 125cc यामाहा मोटरसाइकिल पर साथ-साथ वहाँ गए। जाते समय उसने मोटरसाइकिल चलाई, वापस आते समय मैंने। उसने मुझे आने के लिए कहा था। उसने कहा था, "मैं अकेले अस्पताल नहीं जा सकता।"

मेरे दोस्त ने स्टेशन के पास एक मिठाई की दुकान पर रुककर चॉकलेट का एक डिब्बा खरीदा। मैंने एक हाथ से उसकी बेल्ट पकड़ रखी थी और दूसरे हाथ से चॉकलेट का डिब्बा कसकर पकड़े हुए था। दिन बहुत गर्म था और हमारी कमीज़ें बार-बार भीग रही थीं, फिर हवा

में सूख रही थीं। गाड़ी चलाते हुए मेरा दोस्त बेसुरी आवाज़ में कोई बेमतलब का गाना गा रहा था। मुझे आज भी उसके पसीने की गंध याद है। उसके कुछ ही समय बाद उसकी मृत्यु हो गई।



उसकी प्रेमिका ने नीले रंग का पजामा और घुटनों तक आने वाला पतला गाउन जैसा कुछ पहना हुआ था। हम तीनों कैंटीन की एक मेज पर बैठे, शॉर्ट होप सिगरेट पी, कोक पी और आइसक्रीम खाई। उसे बहुत भूख लगी थी, इसलिए उसने दो चीनी से ढके डोनट्स खाए और ढेर सारी क्रीम वाला कोको पिया। फिर भी उसे भूख कम लगी।

"जब तक तुम यहां से निकलोगे, तब तक तुम एक बिल्कुल गुब्बारे जैसे बन चुके होगे," मेरे दोस्त ने कुछ घृणा भरे लहजे में कहा।

"कोई बात नहीं—मैं ठीक हो रही हूँ," उसने डोनट्स से लगे तेल से सने अपनी उंगलियों के सिरों को पोंछते हुए जवाब दिया।

जब वे बातें कर रहे थे, मैंने खिड़की से बाहर ओलियंडर के पौधों पर नज़र डाली। वे विशाल थे, मानो मानो अपने आप में एक जंगल हों। मुझे लहरों की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। खिड़की के बगल वाली रेलिंग लगातार चलने वाली हवा के कारण पूरी तरह से जंग खा चुकी थी। एक पुराने ज़माने का दिखने वाला सीलिंग फैन कमरे में गर्म, चिपचिपी हवा को इधर-उधर घुमा रहा था। कैफ़ेटेरिया में अस्पताल जैसी गंध आ रही थी। यहाँ तक कि खाने-पीने की चीज़ों में भी वही अस्पताल वाली गंध थी। मेरी प्रेमिका के पजामे में दो जेबें थीं, जिनमें से एक में एक छोटा सा सुनहरे रंग का पेन था। जब भी वह आगे झुकती, मुझे उसके छोटे, सफेद स्तन वी-नेक कॉलर से झांकते हुए दिखाई देते।



यादें वहीं रुक गईं। मैंने याद करने की कोशिश की कि उसके बाद क्या हुआ था। मैंने एक कोक पी, ओलियंडर के फूलों को निहारा, उसकी छातियों पर एक नज़र डाली—और फिर

क्या? मैं प्लास्टिक की कुर्सी पर थोड़ा हिल-डुल कर बैठा और अपने हाथों में सिर रखकर यादों की परतों में और गहराई तक जाने की कोशिश करने लगा। जैसे किसी पतले धार वाले चाकू की नोक से कॉर्क को निकालने की कोशिश कर रहा हो।

मैंने एक तरफ देखा और कल्पना करने की कोशिश की कि डॉक्टर उसकी छाती को चीरकर, रबर के दस्ताने पहने हाथों से उसकी टेढ़ी पसली को सीधा कर रहे हैं। लेकिन यह सब कुछ बहुत ही अवास्तविक लग रहा था, मानो कोई प्रतीकात्मक कथा हो।

हाँ, बिल्कुल—उसके बाद हमने सेक्स के बारे में बात की। कम से कम मेरे दोस्त ने तो की ही। पर उसने क्या कहा? मेरे बारे में ही, इसमें कोई शक नहीं। कि मैंने एक लड़की के साथ संबंध बनाने की कोशिश की थी, लेकिन नाकाम रहा था। कोई बहुत बड़ी कहानी तो नहीं थी, लेकिन जिस तरह से उसने उसे सुनाया, हर बात को बढ़ा-चढ़ाकर, उससे उसकी गर्लफ्रेंड ज़ोर से हंस पड़ी। मुझे भी हंसी आ गई। वह लड़का वाकई कहानी सुनाने में माहिर था।

“कृपया मुझे हंसाओ मत,” उसने थोड़ी तकलीफ भरी आवाज में कहा। “हंसने पर मेरे सीने में दर्द होता है।”

“दर्द कहाँ हो रहा है?” मेरे दोस्त ने पूछा।

उसने अपने पायजामे पर, दिल के ठीक ऊपर, बाएं स्तन के दाहिनी ओर एक जगह दबाई। उसने इस पर कोई मज़ाक किया, और वह फिर हंस पड़ी।



मैंने अपनी घड़ी देखी। ग्यारह बजकर पैंतालीस मिनट हो चुके थे, लेकिन मेरी चचेरी बहन अभी तक वापस नहीं आई थी। दोपहर के भोजन का समय नज़दीक आ रहा था और कैंटीन में भीड़ बढ़ने लगी थी। तरह-तरह की आवाज़ें और स्वर आपस में मिलकर कमरे को धुएँ की तरह घेर रहे थे। मैं एक बार फिर यादों की दुनिया में लौट गई। और उस छोटी सी सोने की कलम में जो उसकी जेब में थी।

अब मुझे याद आया—उसने उस पेन से एक कागज के नैपकिन पर कुछ लिखा था।

वह एक चित्र बना रही थी। रुमाल बहुत नरम था और उसकी कलम की नोक बार-बार अटक रही थी। फिर भी, उसने एक पहाड़ी बना ली। और पहाड़ी की चोटी पर एक छोटा सा घर। घर

में एक महिला सो रही थी। घर के चारों ओर घने विलो वृक्ष थे। उन्हीं घने विलो वृक्षों ने उसे सुला दिया था।

“ब्लाइंड विलो आखिर क्या होता है?” मेरे दोस्त ने पूछा।

“उस तरह का एक पेड़ होता है।”

"खैर, मैंने इसके बारे में कभी नहीं सुना।"

“ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैंने ही इसे बनाया था,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “अंधे विलो पेड़ों में बहुत सारा पराग होता है, और उस पराग से ढकी छोटी-छोटी मक्खियाँ उसके कान के अंदर घुस गईं और उस महिला को सुला दिया।”

उसने एक नया नैपकिन लिया और उस पर अंधी विलो का चित्र बनाया। अंधी विलो एक अज़ेलिया के आकार का पेड़ निकला। पेड़ पर फूल खिले हुए थे, फूल गहरे हरे पत्तों से घिरे हुए थे, मानो छिपकलियों की पूंछें एक गुच्छे में बंधी हों। अंधी विलो देखने में बिल्कुल भी विलो के पेड़ जैसी नहीं लग रही थी।

“तुम्हारे पास सिगरेट है?” मेरे दोस्त ने मुझसे पूछा। मैंने पसीने से भीगी हुई होप्स सिगरेट का एक पैकेट और कुछ माचिसें मेज के उस पार फेंक दीं।

“एक अंधी विलो पेड़ बाहर से छोटा दिखता है, लेकिन उसकी जड़ें अविश्वसनीय रूप से गहरी होती हैं,” उसने समझाया। “दरअसल, एक निश्चित बिंदु के बाद यह ऊपर की ओर बढ़ना बंद कर देता है और ज़मीन में और नीचे तक धंसता चला जाता है। मानो अंधेरा ही इसे पोषण देता हो।”

“और मक्खियाँ उस पराग को उसके कान तक ले जाती हैं, अंदर घुस जाती हैं और उसे सुला देती हैं,” मेरे दोस्त ने गीली माचिस से सिगरेट जलाने की कोशिश करते हुए कहा। “लेकिन मक्खियों का क्या होता है?”

"वे महिला के अंदर रहते हैं और उसका मांस खाते हैं - स्वाभाविक रूप से," उसकी प्रेमिका ने कहा।

"इसे चट कर जाओ," मेरे दोस्त ने कहा।



मुझे अब याद आया कि उस गर्मी में उसने अंधी विलो के बारे में एक लंबी कविता लिखी थी और हमें सब कुछ समझाया था। उस गर्मी में उसने बस यही एक होमवर्क किया था। उसने एक रात देखे सपने पर आधारित एक कहानी गढ़ी और एक हफ्ते तक बिस्तर पर लेटे-लेटे यह लंबी कविता लिखी। मेरे दोस्त ने कहा कि वह इसे पढ़ना चाहता है, लेकिन वह अभी भी इसमें सुधार कर रही थी, इसलिए उसने मना कर दिया; इसके बजाय, उसने चित्र बनाए और कहानी का सारांश बताया।

एक युवक उस महिला को बचाने के लिए पहाड़ी पर चढ़ गया, जिसे अंधी विलो के पराग ने सुला दिया था।

"ये तो मैं ही हूँगा," मेरे दोस्त ने कहा।

उसने सिर हिलाकर कहा, "नहीं, यह तुम नहीं हो।"

“क्या आपको यकीन है?” उसने पूछा।

“मुझे यकीन है,” उसने गंभीर चेहरे के साथ कहा। “मुझे नहीं पता क्यों। लेकिन मुझे पता है। आप नाराज़ तो नहीं हैं ना?”

"बिल्कुल, मैं हूँ," मेरे दोस्त ने आधे मजाक में भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

घने, घने विलो पेड़ों के बीच से रास्ता बनाते हुए, वह युवक धीरे-धीरे पहाड़ी पर चढ़ने लगा। घने विलो पेड़ों के छा जाने के बाद पहाड़ी पर चढ़ने वाला वह पहला व्यक्ति था। अपनी टोपी को आँखों पर खींचे हुए, अपने चारों ओर भिनभिना रही मक्खियों के झुंड को एक हाथ से हटाते हुए, वह युवक चढ़ता रहा। सोई हुई स्त्री को देखने के लिए। उसे उसकी लंबी, गहरी नींद से जगाने के लिए।

"लेकिन जब तक वह पहाड़ी की चोटी पर पहुंचा, तब तक उस महिला के शरीर को मक्खियों ने लगभग पूरी तरह से खा लिया था, है ना?" मेरे दोस्त ने कहा।

“एक तरह से,” उसकी प्रेमिका ने जवाब दिया।

“एक तरह से देखा जाए तो मक्खियों द्वारा खाया जाना एक दुखद कहानी बन जाती है, है ना?” मेरे दोस्त ने कहा।

“हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है,” उसने कुछ देर सोचने के बाद कहा। “आप क्या सोचते हैं?” उसने मुझसे पूछा।

मैंने जवाब दिया, "यह तो मुझे एक दुखद कहानी लगती है।"



बारह बजकर बीस मिनट हो गए थे जब मेरा चचेरा भाई वापस आया। उसके हाथ में दवाइयों का एक छोटा सा थैला था और उसके चेहरे पर कुछ खोया-खोया सा भाव था। कैफेटेरिया के प्रवेश द्वार पर आते ही उसे मुझे देखने और मेरे पास आने में कुछ समय लग गया। वह लड़खड़ाते हुए चल रहा था, मानो संतुलन न बना पा रहा हो। वह मेरे सामने बैठ गया और जैसे सांस लेना भूल गया हो, उसने एक गहरी सांस ली।

मैंने पूछा, "कैसा रहा?"

“हम्म,” उसने कहा। मैंने उसके और कुछ कहने का इंतजार किया, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

मैंने पूछा, "क्या तुम्हें भूख लगी है?"

उसने चुपचाप सिर हिलाया।

“क्या आप यहीं खाना खाना चाहते हैं? या आप बस से शहर जाकर वहाँ खाना खाना चाहते हैं?”

उसने अनिश्चितता से कमरे में चारों ओर देखा। "यहाँ ठीक है," उसने कहा। मैंने लंच के टिकट खरीदे और हम दोनों के लिए सेट लंच ऑर्डर कर दिए। खाना आने तक मेरा चचेरा भाई चुपचाप खिड़की से बाहर उसी नज़ारे को देखता रहा जिसे मैं देख रहा था—समुद्र, ज़ेलकोवा पेड़ों की कतार, और स्प्रिंकलर।

हमारे बगल वाली मेज पर, सलीके से कपड़े पहने एक अधेड़ उम्र का जोड़ा सैंडविच खा रहा था और अपने एक दोस्त के बारे में बातें कर रहा था जिसे फेफड़ों का कैंसर था। वे बता रहे थे कि कैसे उसने पाँच साल पहले सिगरेट पीना छोड़ दिया था, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी, और कैसे वह सुबह उठते ही खून की उल्टी करता था। पत्नी सवाल पूछ रही थी, पति जवाब दे रहा था। पति ने समझाया कि एक तरह से, किसी व्यक्ति को होने वाले कैंसर में उसके पूरे जीवन की झलक देखी जा सकती है।

हमारे दोपहर के भोजन में सैलिसबरी स्टेक और तली हुई सफेद मछली, सलाद और ब्रेड रोल शामिल थे। हम एक-दूसरे के सामने चुपचाप बैठे खाना खा रहे थे। पूरे समय हमारे बगल में बैठा जोड़ा लगातार इस बारे में बोलता रहा कि कैंसर कैसे शुरू होता है, कैंसर की दर क्यों बढ़ गई है, और इससे लड़ने के लिए कोई दवा क्यों नहीं है।



“हर जगह एक जैसा ही हाल होता है,” मेरे चचेरे भाई ने सपाट स्वर में अपने हाथों को देखते हुए कहा। “वही पुराने सवाल, वही परीक्षाएं।”

हम अस्पताल के सामने एक बेंच पर बैठे बस का इंतजार कर रहे थे। बीच-बीच में हवा के झोंके से हमारे ऊपर हरी पत्तियां सरसरा उठती थीं।

मैंने उससे पूछा, "कभी-कभी तो तुम्हें कुछ भी सुनाई नहीं देता?"

“हाँ, बिल्कुल सही,” मेरे चचेरे भाई ने जवाब दिया। “मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है।”

"यह कैसा लगता है?"

उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया और सोचने लगा। “अचानक से कुछ सुनाई देना बंद हो जाता है। लेकिन यह समझने में थोड़ा समय लगता है कि क्या हुआ है। तब तक आप कुछ भी नहीं सुन पाते। ऐसा लगता है जैसे आप समुद्र की गहराई में हों और कानों में इयरप्लग लगाए हों। यह सिलसिला कुछ देर तक चलता रहता है। हर समय आप कुछ भी नहीं सुन पाते, लेकिन यह सिर्फ आपके कानों की बात नहीं है। कुछ भी न सुन पाना तो बस इसका एक हिस्सा है।”

"क्या यह आपको परेशान करता है?"

उसने अपना सिर हिलाया, एक छोटा, लेकिन स्पष्ट झटका। "मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन इससे मुझे ज़्यादा परेशानी नहीं होती। हालांकि, यह असुविधाजनक ज़रूर है। कुछ भी न सुन पाना।"

मैंने उसकी तस्वीर बनाने की कोशिश की, लेकिन तस्वीर नहीं बन पाई।

“क्या तुमने कभी जॉन फोर्ड की फिल्म फोर्ट अपाचे देखी है?” मेरे चचेरे भाई ने पूछा।

मैंने कहा, "बहुत समय पहले की बात है।"

“यह हाल ही में टीवी पर आया था। यह वाकई एक अच्छी फिल्म है।”

“उम,” मैंने पुष्टि की।

फिल्म की शुरुआत में एक नया कर्नल पश्चिम में स्थित एक किले में आता है। उसके आने पर एक अनुभवी कप्तान उससे मिलने आता है। कप्तान का किरदार जॉन वेन ने निभाया है। कर्नल को पश्चिम के हालातों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। और किले के चारों ओर भारतीय विद्रोह चल रहा है।

मेरे चचेरे भाई ने अपनी जेब से करीने से तह किया हुआ सफेद रुमाल निकाला और उससे अपना मुंह पोंछा।

“किले पर पहुँचते ही कर्नल जॉन वेन की ओर मुड़कर कहता है, ‘मैंने यहाँ आते समय कुछ भारतीयों को देखा था।’ और जॉन वेन, अपने चेहरे पर शांत भाव लिए, जवाब देता है, ‘चिंता मत करो। अगर तुम्हें कुछ भारतीय दिखाई दिए, तो इसका मतलब है कि वहाँ कोई भारतीय नहीं है।’ मुझे ठीक-ठीक शब्द याद नहीं हैं, लेकिन कुछ ऐसा ही हुआ था। क्या आप समझ रहे हैं कि उसका क्या मतलब था?”

मुझे फोर्ट अपाचे फिल्म के ऐसे कोई डायलॉग याद नहीं आ रहे थे। जॉन फोर्ड की फिल्म के हिसाब से ये थोड़े अटपटे लगे। खैर, फिल्म देखे हुए काफी समय हो गया था।

"मुझे लगता है इसका मतलब यह है कि जो कुछ भी कोई भी देख सकता है वह उतना महत्वपूर्ण नहीं है... मेरा अनुमान है।"

मेरी चचेरी बहन ने माथे पर शिकन डालते हुए कहा, "मुझे भी यह बात समझ नहीं आती, लेकिन जब भी कोई मेरे कानों को लेकर मुझसे सहानुभूति जताता है, तो मुझे वही बात याद आ जाती है। 'अगर तुम कुछ भारतीयों को देख पा रही हो, तो इसका मतलब है कि वहां कोई भारतीय नहीं है।'"

मैं हँस पड़ा।

“क्या यह अजीब है?” मेरे चचेरे भाई ने पूछा।

“हाँ,” मैं हँसी। और वह भी हँस पड़ा। उसे हँसे हुए काफी समय हो गया था।

कुछ देर बाद मेरे चचेरे भाई ने मानो अपना बोझ हल्का करते हुए कहा, "क्या तुम मेरे कानों के अंदर देखोगे?"

“अपने कानों के अंदर देखो?” मैंने थोड़ा आश्चर्यचकित होकर पूछा।
"बाहर से जो दिखाई देता है, बस वही।"
"ठीक है, लेकिन आप मुझसे ऐसा क्यों करवाना चाहते हैं?"
“मुझे नहीं पता,” मेरी चचेरी बहन शरमा गई। “मैं बस चाहती हूँ कि तुम देखो कि वे कैसे दिखते हैं।”
“ठीक है,” मैंने कहा। “मैं एक बार कोशिश करके देखूंगा।”
मेरा चचेरा भाई मुझसे पीठ करके बैठा था, और उसने अपना दाहिना कान मेरी ओर झुका रखा था। उसका कान सचमुच बहुत सुंदर था। छोटा तो था, लेकिन कान की लोब बिल्कुल फूली हुई थी, जैसे कोई ताज़ा बेक की हुई मेडेलिन हो। मैंने पहले कभी किसी के कान को इतनी ध्यान से नहीं देखा था। एक बार जब आप इसे गौर से देखना शुरू करते हैं, तो मानव कान—इसकी संरचना—काफी रहस्यमय लगती है। इसमें मौजूद ये सारी अजीबोगरीब घुमाव, उभार और गड्ढे। शायद विकास ने इस विचित्र आकार को ध्वनियों को इकट्ठा करने या अंदर मौजूद चीजों की रक्षा करने का सबसे अच्छा तरीका माना हो। इस असममित दीवार से घिरा हुआ, कान का छेद किसी अंधेरी, रहस्यमयी गुफा के प्रवेश द्वार की तरह खुला हुआ है।
मैंने अपने दोस्त की प्रेमिका की कल्पना की, जिसके कान में सूक्ष्म मक्खियाँ घोंसला बनाए हुए थीं। मीठा पराग उनके नन्हे पैरों से चिपका हुआ था, वे उसके अंदर के गर्म अंधेरे में घुसकर सारा रस चूस रही थीं और उसके मस्तिष्क में छोटे-छोटे अंडे दे रही थीं। लेकिन आप उन्हें देख नहीं सकते, न ही उनके पंखों की आवाज़ सुन सकते हैं।
“बस करो,” मेरे चचेरे भाई ने कहा।
वह घूमकर आगे की ओर मुंह करके बैठ गया और बेंच पर थोड़ा हिलने-डुलने लगा। "तो, क्या आपको कुछ असामान्य दिख रहा है?"
"जहां तक मैं देख सका, बाहर से देखने पर तो कुछ भी अलग नहीं लगा।"
"कुछ भी ठीक है—यहां तक कि कोई भावना जो आपको महसूस हो या कुछ और।"
मुझे तो तुम्हारा कान सामान्य लग रहा है।
मेरी चचेरी बहन निराश लग रही थी। शायद मैंने कुछ गलत कह दिया था।
मैंने पूछा, "क्या इलाज में दर्द हुआ?"

“नहीं, ऐसा नहीं हुआ। हमेशा की तरह ही। उन्होंने बस उसी पुरानी जगह पर इधर-उधर हाथ फेरा। ऐसा लगता है जैसे वे इसे घिस-घिस कर खराब कर देंगे। कभी-कभी तो ऐसा लगता ही नहीं कि ये मेरा अपना कान है।”



कुछ देर बाद मेरे चचेरे भाई ने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा, "वो रही नंबर अट्ठाईस। वही हमारी बस है, है ना?"

मैं सोच में डूबा हुआ था। जब उसने यह कहा तो मैंने ऊपर देखा और पाया कि ढलान पर चढ़ते हुए मोड़ पर बस धीमी हो रही थी। यह वैसी नई बस नहीं थी जिसमें हम आए थे, बल्कि पुरानी बसों में से एक थी जो मुझे याद थी। बस के आगे 28 नंबर का बोर्ड लगा हुआ था। मैंने बेंच से उठने की कोशिश की, लेकिन उठ नहीं पाया। जैसे मैं किसी तेज़ धारा में फंस गया हूँ, मेरे हाथ-पैर काम नहीं कर रहे थे।

मुझे चॉकलेट के उस डिब्बे की याद आ रही थी जो हम उस पुराने गर्मी के दिन दोपहर में अस्पताल जाते समय साथ ले गए थे। उस लड़की ने खुशी-खुशी डिब्बे का ढक्कन खोला तो देखा कि उसमें रखी एक दर्जन छोटी चॉकलेट पूरी तरह पिघल चुकी थीं, हर चॉकलेट के बीच लगे कागज़ और ढक्कन से चिपकी हुई थीं। अस्पताल जाते समय मैंने और मेरे दोस्त ने मोटरसाइकिल समुद्र किनारे खड़ी कर दी थी और बीच पर लेटकर बातें करते हुए समय बिता रहे थे। पूरे समय हमने चॉकलेट का वह डिब्बा अगस्त की तेज़ धूप में पड़ा रहने दिया था। हमारी लापरवाही, हमारा स्वार्थ, उन चॉकलेटों को बर्बाद कर गया था, उनका पूरा कबाड़ हो गया था। हमें समझ जाना चाहिए था कि क्या हो रहा है। हममें से किसी एक को—कोई भी हो—कुछ कहना चाहिए था। लेकिन उस दोपहर, हमें कुछ भी समझ नहीं आया, बस कुछ बेवकूफी भरे चुटकुले सुनाए और अलविदा कहा। और उस पहाड़ी को छोड़ दिया जो अब भी घने पेड़ों से ढकी हुई थी।

मेरे चचेरे भाई ने मेरी दाहिनी बांह को कसकर पकड़ लिया।

“क्या तुम ठीक हो?” उसने मुझसे पूछा।

उनकी बातों ने मुझे वास्तविकता में वापस ला दिया, और मैं बेंच से उठ खड़ा हुआ। इस बार मुझे खड़े होने में कोई परेशानी नहीं हुई। एक बार फिर मैं अपनी त्वचा पर मई की मीठी हवा का स्पर्श महसूस कर सका। कुछ पलों के लिए मैं एक अजीब, धुंधली सी जगह में खड़ा रहा। जहाँ जो चीज़ें मुझे दिखाई दे रही थीं, वे अस्तित्व में नहीं थीं। जहाँ अदृश्य चीज़ें अस्तित्व में थीं। आखिरकार, असली नंबर 28 बस मेरे सामने आकर रुकी, और उसका असली दरवाज़ा खुल गया। मैं बस में चढ़ गया, और किसी दूसरी जगह की ओर चल पड़ा।

मैंने अपना हाथ अपने चचेरे भाई के कंधे पर रखा। मैंने उससे कहा, "मैं ठीक हूँ।"

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

जन्मदिन वाली लड़की

अपने बीसवें जन्मदिन पर, हमेशा की तरह उसने रेस्टोरेंट में खाना परोसा। वह हमेशा शुक्रवार को काम करती थी, लेकिन अगर उस शुक्रवार को सब कुछ योजना के मुताबिक होता, तो उसे छुट्टी मिल जाती। दूसरी पार्ट-टाइम लड़की ने बिना किसी हिचकिचाहट के उससे शिफ्ट बदलने के लिए हामी भर दी थी: गुस्से में भरे शेफ की डांट सुनना और ग्राहकों की मेजों पर कद्दू ग्नोची और सीफूड फ्रिटो मिस्टो परोसना, बीसवां जन्मदिन मनाने का कोई अच्छा तरीका नहीं था। लेकिन दूसरी लड़की की सर्दी बढ़ गई थी और उसे लगातार दस्त और 104 डिग्री बुखार था, इसलिए उसे अचानक ही काम करना पड़ा।

उसने बीमार लड़की को दिलासा देने की कोशिश की, जिसने माफी मांगने के लिए फोन किया था। उसने कहा, "चिंता मत करो। वैसे भी, मैं कुछ खास करने वाली नहीं थी, भले ही आज मेरा बीसवां जन्मदिन हो।"

और सच कहें तो वह उतनी निराश भी नहीं थी। एक वजह यह थी कि कुछ दिन पहले उसका अपने बॉयफ्रेंड से बहुत बुरा झगड़ा हुआ था, जिसके साथ उसे उस रात होना था। वे हाई स्कूल के समय से साथ थे। झगड़ा मामूली सी बात से शुरू हुआ था, लेकिन अचानक ही इतना बढ़ गया कि एक लंबी और तीखी बहस में बदल गया—इतना बुरा कि उसे पूरा यकीन था कि उनके लंबे समय से चले आ रहे रिश्ते हमेशा के लिए टूट गए। उसके अंदर कुछ पत्थर जैसा कठोर हो गया था और मर गया था। उस झगड़े के बाद से उसने उसे फोन नहीं किया था, और वह भी उसे फोन करने वाली नहीं थी।

उसका कार्यस्थल टोक्यो के पॉश रोप्पोंगी इलाके में स्थित मशहूर इतालवी रेस्तरांओं में से एक था। यह रेस्तरां साठ के दशक के उत्तरार्ध से चल रहा था, और हालांकि इसका खाना कोई बहुत आधुनिक नहीं था, फिर भी इसकी उच्च प्रतिष्ठा पूरी तरह से जायज़ थी। यहाँ कई नियमित ग्राहक आते थे और वे कभी निराश नहीं होते थे। भोजन कक्ष का वातावरण शांत और सुकून भरा था, जिसमें ज़रा भी दबाव नहीं था। यहाँ युवाओं की भीड़ के बजाय, ज़्यादातर उम्रदराज़ लोग आते थे, जिनमें कुछ प्रसिद्ध रंगमंच कलाकार और लेखक भी शामिल थे।

दो पूर्णकालिक वेटर सप्ताह में छह दिन काम करते थे। वह और दूसरी अंशकालिक वेट्रेस छात्राएँ थीं, जो बारी-बारी से तीन-तीन दिन काम करती थीं। इसके अलावा एक फ्लोर मैनेजर

था और काउंटर पर एक दुबली-पतली अधेड़ उम्र की महिला थी, जो कथित तौर पर रेस्टोरेंट खुलने के समय से ही वहाँ काम कर रही थी—ऐसा लगता था मानो वह 'लिटिल डोरिट' की किसी उदास बूढ़ी पात्र की तरह एक ही जगह पर बैठी रहती हो। उसके दो ही काम थे: ग्राहकों से भुगतान लेना और फोन का जवाब देना। वह केवल ज़रूरत पड़ने पर ही बोलती थी और हमेशा एक ही काली पोशाक पहनती थी। उसमें कुछ ठंडापन और कठोरता थी: अगर उसे रात के अंधेरे में समुद्र में छोड़ दिया जाए, तो वह शायद उससे टकराने वाली किसी भी नाव को डुबो देगी।

फ्लोर मैनेजर की उम्र शायद चालीस के आसपास थी। लंबा और चौड़े कंधों वाला उसका शरीर देखकर लगता था कि जवानी में वह खिलाड़ी रहा होगा, लेकिन अब उसके पेट और ठुड्डी पर चर्बी जमा होने लगी थी। उसके छोटे, कड़े बाल सिर के ऊपरी हिस्से से झड़ रहे थे, और उससे बुढ़ापे की एक खास गंध आती थी—जैसे किसी दराज में खांसी की दवाइयों के साथ रखे अखबार की गंध। उसका एक चाचा भी था जिसकी गंध ऐसी ही थी।

मैनेजर हमेशा काला सूट, सफेद कमीज और बो टाई पहनता था—लेकिन वो क्लिप वाली बो टाई नहीं, बल्कि असली बो टाई, जिसे वो अपने हाथों से बाँधता था। उसे इस बात पर गर्व था कि वो बिना शीशे में देखे भी एकदम सही तरीके से बो टाई बाँध सकता था। वो हर दिन बड़ी कुशलता से अपना काम करता था। उसके कामों में मेहमानों के आने-जाने का हिसाब रखना, बुकिंग की पूरी जानकारी रखना, नियमित ग्राहकों के नाम याद रखना, मुस्कुराकर उनका स्वागत करना, उनकी शिकायतों को ध्यान से सुनना, वाइन के बारे में विशेषज्ञ सलाह देना और वेटर व वेट्रेस के काम की निगरानी करना शामिल था। रेस्टोरेंट के मालिक के कमरे में खाना पहुँचाना भी उसका खास काम था।



“रेस्तरां वाली इमारत की छठी मंजिल पर मालिक का अपना एक कमरा था,” उसने कहा। “एक अपार्टमेंट, या दफ्तर या कुछ और।”

किसी तरह हम दोनों अपनी बीसवीं जन्मदिन की बात करने लगे—कि हम दोनों के लिए वह दिन कैसा रहा था। ज्यादातर लोगों को अपना बीसवां जन्मदिन याद रहता है। उसका तो दस साल से भी ज्यादा पहले हो चुका था।

“हालांकि, वह कभी भी रेस्टोरेंट में नज़र नहीं आता था। उसे देखने वाला एकमात्र व्यक्ति मैनेजर था। मालिक का खाना उस तक पहुँचाना ही उसका काम था। बाकी किसी भी कर्मचारी को नहीं पता था कि वह कैसा दिखता है।”

"तो असल में, मालिक अपने ही रेस्टोरेंट से होम डिलीवरी मंगवा रहा था।"

“हाँ,” उसने कहा। “हर रात आठ बजे, मैनेजर को मालिक के कमरे में खाना लाना पड़ता था। यह रेस्टोरेंट का सबसे व्यस्त समय होता था, इसलिए मैनेजर का ठीक उसी समय गायब हो जाना हमारे लिए हमेशा परेशानी का सबब होता था, लेकिन कोई चारा नहीं था क्योंकि यही हमेशा से होता आया था। वे खाने को उन गाड़ियों में से एक पर लादते थे जिनका इस्तेमाल होटल रूम सर्विस के लिए करते हैं, मैनेजर सम्मान का भाव लिए उसे लिफ्ट में धकेलते हुए जाते थे, और पंद्रह मिनट बाद खाली हाथ लौट आते थे। फिर, एक घंटे बाद, वह फिर ऊपर जाते और खाली प्लेटों और गिलासों से भरी गाड़ी नीचे लाते। हर दिन, घड़ी की सुई की तरह। जब मैंने पहली बार ऐसा होते देखा तो मुझे यह बहुत अजीब लगा। यह किसी धार्मिक अनुष्ठान जैसा था, आप जानते हैं? लेकिन कुछ समय बाद मुझे इसकी आदत हो गई, और मैंने इस बारे में कभी दोबारा नहीं सोचा।”

मालिक हमेशा चिकन ही बनाती थी। रेसिपी और साथ में परोसी जाने वाली सब्ज़ियाँ हर दिन थोड़ी अलग होती थीं, लेकिन मुख्य व्यंजन हमेशा चिकन ही होता था। एक युवा शेफ ने एक बार बताया कि उसने एक हफ्ते तक रोज़ एक ही तरह का भुना हुआ चिकन भेजा, यह देखने के लिए कि क्या होता है, लेकिन कभी कोई शिकायत नहीं आई। ज़ाहिर है, एक शेफ खाना बनाने के अलग-अलग तरीके आज़माना चाहता है, और हर नया शेफ चिकन बनाने की हर तकनीक को आज़माकर खुद को चुनौती देता था। वे बढ़िया सॉस बनाते, अलग-अलग सप्लायर से चिकन मंगवाते, लेकिन उनके किसी भी प्रयास का कोई असर नहीं हुआ: मानो वे किसी खाली गुफा में पत्थर फेंक रहे हों। अंत में, उन सभी ने हार मान ली और मालिक को रोज़ एक साधारण सा चिकन व्यंजन ही भेजने लगे। उनसे बस यही अपेक्षा की जाती थी।

17 नवंबर को, उसके बीसवें जन्मदिन पर, काम हमेशा की तरह शुरू हुआ। दोपहर से ही रुक-रुक कर बारिश हो रही थी और शाम होते-होते तेज बारिश होने लगी। शाम पाँच बजे मैनेजर ने कर्मचारियों को इकट्ठा किया और उन्हें दिन के खास व्यंजनों के बारे में बताया। वेटरों को उन्हें शब्दशः याद करना था और उन्हें किसी भी तरह की नकल करने की अनुमति नहीं थी: वील मिलानीज़, सार्डिन और पत्तागोभी से सजा पास्ता, चेस्टनट मूस। कभी-कभी मैनेजर ग्राहक बनकर उनसे सवाल पूछकर उनकी परीक्षा लेता था। फिर कर्मचारियों के खाने का समय आया: इस रेस्टोरेंट में काम करने वाले वेटर ग्राहकों के ऑर्डर लेते समय भूखे पेट नहीं रख सकते थे!

रेस्तरां सुबह छह बजे खुला, लेकिन भारी बारिश के कारण मेहमान देर से आए और कई बुकिंग रद्द करनी पड़ीं। महिलाएं नहीं चाहती थीं कि बारिश से उनके कपड़े खराब हों। मैनेजर चुपचाप इधर-उधर घूम रही थी और वेटर नमक-मिर्च के डिब्बे चमकाकर या शेफ से खाना पकाने के बारे में बातें करके समय बिता रहे थे। उसने मेज पर बैठे एक जोड़े को देखते हुए डाइनिंग रूम का जायजा लिया और छत पर लगे स्पीकरों से धीरे-धीरे बज रहे हार्सिचॉर्ड के संगीत को सुना। पतझड़ की बारिश की गहरी महक रेस्तरां में फैल रही थी।

साढ़े सात बज चुके थे जब मैनेजर को अचानक तबीयत खराब लगने लगी। वह लड़खड़ाते हुए एक कुर्सी पर जा बैठा और कुछ देर तक पेट दबाकर बैठा रहा, मानो उसे गोली लगी हो। उसके माथे पर चिपचिपा पसीना जमा हुआ था। उसने बुदबुदाते हुए कहा, "मुझे लगता है अस्पताल जाना चाहिए।" उसका बीमार पड़ना एक बहुत ही असामान्य घटना थी: दस साल पहले रेस्टोरेंट में काम शुरू करने के बाद से उसने कभी एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली थी। उसे इस बात पर गर्व था कि वह कभी बीमारी या चोट के कारण काम से अनुपस्थित नहीं रहा था, लेकिन उसके दर्द भरे चेहरे से साफ पता चल रहा था कि उसकी हालत बहुत खराब है।

वह छाता लेकर बाहर निकली और एक टैक्सी रोकी। एक वेटर ने मैनेजर को सहारा दिया और उसे पास के अस्पताल ले जाने के लिए उसके साथ कार में बैठ गया। टैक्सी में बैठने से पहले, मैनेजर ने धीमी और भारी आवाज़ में उससे कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम रात आठ बजे कमरा नंबर 604 में खाना पहुँचा दो। तुम्हें बस घंटी बजानी है, 'तुम्हारा खाना आ गया है' कहना है और उसे वहीं छोड़ देना है।"

“वह कमरा नंबर 604 है, है ना?” उसने कहा।
“ठीक आठ बजे,” उसने दोहराया। “बिल्कुल सही समय पर।” उसने फिर मुंह बनाया, गाड़ी में बैठा और टैक्सी उसे ले गई।



मैनेजर के जाने के बाद भी बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी और ग्राहक काफी देर-देर से आ रहे थे। एक समय में एक या दो से ज़्यादा टेबल भरी नहीं होती थीं, इसलिए अगर मैनेजर और एक वेटर को अनुपस्थित रहना पड़ता था, तो यही सही समय होता था। कभी-कभी इतनी भीड़ हो जाती थी कि पूरे स्टाफ के लिए भी काम संभालना मुश्किल हो जाता था।
जब मालिक का खाना आठ बजे तैयार हो गया, तो उसने रूम सर्विस कार्ट को लिफ्ट में धकेला और छठी मंजिल तक चली गई। उसका खाना हमेशा की तरह ही था: कॉर्क खुली हुई आधी बोतल रेड वाइन, एक गर्म कॉफी, उबली हुई सब्जियों के साथ चिकन, रोल और मक्खन। पके हुए चिकन की तेज़ खुशबू जल्दी ही छोटी सी लिफ्ट में फैल गई। यह बारिश की गंध के साथ मिल गई। लिफ्ट के फर्श पर पानी की बूँदें थीं, जिससे लग रहा था कि हाल ही में कोई गीली छतरी लेकर लिफ्ट में आया था।
उसने ठेला गलियारे में धकेला और उसे "604" लिखे दरवाजे के सामने रोक दिया। उसने अपनी याददाश्त पर फिर से गौर किया: 604। यही था। उसने गला साफ किया और घंटी बजा दी।
कोई जवाब नहीं आया। वह लगभग बीस सेकंड तक वहीं खड़ी रही। जैसे ही वह दोबारा घंटी बजाने की सोच रही थी, दरवाजा अंदर की ओर खुला और एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी प्रकट हुआ। वह उससे लगभग चार-पाँच इंच छोटा था। उसने गहरे रंग का सूट और टाई पहनी हुई थी। उसकी सफेद कमीज पर टाई अलग ही चमक रही थी, उसका भूरा-पीला रंग सूखे पत्तों जैसा लग रहा था। वह बहुत साफ-सुथरा दिख रहा था, उसके कपड़े एकदम इस्त्री किए हुए थे, उसके सफेद बाल सँवारे हुए थे: ऐसा लग रहा था जैसे वह रात में किसी समारोह में जाने वाला हो। उसकी भौंहों पर पड़ी गहरी झुर्रियों को देखकर उसे हवाई तस्वीर में दिख रही खाइयों की याद आ गई।

“आपका भोजन, महोदय,” उसने भारी आवाज़ में कहा, फिर धीरे से अपना गला साफ़ किया। तनाव होने पर उसकी आवाज़ भारी हो जाती थी।

"रात का खाना?"

"जी सर। मैनेजर अचानक बीमार पड़ गए। मुझे आज उनकी जगह काम करना पड़ा। आपका खाना, सर।"

“ओह, मैं समझ गया,” बूढ़े आदमी ने लगभग खुद से बात करते हुए कहा, उसका हाथ अभी भी दरवाजे के हैंडल पर टिका हुआ था। “बीमार पड़ गए थे, है ना? कमाल है।”

"अचानक उसके पेट में तेज दर्द होने लगा। वह अस्पताल गया। उसे लगता है कि उसे अपेंडिसाइटिस हो सकता है।"

“ओह, यह तो अच्छा नहीं है,” बूढ़े आदमी ने अपने माथे की झुर्रियों पर उंगलियां फेरते हुए कहा। “बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।”

उसने फिर से अपना गला साफ किया। "क्या मैं आपका खाना अंदर ले आऊं, महोदय?" उसने पूछा।

“जी हां, बिलकुल,” बूढ़े आदमी ने कहा। “जी हां, बिलकुल, अगर आप चाहें तो। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।”

अगर मैं चाहूँ? उसने सोचा। यह कहने का कितना अजीब तरीका है। मुझे क्या चाहना चाहिए? बूढ़े आदमी ने दरवाज़ा पूरा खोला और वह ठेला अंदर ले गई। फर्श पर छोटी-छोटी भूरे रंग की कालीन बिछी थी, जहाँ जूते उतारने की कोई जगह नहीं थी। पहला कमरा एक बड़ा अध्ययन कक्ष था, मानो यह अपार्टमेंट रहने की जगह से ज़्यादा एक कार्यस्थल हो। खिड़की से पास ही स्थित टोक्यो टावर दिखाई दे रहा था, जिसकी स्टील की संरचना रोशनी से जगमगा रही थी। खिड़की के पास एक बड़ी मेज रखी थी, और उसके बगल में एक छोटा सा सोफा और एक छोटी सी कुर्सी थी। बूढ़े आदमी ने सोफे के सामने रखी प्लास्टिक की लैमिनेट वाली कॉफी टेबल की ओर इशारा किया। उसने मेज पर उनका खाना लगाया: सफेद नैपकिन और चम्मच-कांटा, कॉफी पॉट और कप, वाइन और वाइन ग्लास, ब्रेड और मक्खन, और चिकन और सब्जियों की प्लेट।

"यदि आप कृपा करके हमेशा की तरह बर्तन हॉल में रख देंगे, महोदय, तो मैं एक घंटे में उन्हें लेने आ जाऊँगा।"

उसके शब्दों ने मानो उसे अपने भोजन के आनंदमय चिंतन से बाहर निकाल दिया। "ओह जी हाँ, बिल्कुल। मैं उन्हें हॉल में रख दूँगी। गाड़ी पर। एक घंटे में। अगर आप चाहें तो।"

हां, उसने मन ही मन जवाब दिया, फिलहाल तो मेरी यही इच्छा है। "क्या मैं आपके लिए कुछ और कर सकती हूं, महोदय?"

“नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,” उन्होंने कुछ देर सोचने के बाद कहा। उन्होंने काले रंग के चमकदार जूते पहने हुए थे। वे छोटे और स्टाइलिश थे। वह बहुत ही सलीके से कपड़े पहनते हैं, उसने सोचा। और अपनी उम्र के हिसाब से वे बहुत सीधे खड़े होते हैं।

"ठीक है, तो महोदय, मैं काम पर वापस जा रहा हूँ।"

“नहीं, बस एक पल रुकिए,” उन्होंने कहा।

"महोदय?"

"क्या आप मुझे पांच मिनट का समय दे सकती हैं, महोदया? मुझे आपसे कुछ कहना है।"

उसने इतनी विनम्रता से अनुरोध किया कि वह शरमा गई। "मुझे लगता है कि ठीक रहेगा," उसने कहा। "मेरा मतलब है, अगर सच में सिर्फ पांच मिनट की बात है तो।" आखिर वह उसका मालिक था। वह उसे प्रति घंटा के हिसाब से भुगतान कर रहा था। यह उसके समय देने या उसके समय लेने का सवाल नहीं था। और यह बूढ़ा आदमी ऐसा नहीं लग रहा था कि वह उसके साथ कुछ बुरा करेगा।

“वैसे, आपकी उम्र कितनी है?” बूढ़े व्यक्ति ने मेज के पास खड़े होकर, हाथ बांधकर और सीधे उसकी आँखों में देखते हुए पूछा।

“मैं अब बीस साल की हो गई हूँ,” उसने कहा।

“अब बीस,” उसने आँखें सिकोड़ते हुए दोहराया, मानो किसी दरार से झाँक रहा हो। “अब बीस। कब से?”

“जी हां, मैं अभी बीस साल की हुई हूं,” उसने कहा। कुछ पल हिचकिचाने के बाद उसने आगे कहा, “आज मेरा जन्मदिन है, महोदय।”

“अच्छा समझ गया,” उसने अपनी ठुड्डी सहलाते हुए कहा, मानो इससे उसे बहुत कुछ समझ आ गया हो। “आज है ना? आज तुम्हारा बीसवाँ जन्मदिन है?”

उसने सिर हिलाया।

“इस दुनिया में आपका जीवन ठीक बीस साल पहले आज ही के दिन शुरू हुआ था।”

“जी हां, श्रीमान,” उसने कहा, “यह सच है।”

“मैं समझ गया, मैं समझ गया,” उसने कहा। “यह बहुत बढ़िया है। अच्छा, तो जन्मदिन मुबारक हो।”

“बहुत-बहुत धन्यवाद,” उसने कहा, और फिर उसे एहसास हुआ कि पूरे दिन में यह पहली बार था जब किसी ने उसे जन्मदिन की शुभकामनाएँ दी थीं। बेशक, अगर उसके माता-पिता ने ओइटा से फोन किया होता, तो काम से घर लौटने पर उसे अपने आंसरिंग मशीन पर उनका संदेश मिल सकता था।

“वाह वाह, यह तो वाकई जश्न मनाने का मौका है,” उन्होंने कहा। “थोड़ा सा टोस्ट क्यों न करें? हम यह रेड वाइन पी सकते हैं।”

"धन्यवाद महोदय, लेकिन मैं नहीं कर सकता, मैं अभी काम कर रहा हूँ।"

“अरे, एक घूंट पीने में क्या हर्ज है? अगर मैं कहूँ कि ठीक है, तो कोई आपको दोष नहीं देगा। बस जश्न मनाने के लिए एक छोटा सा घूंट।”

बूढ़े आदमी ने बोतल का ढक्कन खोला और उसके लिए अपने गिलास में थोड़ी सी शराब डाली। फिर उसने कांच के दरवाजे वाली अलमारी से एक साधारण गिलास निकाला और अपने लिए थोड़ी शराब डाली।

“जन्मदिन मुबारक हो,” उन्होंने कहा। “आपका जीवन समृद्ध और फलदायी हो, और आपके जीवन पर कोई भी अंधकारमय साया न पड़े।”

उन्होंने गिलास आपस में टकराए।

ऐसा न हो कि इस पर कोई अंधकारमय साया पड़े: उसने मन ही मन उसकी बात दोहराई। उसने उसके जन्मदिन की शुभकामना के लिए इतने अटपटे शब्द क्यों चुने थे?

“आपका बीसवां जन्मदिन जीवन में केवल एक बार आता है, महोदया। यह एक अनमोल दिन है।”

"जी सर, मुझे पता है," उसने वाइन का एक सावधानीपूर्वक घूंट लेते हुए कहा।
और आज, आपके इस खास दिन पर, आपने एक दयालु परी की तरह मेरा खाना मुझ तक पहुंचाने की जहमत उठाई है।
"मैं बस अपना काम कर रहा हूँ, महोदय।"
"लेकिन फिर भी," बूढ़े आदमी ने सिर को कुछ बार जल्दी से हिलाते हुए कहा। "लेकिन फिर भी, प्यारी युवती।"
बूढ़ा आदमी अपनी मेज के पास चमड़े की कुर्सी पर बैठ गया और उसे सोफे पर बैठने का इशारा किया। वह धीरे से सोफे के किनारे पर बैठ गई, उसके हाथ में अभी भी शराब का गिलास था। घुटने सीधे करके उसने अपनी स्कर्ट को खींचा और फिर से गला साफ किया। उसने खिड़की के शीशे पर बारिश की बूंदों को लकीरें बनाते देखा। कमरा अजीब तरह से शांत था।
"आज संयोग से तुम्हारा बीसवाँ जन्मदिन है, और ऊपर से तुम मेरे लिए यह स्वादिष्ट गरमा गरम खाना भी लाए हो," बूढ़े आदमी ने मानो स्थिति की पुष्टि करते हुए कहा। फिर उसने अपना गिलास हल्के से पटक दिया। "यह तो किसी खास संयोग की बात है, तुम्हें नहीं लगता?"
पूरी तरह आश्वस्त न होते हुए भी, उसने सिर हिलाकर सहमति जताई।
"इसीलिए," उसने अपनी मुरझाई हुई पत्ती के रंग की टाई की गांठ को छूते हुए कहा, "मुझे लगता है कि आपको जन्मदिन का उपहार देना मेरे लिए महत्वपूर्ण है। एक खास जन्मदिन पर एक खास यादगार उपहार तो बनता ही है।"
घबराकर उसने सिर हिलाया और कहा, "नहीं, महोदय, इस बारे में दोबारा मत सोचिए। मैंने तो बस आपका खाना उसी तरह लाया है जैसे उन्होंने मुझे आदेश दिया था।"
बूढ़े आदमी ने दोनों हाथ ऊपर उठाए, हथेलियाँ उसकी ओर थीं। "नहीं, कुमारी, इस बारे में ज़्यादा मत सोचो। जिस तरह के 'उपहार' के बारे में मैं सोच रहा हूँ, वह कोई भौतिक वस्तु नहीं है, न ही कोई ऐसी चीज़ है जिसकी कोई कीमत हो। सीधे शब्दों में कहूँ तो"—उसने अपने हाथ मेज पर रखे और एक लंबी, धीमी साँस ली—"तुम्हारी जैसी प्यारी परी के लिए मैं जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि तुम्हारी कोई इच्छा पूरी कर दूँ, तुम्हारी कोई भी इच्छा पूरी कर दूँ। कुछ भी। तुम्हारी कोई भी इच्छा—बशर्ते कि तुम्हारी कोई इच्छा हो।"

“एक इच्छा?” उसने सूखे गले से पूछा।
“आपकी कोई इच्छा हो, महोदया। अगर आपकी कोई इच्छा हो—सिर्फ एक इच्छा, तो मैं उसे पूरा कर दूंगा। यही वो जन्मदिन का तोहफा है जो मैं आपको दे सकता हूं। लेकिन आप इस बारे में बहुत सोच-समझकर फैसला लें, क्योंकि मैं सिर्फ एक ही इच्छा पूरी कर सकता हूं।” उन्होंने उंगली उठाई। “सिर्फ एक। बाद में आप अपना मन नहीं बदल सकतीं और इसे वापस नहीं ले सकतीं।”
वह कुछ कह नहीं पा रही थी। एक इच्छा? हवा के झोंकों से बारिश की बूँदें खिड़की के शीशे पर अनियमित रूप से पड़ रही थीं। जब तक वह चुप रही, बूढ़ा आदमी उसकी आँखों में देखता रहा, कुछ नहीं बोला। समय की अनियमित धड़कन उसके कानों में गूंज रही थी।
"क्या मुझे किसी चीज की कामना करनी होगी, और वह पूरी हो जाएगी?"
उसके सवाल का जवाब देने के बजाय, बूढ़े आदमी ने—हाथ अभी भी मेज पर अगल-बगल रखे हुए—बस मुस्कुरा दिया। उसने यह बड़े ही स्वाभाविक और सौहार्दपूर्ण तरीके से किया।
“क्या आपकी कोई इच्छा है, महोदया—या नहीं?” उन्होंने विनम्रता से पूछा।



“यह सचमुच हुआ था,” उसने मेरी ओर सीधे देखते हुए कहा। “मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ।”
“बिल्कुल नहीं,” मैंने कहा। वह ऐसी इंसान नहीं थी जो मनगढ़ंत कहानियाँ बना दे। “तो...क्या तुमने कोई इच्छा माँगी?”
वह कुछ देर तक मुझे देखती रही, फिर एक हल्की सी आह भरी। “मुझे गलत मत समझिए,” उसने कहा। “मैं भी उसकी बात को पूरी तरह गंभीरता से नहीं ले रही थी। मतलब, बीस साल की उम्र में आप किसी परीकथा की दुनिया में तो नहीं जी रहे होते। लेकिन अगर यही उसका मज़ाक था, तो मैं उसकी तारीफ़ करती हूँ कि उसने मौके पर ही ऐसा सोचा। वह एक सलीकेदार बूढ़ा आदमी था जिसकी आँखों में चमक थी, इसलिए मैंने भी उसके साथ मज़ाक करने का फैसला किया। आख़िरकार, आज मेरा बीसवाँ जन्मदिन था: मैंने सोचा कि उस दिन मेरे साथ कुछ असाधारण होना चाहिए। यकीन करने या न करने का सवाल ही नहीं था।”
मैंने बिना कुछ कहे सिर हिला दिया।

"मुझे यकीन है कि आप समझ सकते हैं कि मुझे कैसा महसूस हुआ। मेरा बीसवां जन्मदिन बिना किसी खास आयोजन के खत्म हो रहा था, किसी ने मुझे जन्मदिन की बधाई नहीं दी, और मैं बस लोगों की मेजों पर एंकोवी सॉस के साथ टोर्टेलिनी परोस रहा था।"
मैंने फिर सिर हिलाया। “चिंता मत करो,” मैंने कहा। “मैं समझता हूँ।”
"तो मैंने एक इच्छा मांगी।"



बूढ़े आदमी की निगाहें उस पर टिकी हुई थीं, वह कुछ नहीं बोला, उसके हाथ अभी भी मेज पर थे। मेज पर कई मोटी फाइलें भी थीं जो शायद हिसाब-किताब की किताबें थीं, साथ ही लिखने का सामान, एक कैलेंडर और हरे रंग के शेड वाला एक लैंप भी था। उनके बीच पड़े उसके छोटे हाथ मेज की सजावट की ही तरह लग रहे थे। बारिश की बूँदें खिड़की पर लगातार पड़ रही थीं, और टूटती हुई बूँदों से छनकर टोक्यो टावर की रोशनी दिखाई दे रही थी।
बूढ़े आदमी के माथे की झुर्रियाँ थोड़ी और गहरी हो गईं। "क्या यही आपकी इच्छा है?"
“हां,” उसने कहा। “यही मेरी इच्छा है।”
“तुम्हारी उम्र की लड़की के लिए यह थोड़ा असामान्य है,” उसने कहा। “मुझे कुछ अलग उम्मीद थी।”
“अगर यह ठीक नहीं है, तो मैं कुछ और चाहूँगी,” उसने गला साफ़ करते हुए कहा। “मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं कुछ और सोच लूँगी।”
“नहीं, नहीं,” बूढ़े आदमी ने अपने हाथ झंडे की तरह लहराते हुए कहा। “इसमें कुछ भी गलत नहीं है, बिलकुल भी नहीं। बस थोड़ा आश्चर्य हो रहा है, मैडम। क्या आपके पास कोई और इच्छा नहीं है? जैसे, मान लीजिए, आप और सुंदर, या बुद्धिमान, या अमीर बनना चाहती हैं: क्या आप ऐसी किसी चीज की इच्छा न करने में ठीक हैं—ऐसी इच्छा जो एक आम लड़की करती है?”
सही शब्द ढूंढने में उसे कुछ पल लगे। बूढ़ा आदमी बस इंतजार करता रहा, कुछ नहीं बोला, उसके हाथ फिर से मेज पर एक साथ टिके हुए थे।

“बेशक मैं और खूबसूरत, और बुद्धिमान या और अमीर बनना चाहूँगी। लेकिन मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि अगर इनमें से कोई भी बात सच हो जाए तो मेरा क्या होगा। शायद ये मेरे बस की बात न हो। मुझे अब भी ठीक से नहीं पता कि ज़िंदगी क्या होती है। मुझे नहीं पता कि ये कैसे चलती है।”

“मैं समझ गया,” बूढ़े आदमी ने अपनी उंगलियों को आपस में फंसाते और फिर अलग करते हुए कहा। “मैं समझ गया।”

तो क्या मेरी यह इच्छा जायज़ है?

“बिल्कुल,” उन्होंने कहा। “बिल्कुल। मुझे इसमें कोई परेशानी नहीं है।”

बूढ़े आदमी की निगाहें अचानक हवा में एक बिंदु पर टिक गईं। उनके माथे की झुर्रियाँ और गहरी हो गईं: शायद ये उनके दिमाग की झुर्रियाँ थीं जो उनके विचारों में लीन थीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी चीज़ को घूर रहे हों—शायद हवा में तैरते हुए लगभग अदृश्य रुई के टुकड़े। उन्होंने अपनी बाहें चौड़ी कीं, कुर्सी से थोड़ा उठे और सूखी आवाज़ के साथ हथेलियों को आपस में टकराया। कुर्सी पर वापस बैठते हुए, उन्होंने धीरे से अपनी उंगलियों को अपने माथे की झुर्रियों पर फेरा, मानो उन्हें नरम कर रहे हों, और फिर एक कोमल मुस्कान के साथ उसकी ओर मुड़े।

“बस यही काफी था,” उसने कहा। “तुम्हारी मनोकामना पूरी हो गई।”

"पहले से?"

जी हां, कोई परेशानी नहीं हुई। आपकी इच्छा पूरी हो गई है, प्यारी मैडम। जन्मदिन मुबारक हो। अब आप काम पर जा सकती हैं। चिंता मत कीजिए, मैं गाड़ी को हॉल में रख दूंगा।

वह लिफ्ट से नीचे रेस्तरां तक गई। अब खाली हाथ होने के बावजूद, उसे अजीब तरह से हल्कापन महसूस हो रहा था, मानो वह किसी रहस्यमय रुई पर चल रही हो।

“क्या तुम ठीक हो? तुम खोई-खोई सी लग रही हो,” युवा वेटर ने उससे कहा।

उसने उसे एक अस्पष्ट मुस्कान दी और सिर हिलाया। "ओह, सच में? नहीं, मैं ठीक हूँ।"

“मुझे मालिक के बारे में बताओ। वह कैसा है?”

"मुझे नहीं पता, मैंने उसे ठीक से नहीं देखा," उसने बातचीत को बीच में ही रोकते हुए कहा।

एक घंटे बाद वह ठेला नीचे लाने गई। ठेला हॉल में रखा था, बर्तन अपनी जगह पर थे। उसने ढक्कन उठाया तो देखा कि चिकन और सब्जियां गायब थीं। शराब की बोतल और कॉफी पॉट खाली थे। कमरा नंबर 604 का दरवाजा बंद और भावहीन खड़ा था। वह कुछ देर तक उसे देखती रही, उसे लगा कि वह किसी भी क्षण खुल सकता है, लेकिन वह नहीं खुला। वह लिफ्ट से ठेला नीचे लाई और उसे डिशवॉशर में रख दिया। शेफ ने प्लेट को खाली निगाहों से देखा: हमेशा की तरह खाली।



“मैंने मालिक को फिर कभी नहीं देखा,” उसने कहा। “एक बार भी नहीं। मैनेजर को बस मामूली पेट दर्द था और वह अगले दिन खुद ही मालिक के लिए खाना पहुंचाने चला गया। मैंने नए साल के बाद नौकरी छोड़ दी और तब से उस जगह पर कभी वापस नहीं गई। पता नहीं, मुझे बस ऐसा लगा कि वहां न जाना ही बेहतर है, जैसे कोई पूर्वाभास हो।”

वह कागज़ के एक कोस्टर से खेल रही थी और अपने विचारों में खोई हुई थी। “कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि मेरे बीसवें जन्मदिन पर जो कुछ भी हुआ, वह एक तरह का भ्रम था। ऐसा लगता है जैसे कुछ ऐसा हुआ हो जिससे मुझे लगे कि कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं जो वास्तव में कभी हुई ही नहीं थीं। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि वे सब घटी थीं। मुझे आज भी कमरा नंबर 604 के हर फर्नीचर और हर छोटी-मोटी चीज़ की स्पष्ट छवियाँ याद हैं। वहाँ मेरे साथ जो कुछ भी हुआ, वह सचमुच हुआ था, और उसका मेरे लिए बहुत महत्व भी था।”

हम दोनों चुपचाप अपने-अपने पेय पीते रहे और अपने-अपने विचारों में खोए रहे।

“क्या मैं आपसे एक बात पूछ सकता हूँ?” मैंने पूछा। “या, अधिक सटीक रूप से, दो बातें।”

“ज़रूर पूछिए,” उसने कहा। “मुझे लगता है कि आप मुझसे पूछेंगे कि मैंने उस समय क्या इच्छा की थी। यही पहली बात है जो आप जानना चाहते हैं।”

लेकिन ऐसा लगता है कि आप इस बारे में बात नहीं करना चाहते।

"क्या यह?"

मेंने सिर हिलाया।

उसने कोस्टर नीचे रख दिया और दूर किसी चीज़ को घूरते हुए अपनी आँखें सिकोड़ लीं। "तुम्हें पता है, किसी को भी अपनी इच्छा नहीं बतानी चाहिए।"

मैंने कहा, "मैं तुमसे जबरदस्ती नहीं पूछूंगा। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि तुम्हारी इच्छा पूरी हुई या नहीं। और यह भी कि तुम्हारी इच्छा चाहे जो भी रही हो, क्या तुम्हें बाद में उस इच्छा को लेकर पछतावा हुआ? क्या तुम्हें कभी इस बात का अफसोस हुआ कि तुमने कुछ और क्यों नहीं मांगा?"

पहले सवाल का जवाब हां भी है और ना भी। शायद अभी मुझे काफी लंबा जीवन जीना बाकी है। मैंने अभी तक यह नहीं देखा है कि अंत तक चीजें कैसे आगे बढ़ेंगी।

"तो यह एक ऐसी इच्छा थी जिसे पूरा होने में समय लगता है?"

“आप ऐसा कह सकते हैं। समय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।”

“जैसे कि कुछ खास व्यंजन पकाने में?”

उसने सिर हिलाया।

मैंने एक पल के लिए इसके बारे में सोचा, लेकिन मेरे दिमाग में केवल एक विशालकाय पाई की छवि आई जो धीमी आंच पर ओवन में धीरे-धीरे पक रही थी।

और मेरे दूसरे प्रश्न का उत्तर?

“वो क्या था?”

क्या आपको कभी अपनी इच्छा के चुनाव पर पछतावा हुआ है?

कुछ क्षणों का सन्नाटा छा गया। उसकी निगाहें मुझ पर इस कदर टिकी थीं कि मानो उनमें कोई गहराई ही न हो। उसके होठों के कोनों पर एक फीकी सी मुस्कान झलक रही थी, मानो वह किसी तरह की खामोश निराशा का भाव दिखा रही हो।

“अब मेरी शादी हो चुकी है,” उसने कहा। “मेरे पति एक चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीपीए) हैं जो मुझसे तीन साल बड़े हैं। मेरे दो बच्चे हैं, एक लड़का और एक लड़की। हमारे पास एक आयरिश सेटर कुत्ता है। मैं ऑडी चलाती हूँ और अपनी सहेलियों के साथ हफ्ते में दो बार टेनिस खेलती हूँ। यही मेरी आज की जिंदगी है।”

मैंने कहा, "मुझे तो यह काफी अच्छा लग रहा है।"

"क्या होगा अगर ऑडी के बम्पर पर दो डेंट हों?"

"अरे, बंपर तो डेंट लगने के लिए ही बने होते हैं।"

“यह एक बढ़िया बम्पर स्टिकर बन सकता है,” उसने कहा। “‘बम्पर तो डेंट मारने के लिए ही होते हैं’”

जब उसने यह कहा तो मैंने उसके मुंह की तरफ देखा।

“मैं तुम्हें बस यही कहना चाहती हूँ,” उसने अपने कान के निचले हिस्से को खुजाते हुए धीरे से कहा। उसका कान का निचला हिस्सा बेहद खूबसूरत था। “चाहे वे कुछ भी चाहें, चाहे वे कितनी भी दूर चले जाएँ, इंसान हमेशा वही होता है जो वह है। बस यही बात है।”

मैंने कहा, "एक और बढ़िया बम्पर स्टिकर है। 'लोग चाहे कितनी भी दूर चले जाएं, वे हमेशा खुद ही होते हैं।'"

वह खुलकर हंसी, मानो खुशी का इजहार कर रही हो, और परछाई गायब हो गई।

उसने अपनी कोहनी बार पर टिकाई और मेरी तरफ देखा। "बताओ," उसने कहा। "अगर तुम मेरी जगह होते तो क्या कामना करते?"

"मेरा मतलब है, मेरे बीसवें जन्मदिन की रात को?"

"अहां।"

मैंने इस बारे में सोचने के लिए कुछ समय लिया, लेकिन मुझे एक भी इच्छा समझ में नहीं आई।

मैंने स्वीकार किया, "मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा है। मेरा बीसवां जन्मदिन अब बहुत दूर है।"

"क्या आपको सच में कुछ सूझ नहीं रहा?"

मेंने सिर हिलाया।

“एक भी चीज नहीं?”

“बिल्कुल भी नहीं।”

उसने फिर से मेरी आँखों में सीधे देखा और कहा, "ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम पहले ही अपनी इच्छा बता चुके हो।"



“परी, मेरी प्यारी नन्ही परी, इस बारे में बहुत सोच-समझकर फैसला लेना, क्योंकि मैं तुम्हें सिर्फ एक ही वरदान दे सकता हूँ।” अंधेरे में कहीं, मुरझाई हुई पत्ती के रंग की टाई पहने एक बूढ़ा आदमी उंगली उठाता है। “सिर्फ एक। बाद में तुम अपना मन नहीं बदल सकती और इसे वापस नहीं ले सकती।”

— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

न्यूयॉर्क खनन आपदा

मेरे एक दोस्त को तूफ़ान आने पर चिड़ियाघर जाने की आदत है। वह पिछले दस सालों से ऐसा कर रहा है। ऐसे समय में जब ज़्यादातर लोग अपने घर की खिड़कियाँ बंद कर रहे होते हैं, मिनरल वाटर का स्टॉक जमा करने के लिए बाहर भाग रहे होते हैं, या यह जाँच रहे होते हैं कि उनके रेडियो और टॉर्च काम कर रहे हैं या नहीं, मेरा दोस्त वियतनाम युद्ध के समय के सेना के पुराने रेनकोट में लिपटा हुआ, जेब में बीयर के कुछ कैन भरता है और निकल पड़ता है। उसका घर लगभग पंद्रह मिनट की पैदल दूरी पर है।

अगर उसकी किस्मत खराब रही तो चिड़ियाघर "खराब मौसम के कारण" बंद होगा और उसके द्वार ताला लगे होंगे। ऐसा होने पर मेरा दोस्त प्रवेश द्वार के पास बनी गिलहरी की पत्थर की मूर्ति पर बैठ जाता है, अपनी गुनगुनी बीयर पीता है और फिर घर वापस चला जाता है।

लेकिन जब वह समय पर वहाँ पहुँच जाता है, तो प्रवेश शुल्क अदा करता है, एक भीगी हुई सिगरेट जलाता है और एक-एक करके जानवरों का जायजा लेता है। उनमें से अधिकांश अपने आश्रयों में लौट चुके हैं। कुछ बारिश को खाली निगाहों से घूर रहे हैं। अन्य अधिक जीवंत हैं, तेज हवाओं में उछल-कूद कर रहे हैं। कुछ बैरोमेट्रिक दबाव में अचानक गिरावट से भयभीत हैं; अन्य हिंसक हो जाते हैं।

मेरा दोस्त अपनी पहली बियर बंगाल टाइगर के पिंजरे के सामने ही पीता है। (तूफान में बंगाल टाइगर सबसे ज़्यादा हिंसक प्रतिक्रिया देते हैं।) दूसरी बियर वह गोरिल्ला के पिंजरे के बाहर पीता है। ज़्यादातर समय गोरिल्ला तूफान से ज़रा भी परेशान नहीं होते। वे उसे शांत भाव से देखते रहते हैं, जब वह कंक्रीट के फर्श पर जलपरी की तरह बैठकर अपनी बियर पीता है, और ऐसा लगता है मानो उन्हें उस पर तरस आ रहा हो।

"यह ऐसा है जैसे आप किसी लिफ्ट में हों और वह खराब हो जाए और आप अजनबियों के साथ अंदर फंस जाएं," मेरा दोस्त मुझसे कहता है।

तूफ़ानों को छोड़ दें तो मेरा दोस्त बाकी लोगों से अलग नहीं है। वह एक निर्यात कंपनी में काम करता है, जहाँ वह विदेशी निवेशों का प्रबंधन करता है। यह कोई बहुत बड़ी कंपनी तो नहीं है, लेकिन कामचलाऊ है। वह एक छोटे से साफ़-सुथरे अपार्टमेंट में अकेला रहता है और हर छह महीने में उसकी एक नई गर्लफ्रेंड होती है। मुझे कभी समझ नहीं आया कि वह हर छह

महीने में एक नई गर्लफ्रेंड क्यों चाहता है (और हमेशा ठीक छह महीने ही होते हैं)। सारी लड़कियाँ एक जैसी दिखती हैं, मानो एक-दूसरे की हूबहू कॉपी हों। मैं उनमें फ़र्क नहीं कर पाता।

मेरे दोस्त के पास एक बढ़िया पुरानी कार, बाल्ज़ाक की सभी रचनाएँ और एक काला सूट, काली टाई और काले जूते हैं जो अंतिम संस्कार में जाने के लिए एकदम सही हैं। जब भी किसी की मृत्यु होती है, मैं उसे फोन करके पूछता हूँ कि क्या मैं उन्हें उधार ले सकता हूँ, भले ही वे जूते मेरे लिए एक साइज़ बड़े हों।

मैंने आखिरी बार फोन करते समय कहा, "आपको फिर से परेशान करने के लिए क्षमा करें। एक और अंतिम संस्कार का कार्यक्रम आ गया है।"

“आप खुद ही ले लीजिए। आपको जल्दी होगी,” उसने जवाब दिया। “आप अभी क्यों नहीं आ जाते?”

जब मैं पहुंचा, तो सूट और टाई मेज पर करीने से इस्त्री किए हुए रखे थे, जूते पॉलिश किए हुए थे, और फ्रिज आयातित बीयर से भरा हुआ था। वह इसी तरह का आदमी है।

"पिछले दिनों मैंने चिड़ियाघर में एक बिल्ली देखी," उसने बीयर की बोतल खोलते हुए कहा।

“एक बिल्ली?”

“हां, दो हफ्ते पहले। मैं व्यापार के सिलसिले में होक्काइडो में था और अपने होटल के पास एक चिड़ियाघर में गया। वहां एक पिंजरे में एक बिल्ली सो रही थी, जिस पर 'बिल्ली' लिखा हुआ था।”

“किस तरह की बिल्ली?”

“बस एक साधारण सा। भूरी धारियाँ, छोटी पूंछ। और अविश्वसनीय रूप से मोटा। यह बस एक तरफ लुढ़क गया और वहीं पड़ा रहा।”

"होक्काइडो में शायद बिल्लियाँ इतनी आम नहीं हैं।"

“क्या तुम मजाक कर रहे हो?” उसने हैरानी से पूछा। “होक्काइडो में बिल्लियाँ जरूर होंगी। वे इतनी असामान्य तो नहीं हो सकतीं।”

“अच्छा, इसे दूसरे तरीके से देखो: चिड़ियाघर में बिल्लियाँ क्यों नहीं हो सकतीं?” मैंने कहा। “वे भी तो जानवर ही हैं, है ना?”

उन्होंने कहा, “बिल्लियाँ और कुत्ते आम जानवर हैं। इन्हें देखने के लिए कोई पैसे नहीं देगा। बस अपने आस-पास देखिए—ये हर जगह हैं। लोगों के साथ भी यही बात लागू होती है।”
जब हमने छह कैन खत्म कर लिए, तो मैंने सूट, टाई और जूतों का डिब्बा एक बड़े कागज के थैले में रख दिया।
मैंने कहा, "आपको बार-बार ऐसा करने के लिए माफ़ करना। मुझे पता है कि मुझे अपना सूट खुद खरीदना चाहिए, लेकिन किसी न किसी तरह मैं कभी ऐसा कर ही नहीं पाता। मुझे लगता है कि अगर मैं अंतिम संस्कार के कपड़े खरीदता हूँ तो मैं यह कह रहा हूँ कि किसी की मृत्यु होना ठीक है।"
“कोई बात नहीं,” उसने कहा। “वैसे भी मैं इनका इस्तेमाल नहीं कर रहा हूँ। इन्हें अलमारी में लटकाए रखने से बेहतर है कि कोई और इनका इस्तेमाल करे, है ना?”
यह सच था कि सूट मिलने के बाद से तीन वर्षों में उसने इसे शायद ही कभी पहना था।
उन्होंने बताया, "यह अजीब बात है, लेकिन जब से मैंने यह सूट खरीदा है, मेरे जानने वालों में से किसी की भी मौत नहीं हुई है।"
"यह इस तरह से होता है।"
“हां, ऐसा ही होता है,” उन्होंने कहा।



मेरे लिए, वह साल अंत्येष्टि का साल था। दोस्त और पुराने दोस्त एक के बाद एक मरते चले गए, जैसे सूखे में भुट्टे सूख जाते हैं। मैं अट्ठाईस साल का था। मेरे सभी दोस्त लगभग एक ही उम्र के थे—सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस। मरने के लिए यह उम्र बिल्कुल भी सही नहीं थी।
एक कवि इक्कीस साल की उम्र में मर सकता है, एक क्रांतिकारी या एक रॉक स्टार चौबीस साल की उम्र में। लेकिन उसके बाद आप मान लेते हैं कि सब ठीक हो जाएगा। आप मौत के मोड़ को पार कर चुके हैं और सुरंग से बाहर निकल चुके हैं, छह लेन वाले राजमार्ग पर सीधे अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रहे हैं—चाहे आप चाहें या न चाहें। आप बाल कटवाते हैं; हर सुबह दाढ़ी बनाते हैं। आप अब कवि नहीं हैं, न ही क्रांतिकारी और न ही रॉक स्टार। आप फोन बूथ में नशे में धुत होकर बेहोश नहीं होते या सुबह चार बजे द डोर्स के गाने नहीं बजाते। इसके

बजाय, आप अपने दोस्त की कंपनी से जीवन बीमा खरीदते हैं, होटल बार में शराब पीते हैं, और टैक्स में छूट पाने के लिए अपने दांतों के इलाज के बिल संभाल कर रखते हैं। अट्ठाईस साल की उम्र में, यह सब सामान्य है।

लेकिन तभी अचानक नरसंहार शुरू हो गया। यह किसी सुस्त बसंत के दिन अचानक हुए हमले जैसा था—जैसे किसी आध्यात्मिक पहाड़ी की चोटी पर बैठे किसी व्यक्ति ने, हाथ में जादुई मशीन गन लिए, हम पर गोलियों की बौछार कर दी हो। एक पल पहले हम कपड़े बदल रहे थे, और अगले ही पल वे हमें फिट नहीं आ रहे थे: आस्तीनें उल्टी हो गई थीं, और हमारा एक पैर एक पैंट में था, दूसरा दूसरी में। पूरी तरह से अस्त-व्यस्त।

लेकिन मौत यही तो है। खरगोश चाहे टोपी से निकले या गेहूं के खेत से, खरगोश ही रहता है। गर्म भट्टी तो गर्म भट्टी ही रहती है, और चिमनी से उठता काला धुआं तो काला धुआं ही होता है।

वास्तविकता और अवास्तविकता (या अवास्तविकता और वास्तविकता) के बीच संतुलन बनाने वाला पहला व्यक्ति कॉलेज का मेरा एक दोस्त था जो एक जूनियर हाई स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाता था। उसकी शादी को तीन साल हो चुके थे और उसकी पत्नी बच्चे को जन्म देने के लिए शिकोकू में अपने माता-पिता के घर वापस चली गई थी।

जनवरी के महीने में एक असामान्य रूप से गर्म रविवार की दोपहर को, वह एक डिपार्टमेंटल स्टोर गया और शेविंग क्रीम के दो डिब्बे और एक जर्मन निर्मित चाकू खरीदा, जो इतना बड़ा था कि उससे हाथी का कान भी काटा जा सकता था। वह घर लौटा और नहाने के लिए पानी भरा। उसने फ्रिज से बर्फ निकाली, स्कॉच की एक बोतल पी, टब में घुसा और अपनी कलाई काट ली। उसकी माँ को दो दिन बाद शव मिला। पुलिस आई और कई तस्वीरें लीं। खून से बाथटब का रंग टमाटर के रस जैसा हो गया था। पुलिस ने इसे आत्महत्या करार दिया। आखिर, दरवाजे बंद थे और, ज़ाहिर है, मृतक ने चाकू खुद खरीदा था। लेकिन उसने शेविंग क्रीम के दो डिब्बे क्यों खरीदे जिनका इस्तेमाल करने का उसका कोई इरादा नहीं था? यह किसी को नहीं पता था।

शायद डिपार्टमेंट स्टोर में रहते हुए उसे यह एहसास नहीं हुआ था कि कुछ ही घंटों में उसकी मौत हो जाएगी। या शायद उसे डर था कि कैशियर को पता चल जाएगा कि वह आत्महत्या करने जा रहा है।

उन्होंने न तो वसीयत छोड़ी और न ही विदाई का कोई संदेश। रसोई की मेज पर केवल एक गिलास, खाली व्हिस्की की बोतल और बर्फ का कटोरा, और शेविंग क्रीम के दो डिब्बे पड़े थे। बाथटब भरने का इंतज़ार करते हुए, वह एक के बाद एक कई गिलास हाइग व्हिस्की पी रहे थे, और शायद उन डिब्बों को घूरते हुए मन ही मन सोच रहे थे कि अब मुझे कभी शेव नहीं करनी पड़ेगी।

अट्ठाईस वर्ष की आयु में किसी व्यक्ति की मृत्यु उतनी ही दुखद होती है जितनी सर्दियों की बारिश।



अगले बारह महीनों के दौरान चार और लोगों की मौत हो गई।

एक व्यक्ति की मार्च में सऊदी अरब या कुवैत के एक तेल क्षेत्र में हुई दुर्घटना में मृत्यु हो गई, और दो अन्य की जून में मृत्यु हो गई - एक की हृदय गति रुकने से और दूसरी की सड़क दुर्घटना में। जुलाई से नवंबर तक शांति बनी रही, लेकिन फिर दिसंबर में एक और मित्र की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

मेरे पहले दोस्त के विपरीत, जिसने आत्महत्या कर ली थी, इन दोस्तों को यह एहसास होने का समय ही नहीं मिला कि वे मर रहे हैं। उनके लिए यह ऐसा था जैसे वे उस सीढ़ी पर चढ़ रहे हों जिस पर वे पहले लाखों बार चढ़ चुके थे और अचानक उन्हें पता चले कि एक पायदान गायब है।

“क्या तुम मेरे लिए बिस्तर लगा दोगी?” दिल का दौरा पड़ने से मरने वाले दोस्त ने अपनी पत्नी से पूछा था। वह फर्नीचर डिज़ाइनर थे। सुबह के ग्यारह बज रहे थे। वह नौ बजे उठे, अपने कमरे में थोड़ी देर काम किया और फिर नींद आने लगी। वह रसोई में गए, कॉफी बनाई और पी ली। लेकिन कॉफी से कोई आराम नहीं मिला। “मुझे लगता है मैं थोड़ी देर सो जाऊँगा,”

उन्होंने कहा। “मेरे सिर के पिछले हिस्से में भनभनाहट की आवाज़ आ रही है।” ये उनके आखिरी शब्द थे। वह बिस्तर पर लेट गए, सो गए और फिर कभी नहीं उठे।

दिसंबर में जिस दोस्त की मृत्यु हुई, वह सबसे छोटी और इकलौती महिला थी। वह चौबीस साल की थी, मानो किसी क्रांतिकारी या रॉक स्टार जैसी। क्रिसमस से ठीक पहले एक ठंडी बरसात वाली रात को, एक बीयर डिलीवरी ट्रक और कंक्रीट के टेलीफोन के खंभे के बीच की उस दुखद लेकिन आम सी जगह में कुचलकर उसकी जान चली गई।



आखिरी अंत्येष्टि के कुछ दिनों बाद, मैं अपने दोस्त के अपार्टमेंट में वह सूट लौटाने गया, जिसे मैंने ड्राई क्लीनर से लिया था, और उसे धन्यवाद के रूप में व्हिस्की की एक बोतल देने गया।

“बहुत-बहुत आभारी हूँ। मैं वास्तव में इसकी सराहना करता हूँ,” मैंने कहा।

हमेशा की तरह, उसका फ्रिज ठंडी बीयर से भरा हुआ था, और उसके आरामदायक सोफे पर सूरज की हल्की किरण पड़ रही थी। कॉफी टेबल पर एक साफ ऐशट्रे और क्रिसमस पॉइन्सेटिया के फूलों का एक गमला रखा था।

उसने मुझसे प्लास्टिक कवर में लिपटा हुआ सूट लिया, उसकी हरकतें धीमी थीं—जैसे कोई भालू शीतनिद्रा से बाहर आ रहा हो—और चुपचाप उसे रख दिया।

मैंने कहा, "मुझे उम्मीद है कि सूट से किसी अंतिम संस्कार जैसी बदबू नहीं आ रही होगी।"

“कपड़े महत्वपूर्ण नहीं हैं। असली समस्या तो उनके अंदर की चीज है।”

“उम,” मैंने धीरे से कहा।

“इस साल तुम्हारे लिए एक के बाद एक अंत्येष्टि है,” उसने सोफे पर लेटते हुए और गिलास में बीयर डालते हुए कहा। “कुल कितनी?”

मैंने अपने बाएं हाथ की उंगलियां फैलाते हुए कहा, "पांच। लेकिन मुझे लगता है कि यही सही संख्या है।"

"क्या आपको यकीन है?"

"काफी लोग मर चुके हैं।"

“ये पिरामिडों के श्राप जैसा कुछ है,” उन्होंने कहा। “मुझे याद है मैंने कहीं पढ़ा था। ये श्राप तब तक जारी रहता है जब तक काफी लोग मर नहीं जाते। या फिर आकाश में एक लाल तारा दिखाई देता है और चंद्रमा की छाया सूर्य को ढक लेती है।”
छह कैन खत्म करने के बाद, हमने व्हिस्की पीना शुरू किया। सर्दियों की धूप धीरे-धीरे कमरे में फैल रही थी।
“आजकल तुम थोड़े उदास दिखते हो,” उसने कहा।
“क्या आपको ऐसा लगता है?” मैंने कहा।
उन्होंने कहा, "तुम आधी रात को बहुत ज्यादा सोचते होगे। मैंने तो रात को सोचना ही बंद कर दिया है।"
आपने यह कैसे किया?
“जब मैं उदास हो जाता हूँ, तो सफाई करना शुरू कर देता हूँ। चाहे सुबह के दो-तीन ही क्यों न बज रहे हों। मैं बर्तन धोता हूँ, चूल्हा साफ करता हूँ, फर्श पर पोछा लगाता हूँ, बर्तनों के तौलिये ब्लीच से चमकाता हूँ, अपनी डेस्क की दराजें व्यवस्थित करता हूँ, सामने दिख रही हर शर्ट को इस्त्री करता हूँ,” उसने अपनी उंगली से पेय को हिलाते हुए कहा। “मैं तब तक यही करता रहता हूँ जब तक मैं थक नहीं जाता, फिर एक ड्रिंक लेता हूँ और सो जाता हूँ। सुबह जब मैं उठता हूँ, तो मोज़े पहनते-पहनते मुझे याद भी नहीं रहता कि मैं किस बारे में सोच रहा था।”
मैंने फिर चारों ओर देखा। हमेशा की तरह, कमरा साफ-सुथरा और व्यवस्थित था।
"लोग सुबह तीन बजे तरह-तरह की बातें सोचते हैं। हम सब सोचते हैं। इसीलिए हम सबको इससे निपटने का अपना-अपना तरीका ढूंढना होगा।"
मैंने कहा, "शायद आप सही कह रहे हैं।"
“जानवर भी रात के तीन बजे सोचते हैं,” उसने कुछ याद करते हुए कहा। “क्या तुम कभी रात के तीन बजे चिड़ियाघर गए हो?”
“नहीं,” मैंने अस्पष्ट रूप से उत्तर दिया। “नहीं, बिल्कुल नहीं।”
“मैंने ऐसा सिर्फ एक बार किया है। मेरा एक दोस्त चिड़ियाघर में काम करता है, और मैंने उससे कहा कि जब उसकी रात की शिफ्ट हो तो मुझे अंदर आने दे। वैसे तो अंदर जाना मना है।” उसने अपना गिलास हिलाया। “यह एक अजीब अनुभव था। मैं इसे समझा नहीं सकता,

लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे ज़मीन चुपचाप फट गई हो और उसमें से कुछ रेंगकर बाहर आ रहा हो। और फिर अंधेरे में एक अदृश्य चीज़ उत्पात मचा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे ठंडी रात जम गई हो। मैं उसे देख नहीं पा रहा था, लेकिन मैंने उसे महसूस किया, और जानवरों ने भी उसे महसूस किया। इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि जिस ज़मीन पर हम चलते हैं वह पृथ्वी के केंद्र तक जाती है, और मुझे अचानक एहसास हुआ कि केंद्र ने समय का एक अविश्वसनीय भंडार सोख लिया है।”

मैंने कुछ नहीं कहा।

वैसे भी, मैं दोबारा कभी नहीं जाना चाहता—मेरा मतलब है, आधी रात को चिड़ियाघर जाना।”

"क्या आप तूफान पसंद करेंगे?"

“हाँ,” उसने कहा। “मुझे किसी भी दिन तूफान ज्यादा पसंद है।”



फ़ोन की घंटी बजी और वो कॉल उठाने के लिए अपने बेडरूम में चला गया। उसकी गर्लफ्रेंड की हमशक्ल थी, और वो भी एक अंतहीन फ़ोन कॉल कर रही थी। मैं उसे बताना चाहती थी कि मैं अब और काम नहीं करूँगी, लेकिन वो फ़ोन पर बहुत देर तक बात करता रहा। मैंने इंतज़ार करना छोड़ दिया और टीवी चालू कर दिया। ये सत्ताईस इंच का रंगीन टीवी था, जिसका रिमोट इतना छोटा था कि चैनल बदलने के लिए उसे ज़रा सा छूना भी नहीं पड़ता था। टीवी में छह स्पीकर थे और आवाज़ ज़बरदस्त थी। मैंने ऐसा शानदार टीवी पहले कभी नहीं देखा था।

मैंने न्यूज़ प्रोग्राम चुनने से पहले दो बार सारे चैनल बदल लिए। सीमा पर झड़प, आग, विनिमय दरों में उतार-चढ़ाव, कार आयात पर नई सीमा, शीतकालीन तैराकी प्रतियोगिता, एक परिवार में आत्महत्या। ये सभी खबरें किसी न किसी तरह आपस में जुड़ी हुई लग रही थीं, जैसे हाई स्कूल की ग्रेजुएशन फोटो में लोग एक साथ हों।

"कोई दिलचस्प खबर है?" मेरे दोस्त ने कमरे में वापस आते हुए पूछा।

मैंने कहा, "वास्तव में नहीं।"

क्या आप बहुत ज्यादा टीवी देखते हैं?

मैंने सिर हिलाया। "मेरे पास टीवी नहीं है।"
कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "टीवी की कम से कम एक अच्छी बात तो है। आप इसे जब चाहें बंद कर सकते हैं। और कोई शिकायत नहीं करता।"
उसने रिमोट पर 'ऑफ' बटन दबाया। तुरंत ही स्क्रीन खाली हो गई। कमरा एकदम शांत हो गया। खिड़की के बाहर, दूसरी इमारतों में बत्तियाँ जलने लगी थीं।
हम वहाँ पाँच मिनट तक बैठे रहे, व्हिस्की पीते रहे, और बात करने के लिए कुछ नहीं था। फ़ोन फिर बजा, लेकिन उसने अनसुना करने का नाटक किया। जैसे ही फ़ोन बजना बंद हुआ, उसने ऑन बटन दबा दिया। तस्वीर तुरंत वापस आ गई, और एक कमेंटेटर ग्राफ के सामने खड़ा होकर एक पॉइंटर से इशारा करते हुए तेल की कीमतों में हुए बदलावों को समझाने लगा।
“देखा? उसे तो पता भी नहीं चला कि हमने उसे पांच मिनट के लिए बंद कर दिया था।”
“बिल्कुल सही,” मैंने कहा।
"ऐसा क्यों?"
इस बारे में गहराई से सोचना बहुत झंझट का काम था, इसलिए मैंने अपना सिर हिला दिया।
“जब आप इसे बंद कर देते हैं, तो एक पक्ष का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। या तो वह बचेगा या हम। आप बस स्विच दबाते हैं और संचार पूरी तरह से ठप हो जाता है। यह आसान है।”
मैंने कहा, "इसे देखने का यह एक तरीका है।"
“सोचने के लाखों तरीके हैं। भारत में नारियल के पेड़ उगाए जाते हैं। अर्जेंटीना में हेलीकॉप्टरों से राजनीतिक कैदियों की बारिश होती है।” उन्होंने टीवी फिर बंद कर दिया। “मैं दूसरों के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता,” उन्होंने कहा, “लेकिन इस बात पर गौर करें कि मरने के ऐसे तरीके भी होते हैं जिनका अंत अंतिम संस्कार में नहीं होता। ऐसी मौतें भी होती हैं जिन्हें आप सूंघ नहीं सकते।”
मैंने चुपचाप सिर हिलाया। मुझे लगा कि मैं समझ गई हूँ कि वह क्या कहना चाह रहा है। साथ ही, मुझे यह भी लगा कि मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा कि उसका मतलब क्या है। मैं थकी हुई थी और थोड़ी उलझन में भी थी। मैं वहीं बैठी रही और पॉइन्सेटिया के हरे पत्ते को सहलाती रही।

“मेरे पास थोड़ी शैम्पेन है,” उसने गंभीरता से कहा। “मैं इसे कुछ समय पहले फ्रांस की व्यावसायिक यात्रा से लेकर आया हूँ। मुझे शैम्पेन के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन यह बहुत बढ़िया होती है। क्या आप थोड़ी लेना चाहेंगे? लगातार अंत्येष्टि के बाद शैम्पेन शायद बहुत अच्छा लगेगा।”

उसने ठंडी शैंपेन की बोतल और दो साफ गिलास निकाले और चुपचाप मेज पर रख दिए, फिर शरारती मुस्कान के साथ बोला, " शैंपेन तो बिलकुल बेकार है, जानते हो ना? इसका असली मजा तो बोतल का कॉर्क खोलने के पल में ही आता है।"

मैंने कहा, "मैं इस बात पर आपसे असहमत नहीं हो सकता।"

हमने बोतल का कॉर्क खोला और पेरिस के चिड़ियाघर और वहां रहने वाले जानवरों के बारे में थोड़ी देर बातें कीं। शैम्पेन बहुत बढ़िया थी।



साल के आखिर में एक पार्टी थी, रोप्पोंगी के एक बार में हर साल होने वाली नए साल की पूर्व संध्या की पार्टी, जिसे खास इसी मौके के लिए किराए पर लिया गया था। पियानो बजाने वाले तीन लोगों का समूह था और बढ़िया खाना-पीना था। जब भी मेरी मुलाकात किसी परिचित से होती, मैं थोड़ी देर बातचीत कर लेता। मेरी नौकरी की वजह से मुझे हर साल वहाँ जाना पड़ता था। पार्टियाँ मुझे ज़्यादा पसंद नहीं हैं, लेकिन यह पार्टी ठीक थी। नए साल की पूर्व संध्या पर मेरे पास करने को कुछ और नहीं था, इसलिए मैं बस एक कोने में अकेले खड़ा होकर आराम कर सकता था, ड्रिंक पी सकता था और संगीत का आनंद ले सकता था। कोई बदतमीज़ लोग नहीं थे, अजनबियों से परिचय करवाने और उनकी आधी घंटे की बकवास सुनने की ज़रूरत नहीं थी कि शाकाहारी भोजन कैंसर को ठीक करता है।

लेकिन उस शाम किसी ने मुझे एक महिला से मिलवाया। सामान्य बातचीत के बाद, मैंने वापस अपने कोने में जाने की कोशिश की। लेकिन वह महिला हाथ में व्हिस्की का गिलास लिए मेरे पीछे-पीछे मेरी सीट तक आ गई।

"मैंने आपसे परिचय कराने का अनुरोध किया था," उसने सौहार्दपूर्वक कहा।

वह देखने में आकर्षक तो थी, लेकिन लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने वाली नहीं थी। उसने एक महंगी हरी रेशमी पोशाक पहनी हुई थी। मेरा अनुमान था कि उसकी उम्र लगभग बत्तीस वर्ष होगी। वह आसानी से अपनी उम्र कम दिखा सकती थी, लेकिन उसे ऐसा करना व्यर्थ लगता था। उसकी उंगलियों में तीन अंगूठियां थीं और होठों पर हल्की सी मुस्कान थी।

“तुम बिल्कुल मेरे किसी परिचित से मिलते-जुलते हो,” उसने कहा। “तुम्हारे चेहरे की बनावट, तुम्हारी पीठ, तुम्हारे बोलने का तरीका, तुम्हारा पूरा हावभाव—यह एक अद्भुत समानता है। जब से तुम आए हो, मैं तुम्हें देखती आ रही हूँ।”

मैंने कहा, "अगर वो बिल्कुल मेरे जैसा है, तो मैं उससे मिलना चाहूंगा।" मुझे समझ नहीं आ रहा था कि और क्या कहूं।

"आप करेंगे?"

मैं यह देखना चाहूँगा कि मेरे जैसे बिल्कुल समान व्यक्ति से मिलने पर कैसा महसूस होता है।

उसकी मुस्कान एक पल के लिए और गहरी हो गई, फिर नरम पड़ गई। "लेकिन यह असंभव है," उसने कहा। "उनकी मृत्यु पाँच साल पहले हुई थी। जब उनकी उम्र लगभग उतनी ही थी जितनी आपकी अभी है।"

“क्या यह सही है?” मैंने कहा।

मैंने उसे मार डाला।

तीनों कलाकार अपना दूसरा सेट खत्म कर रहे थे, और कुछ बेमन से तालियाँ बज रही थीं।

“क्या आपको संगीत पसंद है?” उसने मुझसे पूछा।

मैंने कहा, "अगर यह एक अच्छी दुनिया में अच्छा संगीत हो तो मैं ज़रूर करूँगा।"

"एक अच्छी दुनिया में अच्छा संगीत नहीं होता," उसने कहा, मानो कोई गहरा रहस्य उजागर कर रही हो। "एक अच्छी दुनिया में हवा में कंपन नहीं होता।"

“मैं समझ गया,” मैंने कहा, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं।

"क्या आपने वो फिल्म देखी है जिसमें वॉरेन बीट्टी एक नाइटक्लब में पियानो बजाते हैं?"

नहीं, मैंने नहीं किया है।

"एलिजाबेथ टेलर क्लब की ग्राहकों में से एक है, और वह वास्तव में बहुत गरीब और दयनीय स्थिति में है।"

"हम्म।"
"तो वॉरेन बीटी ने एलिजाबेथ टेलर से पूछा कि क्या उनकी कोई विनती है।"
और क्या वह ऐसा करती है?
“मैं भूल गई। ये तो बहुत पुरानी फिल्म है।” व्हिस्की पीते हुए उसकी अंगूठियां चमक उठीं। “मुझे फरमाइशें बिल्कुल पसंद नहीं। इनसे मुझे उदासी महसूस होती है। ये ठीक वैसे ही है जैसे मैं लाइब्रेरी से कोई किताब लेती हूँ। जैसे ही मैं उसे पढ़ना शुरू करती हूँ, मेरे दिमाग में बस यही चलता रहता है कि मैं उसे कब खत्म करूँगी।”
उसने अपने होठों के बीच एक सिगरेट रखी। मैंने माचिस जलाकर उसे सिगरेट दे दी।
“देखते हैं,” उसने कहा। “हम उस व्यक्ति के बारे में बात कर रहे थे जो बिल्कुल तुम्हारे जैसा दिखता था।”
“तुमने उसे कैसे मारा?”
मैंने उसे मधुमक्खी के छत्ते में फेंक दिया।
"तुम मज़ाक कर रहे, है ना?"
“हां,” उसने कहा।
आह भरने की बजाय, मैंने व्हिस्की का एक घूंट लिया। बर्फ पिघल चुकी थी और अब उसमें व्हिस्की का स्वाद न के बराबर ही रह गया था।
“बेशक, कानूनी तौर पर मैं हत्यारा नहीं हूँ,” उसने कहा। “और न ही नैतिक रूप से।”
“कानूनी तौर पर भी नहीं और नैतिक तौर पर भी नहीं, हत्यारा।” मैं ऐसा करना नहीं चाहता था, लेकिन मैंने उसके द्वारा कही गई बातों पर गौर किया। “पर तुमने किसी की हत्या तो की है।”
“ठीक है।” उसने खुशी से सिर हिलाया। “कोई ऐसा जो बिल्कुल तुम्हारे जैसा दिखता हो।”
कमरे के उस पार एक आदमी ज़ोर से हँसा। उसके आस-पास के लोग भी हँस पड़े। गिलासों की खनक सुनाई दी। आवाज़ बहुत दूर से आ रही थी, लेकिन एकदम साफ़ थी। पता नहीं क्यों, लेकिन मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मानो फैल रहा हो या ऊपर-नीचे हो रहा हो। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं पानी पर तैरती ज़मीन पर चल रहा हूँ।
“उसे मारने में पांच सेकंड से भी कम समय लगा,” उसने कहा। “
हम कुछ देर चुप रहे। वह अपना समय ले रही थी, चुप्पी का आनंद ले रही थी।

“क्या तुम कभी आजादी के बारे में सोचते हो?” उसने पूछा।
“कभी-कभी,” मैंने कहा। “आप क्यों पूछ रहे हैं?”
क्या आप एक डेज़ी का चित्र बना सकते हैं?
मुझे ऐसा लगता है। क्या यह व्यक्तित्व परीक्षण है?
“लगभग।” वह हंस पड़ी।
"तो, क्या मैं पास हो गया?"
“हां,” उसने उत्तर दिया। “आप ठीक रहेंगे। चिंता की कोई बात नहीं है। मेरा अंतर्ज्ञान कहता है कि आप एक लंबा और अच्छा जीवन जिएंगे।”
मैंने कहा, "धन्यवाद।"
बैंड ने "ऑल्ड लैंग साइन" बजाना शुरू किया।
“ग्यारह बजकर पचपन मिनट,” उसने अपने पेंडेंट पर लटकी सोने की घड़ी पर नज़र डालते हुए कहा। “मुझे ‘ऑल्ड लैंग साइन’ बहुत पसंद है। आपको कैसा लगता है?”
मुझे ‘होम ऑन द रेंज’ ज्यादा पसंद है। उसमें इतने सारे हिरण और मृग हैं।
वह मुस्कुराई। "तुम्हें जानवर पसंद होंगे।"
“हाँ,” मैंने कहा। और मुझे अपने उस दोस्त की याद आई जिसे चिड़ियाघर पसंद हैं, और उसके अंतिम संस्कार के सूट की भी।
आपसे बात करके अच्छा लगा। अलविदा।
मैंने कहा, "अलविदा।"



उन्होंने हवा बचाने के लिए अपने दीपक बुझा दिए, और चारों ओर अंधेरा छा गया। कोई नहीं बोला। अंधेरे में उन्हें बस हर पांच सेकंड में छत से पानी टपकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। “ठीक है, सब लोग, ज़ोर-ज़ोर से साँस मत लो। हमारे पास ज़्यादा हवा नहीं बची है,” एक बूढ़े खनिक ने कहा। उसने अपनी आवाज़ को फुसफुसाहट में बदल दिया, फिर भी सुरंग की छत पर लगी लकड़ी की कड़ियाँ हल्की-हल्की चरमरा उठीं। अँधेरे में, खनिक एक साथ huddled

होकर एक आवाज़ सुनने की कोशिश कर रहे थे। कुल्हाड़ियों की आवाज़। जीवन की आवाज़।

वे घंटों इंतजार करते रहे। अंधेरे में वास्तविकता धुंधली पड़ने लगी। सब कुछ ऐसा लगने लगा मानो बहुत समय पहले, किसी दूर की दुनिया में घट रहा हो। या फिर यह भविष्य में, किसी दूसरी दूर की दुनिया में घट रहा था?

बाहर लोग गड्ढा खोद रहे थे, उन तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे। यह किसी फिल्म के दृश्य जैसा लग रहा था।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

हवाई जहाज: या, वह कैसे खुद से ऐसे बात करता था मानो कविता पढ़ रहा हो

उस दोपहर उसने उससे पूछा, "क्या ये तुम्हारी पुरानी आदत है, जिस तरह तुम खुद से बात करते हो?" उसने मेज से नज़रें उठाकर उससे ये सवाल ऐसे पूछा जैसे ये विचार अभी-अभी उसके मन में आया हो, लेकिन ज़ाहिर है कि ये विचार अभी-अभी नहीं आया था। वो इसके बारे में काफी देर से सोच रही होगी। उसकी आवाज़ में वही कठोरता और थोड़ी सी भारीपन थी जो ऐसे समय में अक्सर आ जाती है। उसने शब्दों को रोक रखा था और उन्हें बार-बार अपने मन में घुमा रही थी, फिर उन्हें अपने मुँह से बाहर निकाला।

दोनों रसोई की मेज पर आमने-सामने बैठे थे। पास की पटरी पर कभी-कभार चलने वाली यात्री ट्रेन के अलावा, आस-पड़ोस में सन्नाटा पसरा हुआ था—कभी-कभी तो हद से ज़्यादा सन्नाटा। जिन पटरियों पर ट्रेनें नहीं चलतीं, वहाँ एक अलग ही रहस्यमयी खामोशी होती है। रसोई के फर्श की विनाइल टाइलों से उसके नंगे पैरों को सुखद ठंडक मिल रही थी। उसने अपने मोज़े उतारकर अपनी पैंट की जेब में रख लिए थे। अप्रैल की दोपहर के हिसाब से मौसम कुछ ज़्यादा ही गर्म था। उसने अपनी हल्के रंग की चेकदार कमीज़ की आस्तीनें कोहनी तक मोड़ रखी थीं, और उसकी पतली सफेद उंगलियां कॉफी के चम्मच के हैंडल से खेल रही थीं। वह उसकी चलती हुई उंगलियों को देखता रहा, और उसका दिमाग अजीब तरह से सुन्न पड़ गया। ऐसा लग रहा था जैसे उसने दुनिया के किनारे को उठा लिया हो, और अब वह धीरे-धीरे उसके धागों को ढीला कर रही हो—लापरवाही से, उदासीनता से, मानो उसे यह करना ही हो, चाहे कितना भी समय लगे।

वह देखता रहा और कुछ नहीं बोला। वह चुप इसलिए रहा क्योंकि उसे पता नहीं था कि क्या कहना है। उसके कप में बची हुई कॉफी की कुछ घूंटें अब ठंडी और धुंधली सी हो गई थीं।

वह अभी बीस साल का ही हुआ था, और वह उससे सात साल बड़ी, शादीशुदा और एक बच्चे की माँ थी। उसके लिए वह मानो चाँद के दूसरे छोर जैसी थी।

उनके पति एक ट्रैवल एजेंसी में काम करते थे जो विदेश यात्राओं में विशेषज्ञता रखती थी। इसलिए वे लगभग हर महीने का आधा समय घर से दूर, लंदन, रोम या सिंगापुर जैसी जगहों पर बिताते थे। जाहिर है, उन्हें ओपेरा पसंद था। अलमारियों में तीन-चार रिकॉर्ड वाले मोटे-मोटे एल्बम रखे थे, जिन्हें संगीतकारों के नाम से व्यवस्थित किया गया था—वर्डी, पुचीनी,

डोनिज़ेट्टी, रिचर्ड स्ट्रॉस। लंबी कतारें किसी रिकॉर्ड संग्रह से ज़्यादा एक विश्वदृष्टि का प्रतीक लगती थीं: शांत, अटल। जब भी उन्हें कुछ कहने को नहीं मिलता या कुछ करने को नहीं सूझता, तो वे अपने पति के रिकॉर्ड देखते थे; वे अपनी नज़रें एल्बमों के कवर पर घुमाते थे—दाएं से बाएं, बाएं से दाएं—और मन ही मन उनके नाम दोहराते थे: ला बोहेम, टोस्का, तुरंदोत, नोर्मा, फिदेलियो... उन्होंने कभी इस तरह का संगीत नहीं सुना था। उन्हें यह पसंद है या नहीं, यह तो दूर की बात है, उन्हें इसे सुनने का कभी मौका ही नहीं मिला था। उनके परिवार, दोस्तों या जान-पहचान वालों में से कोई भी ओपेरा का प्रशंसक नहीं था। वह जानता था कि ओपेरा नामक संगीत का अस्तित्व है, और कुछ लोग इसे सुनना पसंद करते हैं, लेकिन पति के रिकॉर्ड ही ऐसी दुनिया की उसकी पहली वास्तविक झलक थे।

उन्हें खुद ओपेरा बहुत पसंद नहीं था। उन्होंने कहा, "मुझे इससे नफरत नहीं है, ऐसा नहीं है। बस यह बहुत लंबा होता है।"

रिकॉर्ड रखने वाली अलमारियों के बगल में एक बेहद प्रभावशाली स्टीरियो सेट रखा था। उसका बड़ा, विदेशी निर्मित ट्यूब एम्पलीफायर भारी-भरकम ढंग से नीचे झुका हुआ था, मानो किसी प्रशिक्षित समुद्री जीव की तरह आदेशों का इंतज़ार कर रहा हो। कमरे के अन्य साधारण फर्नीचर के बीच उसका अलग दिखना लाज़मी था। उसकी मौजूदगी वाकई असाधारण थी। नज़रें उस पर टिक जाती थीं। लेकिन उसने कभी उससे आवाज़ नहीं सुनी थी। उसे पता नहीं था कि पावर स्विच कहाँ है, और उसने कभी उसे छूने की ज़हमत भी नहीं उठाई।

“घर में कोई समस्या नहीं है,” उसने उससे कई बार कहा। “मेरे पति मेरे साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, मैं अपनी बेटी से प्यार करती हूँ, मुझे लगता है मैं खुश हूँ।” ये कहते समय उसकी आवाज़ शांत और गंभीर थी, ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा था कि वह अपनी ज़िंदगी के लिए कोई बहाना बना रही है। वह अपनी शादी के बारे में पूरी निष्पक्षता से बात कर रही थी, मानो यातायात नियमों या अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा पर चर्चा कर रही हो। “मुझे लगता है मैं खुश हूँ, कोई समस्या नहीं है।”

तो आखिर वो मेरे साथ क्यों सो रही है? उसने सोचा। उसने इस बारे में बहुत सोचा, पर कोई जवाब नहीं सूझा। आखिर शादी में "कुछ गड़बड़" होने का मतलब ही क्या होता है? कभी-

कभी उसे सीधे उससे पूछने का ख्याल आता था, पर उसे समझ नहीं आता था कि शुरुआत कैसे करे। कैसे कहे? "अगर तुम इतनी खुश हो, तो मेरे साथ क्यों सो रही हो?" क्या उसे सीधे-सीधे कह देना चाहिए? उसे यकीन था कि इससे वो रो पड़ेगी।

वह पहले से ही बहुत रोती थी। वह बहुत देर तक रोती रहती, हल्की-हल्की आवाज़ें निकालती। उसे लगभग कभी पता नहीं चलता था कि वह क्यों रो रही है। लेकिन एक बार रोना शुरू कर दे तो रुकती नहीं थी। चाहे वह उसे कितना भी दिलासा देने की कोशिश करे, वह एक निश्चित समय बीतने तक रोना बंद नहीं करती थी। असल में, उसे कुछ करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी; एक निश्चित समय बीतने के बाद उसका रोना बंद हो जाता था। लोग एक-दूसरे से इतने अलग क्यों होते हैं? वह सोचता था। वह कई महिलाओं के साथ रहा था, और सभी अपने-अपने खास तरीके से रोती या गुस्सा करती थीं। उनमें कुछ समानताएँ थीं, लेकिन अंतर उनसे कहीं ज़्यादा थे। उम्र का इससे कोई लेना-देना नहीं लगता था। यह उसका किसी बड़ी उम्र की महिला के साथ पहला अनुभव था, लेकिन उम्र का अंतर उसे उतना परेशान नहीं कर रहा था जितना उसने सोचा था। उसे लगता था कि उम्र के अंतर से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हर व्यक्ति की अलग-अलग प्रवृत्तियाँ थीं। वह यह सोचे बिना नहीं रह सका कि यही जीवन की पहेली को सुलझाने की एक अहम कुंजी है।

जब वह रोना बंद कर देती, तो आमतौर पर वे दोनों प्यार करते। रोने के बाद ही वह पहल करती। अन्यथा, पहल उसे ही करनी पड़ती। कभी-कभी वह मना कर देती। बिना कुछ कहे, वह अपना सिर हिला देती। फिर उसकी आँखें भोर के आकाश के किनारे तैरते हुए सफेद चाँद की तरह दिखतीं—चपटी, भावपूर्ण चाँद जो भोर में किसी पक्षी की एक हल्की सी आवाज़ पर झिलमिलाते। जब भी वह उसकी आँखों को इस तरह देखता, वह समझ जाता कि अब वह उससे कुछ नहीं कह सकता। ठुकराए जाने पर, उसे न तो गुस्सा आता और न ही नाराज़गी। बस यही होता है, वह सोचता, और कुछ नहीं। कभी-कभी तो इससे उसे अंदर ही अंदर राहत भी मिलती। वे रसोई की मेज पर बैठकर कॉफ़ी पीते, धीरे-धीरे बातें करते। वे ज़्यादातर समय टुकड़ों में बोलते। दोनों में से कोई भी ज़्यादा बोलने वाला नहीं था, और उनके पास बात करने के लिए कुछ खास नहीं था। उसे कभी याद नहीं रहता था कि वे क्या कह रहे थे, बस इतना

याद रहता था कि बातें टुकड़ों में थीं। और इस बीच, एक के बाद एक ट्रेन खिड़की के सामने से गुज़रती रहती।

उनका प्रेम-प्रसंग हमेशा शांत और सौम्य होता था। उसमें शारीरिक सुख जैसी कोई बात नहीं थी। बेशक, यह कहना गलत होगा कि वे उस आनंद से अनभिज्ञ थे जो एक पुरुष और एक स्त्री के मिलन से प्राप्त होता है। लेकिन इसके साथ-साथ कई अन्य विचार, तत्व और शैलियाँ भी मिश्रित थीं। यह उनके द्वारा पहले अनुभव किए गए किसी भी यौन संबंध से अलग था। इससे उन्हें एक छोटे से कमरे की याद आई—एक सुंदर, साफ-सुथरा कमरा, जो रहने के लिए आरामदायक जगह थी। छत से कई रंगों की डोरियाँ लटक रही थीं, अलग-अलग आकार और लंबाई की डोरियाँ, और हर डोरी अपने तरीके से उनके मन में एक रोमांच पैदा कर रही थी। वह एक डोरी खींचना चाहते थे, और डोरियाँ भी उनके द्वारा खींचे जाने के लिए तरस रही थीं। लेकिन उन्हें नहीं पता था कि कौन सी डोरी खींचे। उन्हें लगा कि शायद वह एक डोरी खींचेंगे और उनकी आँखों के सामने एक शानदार दृश्य खुल जाएगा, लेकिन उतनी ही आसानी से, पल भर में सब कुछ बर्बाद भी हो सकता है। इसलिए वह हिचकिचाए, और जब तक वह इस उलझन में रहे, एक और दिन बीत गया।

इस अजीबोगरीब स्थिति को समझना उसके लिए लगभग असहनीय था। उसका मानना था कि उसने अपना जीवन अपने मूल्यों के अनुसार जिया है। लेकिन जब वह इस कमरे में था, ट्रेनों की आवाज़ सुन रहा था और उस शांत बूढ़ी औरत को अपनी बाहों में थामे हुए था, तो उसे ऐसा लग रहा था मानो वह अराजकता में भटक रहा हो। बार-बार वह खुद से पूछता, "क्या मैं उससे प्यार करता हूँ?" लेकिन वह कभी भी पूरी तरह से आश्वस्त होकर इसका जवाब नहीं दे पाया। वह बस कमरे की छत से लटकती रंगीन डोरियों को ही समझ पा रहा था। वे वहीं मौजूद थीं।

जब यह अजीबोगरीब प्रेम प्रसंग समाप्त होता, तो वह हमेशा घड़ी की ओर देखती। उसकी बाहों में लेटी हुई, वह अपना चेहरा थोड़ा सा घुमाकर बिस्तर के सिरहाने रखे काले रंग के क्लॉक रेडियो को देखती। उन दिनों, क्लॉक रेडियो में रोशनी वाले डिजिटल डिस्प्ले नहीं होते थे, बल्कि छोटे-छोटे नंबर वाले पैनल होते थे जो एक हल्की सी क्लिक की आवाज़ के साथ पलट जाते थे। जब वह घड़ी देखती, तो खिड़की से एक ट्रेन गुज़रती। यह अजीब था: जब भी

वह घड़ी देखती, बिना किसी चूक के ट्रेन के गुज़रने की आवाज़ आती। यह एक पूर्वनिर्धारित सहज प्रतिक्रिया की तरह था: वह देखती; एक ट्रेन गुज़र जाती।

वह घड़ी देख रही थी ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि उसकी चार वर्षीय बेटी के किंडरगार्टन से घर आने का समय तो नहीं हो गया है। उसने उस बच्ची की एक झलक मात्र देखी थी। वह एक प्यारी सी बच्ची लग रही थी। बस यही एक छाप थी जो उसने उसके मन में छोड़ी थी। उसने उस ओपेरा प्रेमी पति को कभी नहीं देखा था जो एक ट्रैवल ब्यूरो में काम करता था। सौभाग्य से।

मई की एक दोपहर थी जब उसने पहली बार उससे खुद से बात करने के बारे में पूछा। उस दिन वह फिर से रोई थी। और फिर उन्होंने फिर से शारीरिक संबंध बनाए थे। उसे याद नहीं आ रहा था कि किस बात पर वह रोई थी। शायद उसे बस रोने का मन हुआ होगा। वह कभी-कभी सोचता था कि क्या वह उससे सिर्फ इसलिए जुड़ी है ताकि वह किसी की बाहों में रो सके। शायद वह अकेले नहीं रो सकती, और इसीलिए उसे मेरी ज़रूरत है।

उस दिन उसने दरवाज़ा बंद किया, पर्दे गिराए और टेलीफ़ोन को बिस्तर के पास रख दिया। फिर वे एक-दूसरे से लिपट गए। हमेशा की तरह धीरे से, चुपचाप। दरवाज़े की घंटी बजी, लेकिन उसने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया। ऐसा लगा जैसे उसे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। उसने अपना सिर हिलाया, मानो कह रही हो, "कोई बात नहीं, कुछ नहीं है।" घंटी कई बार और बजी, लेकिन जल्द ही वह व्यक्ति हार मानकर चला गया। जैसा उसने कहा था, कुछ नहीं था। शायद कोई सेल्समैन। लेकिन उसे कैसे पता चलेगा? उसने सोचा। बीच-बीच में एक ट्रेन की गड़गड़ाहट सुनाई दी। दूर से पियानो की आवाज़ आई। उसे धुन धुंधली सी पहचानी। उसने इसे बहुत पहले, संगीत की कक्षा में सुना था, लेकिन उसे ठीक से याद नहीं आ रहा था। सामने से एक सब्ज़ीवाले का ट्रक खड़खड़ाता हुआ गुज़रा। उसने अपनी आँखें बंद कीं, गहरी साँस ली, और वह आया—अत्यंत कोमलता से।

वह नहाने के लिए बाथरूम गया। जब वह नहाने के तौलिए से खुद को सुखाकर वापस आया, तो उसने देखा कि वह बिस्तर पर औंधे मुंह लेटी हुई है और उसकी आँखें बंद हैं। वह उसके बगल में बैठ गया और हमेशा की तरह, ओपेरा रिकॉर्ड्स के गानों पर नज़र डालते हुए उसकी पीठ सहलाने लगा।

थोड़ी देर बाद वह बिस्तर से उठी, ठीक से कपड़े पहने और कॉफी बनाने के लिए रसोई में चली गई। कुछ देर बाद उसने उससे पूछा, "क्या यह तुम्हारी पुरानी आदत है, जिस तरह तुम खुद से बात करते हो?"

“जैसे क्या?” उसने उसे चौंका दिया था। “तुम्हारा मतलब है, जब हम...?”

नहीं नहीं। तब नहीं। कभी भी। जैसे, जब आप नहा रहे हों, या जब मैं रसोई में हूँ और आप अकेले अखबार पढ़ रहे हों, इस तरह की बातें।"

“मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। “मैंने कभी ध्यान ही नहीं दिया। क्या मैं खुद से बात करता हूँ?”

“हाँ, तुम करते हो। सचमुच,” उसने उसकी लाइटर से खेलते हुए कहा।

“ऐसा नहीं है कि मुझे तुम पर विश्वास नहीं है,” उसने कहा, उसकी आवाज़ में बेचैनी झलक रही थी। उसने एक सिगरेट मुँह में डाली, उसके हाथ से लाइटर लिया और उसे जलाया। उसने कुछ समय पहले ही सेवन स्टार्स सिगरेट पीना शुरू किया था। यह उसके पति का ब्रांड था। वह हमेशा होप रेगुलर सिगरेट पीता था। ऐसा नहीं था कि उसने उसे अपने पति का ब्रांड अपनाने के लिए कहा था; उसने खुद ही सावधानी बरतने का सोचा था। उसने तय किया था कि इससे सब कुछ आसान हो जाएगा। जैसे टीवी पर दिखाए जाने वाले मेलोड्रामा में होता है।

“मैं भी बचपन में बहुत बातें करती थी,” उसने कहा। “जब मैं छोटी थी।”

"सच में?"

लेकिन मेरी माँ ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया। वो कहती थीं, ‘एक युवती को खुद से बात नहीं करनी चाहिए।’ और जब भी मैं ऐसा करती, वो बहुत गुस्सा हो जातीं! वो मुझे एक कोठरी में बंद कर देतीं—जो मेरे लिए सबसे डरावनी जगह थी—अंधेरा और बदबूदार। कभी-कभी वो मुझे स्केल से घुटनों पर मारतीं। इसका असर हुआ। और इसमें ज्यादा समय नहीं लगा। मैंने खुद से बात करना पूरी तरह बंद कर दिया। एक शब्द भी नहीं। कुछ समय बाद, अगर मैं चाहती भी तो ऐसा नहीं कर पाती।

उसे कुछ समझ नहीं आया कि क्या कहे, इसलिए उसने कुछ नहीं कहा। उसने अपने होंठ दबा लिए।

“आज भी,” उसने कहा, “अगर मुझे लगता है कि मैं कुछ कहने वाली हूँ, तो मैं अपने शब्द निगल लेती हूँ। यह एक सहज प्रतिक्रिया की तरह है। क्योंकि बचपन में मुझे बहुत डांट पड़ती थी। लेकिन, मुझे नहीं पता, खुद से बात करने में क्या बुराई है? यह तो स्वाभाविक है। बस शब्द मुँह से निकल रहे हैं। अगर मेरी माँ आज भी जीवित होतीं, तो शायद मैं उनसे पूछती, ‘खुद से बात करने में क्या बुराई है?’”

“क्या वह मर गई?”

“हाँ। लेकिन काश मैंने उससे सीधे-सीधे बात कर ली होती। काश मैंने उससे पूछा होता, ‘तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?’”

वह अपनी कॉफी के चम्मच से खेल रही थी। उसने दीवार पर लगी घड़ी पर एक नज़र डाली। जैसे ही उसने ऐसा किया, बाहर से एक ट्रेन गुज़र गई।

वह ट्रेन के गुजरने का इंतजार करती रही। फिर उसने कहा, “कभी-कभी मुझे लगता है कि लोगों के दिल गहरे कुओं की तरह होते हैं। कोई नहीं जानता कि तल में क्या है। आप बस इतना ही कर सकते हैं कि जो कभी-कभार सतह पर तैरता हुआ दिखाई देता है, उससे अंदाजा लगा सकते हैं।”

दोनों ने कुछ देर तक कुओं के बारे में सोचा।

“जब मैं खुद से बात करता हूँ तो मैं किस बारे में बात करता हूँ?” उसने पूछा। “उदाहरण के लिए।”

“हम्म,” उसने धीरे से अपना सिर कुछ बार हिलाते हुए कहा, मानो वह चुपके से अपनी गर्दन की गति की सीमा का परीक्षण कर रही हो। “खैर, हवाई जहाज भी तो हैं...”

“हवाई जहाज?”

“हाँ। आप जानते हैं। वे आकाश में उड़ते हैं।”

वह हँसा। "मैं भला हवाई जहाज़ों के बारे में खुद से क्यों बात करूँगा?"

वह भी हंस पड़ी। फिर उसने अपनी तर्जनी उंगलियों से हवा में एक काल्पनिक वस्तु की लंबाई नापी। यह उसकी आदत थी। एक ऐसी आदत जो उसने भी अपना ली थी।

“तुम तो अपने शब्दों का उच्चारण भी बहुत स्पष्ट करते हो। क्या तुम्हें यकीन है कि तुम खुद से बात नहीं कर रहे हो?”

मुझे कुछ भी याद नहीं है।
उसने मेज पर पड़ा बॉलपॉइंट पेन उठाया और कुछ सेकंड तक उससे खेलती रही, फिर उसने दोबारा घड़ी की ओर देखा। घड़ी ने अपना काम कर दिया था: पिछली बार देखने के बाद से पाँच मिनट में घड़ी पाँच मिनट आगे बढ़ चुकी थी।
"तुम खुद से ऐसे बात करते हो जैसे कविता पढ़ रहे हो।"
यह कहते ही उसके चेहरे पर हल्की सी लाली आ गई। उसे यह अजीब लगा: मेरे खुद से बात करने से उसका चेहरा लाल क्यों हो गया?
उन्होंने शब्दों को लयबद्ध तरीके से आजमाया: "मैं खुद से बात करता हूँ / मानो / मैं कविता सुना रहा हूँ।"
उसने दोबारा कलम उठाई। यह पीले रंग की प्लास्टिक की बॉलपॉइंट कलम थी जिस पर एक बैंक शाखा की दसवीं वर्षगांठ का लोगो बना हुआ था।
उसने कलम की ओर इशारा करते हुए कहा, "अगली बार जब तुम मुझे खुद से बात करते हुए सुनो, तो मैं जो कहूँ उसे लिख लेना, ठीक है?"
उसने सीधे उसकी आँखों में देखा। "क्या तुम सच में जानना चाहते हो?"
उसने सहमति में सिर हिलाया।
उसने एक नोटपैड उठाया और उस पर कुछ लिखना शुरू किया। वह धीरे-धीरे लिख रही थी, लेकिन कलम लगातार चलती रही, एक पल भी नहीं रुकी और न ही कोई शब्द अटका। ठुड्डी पर हाथ रखे वह लगातार उसकी लंबी पलकों को देखता रहा। वह हर कुछ सेकंड में अनियमित अंतराल पर पलकें झपकाती थी। जितनी देर वह उन्हें देखता रहा—ये पलकें, जो कुछ क्षण पहले तक आंसुओं से भीगी हुई थीं—उतना ही कम वह समझ पा रहा था: उसके साथ सोने का असल मतलब क्या था? एक अजीब सा नुकसान का एहसास उसे घेर लिया, मानो किसी जटिल प्रणाली का एक हिस्सा इतना खिंच गया हो कि वह भयानक रूप से सरल हो गया हो: मैं शायद फिर कभी कहीं और नहीं जा पाऊंगा। जब यह विचार उसके मन में आया, तो इसकी भयावहता उसके लिए असहनीय हो गई। उसका अस्तित्व, उसका अपना अस्तित्व, पिघल जाएगा। हाँ, यह सच था: वह नई बनी मिट्टी जितना जवान था, और वह खुद से ऐसे बात कर रहा था जैसे कविता पढ़ रहा हो।

उसने लिखना बंद कर दिया और मेज के उस पार से कागज उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने हाथ बढ़ाकर उससे कागज ले लिया।
रसोई में, किसी महान चीज़ की धुंधली सी छवि थम सी गई थी। जब वह उसके साथ होता, तो अक्सर उसे इस धुंधली छवि का एहसास होता था: एक खोई हुई चीज़ की धुंधली छवि। ऐसी चीज़ जिसकी उसे कोई याद नहीं थी।
“मुझे यह सब मुंह ज़बानी याद है,” उसने कहा। “यही तो तुम हवाई जहाज़ों के बारे में खुद से कहते थे।”
उसने ये शब्द जोर से पढ़े:
हवाई जहाज
हवाई जहाज उड़ रहा है
मैं, हवाई जहाज में
विमान
फ्लाइंग
लेकिन फिर भी, हालांकि यह उड़ गया
हवाई जहाज का
आकाश?
“यह सब?!” वह दंग रह गया।
“हाँ, पूरी बात,” उसने कहा।
“अविश्वसनीय! मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैंने ये सब बातें खुद से कही थीं और मुझे इनमें से कुछ भी याद नहीं है।”
उसने अपने निचले होंठ को हल्का सा काटा और हल्की सी मुस्कान बिखेरी। "लेकिन तुमने कर ही दिया, बिलकुल ऐसे ही।"
उसने आह भरी। “यह तो बहुत अजीब है। मैंने कभी हवाई जहाज के बारे में सोचा भी नहीं था। मुझे इस बारे में बिल्कुल भी याद नहीं है। अचानक से यहाँ से हवाई जहाज कैसे निकल आया?”

मुझे नहीं पता, लेकिन नहाते समय तुम यही कह रहे थे। हो सकता है तुम हवाई जहाजों के बारे में न सोच रहे हो, लेकिन कहीं दूर किसी घने जंगल में तुम्हारा दिल उनके बारे में सोच रहा था।

"कौन जाने? शायद मैं किसी घने जंगल में हवाई जहाज बना रहा था।"

हल्की सी आवाज के साथ उसने बॉलपॉइंट पेन को मेज पर रख दिया, फिर अपनी आंखें ऊपर उठाईं और उसे घूरने लगी।



वे कुछ देर चुप रहे। उनके कपों में रखी कॉफी धुंधली होकर ठंडी हो गई। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती रही, जबकि चंद्रमा ने गुरुत्वाकर्षण बल को धीरे-धीरे बदलकर ज्वार-भाटे को बदल दिया। समय खामोशी से बीतता रहा और रेलगाड़ियाँ पटरियों पर से गुजरती रहीं।

वे दोनों एक ही बात सोच रहे थे: एक हवाई जहाज। वह हवाई जहाज जिसकी कल्पना उनके दिल में घने जंगल में हो रही थी। वह कितना बड़ा था, उसकी आकृति कैसी थी, उस पर किस रंग का पेंट था, वह कहाँ जा रहा था, और उसमें कौन सवार होगा। वे उस हवाई जहाज के बारे में सोच रहे थे जो घने जंगल में किसी का इंतज़ार कर रहा था।

इसके तुरंत बाद वह फिर रो पड़ी। यह पहली बार था जब वह एक ही दिन में दो बार रोई थी। और यह आखिरी बार भी था। यह उसके लिए एक खास पल था। उसने मेज के उस पार हाथ बढ़ाकर उसके बालों को छुआ। छूने का एहसास बेहद वास्तविक था। जीवन की तरह ही, यह कठोर और कोमल, और बहुत दूर था।



हां, उसने सोचा: उन दिनों मैं खुद से ऐसे बात करता था जैसे कविता पढ़ रहा हो।

— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

आईना

आज रात आपने जितनी भी कहानियाँ सुनाई हैं, वे दो श्रेणियों में बँटी हुई लगती हैं। एक श्रेणी में जीवितों की दुनिया है, दूसरी में मृत्यु की दुनिया, और एक ऐसी शक्ति है जो एक तरफ से दूसरी तरफ जाने की अनुमति देती है। इसमें भूत-प्रेत आदि शामिल हैं। दूसरी श्रेणी में अलौकिक शक्तियाँ, पूर्वाभास, भविष्य की भविष्यवाणी करने की क्षमता शामिल है। आपकी सभी कहानियाँ इन्हीं दो श्रेणियों में से किसी एक में आती हैं।

दरअसल, आपके अनुभव लगभग पूरी तरह से इन्हीं श्रेणियों में से किसी एक के अंतर्गत आते हैं। मेरा मतलब है, जो लोग भूत देखते हैं, वे बस भूत देखते हैं और उन्हें कभी पूर्वाभास नहीं होता। और जिन्हें पूर्वाभास होता है, उन्हें भूत नहीं दिखते। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन ऐसा लगता है कि किसी एक श्रेणी के प्रति व्यक्तिगत झुकाव होता है। कम से कम मुझे तो यही लगता है।

बेशक, कुछ लोग इन दोनों श्रेणियों में नहीं आते। जैसे कि मैं। अपने तीस से ज़्यादा सालों में मैंने कभी कोई भूत नहीं देखा, न ही कभी कोई पूर्वाभास या भविष्यसूचक सपना देखा। एक बार मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ लिफ्ट में था और उन्होंने कसम खाकर कहा कि उन्होंने हमारे साथ एक भूत देखा, लेकिन मुझे कुछ भी नहीं दिखा। उन्होंने दावा किया कि मेरे ठीक बगल में एक महिला ग्रे सूट पहने खड़ी थी, लेकिन हमारे साथ कोई महिला नहीं थी, कम से कम जहाँ तक मैं देख पाया। लिफ्ट में हम तीनों ही थे। सच में। और ये दोनों दोस्त जानबूझकर मेरे साथ मज़ाक करने वाले नहीं थे। यह सब बहुत अजीब था, लेकिन सच्चाई यही है कि मैंने आज तक कोई भूत नहीं देखा है।

लेकिन एक बार—सिर्फ एक बार—मुझे एक ऐसा अनुभव हुआ जिसने मुझे बुरी तरह डरा दिया। यह घटना दस साल से भी पहले की है, और मैंने इसके बारे में कभी किसी को नहीं बताया। मुझे इसके बारे में बात करने से भी डर लगता था। मुझे लगता था कि अगर मैंने बताया तो शायद यह फिर से हो जाए, इसलिए मैंने कभी इस बारे में बात नहीं की। लेकिन आज रात आप सभी ने अपना-अपना डरावना अनुभव बताया है, और मेजबान होने के नाते मैं अपनी कहानी सुनाए बिना इस कार्यक्रम को समाप्त नहीं कर सकता। इसलिए मैंने फैसला किया है कि मैं सीधे-सीधे आपको अपनी कहानी सुना दूं। लीजिए, शुरू करते हैं।



मैंने 1960 के दशक के अंत में हाई स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, ठीक उसी समय जब छात्र आंदोलन अपने चरम पर था। मैं हिप्पी पीढ़ी का हिस्सा था और मैंने कॉलेज जाने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, मैं पूरे जापान में घूमता रहा और तरह-तरह के शारीरिक श्रम वाले काम करता रहा। मुझे पूरा विश्वास था कि जीने का यही सबसे सही तरीका है। शायद आप मुझे युवा और उतावला कहेंगे। लेकिन अब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो लगता है कि उस समय मैंने काफी मज़ेदार जीवन जिया था। चाहे वह सही चुनाव था या नहीं, अगर मुझे दोबारा मौका मिले तो मैं निश्चित रूप से वही करूँगा।

देश भर में घूमने के अपने दूसरे साल के पतझड़ के मौसम में, मुझे निगाता प्रांत के एक छोटे से कस्बे के एक जूनियर हाई स्कूल में कुछ महीनों के लिए रात्रि चौकीदार की नौकरी मिल गई। गर्मियों की छुट्टियों में काम करते-करते मैं काफी थक गया था और कुछ समय आराम करना चाहता था। रात्रि चौकीदार का काम कोई रॉकेट साइंस नहीं है। दिन में मैं चौकीदार के दफ्तर में सोता था, और रात में मुझे बस पूरे स्कूल का दो बार चक्कर लगाकर यह सुनिश्चित करना होता था कि सब ठीक है। बाकी समय मैं संगीत कक्ष में रिकॉर्ड सुनता था, पुस्तकालय में किताबें पढ़ता था, और जिम में अकेले बास्केटबॉल खेलता था। सच कहूँ तो, स्कूल में पूरी रात अकेले रहना इतना बुरा भी नहीं है। क्या मुझे डर लग रहा था? बिलकुल नहीं। जब आप अठारह या उन्नीस साल के होते हैं, तो कोई भी चीज़ आपको परेशान नहीं करती।

मुझे नहीं लगता कि आपमें से किसी ने कभी रात के चौकीदार के रूप में काम किया होगा, इसलिए शायद मुझे कर्तव्यों के बारे में समझाना चाहिए। आपको हर रात दो चक्कर लगाने होते हैं, रात नौ बजे और सुबह तीन बजे। यही कार्यक्रम होता है। स्कूल एक अपेक्षाकृत नई तीन मंजिला कंक्रीट की इमारत थी, जिसमें अठारह से बीस कक्षाएँ थीं। इन स्कूलों के हिसाब से यह कोई बहुत बड़ा स्कूल नहीं था। कक्षाओं के अलावा, एक संगीत कक्ष, एक गृह विज्ञान कक्ष, एक कला स्टूडियो, एक स्टाफ कार्यालय और प्रधानाचार्य का कार्यालय था। साथ ही एक अलग कैंटीन, स्विमिंग पूल, व्यायामशाला और सभागार भी था। मेरा काम इन सभी का जल्दी से निरीक्षण करना था।

जब मैं अपने चक्कर लगा रहा था, तो मैंने बीस बिंदुओं वाली एक सूची का पालन किया। मैं हर बिंदु के आगे सही का निशान लगाता जाता था—कर्मचारी कार्यालय, सही, विज्ञान प्रयोगशाला, सही... मुझे लगता है कि मैं सफाईकर्मी के कमरे में, जहाँ मैं सोता था, बिस्तर पर ही पड़ा रह सकता था और बिना इधर-उधर घूमने की परेशानी उठाए इन बिंदुओं पर निशान लगा सकता था। लेकिन मैं इतना लापरवाह आदमी नहीं था। चक्कर लगाने में ज़्यादा समय नहीं लगता था, और वैसे भी, अगर कोई मेरे सोते समय अंदर घुस आता, तो हमला मुझ पर ही होता।

खैर, मैं हर रात साढ़े नौ बजे गश्त पर निकलता था, बाएं हाथ में टॉर्च और दाएं हाथ में लकड़ी की केंडो तलवार लिए। मैंने हाई स्कूल में केंडो का अभ्यास किया था और मुझे पूरा भरोसा था कि मैं किसी से भी मुकाबला कर सकता हूँ। अगर हमलावर नौसिखिए भी होता, और उसके पास असली तलवार भी होती, तो भी मुझे डर नहीं लगता। याद है, मैं जवान था। अगर अब ऐसा होता, तो मैं जान बचाकर भागता।

खैर, यह घटना अक्टूबर की शुरुआत में एक तूफानी रात को घटी। उस समय मौसम थोड़ा उमस भरा था। शाम को मच्छरों का झुंड भिनभिना रहा था, और मुझे याद है कि मैंने उन्हें भगाने के लिए मच्छर भगाने वाली कुछ कॉइल जलाई थीं। हवा बहुत शोर कर रही थी। स्विमिंग पूल का गेट टूटा हुआ था और हवा के कारण वह बार-बार खुलता और बंद होता था। मैंने उसे ठीक करने का सोचा, लेकिन बाहर बहुत अंधेरा था, इसलिए वह पूरी रात बजता रहा।

रात नौ बजे का मेरा राउंड ठीक से पूरा हो गया, मेरी लिस्ट में लिखे सभी बीस आइटम पूरी तरह से चेक किए हुए थे। सभी दरवाजे बंद थे, हर चीज़ अपनी जगह पर थी। कुछ भी असामान्य नहीं था। मैं चौकीदार के कमरे में वापस गया, अलार्म को तीन बजे का सेट किया और गहरी नींद में सो गया।

जब तीन बजे अलार्म बजा, तो मैं अजीब सा महसूस करते हुए उठा। मैं इसे समझा नहीं सकता, लेकिन मुझे कुछ अलग सा महसूस हो रहा था। मुझे उठने का मन नहीं कर रहा था—ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरी बिस्तर से उठने की इच्छा को दबा रहा हो। मैं आमतौर पर बिस्तर से झट से उठ जाता हूँ, इसलिए मुझे यह समझ नहीं आ रहा था। मुझे खुद को बिस्तर से उठने और अपने काम पर जाने के लिए मजबूर करना पड़ा। पूल का गेट अभी भी अपनी

लयबद्ध आवाज़ कर रहा था, लेकिन पहले से अलग। कुछ तो गड़बड़ है, मैंने सोचा, जाने में हिचकिचाते हुए। लेकिन मैंने ठान लिया था कि मुझे अपना काम करना ही है, चाहे कुछ भी हो जाए। अगर आप एक बार अपना कर्तव्य निभाने से बचते हैं, तो आप बार-बार बचेंगे, और मैं उस जाल में नहीं फंसना चाहता था। इसलिए मैंने अपनी टॉर्च और लकड़ी की तलवार उठाई और चल पड़ा।

वह रात बिल्कुल अजीब थी। रात बढ़ने के साथ हवा तेज़ होती गई, और हवा में नमी बढ़ती गई। मेरी त्वचा में खुजली होने लगी और मैं ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। मैंने पहले जिम, ऑडिटोरियम और पूल का चक्कर लगाने का फैसला किया। सब ठीक-ठाक था। पूल का गेट हवा में ऐसे बज रहा था जैसे कोई पागल आदमी बारी-बारी से अपना सिर हिला रहा हो और हां में सिर हिला रहा हो। उसमें कोई क्रम नहीं था। पहले दो बार हां में सिर हिलाना—हां, हां—फिर नहीं, नहीं, नहीं... मुझे पता है कि इसकी तुलना किसी और चीज़ से करना अजीब है, लेकिन मुझे ऐसा ही महसूस हो रहा था।

स्कूल की इमारत के अंदर सब कुछ सामान्य था। मैंने चारों ओर देखा और अपनी सूची में लिखी चीज़ों पर निशान लगाया। मुझे जो अजीब सा एहसास हो रहा था, उसके बावजूद कुछ भी असामान्य नहीं हुआ था। राहत महसूस करते हुए मैं चौकीदार के कमरे की ओर चल पड़ा। मेरी सूची में आखिरी जगह इमारत के पूर्वी हिस्से में, चौकीदार के कमरे के ठीक सामने, कैंटीन के बगल में स्थित बॉयलर रूम था। इसका मतलब था कि मुझे वापस जाते समय पहली मंज़िल के लंबे गलियारे से होकर जाना था। वहाँ घना अंधेरा था। चाँद निकलने पर गलियारे में थोड़ी रोशनी होती थी, लेकिन जब चाँद नहीं निकलता था, तो कुछ भी दिखाई नहीं देता था। मुझे आगे देखने के लिए टॉर्च की रोशनी डालनी पड़ती थी। उस रात, एक तूफ़ान आने वाला था, इसलिए चाँद बिल्कुल नहीं निकला था। कभी-कभी बादल छंटते थे, लेकिन फिर से अंधेरा छा जाता था।

मैं गलियारे में सामान्य से तेज़ चल रहा था, मेरे बास्केटबॉल जूतों के रबर के तलवे लिनोलियम के फर्श पर चरमरा रहे थे। फर्श हरे रंग का था, धुंधली काई के बिस्तर जैसा। मुझे वह दृश्य आज भी याद है।

स्कूल का प्रवेश द्वार गलियारे के बीचोंबीच था, और जब मैं वहाँ से गुज़रा तो मेरे मन में आया, ये क्या—? मुझे लगा जैसे मैंने अंधेरे में कुछ देखा हो। मैं पसीने से तर हो गया। लकड़ी की तलवार को फिर से पकड़कर मैं उस ओर मुड़ा जहाँ मैंने देखा था। मैंने जूतों के शेल्फ के बगल वाली दीवार पर टॉर्च की रोशनी डाली।

और मैं वहीं था। एक दर्पण, दूसरे शब्दों में। यह बस दर्पण में मेरा प्रतिबिंब था। पिछली रात वहाँ दर्पण नहीं था, इसलिए उन्होंने तब से अब तक एक दर्पण लगा दिया होगा। हे भगवान, मैं कितना चौंक गया। यह एक लंबा, पूर्ण आकार का दर्पण था। यह देखकर राहत मिली कि दर्पण में केवल मैं ही था, लेकिन इतना आश्चर्यचकित होने पर मुझे थोड़ी मूर्खता भी महसूस हुई। तो बस इतना ही है, मैंने खुद से कहा। कितना मूर्ख। मैंने अपनी टॉर्च नीचे रखी, जेब से सिगरेट निकाली और उसे जलाया। एक कश लेते हुए मैंने दर्पण में खुद को देखा। बाहर से आती हल्की स्ट्रीटलाइट खिड़की से अंदर दर्पण तक पहुँच रही थी। मेरे पीछे से स्विमिंग पूल का गेट हवा में ज़ोर से बज रहा था।

कुछ कश लेने के बाद, अचानक मुझे कुछ अजीब लगा। आईने में दिख रही मेरी परछाई मैं नहीं थी। बाहर से तो बिल्कुल मेरे जैसी दिख रही थी, लेकिन असल में मैं नहीं थी। नहीं, बात ये नहीं है। मैं ही थी, पर कोई और मैं। एक ऐसी मैं जो कभी होनी ही नहीं चाहिए थी। मैं इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकती। ये कैसा अनुभव था, ये बताना मुश्किल है।

एक बात जो मैं समझ पाया, वह यह थी कि वह दूसरा व्यक्ति मुझसे घृणा करता था। उसके भीतर एक ऐसी घृणा थी मानो अँधेरे समुद्र में तैरता हुआ हिमखंड हो। ऐसी घृणा जिसे कोई कभी कम नहीं कर सकता था।

मैं कुछ देर तक वहीं अवाक खड़ा रहा। मेरी सिगरेट उंगलियों के बीच से फिसलकर ज़मीन पर गिर गई। शीशे में रखी सिगरेट भी ज़मीन पर गिर गई। हम दोनों एक-दूसरे को घूरते रहे। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे हाथ-पैर बंधे हों और मैं हिल भी न सकूँ।

अंततः उसका हाथ हिला, उसके दाहिने हाथ की उंगलियां उसकी ठोड़ी को छू गईं, और फिर धीरे-धीरे, एक कीड़े की तरह, उसके चेहरे पर रेंगने लगीं। मुझे अचानक एहसास हुआ कि मैं भी वही कर रही थी। मानो मैं दर्पण में दिख रही छवि का प्रतिबिंब थी और वह मुझ पर नियंत्रण करने की कोशिश कर रहा था।

अपनी आखिरी ताकत लगाकर मैंने एक ज़ोरदार दहाड़ मारी, और मुझे वहीं जकड़े रखने वाले बंधन टूट गए। मैंने अपनी केंडो तलवार उठाई और पूरी ताकत से शीशे पर दे मारा। मुझे शीशा टूटने की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और दौड़कर अपने कमरे में चला गया। अंदर पहुँचकर मैंने जल्दी से दरवाज़ा बंद किया और चादर के नीचे घुस गया। मुझे फर्श पर गिरी सिगरेट की चिंता थी, लेकिन अब वापस जाने का कोई रास्ता नहीं था। हवा लगातार तेज़ चल रही थी, और पूल का गेट सुबह तक शोर मचाता रहा। हाँ, हाँ, नहीं, हाँ, नहीं, नहीं, नहीं...

मुझे यकीन है कि आपने मेरी कहानी का अंत पहले ही समझ लिया होगा। असल में कोई दर्पण था ही नहीं।

जब सूरज निकला, तब तक तूफान गुजर चुका था। हवा थम गई थी और धूप खिली हुई थी। मैं प्रवेश द्वार की ओर गया। सिगरेट का टुकड़ा जो मैंने फेंका था, वहीं पड़ा था, साथ ही मेरी लकड़ी की तलवार भी। लेकिन कोई दर्पण नहीं था। वहाँ कभी कोई दर्पण था ही नहीं।

मैंने जो देखा वो भूत नहीं था। वो तो बस मैं ही थी। उस रात मैं कितनी डरी हुई थी, ये मैं कभी नहीं भूल सकती, और जब भी मुझे वो याद आता है, ये ख्याल हमेशा मेरे मन में आता है: कि दुनिया में सबसे डरावनी चीज हम खुद ही हैं। आपका क्या ख्याल है?

आपने शायद गौर किया होगा कि मेरे घर में एक भी दर्पण नहीं है। यकीन मानिए, बिना दर्पण के दाढ़ी बनाना सीखना आसान काम नहीं था।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

मेरी पीढ़ी के लिए एक लोककथा: उत्तरकालीन पूंजीवाद का पूर्व-इतिहास

मेरा जन्म 1949 में हुआ, मैंने 1961 में जूनियर हाई स्कूल में और 1967 में कॉलेज में दाखिला लिया। और आखिरकार अपने बहुप्रतीक्षित बीसवें जन्मदिन पर, यानी वयस्कता में प्रवेश के समय, मैं छात्र आंदोलन के चरम उत्पात और मस्ती के बीच था। शायद इसी से मैं साठ के दशक के एक आम बच्चे की श्रेणी में आता हूँ। तो मैं वहाँ था, जीवन के सबसे नाजुक, सबसे अपरिपक्व और फिर भी सबसे अनमोल दौर में, उस पल को जीने के इस दशक की हर चीज को महसूस कर रहा था, उस बेफिक्री में डूबा हुआ। हमारे सामने ऐसे दरवाजे थे जिन्हें हमें तोड़ना था, और यकीन मानिए हमने उन्हें तोड़ डाला! जिम मॉरिसन, बीटल्स और डायलन के संगीत ने हमारे जीवन को संगीतमय बना दिया था।

साठ के दशक में कुछ खास बात थी। अब पीछे मुड़कर देखने पर यह बात सच लगती है, लेकिन जब मैं उस दौर की हलचल में डूबा हुआ था तब भी मुझे इस बात का पूरा यकीन था। लेकिन अगर आप मुझसे और विस्तार से पूछें, कि साठ के दशक में ऐसी क्या खास बात थी, तो मुझे नहीं लगता कि मैं कुछ घिसे-पिटे जवाबों से ज्यादा कुछ कह पाऊंगा। हम बस दर्शक थे, किसी रोमांचक फिल्म में पूरी तरह खो जाते थे, हथेलियों में पसीना आ जाता था, और जब सिनेमाघर की बत्तियां जलती थीं और हम बाहर निकलते थे, तो हमारे अंदर का वो रोमांचकारी एहसास आखिरकार कुछ भी मायने नहीं रखता था। शायद किसी चीज ने हमें इससे कोई महत्वपूर्ण सबक सीखने से रोक दिया? मुझे नहीं पता। मैं उस दौर से इतना करीब से जुड़ा हुआ हूं कि कुछ कह नहीं सकता।

मैं अपने बीते समय की बड़ाई नहीं कर रहा हूँ। मैं बस यह बताने की कोशिश कर रहा हूँ कि उस युग में जीना कैसा था, और यह कि उसमें वाकई कुछ खास बात थी। फिर भी, अगर मैं उस युग का गहराई से विश्लेषण करने की कोशिश करूँ और उसमें से किसी असाधारण बात को बताऊँ, तो शायद मैं ऐसा कर पाऊँ। अगर मैं ऐसा विश्लेषण करूँ, तो मुझे ये बातें मिलेंगी: उस युग की गति और ऊर्जा, उम्मीद की अपार चिंगारी। और सबसे बढ़कर, दूरबीन के गलत सिरे से देखने पर होने वाली झुंझलाहट जैसी स्वाभाविक झुंझलाहट। वीरता और दुष्टता, परमानंद और मोहभंग, शहादत और विश्वासघात, रूपरेखाएँ और विशेष अध्ययन, मौन और वाक्पटुता, लोग सबसे नीरस तरीके से समय बिता रहे थे—ये सब वहाँ मौजूद थे,

निश्चित रूप से। हर युग में ये सब होता है। वर्तमान में भी है, और भविष्य में भी होगा। लेकिन हमारे युग में (अतिशयोक्तिपूर्ण शब्द का प्रयोग करें तो) ये सब अधिक रंगीन थे, और आप इन्हें वास्तव में समझ सकते थे। ये सचमुच हमारी आँखों के सामने एक शेल्फ पर सजे हुए थे। आजकल, अगर आप किसी भी चीज़ की वास्तविकता को समझने की कोशिश करें, तो उसके साथ कई उलझी हुई चीज़ें जुड़ जाती हैं: छिपे हुए विज्ञापन, संदिग्ध डिस्काउंट कूपन, दुकानों द्वारा दिए जाने वाले पॉइंट कार्ड जिन्हें आप जानते हैं कि फेंक देना चाहिए लेकिन फिर भी अपने पास रखते हैं, और ऐसे विकल्प जो आपको पता चलने से पहले ही आप पर थोप दिए जाते हैं। हमारे ज़माने में, कोई भी आपके सामने तीन खंडों वाली समझने में मुश्किल मालिक की पुस्तिका नहीं रखता था। जो भी होता, हम उसे बस हाथों में पकड़ते और सीधे घर ले जाते —जैसे किसी चूजे को रात के छोटे-छोटे स्टॉल से घर ले जाना। सब कुछ सरल और सीधा था। उस समय कारण और परिणाम पक्के दोस्त थे; सिद्धांत और वास्तविकता एक-दूसरे को ऐसे गले लगाते थे जैसे यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो। और मेरा अनुमान है कि साठ का दशक आखिरी बार ऐसा ही था।

उत्तर-चरण पूंजीवाद का पूर्व-इतिहास—यह उस युग के लिए मेरा अपना व्यक्तिगत नाम है।



चलिए, मैं आपको उस दौर की युवतियों के बारे में थोड़ा बताता हूँ। और हम लड़कों के बारे में, जिनके जननांग लगभग नए थे, और उस बेकाबू, आनंददायक और दुख भरे यौन संबंध के बारे में। यही इस लेख का एक मुख्य विषय है।

उदाहरण के लिए, कौमार्य शब्द को ही ले लीजिए—यह एक ऐसा शब्द है जो किसी अज्ञात कारण से मुझे हमेशा वसंत ऋतु की एक खूबसूरत धूप भरी दोपहर में खेतों की याद दिलाता है। साठ के दशक में कौमार्य आज की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। मैं सामान्यीकरण कर रही हूँ—मैंने कोई सर्वेक्षण नहीं किया है—लेकिन मेरा अनुमान है कि मेरी पीढ़ी की लगभग पचास प्रतिशत लड़कियों ने बीस साल की उम्र तक अपना कौमार्य खो दिया था। कम से कम जिन लड़कियों को मैं जानती थी, उनमें तो यही स्थिति थी। इसका मतलब है कि

लगभग आधी लड़कियां, चाहे उन्होंने जानबूझकर यह चुनाव किया हो या नहीं, अभी भी कुंवारी थीं।

अब मुझे यह बात समझ में आती है कि मेरी पीढ़ी की ज़्यादातर लड़कियाँ—जिन्हें आप उदारवादी कह सकते हैं—चाहे कुंवारी हों या नहीं, यौन संबंध के मुद्दे पर बहुत सोच-विचार करती थीं। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि कौमार्य कोई बहुत कीमती चीज़ है, न ही उन्होंने इसे अतीत की कोई बेकार सी बात कहकर खारिज किया। तो असल में हुआ ये कि—माफ़ कीजिएगा, मैं फिर से सामान्यीकरण कर रही हूँ—कि वे परिस्थितियों के अनुसार ढलती गईं। सब कुछ हालात और साथी पर निर्भर करता था। मुझे यह बात समझ में आती है।

तो इस मौन बहुमत के दोनों ओर उदारवादी और रूढ़िवादी थे—एक संपूर्ण स्पेक्ट्रम, जिसमें ऐसी लड़कियाँ भी थीं जो यौन संबंध को एक प्रकार का घरेलू खेल मानती थीं, और वे भी जो शादी तक पवित्र रहने में दृढ़ विश्वास रखती थीं। ऐसे लड़के भी थे जो इस बात पर अड़े थे कि जिससे भी वे शादी करें, वह कुंवारी होनी चाहिए।

हर पीढ़ी की तरह, उस पीढ़ी में भी हर तरह के लोग थे, जिनके अपने-अपने मूल्य थे। लेकिन साठ के दशक और उससे पहले और बाद के दशकों में सबसे बड़ा अंतर यह था कि हम इस बात से आश्वस्त थे कि एक दिन इन सभी मतभेदों को दूर किया जा सकता है।

शांति!



आगे मैं एक ऐसे लड़के की कहानी सुना रहा हूँ जिसे मैं जानता हूँ, कोबे में हाई स्कूल का मेरा सहपाठी। वह उन प्रतिभाशाली लड़कों में से एक था: अच्छे ग्रेड, खेलों में माहिर, और जन्मजात नेता। शायद वह दिखने में सुंदर नहीं था, बल्कि साफ-सुथरा था। उसकी आवाज़ सुरीली और सुरीली थी, और वह एक अच्छा वक्ता था, यहाँ तक कि एक ठीक-ठाक गायक भी। उसे हमेशा कक्षा प्रतिनिधि चुना जाता था, और जब हमारी कक्षा समूह में मिलती थी, तो वही चर्चा का समापन करता था। उसके विचार बहुत मौलिक नहीं थे, लेकिन कक्षा में चर्चा के दौरान मौलिकता की उम्मीद कौन करता है? ऐसे कई मौके होते हैं जब मौलिकता की ज़रूरत नहीं होती। वास्तव में, लगभग हर स्थिति में। हम बस वहाँ से जितनी जल्दी हो सके निकलना

चाहते थे, और हम उस पर भरोसा कर सकते थे कि वह तय समय में चर्चा समाप्त कर देगा। इस लिहाज़ से, वह एक बहुत ही उपयोगी व्यक्ति था।

उसके साथ सब कुछ नियमों के अनुसार होता था। अगर कोई स्टडी हॉल में शोर मचा रहा होता, तो वह चुपचाप उसे शांत रहने को कह देता। वह लड़का लगभग परफेक्ट था, लेकिन मुझे इस बात से चिढ़ होती थी कि मैं उसके दिमाग में चल रही बातें समझ नहीं पा रही थी। कभी-कभी मेरा मन करता था कि उसका सिर धड़ से अलग कर दूं और उसे ज़ोर से हिलाकर देखूं कि अंदर क्या चल रहा है। वह लड़कियों में भी बहुत लोकप्रिय था। जब भी वह क्लास में कुछ बोलने के लिए खड़ा होता, हर लड़की उसे प्रशंसा भरी निगाहों से देखती। अगर आप किसी गणित के सवाल में फंस जाते, जिसे आप हल नहीं कर पा रहे होते, तो वही आपका सबसे भरोसेमंद साथी होता था। हम बात कर रहे हैं एक ऐसे लड़के की जो मुझसे सत्ताईस गुना ज़्यादा लोकप्रिय था।

अगर आप कभी सरकारी हाई स्कूल गए हैं, तो आप समझ जाएंगे कि मैं किस तरह के व्यक्ति की बात कर रहा हूँ। हर कक्षा में उसके जैसा कोई न कोई होता है, जो हर चीज़ को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है। स्कूल में जीवन के लिए ज़रूरी ज्ञान प्राप्त करने में बिताए वर्षों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है, और उनमें से एक सबक यह भी है: चाहे आप मानें या न मानें, हर समूह में उसके जैसा कोई न कोई होता ही है।

व्यक्तिगत तौर पर, मुझे इस तरह के लोग ज़्यादा पसंद नहीं हैं। पता नहीं क्यों, हमारी आपस में बनती ही नहीं। मुझे अपूर्ण, लेकिन यादगार लोग ज़्यादा पसंद हैं। तो इस लड़के के साथ, भले ही हम एक साल तक एक ही क्लास में थे, लेकिन हम कभी साथ नहीं घूमे। हमारी पहली ठीक-ठाक बातचीत ग्रेजुएशन के बाद, कॉलेज में फर्स्ट ईयर में गर्मियों की छुट्टियों के दौरान हुई थी। हम दोनों एक ही ड्राइविंग स्कूल में ड्राइविंग सीख रहे थे और वहाँ हमारी कुछ बार बातचीत हुई। इंतज़ार करते हुए हम साथ में चाय पीते थे। ड्राइविंग स्कूल दुनिया की सबसे उबाऊ जगहों में से एक है, और अगर कोई जाना-पहचाना चेहरा दिख जाए तो उससे बात करने का मन करता है। मुझे याद नहीं कि हमने क्या बात की थी, लेकिन मुझे इतना ज़रूर याद है कि उससे मेरी कोई खास छाप नहीं पड़ी।

मुझे उसके बारे में एक और बात याद है, वो थी उसकी गर्लफ्रेंड। वो दूसरी क्लास में पढ़ती थी और उन गिनी-चुनी लड़कियों में से एक थी जो बेहद खूबसूरत थीं। अपनी खूबसूरती के अलावा, वो अच्छे नंबर लाती थी, खेलों में माहिर थी, दयालु थी, जन्मजात लीडर थी और क्लास की चर्चाओं का सारांश हमेशा वही बताती थी। हर क्लास में उसके जैसी एक लड़की होती है। संक्षेप में कहें तो, वे एक-दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे। मिस्टर क्लीन और मिस क्लीन। बिल्कुल टूथपेस्ट के विज्ञापन से निकले किरदारों की तरह।

वे एक-दूसरे से कभी अलग नहीं होते थे। दोपहर के भोजन के ब्रेक में वे स्कूल के मैदान के एक कोने में साथ-साथ बैठकर बातें करते थे। वे घर भी साथ जाते थे, एक ही ट्रेन में सवार होते थे लेकिन अलग-अलग स्टेशनों पर उतरते थे। वह फुटबॉल क्लब में था, वह अंग्रेजी वार्तालाप क्लब में थी, और जो भी दूसरे से पहले अपना काम खत्म कर लेता, वह पुस्तकालय में पढ़ाई करता, ताकि वे साथ घर जा सकें। ऐसा लगता था मानो वे अपने हर खाली पल में साथ रहते थे। और वे हमेशा बातें करते रहते थे। मुझे नहीं पता कि वे कैसे हमेशा अपने पास कहने के लिए बातें रखते थे, लेकिन किसी तरह वे ऐसा कर लेते थे।

हम—और "हम" से मेरा मतलब उन दोस्तों से है जिनके साथ मैं घूमता-फिरता था—इस जोड़े को नापसंद नहीं करते थे। हमने कभी उनका मज़ाक नहीं उड़ाया या उनके बारे में कुछ बुरा नहीं कहा। असल में, हमने उनके बारे में शायद ही कभी सोचा हो। वे मौसम की तरह थे, बस यूं ही मौजूद थे, हमारी नज़र में बस नाम के लिए ही नहीं थे। हम अपनी-अपनी रुचियों में इतने डूबे हुए थे, उस दौर की रोमांचक चीज़ों में। उदाहरण के लिए? जैसे कि सेक्स, रॉक एंड रोल, जीन-ल्यूक गोडार्ड की फिल्में, राजनीतिक आंदोलन, केंज़ाबुरो के उपन्यास।

लेकिन खासकर सेक्स।

बेशक हम नासमझ और घमंडी बच्चे थे। हमें जीवन का कोई मतलब ही नहीं पता था। असल दुनिया में मिस्टर क्लीन और मिस क्लीन जैसी कोई चीज़ नहीं होती। वे तो सिर्फ़ टीवी पर ही दिखते हैं। उस समय हमारे जो भ्रम थे और उस लड़के और उसकी प्रेमिका के जो भ्रम थे, उनमें ज़्यादा फ़र्क नहीं था।

यह उनकी कहानी है। यह कोई सुखद कहानी नहीं है, और अब पीछे मुड़कर देखने पर इसमें कोई सीख ढूंढना मुश्किल है। लेकिन खैर, यह उनकी कहानी है, और साथ ही हमारी भी

कहानी है। तो यह एक तरह की लोककथा है जिसे मैंने संकलित किया है और अब, एक अनाड़ी कथावाचक की तरह, मैं इसे आप तक पहुंचाऊंगा।



उसने मुझे जो कहानी सुनाई, वह कुछ वाइन पीते हुए कई अन्य विषयों पर चर्चा करने के बाद सामने आई, इसलिए सच-सच कहें तो यह पूरी तरह सच नहीं हो सकती। कुछ हिस्से मुझसे छूट गए हैं, और कुछ विवरण मैंने अपनी कल्पना से जोड़ दिए हैं। और इसमें शामिल असली लोगों की सुरक्षा के लिए, मैंने कुछ तथ्यों को बदल दिया है, हालांकि इससे पूरी कहानी पर कोई असर नहीं पड़ता। फिर भी, मुझे लगता है कि घटनाएँ लगभग वैसी ही हुईं जैसा बताया गया है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि भले ही मैं कुछ विवरण भूल गया हूँ, लेकिन मुझे कहानी का लहजा स्पष्ट रूप से याद है। जब आप किसी की कहानी सुनते हैं और फिर उसे लिखने की कोशिश करते हैं, तो लहजा सबसे महत्वपूर्ण होता है। अगर लहजा सही हो, तो आपके पास एक सच्ची कहानी होगी। हो सकता है कि कुछ तथ्य पूरी तरह सही न हों, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता - बल्कि इससे कहानी की सच्चाई और भी पुख्ता हो सकती है। इसे दूसरे तरीके से देखें, तो आप कह सकते हैं कि कुछ कहानियाँ तथ्यात्मक रूप से सही होती हैं, लेकिन बिल्कुल भी सच नहीं होतीं। इस तरह की कहानियाँ उबाऊ होती हैं, और कुछ मामलों में तो खतरनाक भी। आप उन्हें दूर से ही पहचान सकते हैं।

एक और बात जो मुझे यहाँ स्पष्ट करनी है, वो ये है कि मेरा ये पूर्व सहपाठी एक घटिया कहानीकार था। भगवान ने उसे शायद कई गुण दिए हों, लेकिन कहानी सुनाने की कला उसमें नहीं थी। (वैसे भी, कहानी सुनाने की कला का जीवन में कोई वास्तविक उद्देश्य नहीं होता।) इसलिए जब वो अपनी कहानी सुना रहा था, तो मुझे उबासी रोकना मुश्किल हो रहा था। वो भटक जाता, गोल-मोल बातें करने लगता, कुछ तथ्यों को याद करने में उसे बहुत समय लग जाता। वो अपनी कहानी का एक टुकड़ा हाथ में लेता, उसे कुछ देर तक घूरता, और जब उसे यकीन हो जाता कि उसने सही कहानी बताई है, तो वो एक-एक करके तथ्यों को मेज पर रखता। लेकिन अक्सर ये क्रम गलत होता था। इसलिए एक उपन्यासकार होने के

नाते—यानी कहानी विशेषज्ञ होने के नाते—मैंने इन टुकड़ों को फिर से व्यवस्थित किया है, और इन्हें ध्यान से जोड़कर एक सुसंगत कथा बनाने की कोशिश की है।

हम दोनों की मुलाकात इटली के मध्य में स्थित लूका शहर में संयोगवश हुई। उस समय मैं रोम में एक अपार्टमेंट किराए पर लेकर रह रहा था। मेरी पत्नी को जापान वापस जाना था, इसलिए मैं अकेले ही ट्रेन से सुकून भरी यात्रा का आनंद ले रहा था। पहले वेनिस से वेरोना, फिर मंटुआ और पीसा, लूका में एक पड़ाव के साथ। यह मेरी लूका की दूसरी यात्रा थी। लूका एक शांत और मनमोहक शहर है, और शहर के बाहरी इलाके में एक शानदार रेस्तरां है जहाँ मशरूम के व्यंजन लाजवाब मिलते हैं।

वह व्यापार के सिलसिले में लुक्का आए थे, और संयोग से हम दोनों एक ही होटल में ठहरे हुए थे। दुनिया कितनी छोटी है!

उस रात हमने एक रेस्टोरेंट में साथ में डिनर किया। हम दोनों अकेले यात्रा कर रहे थे और ऊब चुके थे। उम्र बढ़ने के साथ-साथ अकेले यात्रा करना उतना ही उबाऊ होता जाता है। जवानी में बात अलग होती है—चाहे आप अकेले हों या नहीं, यात्रा बेहद मज़ेदार हो सकती है। लेकिन उम्र बढ़ने के साथ-साथ मज़ा कम होता जाता है। सिर्फ़ पहले दो दिन ही आनंददायक होते हैं। उसके बाद, नज़ारे परेशान करने लगते हैं और लोगों की आवाज़ें कर्कश लगने लगती हैं। इन सबसे बचने का कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि अगर आप इन्हें रोकने के लिए आँखें बंद कर लें, तो तरह-तरह की अप्रिय यादें ताज़ा हो जाती हैं। रेस्टोरेंट में खाना खाना भी मुश्किल हो जाता है और आप बार-बार घड़ी देखते रहते हैं, क्योंकि आप उन रेलगाड़ियों का इंतज़ार करते रहते हैं जो कभी आती ही नहीं। किसी विदेशी भाषा में अपनी बात समझाना तो और भी मुश्किल हो जाता है।

इसीलिए, जब हमारी नज़रें एक-दूसरे पर पड़ीं, तो हमने राहत की साँस ली, ठीक वैसे ही जैसे ड्राइविंग स्कूल में हमारी मुलाक़ात हुई थी। हम चिमनी के पास एक मेज़ पर बैठ गए, एक महँगी रेड वाइन की बोतल मंगाई, और मशरूम से बना पूरा डिनर किया: मशरूम ऐपेटाइज़र, मशरूम पास्ता और अर्रोस्टो कॉन फंगी।

पता चला कि उनकी एक फर्नीचर कंपनी थी जो यूरोप से फर्नीचर आयात करती थी, और वे खरीदारी के लिए यूरोप आए हुए थे। देखकर ही पता चल रहा था कि उनका कारोबार अच्छा

चल रहा है। उन्होंने न तो शेखी मारी और न ही कोई दिखावा किया—जब उन्होंने मुझे अपना बिजनेस कार्ड दिया तो बस इतना कहा कि वे एक छोटी कंपनी चला रहे हैं—फिर भी उन्होंने वाकई में अच्छी तरक्की की थी। उनके कपड़े, बोलने का तरीका, हाव-भाव, व्यवहार, हर चीज से यह स्पष्ट था। वे अपनी सांसारिक सफलता से पूरी तरह संतुष्ट थे, एक सुखद तरीके से।

उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने मेरे सभी उपन्यास पढ़े हैं। उन्होंने कहा, "हमारी सोच और लक्ष्य बहुत अलग हैं, लेकिन मुझे लगता है कि दूसरों को कहानियां सुना पाना एक अद्‌भुत बात है।"

यह बात समझ में आती है। मैंने आगे कहा, "अगर आप कहानी को अच्छे से सुना सकते हैं।"

शुरुआत में हमने मुख्य रूप से इटली के बारे में अपने अनुभवों पर चर्चा की। जैसे कि ट्रेनें कभी समय पर नहीं चलतीं, खाना खाने में कितना समय लगता है। मुझे ठीक से याद नहीं कि यह सब कैसे शुरू हुआ, लेकिन जब तक हम वाइन की दूसरी बोतल तक पहुँच चुके थे, तब तक उसने अपनी कहानी सुनाना शुरू कर दिया था। और मैं सुन रहा था, इशारे करके दिखा रहा था कि मैं उसकी बातों को समझ रहा हूँ। मुझे लगता है कि वह लंबे समय से यह बात अपने दिल से निकालना चाहता था, लेकिन किसी कारणवश नहीं कह पाया था। अगर हम मध्य इटली के एक छोटे से खूबसूरत कस्बे के एक अच्छे से रेस्तरां में, अंगीठी के सामने बैठकर, 1983 की कोल्टिबुओनो वाइन की चुस्कियाँ न ले रहे होते, तो मुझे पूरा यकीन है कि वह मुझे यह कहानी नहीं सुनाता। लेकिन उसने सुना दी।



“मैंने हमेशा सोचा है कि मैं एक उबाऊ इंसान हूँ,” उसने बात शुरू की। “मैं कभी भी उस तरह का इंसान नहीं रहा जो खुलकर मौज-मस्ती कर सके। ऐसा लगता था जैसे मेरे चारों ओर हमेशा एक सीमा बनी रहती थी और मैं पूरी कोशिश करता था कि उस सीमा को पार न करूँ। जैसे मैं किसी सुव्यवस्थित राजमार्ग पर चल रहा हूँ जिस पर संकेत लगे हों कि कहाँ से निकलना है, कहाँ मोड़ है, और कहाँ से आगे नहीं जाना है। मैंने सोचा, निर्देशों का पालन करो, और सब ठीक हो जाएगा। लोग मेरी इस आदत की तारीफ करते थे, और जब मैं छोटा था तो

मुझे यकीन था कि बाकी सब भी मेरे जैसा ही कर रहे हैं। लेकिन जल्द ही मुझे पता चल गया कि ऐसा नहीं था।"

उसने अपना शराब का गिलास आग के सामने उठाया और कुछ देर तक उसे निहारता रहा।

"उस लिहाज़ से, मेरी ज़िंदगी, कम से कम शुरुआती दौर, सुचारू रूप से गुज़री। लेकिन मुझे अपनी ज़िंदगी का मतलब नहीं पता था, और जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, यह अस्पष्ट सोच और भी गहरी होती गई। मैं ज़िंदगी से क्या चाहता था? मुझे कुछ पता ही नहीं था! मैं गणित, अंग्रेज़ी, खेल, हर चीज़ में अच्छा था। मेरे माता-पिता हमेशा मेरी तारीफ़ करते थे, मेरे शिक्षक हमेशा कहते थे कि मैं अच्छा कर रहा हूँ, और मुझे पता था कि मैं बिना किसी परेशानी के किसी अच्छे कॉलेज में दाखिला ले सकता हूँ। लेकिन मुझे यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि मेरा लक्ष्य क्या है, मैं क्या करना चाहता हूँ। कॉलेज में किस विषय में दाखिला लूँ, यह भी मुझे समझ नहीं आ रहा था। क्या मुझे कानून, इंजीनियरिंग या चिकित्सा में जाना चाहिए? मुझे पता था कि मैं इनमें से किसी में भी अच्छा कर सकता था, लेकिन किसी में भी मुझे कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसलिए मैंने अपने माता-पिता और शिक्षकों की सलाह मानकर टोक्यो विश्वविद्यालय के कानून विभाग में दाखिला ले लिया। सच कहूँ तो, मुझे कोई सिद्धांत निर्देशित नहीं कर रहा था—बस सब यही कह रहे थे कि यही सबसे अच्छा विकल्प है।"

उसने शराब का एक और घूंट लिया। "क्या तुम्हें हाई स्कूल में मेरी प्रेमिका याद है?"

"क्या उसका नाम फुजिसावा था?" मैंने किसी तरह नाम याद करके कहा। मुझे पूरी तरह यकीन नहीं था कि मेरा जवाब सही है, लेकिन बाद में पता चला कि वही नाम था।

उसने सिर हिलाया। "हाँ। योशिको फुजिसावा। उसके साथ भी सब कुछ अच्छा था। मैं उसे बहुत पसंद करता था, उसके साथ रहना और हर तरह की बातें करना मुझे अच्छा लगता था। मैं उसे अपने दिल की हर बात बता सकता था, और वह मुझे समझती थी। उसके साथ रहते हुए मैं घंटों बातें कर सकता था। यह बहुत अच्छा था। मतलब, उससे पहले मेरा कोई ऐसा दोस्त नहीं था जिससे मैं खुलकर बात कर सकूँ।"



वो और योशिको आध्यात्मिक रूप से जुड़वाँ थे। उनकी पृष्ठभूमि कितनी मिलती-जुलती थी, यह देखकर आश्चर्य होता था। जैसा कि मैंने कहा, दोनों आकर्षक, बुद्धिमान और जन्मजात नेता थे। कक्षा के सुपरस्टार। दोनों ही धनी परिवारों से थे, जिनके माता-पिता आपस में अच्छे संबंध नहीं रखते थे। दोनों की माताएँ उनके पिताओं से उम्र में बड़ी थीं, और पिता एक रखैल रखते थे और जितना हो सके घर से दूर रहते थे। जनता की राय के डर से उनके माता-पिता ने तलाक नहीं लिया। घर में, उनकी माताएँ ही सब कुछ संभालती थीं और अपने बच्चों से हर काम में सर्वश्रेष्ठ होने की उम्मीद करती थीं। वो और योशिको दोनों ही काफी लोकप्रिय थे, लेकिन उनके कोई सच्चे दोस्त नहीं थे। उन्हें इसका कारण समझ नहीं आता था। शायद इसलिए कि साधारण, अपूर्ण लोग हमेशा अपने जैसे ही अपूर्ण लोगों को दोस्त चुनते हैं। खैर, दोनों हमेशा अकेले और थोड़े परेशान रहते थे।

लेकिन किसी तरह उनका मेल-जोल बढ़ गया और वे डेटिंग करने लगे। वे हर दिन साथ में लंच करते, स्कूल से घर साथ में आते। अपना हर खाली पल एक-दूसरे के साथ बिताते, बातें करते। उनके पास हमेशा बहुत कुछ कहने को होता था। रविवार को वे साथ में पढ़ाई करते। जब वे दोनों अकेले होते थे, तब वे सबसे ज़्यादा सुकून महसूस करते थे। दोनों एक-दूसरे की भावनाओं को बखूबी समझते थे। वे अपने अकेलेपन, अपने नुकसान के एहसास, अपने डर और अपने सपनों के बारे में घंटों बातें कर सकते थे।

वे हफ्ते में एक बार, आमतौर पर अपने-अपने घरों के किसी एक कमरे में, एक-दूसरे को किस करते थे। अकेले रहना मुश्किल नहीं था, क्योंकि उनके पिता अक्सर घर से बाहर रहते थे और माताएँ आधे समय काम में व्यस्त रहती थीं, इसलिए उनके घर लगभग सुनसान ही रहते थे। किस करते समय वे दो नियमों का पालन करते थे: उनके कपड़े शरीर पर ही रहने चाहिए और वे सिर्फ अपनी उंगलियों का इस्तेमाल करेंगे। वे दस-पंद्रह मिनट तक जोश से किस करते, फिर एक डेस्क पर बैठकर साथ में पढ़ाई करते।

"बस करो। अब पढ़ाई क्यों न करें?" वह अपनी स्कर्ट का किनारा ठीक करते हुए कहती। दोनों के लगभग एक जैसे ही नंबर आते थे, इसलिए उन्होंने पढ़ाई को एक खेल बना लिया था, जैसे कि गणित के सवाल सबसे जल्दी कौन हल करता है, इसकी प्रतियोगिता। पढ़ाई उनके लिए कभी बोझ नहीं थी; यह उनके लिए स्वाभाविक थी। उन्होंने मुझे बताया कि इसमें बहुत

मज़ा आता था। आपको शायद यह बेवकूफी लगे, लेकिन हमें पढ़ाई में सचमुच बहुत आनंद आता था। शायद हम जैसे लोग ही समझ सकते हैं कि इसमें कितना मज़ा आता था।

ऐसा नहीं था कि वह अपने रिश्ते से पूरी तरह खुश था। कुछ कमी थी। दूसरे शब्दों में कहें तो, शारीरिक संबंध की कमी। उसने कहा, "शारीरिक रूप से एक होने का एहसास।" उसने आगे कहा, "मुझे लगा कि हमें अगला कदम उठाना होगा। मुझे लगा कि अगर हम ऐसा करेंगे, तो हम अपने रिश्ते में ज़्यादा आज़ाद होंगे और एक-दूसरे को बेहतर समझ पाएंगे। मेरे लिए यह एक बिल्कुल स्वाभाविक विकास होता।"

लेकिन उसकी सोच अलग थी। उसने होंठ सिकोड़ते हुए धीरे से सिर हिलाया। "मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ," उसने शांत स्वर में कहा, "लेकिन मैं शादी तक कुंवारी रहना चाहती हूँ।" उसने उसे कितना भी समझाने की कोशिश की, वह नहीं मानी।

“मैं तुमसे प्यार करती हूँ, सचमुच,” उसने कहा। “लेकिन ये दो अलग-अलग बातें हैं। मैं अपना मन नहीं बदलूँगी। मुझे माफ़ करना, लेकिन तुम्हें इसे बर्दाश्त करना ही होगा। अगर तुम मुझसे सच में प्यार करते हो, तो तुम्हें करना ही पड़ेगा।”

जब उसने इस तरह से बात कही, तो उसने मुझे बताया, मुझे उसकी इच्छाओं का सम्मान करना पड़ा। यह इस बात का सवाल था कि वह अपना जीवन कैसे जीना चाहती थी और इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता था। मेरे लिए, किसी लड़की का कुंवारी होना या न होना इतना मायने नहीं रखता था। अगर मेरी शादी हो जाती और मुझे पता चलता कि मेरी दुल्हन कुंवारी नहीं है, तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं बहुत कट्टरपंथी या कल्पनाशील, रोमांटिक किस्म का इंसान नहीं हूँ। लेकिन मैं बहुत रूढ़िवादी भी नहीं हूँ। शायद मैं ज़्यादा यथार्थवादी हूँ। किसी लड़की का कुंवारी होना कोई बड़ी बात नहीं है। यह कहीं ज़्यादा ज़रूरी है कि एक जोड़ा एक-दूसरे को अच्छी तरह से जाने। लेकिन यह सिर्फ़ मेरी राय है, और मैं दूसरों को इससे सहमत होने के लिए मजबूर नहीं करने वाला। उसका अपना नज़रिया था कि उसका जीवन कैसा होना चाहिए, इसलिए मुझे बस मुस्कुराकर इसे सहना पड़ा और उसके कपड़ों के नीचे उसे छूकर ही संतोष करना पड़ा। मुझे यकीन है कि आप समझ सकते हैं कि इसमें क्या-क्या शामिल था।

मैंने कहा, मैं समझ सकता हूँ। मेरी भी कुछ ऐसी ही यादें हैं।

उसका चेहरा थोड़ा लाल हो गया और वह मुस्कुराया।

यह इतना बुरा भी नहीं था, मुझे गलत मत समझिए, लेकिन चूंकि हम कभी आगे नहीं बढ़े, इसलिए मुझे कभी सुकून नहीं मिला। मुझे लगता था कि हम हमेशा आधे रास्ते में ही रुक जाते थे। मैं बस उसके साथ एक होना चाहता था, हमारे बीच कुछ भी रुकावट न हो। उसे अपना बनाना चाहता था, उसके वश में होना चाहता था। मुझे इसका सबूत देने के लिए एक संकेत चाहिए था। बेशक, यौन इच्छा भी इसमें शामिल थी, लेकिन वह मुख्य बात नहीं थी। मैं शारीरिक रूप से एक होने की अनुभूति की बात कर रहा हूँ। मैंने कभी किसी व्यक्ति के साथ उस एकता का अनुभव नहीं किया था। मैं हमेशा अकेला रहा, हमेशा तनाव में रहा, एक दीवार के पीछे फंसा हुआ। मुझे पूरा यकीन था कि एक बार जब हम एक हो जाएंगे, तो मेरी वह दीवार ढह जाएगी, और मैं खुद को जान पाऊंगा, उस स्व को जिसकी मुझे बस धुंधली झलकियाँ ही मिली थीं।

“लेकिन यह सफल नहीं हुआ?” मैंने उससे पूछा।

“नहीं, ऐसा नहीं हुआ,” उसने कहा और कुछ देर तक अंगीठी में जलती लकड़ियों को देखता रहा, उसकी आँखें अजीब तरह से बेजान थीं। “यह कभी कामयाब ही नहीं हुआ,” उसने कहा।

वह उससे शादी करने के बारे में गंभीरता से सोच रहा था और उसने उसे यह बात बता भी दी। उसने उससे कहा, "कॉलेज से ग्रेजुएशन के बाद हम तुरंत शादी कर सकते हैं। हम सगाई भी कर सकते हैं।" उसकी बातों से वह बहुत खुश हुई और उसने उसे देखकर एक प्यारी सी मुस्कान दी। साथ ही, उसकी मुस्कान में थोड़ी सी थकान भी झलक रही थी, मानो कोई समझदार और परिपक्व व्यक्ति किसी युवा के अपरिपक्व विचारों को सुन रहा हो। उसने कहा, "मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती। मैं अपने से कुछ साल बड़े किसी से शादी करूंगी और तुम अपने से कुछ साल छोटे किसी से। यही तो होता है। औरतें मर्दों से जल्दी परिपक्व होती हैं और जल्दी बूढ़ी भी हो जाती हैं। तुम्हें अभी दुनियादारी का कुछ पता नहीं है। अगर हम कॉलेज से निकलते ही शादी भी कर लें, तो भी बात नहीं बनेगी। हम कभी भी उतने खुश नहीं रह पाएंगे जितने अभी हैं। बेशक मैं तुमसे प्यार करता हूँ—मैंने कभी किसी और से प्यार नहीं किया। लेकिन ये दो अलग-अलग बातें हैं।" (उसका पसंदीदा वाक्य था, "ये दो अलग-अलग बातें हैं।)

हम अभी हाई स्कूल में हैं और हमने एक सुरक्षित माहौल में जीवन बिताया है। लेकिन बाहरी दुनिया वैसी नहीं है। यह एक विशाल दुनिया है, और हमें इसके लिए तैयार रहना होगा।

वह समझ गया कि वह क्या कहना चाह रही थी। अपनी उम्र के दूसरे लड़कों की तुलना में वह काफी समझदार था। अगर कोई और यही बात कह रहा होता तो शायद वह मान जाता। लेकिन यह कोई काल्पनिक बात नहीं थी। बात उसकी ज़िंदगी की थी।

मुझे समझ नहीं आ रहा, उसने उससे कहा। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हम एक हो जाएँ। यह बात मेरे लिए बिल्कुल स्पष्ट है, और इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण भी नहीं हो सकती। मुझे परवाह नहीं कि यह अवास्तविक है। मैं तुमसे इतना प्यार करता हूँ।

उसने एक बार फिर सिर हिलाया, मानो उसे बता रही हो कि यह मुमकिन ही नहीं है। उसने उसके बालों पर हाथ फेरा और बोली, “मुझे हैरानी होती है कि हम दोनों में से किसी को भी प्यार के बारे में क्या पता है। हमारे प्यार की कभी परीक्षा नहीं हुई। हमें कभी किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी नहीं लेनी पड़ी। हम अभी भी बच्चे हैं।”

वह कुछ कह नहीं सका। उसे बस इस बात का दुख था कि अब वह अपने चारों ओर बनी दीवार को तोड़ नहीं सकता। अब तक वह उस दीवार को अपनी रक्षा करने वाली मानता था, लेकिन अब वह एक बाधा बन गई थी, उसके रास्ते में रुकावट। बेबसी की एक लहर उस पर छा गई। मैं अब कुछ नहीं कर सकता, उसने सोचा। मैं हमेशा के लिए इस मोटी दीवार से घिरा रहूंगा, कभी बाहर निकलने की इजाजत नहीं मिलेगी। मेरी बाकी की नीरस, अर्थहीन जिंदगी।



हाई स्कूल से स्नातक होने तक उनका रिश्ता वैसा ही बना रहा। वे हमेशा की तरह पुस्तकालय में मिलते, साथ में पढ़ाई करते और कपड़ों के अंदर ही एक-दूसरे को प्यार करते। उसे इस बात से कोई आपत्ति नहीं थी कि उनका रिश्ता कभी पूरा नहीं हुआ। बल्कि, उसे ऐसा ही अधूरा रहना अच्छा लगता था। बाकी सभी को लगता था कि मिस्टर और मिस क्लीन एक सरल और खुशहाल जवानी जी रहे हैं। लेकिन वह अपने अनसुलझे एहसासों से जूझता रहा।

1967 की वसंत ऋतु में, उन्होंने टोक्यो विश्वविद्यालय में दाखिला लिया, जबकि वह कोबे के एक महिला महाविद्यालय में गईं। यह निस्संदेह एक उत्कृष्ट विद्यालय था, लेकिन उनके अच्छे

अंकों के साथ, अगर वह चाहतीं तो इससे कहीं बेहतर संस्थान में, यहाँ तक कि टोक्यो विश्वविद्यालय में भी दाखिला ले सकती थीं। लेकिन उन्होंने इसे आवश्यक नहीं समझा और प्रवेश परीक्षा नहीं दी। उन्होंने समझाया, "मुझे विशेष रूप से पढ़ाई करने या वित्त मंत्रालय में नौकरी करने की इच्छा नहीं है। मैं एक लड़की हूँ। मैं तुमसे अलग हूँ। तुम बहुत आगे जाओगे। लेकिन मैं थोड़ा आराम करना चाहती हूँ और अगले चार साल मौज-मस्ती में बिताना चाहती हूँ। शादी के बाद मैं ऐसा दोबारा नहीं कर पाऊँगी।"

वह सचमुच निराश था। उसे उम्मीद थी कि वे दोनों टोक्यो जाएंगे और अपने रिश्ते की नई शुरुआत करेंगे। उसने उससे साथ चलने की विनती की, लेकिन उसने फिर से बस अपना सिर हिला दिया।

वह अपने पहले साल की पढ़ाई पूरी करने के बाद गर्मियों की छुट्टियों में टोक्यो से वापस आया, और वे लगभग हर दिन डेट पर जाने लगे। (उसी गर्मी में हम दोनों की मुलाकात ड्राइविंग स्कूल में हुई थी।) वह उन्हें हर जगह घुमाती थी और वे पहले की तरह ही रोमांस करते रहते थे। हालांकि, उसे धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा कि उनके रिश्ते में कुछ बदलाव आ रहा है। हकीकत धीरे-धीरे उनके बीच अपनी जगह बनाने लगी थी।

ऐसा नहीं था कि कोई स्पष्ट बदलाव आया हो। असल में, समस्या बदलाव की कमी थी। उसके बारे में कुछ भी नहीं बदला था—उसके बोलने का तरीका, उसके कपड़े, बातचीत के विषय, उसके विचार—सब कुछ पहले जैसा ही था। उनका रिश्ता एक पेंडुलम की तरह धीरे-धीरे रुक रहा था, और वह खुद को बेमेल महसूस कर रहा था।

टोक्यो में जीवन अकेलापन भरा था। शहर गंदा था, खाना घटिया, लोग असभ्य। वह हर समय उसके बारे में सोचता रहता था। रात को वह अपने कमरे में बंद होकर उसे लगातार पत्र लिखता रहता। वह भी जवाब देती, हालांकि उतनी बार नहीं। वह अपने जीवन के सारे किस्से लिखती थी, और वह उसके पत्रों को बड़े चाव से पढ़ता था। उसके पत्र ही उसे मानसिक रूप से स्वस्थ रखते थे। उसने सिगरेट पीना और शराब पीना शुरू कर दिया, और स्कूल जाना छोड़ दिया।

जब आखिरकार गर्मियों की छुट्टियां शुरू हुईं और वह कोबे वापस लौटा, तो कई चीजों ने उसे निराश किया। वह सिर्फ तीन महीने के लिए ही दूर था, फिर भी अजीब तरह से उसका

गृहनगर अब उसे धूल भरा और बेजान सा लगा। अपनी माँ से बात करना बिल्कुल उबाऊ था। टोक्यो में रहते हुए जिन दृश्यों को देखकर वह भावुक हो जाता था, वे अब फीके लगने लगे थे। उसने पाया कि कोबे बस एक आत्मसंतुष्ट पिछड़ा हुआ कस्बा था। वह किसी से बात नहीं करना चाहता था, और यहाँ तक कि बचपन से जिस नाई की दुकान पर जाता था, वहाँ जाना भी उसे उदास कर देता था। जब वह अपने कुत्ते को टहलने के लिए ले गया, तो समुद्र तट खाली था और कूड़े-कचरे से भरा पड़ा था।

आपको लगेगा कि योशिको के साथ डेट पर जाना उसे उत्साहित करता, लेकिन ऐसा नहीं था। हर बार जब वे अलविदा कहते, तो वह घर जाकर उदास हो जाता। वह अब भी उससे प्यार करता था—यह तो तय था। लेकिन इतना काफी नहीं था। उसे लगा, मुझे कुछ करना होगा। जुनून कुछ समय के लिए अपने आप कायम रह सकता है, लेकिन यह हमेशा के लिए नहीं रहता। अगर हमने कोई बड़ा कदम नहीं उठाया तो हमारा रिश्ता एक गतिरोध पर पहुँच जाएगा, और सारा जुनून हमसे छिन जाएगा।

एक दिन, उसने फिर से यौन संबंध के मुद्दे को उठाने का फैसला किया, जिसे उन्होंने अपनी बातचीत से पूरी तरह से हटा दिया था। उसने तय किया, "यह आखिरी बार होगा जब मैं इस विषय को उठाऊंगा।"

“टोक्यो में बीते इन तीन महीनों में मैं हर पल तुम्हारे बारे में सोचता रहा हूँ,” उसने उससे कहा। “मैं तुमसे प्यार करता हूँ, और मेरी भावनाएँ नहीं बदलेंगी, भले ही हम एक-दूसरे से दूर हों। लेकिन इतने लंबे समय तक अलग रहने से तरह-तरह के बुरे विचार मन में आने लगते हैं। शायद तुम यह नहीं समझ पाओगी, लेकिन अकेलेपन में इंसान कमज़ोर हो जाता है। मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी इतना अकेलापन महसूस नहीं किया। यह बहुत भयानक है। इसलिए मैं कुछ ऐसा चाहता हूँ जो हमें करीब ला सके। मैं यह पक्का जानना चाहता हूँ कि हम एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, भले ही हम अलग हों।”

लेकिन उसकी प्रेमिका ने उसे मना कर दिया। उसने आह भरी और धीरे से उसे चूमा।

“मुझे माफ करना, लेकिन मैं तुम्हें अपना कौमार्य नहीं दे सकती। ये दो अलग-अलग बातें हैं। मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकती हूँ, सिवाय इसके। अगर तुम मुझसे प्यार करते हो, तो कृपया इस बारे में दोबारा बात मत करना।”

उन्होंने उनकी शादी का प्रस्ताव रखा।
"मेरी कक्षा में कुछ लड़कियाँ हैं जिनकी सगाई हो चुकी है," उसने कहा। "दरअसल, सिर्फ़ दो ही हैं। लेकिन उनके मंगेतर नौकरी करते हैं। सगाई का मतलब यही होता है। शादी में ज़िम्मेदारी आती है। आप आत्मनिर्भर बनते हैं और अपने जीवन में एक नए व्यक्ति को स्वीकार करते हैं। अगर आप ज़िम्मेदारी नहीं लेते तो आपको कुछ भी हासिल नहीं होता।"
"मैं जिम्मेदारी ले सकता हूँ," उसने कहा। "सुनो—मैं एक शीर्ष विश्वविद्यालय में पढ़ रहा हूँ और मेरे अच्छे अंक आ रहे हैं। मैं बाद में अपनी मनचाही किसी भी कंपनी या सरकारी कार्यालय में नौकरी पा सकता हूँ। आप कंपनी का नाम बताइए और मैं उसमें सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार के रूप में शामिल हो जाऊँगा। अगर मैं ठान लूँ तो मैं कुछ भी कर सकता हूँ। तो समस्या क्या है?"
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, कार की सीट पर पीछे की ओर झुक गई और कुछ देर तक कुछ नहीं बोली। "मैं डरी हुई हूँ," उसने कहा। उसने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और रोने लगी। "मैं बहुत-बहुत डरी हुई हूँ। ज़िंदगी डरावनी है। कुछ सालों में मुझे असली दुनिया में जाना होगा और यह मुझे डराता है। आप यह क्यों नहीं समझते? आप मेरी भावनाओं को समझने की कोशिश क्यों नहीं करते? आपको मुझे इस तरह क्यों सताना है?"
उसने उसे गले लगा लिया। "जब तक मैं यहाँ हूँ, तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है," उसने कहा। "मैं भी डरा हुआ हूँ—उतना ही जितना तुम हो। लेकिन अगर मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो मैं नहीं डरता। जब तक हम साथ मिलकर काम करते हैं, डरने की कोई बात नहीं है।"
उसने फिर से अपना सिर हिलाया। "तुम समझते नहीं हो। मैं तुम्हारे जैसी नहीं हूँ। मैं एक औरत हूँ। तुम बिल्कुल नहीं समझते।"



उसके लिए और कुछ कहना व्यर्थ था। वह काफी देर तक रोती रही, और जब उसका रोना बंद हुआ तो उसने यह चौंकाने वाली बात कही:
"अगर...कभी हमारा ब्रेकअप हो जाए, तो मैं चाहती हूँ कि तुम जानो कि मैं हमेशा तुम्हारे बारे में सोचूँगी। यह सच है। मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगी, क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। तुम वो पहली इंसान हो जिससे मैंने कभी प्यार किया है और तुम्हारे साथ रहना ही मुझे खुशी देता

है। तुम यह जानती हो। लेकिन ये दो अलग-अलग बातें हैं। अगर तुम्हें मुझसे वादा चाहिए, तो मैं करूँगी। मैं एक दिन तुम्हारे साथ सोऊँगी। लेकिन अभी नहीं। किसी और से शादी करने के बाद, मैं तुम्हारे साथ सोऊँगी। वादा करती हूँ।”



“उस समय मुझे बिल्कुल समझ नहीं आया कि वह क्या कहना चाह रही थी,” उसने अंगीठी में जलती लकड़ियों को देखते हुए कहा। वेटर हमारे व्यंजन लेकर आया और साथ ही उसने आग में कुछ लकड़ियाँ भी डाल दीं। चिंगारियाँ चटकने लगीं। हमारे बगल वाली मेज पर बैठा अधेड़ उम्र का जोड़ा यह तय नहीं कर पा रहा था कि कौन सी मिठाई ऑर्डर करें। “उसने जो कहा वह एक पहेली जैसा था। घर आने के बाद मैंने उसके कहे पर बहुत सोचा, लेकिन मुझे कुछ समझ नहीं आया। क्या तुम समझ पाए कि उसका क्या मतलब था?”

"खैर, मुझे लगता है कि उसका मतलब था कि वह शादी तक कुंवारी रहना चाहती थी, और चूंकि शादी के बाद कुंवारी रहने का कोई कारण नहीं रह जाता, इसलिए उसे तुम्हारे साथ संबंध बनाने में कोई आपत्ति नहीं होगी। वह बस तुम्हें तब तक इंतजार करने के लिए कह रही थी।"

"मुझे लगता है बस यही है। मेरे दिमाग में बस यही एक बात आ रही है।"

मैंने कहा, "यह सोचने का एक अनोखा तरीका है। हालांकि, यह तार्किक है।"

उनके होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। "आप सही कह रहे हैं। यह तर्कसंगत है।"

“उसकी शादी कुंवारी अवस्था में होती है। और किसी की पत्नी बनने के बाद उसका किसी और के साथ अफेयर हो जाता है। बिल्कुल किसी क्लासिक फ्रेंच उपन्यास की तरह। बस इसमें कोई फैंसी-ड्रेस बॉल या नौकरानियों का झंझट नहीं है।”

"लेकिन यही एकमात्र व्यावहारिक समाधान था जो वह सोच पाई," उन्होंने कहा।

मैंने कहा, "यह तो बेहद शर्मनाक है।"

उन्होंने कुछ देर मेरी तरफ देखा, फिर धीरे से सिर हिलाया। “तुमने सही कहा। मुझे खुशी है कि तुम समझ गए।” उन्होंने फिर सिर हिलाया। “अब मैं इसे इस तरह देख सकता हूँ—अब जब मैं बड़ा हो गया हूँ। लेकिन तब, मैं नहीं समझ पाता था। मैं तो बस एक बच्चा था। मैं मानव

हृदय के सूक्ष्म उतार-चढ़ावों को समझ नहीं पाता था। इसलिए मेरी एकमात्र प्रतिक्रिया सरासर सदमे की थी। सच कहूँ तो, मैं पूरी तरह से दंग रह गया था।”
मैंने कहा, "मैं यह देख सकता था।"
खाना खाते समय हम थोड़ी देर तक चुप रहे।



“जैसा कि आप समझ सकते हैं,” उन्होंने आगे कहा, “हमारा ब्रेकअप हो गया। हम दोनों में से किसी ने भी ब्रेकअप की घोषणा नहीं की, यह बस स्वाभाविक रूप से समाप्त हो गया। एक बहुत ही शांत ब्रेकअप। मुझे लगता है कि हम रिश्ते को जारी रखने के लिए बहुत थक चुके थे। मेरे नज़रिए से, जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण—मैं इसे कैसे कहूँ?—बहुत ईमानदार नहीं था। नहीं, बात यह नहीं है... मैं चाहता था कि उसका जीवन बेहतर हो। इससे मुझे थोड़ी निराशा हुई। मैं नहीं चाहता था कि वह कौमार्य या शादी या ऐसी किसी भी चीज़ को लेकर इतनी चिंतित रहे, बल्कि एक अधिक स्वाभाविक, परिपूर्ण जीवन जिए।”
"लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह कुछ और कर सकती थी," मैंने कहा।
उसने सिर हिलाया। “शायद तुम सही कह रहे हो,” उसने मशरूम का एक मोटा टुकड़ा खाते हुए कहा। “कुछ समय बाद, तुम कठोर हो जाते हो। फिर तुम वापस पहले जैसे नहीं हो पाते। मेरे साथ भी ऐसा हो सकता था। बचपन से ही लोग हम पर दबाव डालते रहे, हमसे सफलता की उम्मीद करते रहे। और हमने उनकी उम्मीदों पर खरा भी उतरा, क्योंकि हम काफी बुद्धिमान थे। लेकिन तुम्हारी परिपक्वता उस गति को नहीं पकड़ पाती, और एक दिन तुम्हें पता चलता है कि अब पीछे मुड़ना मुमकिन नहीं है। कम से कम नैतिकता के मामले में तो नहीं।”
“क्या आपके साथ ऐसा नहीं हुआ?” मैंने पूछा।
“किसी तरह मैं इससे उबर पाया,” कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने कहा। उन्होंने अपना चाकू-कांटा नीचे रखा और नैपकिन से अपना मुंह पोंछा। “ब्रेकअप के बाद, टोक्यो में मेरी एक और लड़की से दोस्ती हो गई। हम कुछ समय तक साथ रहे। सच कहूं तो, योशिको जितनी वो मुझे प्रभावित नहीं कर पाईं, लेकिन मैं उनसे प्यार करता था। हम एक-दूसरे को अच्छी तरह

समझते थे और हमेशा खुलकर बात करते थे। उन्होंने मुझे इंसानों के बारे में सिखाया—कि वे कितने खूबसूरत हो सकते हैं, उनमें किस तरह की कमियां होती हैं। आखिरकार मैंने कुछ दोस्त भी बनाए और राजनीति में मेरी दिलचस्पी बढ़ गई। मैं ये नहीं कह रहा कि मेरी पर्सनैलिटी पूरी तरह बदल गई। मैं बहुत ही व्यावहारिक इंसान था और आज भी हूं। मैं उपन्यास नहीं लिखता और फर्नीचर आयात नहीं करता। आप समझ रहे हैं ना। कॉलेज में मैंने सीखा कि दुनिया में बहुत सारी वास्तविकताएं हैं। ये बहुत बड़ी दुनिया है, इसमें बहुत सारे अलग-अलग मूल्य साथ-साथ मौजूद हैं, और हमेशा टॉप स्टूडेंट बने रहना जरूरी नहीं है। और फिर मैं दुनिया में निकल पड़ा।”

और आपने अपने लिए बहुत अच्छा किया है।

“शायद,” उसने कहा और थोड़ी शर्मिंदगी भरी आह भरी। उसने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे हम दोनों कोई साथी हों। “मेरी पीढ़ी के बाकी लोगों की तुलना में, मैं अच्छी कमाई करता हूँ। तो व्यावहारिक तौर पर, हाँ, मैं सफल रहा हूँ।”

वह चुप हो गया। यह जानते हुए कि वह और कुछ कहना चाहता है, मैं वहीं बैठा रहा, धैर्यपूर्वक उसके बोलने का इंतजार करता रहा।

उन्होंने आगे कहा, "उसके बाद मैंने योशिको को काफी समय तक नहीं देखा।" “काफी समय तक। मैंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की और एक ट्रेडिंग कंपनी में काम शुरू किया। मैंने वहां पांच साल काम किया, जिसमें से कुछ समय मुझे विदेश में भी बिताना पड़ा। मैं हर दिन व्यस्त रहता था। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के दो साल बाद, मुझे पता चला कि योशिको की शादी हो गई है। मेरी माँ ने मुझे यह खबर दी। मैंने उससे नहीं पूछा कि उसने किससे शादी की है। खबर सुनते ही मेरे मन में पहला ख्याल यही आया कि क्या वह शादी तक अपनी पवित्रता बरकरार रख पाई थी। उसके बाद मुझे थोड़ा दुख हुआ। अगले दिन तो और भी ज्यादा दुख हुआ। मुझे लगा जैसे कोई महत्वपूर्ण चीज आखिरकार खत्म हो गई हो, जैसे मेरे पीछे का दरवाजा हमेशा के लिए बंद हो गया हो। यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि मैं उससे प्यार करता था। हम चार साल से एक-दूसरे के साथ थे, और मुझे लगता है कि मैं अब भी इस उम्मीद से जुड़ा हुआ था कि हम कभी न कभी शादी कर लेंगे। वह मेरी जवानी का एक अहम हिस्सा थी, इसलिए मेरा दुखी होना स्वाभाविक था। लेकिन मैंने तय किया कि जब तक वह खुश है, मुझे

कोई आपत्ति नहीं है। मैं सचमुच ऐसा ही महसूस करता था। मैं उसके बारे में थोड़ा चिंतित था। उसका एक हिस्सा बहुत नाजुक था।"
वेटर आया, हमारी प्लेटें हटाईं और मिठाई की गाड़ी ले आया। हम दोनों ने मिठाई लेने से मना कर दिया और कॉफी ऑर्डर की।
"मेरी शादी देर से हुई, बत्तीस साल की उम्र में। इसलिए जब योशिको ने मुझे फोन किया, तब मैं अविवाहित था। तब मैं अट्ठाईस साल का था, यानी एक दशक से भी ज़्यादा समय पहले की बात है। मैंने अभी-अभी अपनी कंपनी छोड़ी थी और अपना खुद का काम शुरू किया था। मुझे पूरा यकीन था कि आयातित फर्नीचर का बाज़ार तेज़ी से बढ़ेगा, इसलिए मैंने अपने पिता से पैसे उधार लिए और अपनी छोटी सी कंपनी शुरू कर दी। हालाँकि मुझे पूरा भरोसा था, फिर भी शुरुआत में सब कुछ ठीक नहीं रहा। ऑर्डर देर से आते थे, सामान बिकता नहीं था, गोदाम का शुल्क बढ़ता जा रहा था, कर्ज़ चुकाना बाकी था। सच कहूँ तो मैं पूरी तरह थक चुका था और मेरा आत्मविश्वास कम होने लगा था। यह मेरे जीवन का सबसे कठिन दौर था। और ठीक उसी मुश्किल दौर में एक दिन योशिको ने मुझे फोन किया। मुझे नहीं पता कि उसे मेरा नंबर कैसे मिला, लेकिन एक शाम करीब आठ बजे उसने फोन किया। मैं तुरंत समझ गया कि यह वही है। मैं उस आवाज़ को कैसे भूल सकता हूँ? उससे कितनी सारी यादें ताज़ा हो गईं। मैं उस समय काफी उदास था, और अपनी पुरानी दोस्त की आवाज़ दोबारा सुनना बहुत अच्छा लगा।"
वह अंगीठी में धधकती लकड़ियों को ऐसे घूर रहा था मानो कोई याद ताज़ा करने की कोशिश कर रहा हो। तब तक रेस्टोरेंट पूरी तरह से भर चुका था, लोगों की आवाज़ों, हँसी और प्लेटों की खनक से गूंज रहा था। ऐसा लग रहा था कि लगभग सभी मेहमान स्थानीय थे, और वे वेटरों को उनके पहले नाम से पुकार रहे थे: ग्यूसेप्पे! पाओलो!
"मुझे नहीं पता कि उसने यह किससे सुना, लेकिन वह मेरे बारे में सब कुछ जानती थी। कि मैं अभी भी अविवाहित हूँ और विदेश में काम कर चुका हूँ। कि मैंने एक साल पहले अपनी नौकरी छोड़ दी थी और अपनी खुद की कंपनी शुरू की थी। वह सब जानती थी। चिंता मत करो, उसने मुझसे कहा, तुम अच्छा करोगे। बस खुद पर भरोसा रखो। मुझे पता है तुम सफल होगे। भला कौन नहीं हो सकता? उसकी यह बात सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। उसकी

आवाज़ बहुत ही मधुर थी। मैं यह कर सकता हूँ, मैंने सोचा, मैं इसे कर दिखा सकता हूँ। उसकी आवाज़ सुनकर मेरा आत्मविश्वास फिर से जाग उठा। जब तक सब कुछ ठीक है, मैंने सोचा, मुझे पता है मैं कामयाब हो जाऊँगा। मुझे लगा जैसे पूरी दुनिया सिर्फ मेरे लिए ही बनी है।" वह मुस्कुराया।

फिर मेरी बारी थी उससे उसके जीवन के बारे में पूछने की। उसने किस तरह के व्यक्ति से शादी की है, क्या उसके बच्चे हैं, वह कहाँ रहती है। उसके कोई बच्चे नहीं थे। उसके पति उससे चार साल बड़े थे और एक टीवी स्टेशन में काम करते थे। उसने बताया कि वह निर्देशक थे। मैंने कहा, वह बहुत व्यस्त होंगे। उसने जवाब दिया, इतने व्यस्त कि उनके पास बच्चे पैदा करने का समय ही नहीं है, और वह हंस पड़ी। वह टोक्यो में, शिनागावा के एक अपार्टमेंट में रहती थी। मैं उस समय शिरोगानेदाई में रहता था, इसलिए हम पड़ोसी तो नहीं थे, लेकिन एक-दूसरे के काफी करीब रहते थे। मैंने उससे कहा, क्या संयोग है! खैर, हमने इन्हीं सब बातों पर चर्चा की—वे सभी आम बातें जो हाई स्कूल के दो दोस्त आपस में करते हैं। कभी-कभी थोड़ा अजीब लगता था, लेकिन मुझे उससे दोबारा बात करके अच्छा लगा। हमने दो पुराने दोस्तों की तरह बात की, जो बहुत पहले अलविदा कह चुके थे और अब जीवन में दो अलग-अलग रास्तों पर चल रहे थे। बहुत समय हो गया था जब मैंने किसी से इतनी खुलकर, इतनी ईमानदारी से बात की थी, और हमने बहुत देर तक बातें कीं। जब हमने सब कुछ कह दिया कहने को कुछ नहीं था, हम चुप थे। यह एक—मैं इसे कैसे कहूँ?—गहरी खामोशी थी। ऐसी खामोशी जिसमें, अगर आप अपनी आँखें बंद कर लें, तो आपके दिमाग में तरह-तरह की तस्वीरें उभरने लगती हैं। उन्होंने कुछ देर तक मेज पर रखे अपने हाथों को देखा, फिर अपना सिर उठाया और मेरी तरफ देखा। "काश मैं कर पाता, तो मैं उसी समय फोन काट देता। उसे फोन करने के लिए धन्यवाद देता, उसे बताता कि मुझे उससे बात करके कितना अच्छा लगा। आप समझ रहे हैं ना?"

"व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यही सबसे यथार्थवादी कदम होता," मैंने सहमति जताते हुए कहा।

लेकिन उसने फोन नहीं काटा। उसने मुझे अपने घर आने का न्योता दिया। उसने पूछा, "क्या तुम आ सकती हो? मेरे पति व्यापार के सिलसिले में बाहर गए हैं और मैं अकेली हूँ और बोर

हो रही हूँ।" मुझे समझ नहीं आया कि क्या कहूँ, इसलिए मैं चुप रही। और वह भी चुप रही। कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, फिर उसने कहा: "मैंने तुमसे किया वादा नहीं भूला है।"



“मैंने तुमसे किया वादा नहीं भूला है,” उसने कहा। पहले तो उसे समझ नहीं आया कि वह क्या कह रही है। फिर उसे सब याद आ गया—शादी के बाद उसके साथ सोने का उसका वादा। उसने इसे कभी असली वादा नहीं माना था, बस एक अनकहा ख्याल जो उसने उलझन में कह दिया था।

लेकिन यह उसकी ओर से किसी भ्रम का परिणाम नहीं था। उसके लिए यह एक बाध्यकारी वादा था, एक पक्का समझौता था जिसमें वह शामिल हुई थी।

एक पल के लिए वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या सोचे, क्या करे। वह पूरी तरह असमंजस में था, उसने अपने चारों ओर नज़र घुमाई, लेकिन उसे कोई रास्ता नहीं दिखा। ज़ाहिर है, वह उसके साथ सोना चाहता था—यह तो ज़ाहिर सी बात है। उनके अलग होने के बाद, वह अक्सर कल्पना करता था कि उसके साथ प्रेम करना कैसा होगा। यहाँ तक कि जब वह दूसरी लड़कियों के साथ होता था, तब भी अंधेरे में वह उसे गले लगाने की कल्पना करता था। ऐसा नहीं था कि उसने उसे नग्न देखा था—उसके शरीर के बारे में वह बस इतना ही जानता था कि उसने अपने हाथ से उसके कपड़ों के अंदर छूकर उसे महसूस किया था।

वह भली-भांति जानता था कि इस समय उसके साथ सोना कितना खतरनाक होगा। यह कितना विनाशकारी साबित हो सकता है। वह उस भावना को फिर से जगाना भी नहीं चाहता था जिसे वह अंधेरे में ही त्याग चुका था। वह जानता था, "यह मेरे लिए सही नहीं है। इसमें कुछ अवास्तविक है, कुछ ऐसा जो मेरे स्वभाव से मेल नहीं खाता।"

लेकिन ज़ाहिर है, वह उससे मिलने के लिए राज़ी हो गया। आख़िरकार, यह एक खूबसूरत परीकथा थी जिसे वह जीवन में शायद एक ही बार जी सके। उसकी खूबसूरत पूर्व प्रेमिका, जिसके साथ उसने अपनी जवानी के अनमोल पल बिताए थे, उससे कह रही थी कि वह उसके साथ सोना चाहती है और उसे तुरंत अपने घर आने के लिए कह रही थी—और वह पास में ही

रहती थी। साथ ही, बहुत समय पहले घने जंगल में हुआ वह गुप्त, पौराणिक वादा भी बाकी था।
वह कुछ देर तक आंखें बंद करके चुपचाप बैठा रहा। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसकी बोलने की शक्ति छिन गई हो।
“क्या तुम अभी भी वहीं हो?” उसने पूछा।
“मैं यहीं हूँ,” उसने कहा। “ठीक है। मैं जल्दी ही आ रहा हूँ। मुझे आधे घंटे से भी कम समय में वहाँ पहुँच जाना चाहिए। मुझे अपना पता बताएँ।”
उसने उसके कॉन्डो का नाम, अपार्टमेंट नंबर और उसका फोन नंबर लिख लिया। उसने जल्दी से शेव की, कपड़े बदले और टैक्सी लेने के लिए बाहर चला गया।



“अगर तुम होते तो क्या करते?” उसने मुझसे पूछा।
मैंने अपना सिर हिलाया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।
वह हँसा और अपनी कॉफ़ी के कप को घूरने लगा। “काश, मैं भी बिना जवाब दिए काम चला लेता। पर ऐसा नहीं हो सका। मुझे उसी वक्त फैसला लेना था। जाना है या नहीं जाना है, दोनों में से एक। बीच का कोई रास्ता नहीं था। आखिरकार मैं उसके घर चला गया। जब मैंने उसके दरवाजे पर दस्तक दी, तो मैं सोच रहा था कि कितना अच्छा होता अगर वह घर पर न होती। पर वह वहीं थी, पहले की तरह ही खूबसूरत। उसकी खुशबू भी वैसी ही मनमोहक थी जैसी मुझे याद थी। हमने कुछ ड्रिंक्स लिए, बातें कीं, कुछ पुराने गाने सुने। और फिर, आपको क्या लगता है, क्या हुआ?”
मैंने उससे कहा, मुझे कोई जानकारी नहीं है।
“बहुत समय पहले, जब मैं बच्चा था, मैंने एक परीकथा पढ़ी थी,” उसने सामने वाली दीवार को घूरते हुए कहा। “मुझे कहानी याद नहीं है, लेकिन उसकी आखिरी पंक्ति मुझे आज भी याद है। शायद इसलिए क्योंकि यह पहली बार था जब मैंने कोई ऐसी परीकथा पढ़ी थी जिसका अंत इतना अजीब था। कहानी का अंत कुछ इस तरह था: ‘और जब सब खत्म हो गया, तो

राजा और उसके सेवक जोर से हंस पड़े।' क्या आपको नहीं लगता कि यह थोड़ा अजीब अंत है?"
मैंने कहा, "हाँ, मैं करता हूँ।"
"काश मुझे कहानी याद होती, पर मुझे याद नहीं है। मुझे बस वो अजीब सी आखिरी पंक्ति याद है। 'और जब सब खत्म हो गया, तो राजा और उसके दरबारी जोर से हंस पड़े।' आखिर ये किस तरह की कहानी रही होगी?"
इस समय तक हम अपनी कॉफी खत्म कर चुके थे।
"हमने एक-दूसरे को गले लगाया," उसने आगे कहा, "लेकिन शारीरिक संबंध नहीं बनाए। मैंने उसके कपड़े नहीं उतारे। मैंने बस अपनी उंगलियों से उसे छुआ, बिल्कुल पुराने दिनों की तरह। मैंने तय किया कि यही सबसे अच्छा तरीका है, और जाहिर तौर पर वह भी इसी नतीजे पर पहुंची थी। काफी देर तक हम वहीं बैठे रहे, एक-दूसरे को छूते रहे। उस समय जो हमें समझना था, उसे समझने का यही एकमात्र तरीका था। अगर यह बहुत पहले की बात होती, तो ऐसा नहीं होता—हम शारीरिक संबंध बना लेते, और और भी करीब आ जाते। शायद हम खुशहाल जीवन बिताते। लेकिन हम उस मुकाम को पार कर चुके थे। वह संभावना पूरी तरह से खत्म हो चुकी थी, जम गई थी। और वह फिर कभी नहीं खुल सकती थी।"
वह अपने खाली कॉफी कप को बार-बार घुमा रहा था। वह इतनी देर तक ऐसा करता रहा कि वेटर यह देखने आया कि उसे कुछ चाहिए या नहीं। आखिरकार उसने कप छोड़ दिया, वेटर को वापस बुलाया और एक और एस्प्रेसो का ऑर्डर दिया।
"मैं उसके अपार्टमेंट में करीब एक घंटे रुका था। मुझे ठीक से याद नहीं। अगर ज़्यादा देर रुकता तो शायद पागल हो जाता," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "मैंने उसे अलविदा कहा और चला गया। यह हमारी आखिरी विदाई थी। मैं जानता था, और वह भी। आखिरी बार जब मैंने उसे देखा, वह दरवाज़े पर खड़ी थी, हाथ जोड़े। ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ कहने वाली हो, लेकिन कुछ नहीं बोली। उसे ज़ोर से कहने की ज़रूरत नहीं थी—मैं जानता था कि वह क्या कहना चाहती है। मुझे बहुत खालीपन महसूस हुआ। एकदम खोखला। आवाज़ें अजीब सी लग रही थीं, सब कुछ विकृत दिख रहा था। मैं स्तब्ध होकर इधर-उधर भटक रहा था, सोच

रहा था कि मेरी ज़िंदगी पूरी तरह से व्यर्थ थी। मैं वापस मुड़कर उसके घर जाना चाहता था और उसे पाना चाहता था। लेकिन मैं नहीं कर सका। ऐसा करना मेरे लिए नामुमकिन था।”
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और सिर हिलाया। उसने अपनी दूसरी एस्प्रेसो पी ली।
"यह कहना थोड़ा शर्मनाक है, लेकिन उस रात मैं बाहर गया और एक वेश्या के साथ सोया। यह मेरे जीवन में पहली बार था जब मैंने सेक्स के लिए पैसे दिए थे। और शायद आखिरी बार भी।"
मैंने कुछ देर तक अपने कॉफी कप को घूरकर देखा। और सोचा कि मैं पहले कितना अहंकारी हुआ करता था। मैं उसे यह समझाने की कोशिश करना चाहता था, लेकिन मुझे नहीं लगता था कि मैं समझा पाऊंगा।
“जब मैं इसे इस तरह बताता हूँ, तो ऐसा लगता है जैसे यह किसी और के साथ घटी घटना हो,” वह हँसा। वह कुछ देर चुप रहा, सोच में डूबा हुआ। मैंने भी कुछ नहीं कहा।
“और जब सब कुछ खत्म हो गया, तो राजा और उसके दरबारी जोर से हंस पड़े,” उन्होंने अंत में कहा। “जब भी मुझे वह घटना याद आती है, तो यह पंक्ति हमेशा मेरे दिमाग में आ जाती है। यह एक सहज प्रतिक्रिया की तरह है। मुझे लगता है कि बहुत दुखद घटनाओं में हमेशा हास्य का एक अंश छिपा होता है।”



जैसा कि मैंने शुरुआत में कहा था, इस सब से कोई वास्तविक नैतिक सीख या सबक नहीं मिलता। लेकिन यह सचमुच उसके साथ हुआ था। ऐसा हम सबके साथ होता है। इसीलिए जब उसने मुझे अपनी कहानी सुनाई, तो मैं हंस नहीं पाया। और अब भी नहीं हंस पाता।
— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

शिकार का चाकू

दो बेड़े तट से दूर जुड़वां द्वीपों की तरह लंगर डाले खड़े थे। समुद्र तट से तैरकर उन तक पहुंचने की दूरी बिलकुल सही थी—एक तक पहुंचने में ठीक पचास स्ट्रोक लगते थे, और फिर दूसरे तक तीस स्ट्रोक। लगभग चौदह फीट चौकोर, प्रत्येक बेड़े पर एक धातु की सीढ़ी थी, और उसकी सतह पर कृत्रिम घास की एक परत बिछी हुई थी। इस बिंदु पर पानी दस या बारह फीट गहरा था, और इतना पारदर्शी था कि आप बेड़ों से बंधी जंजीरों को नीचे कंक्रीट के लंगरों तक साफ देख सकते थे। तैरने का क्षेत्र एक प्रवाल भित्ति से घिरा हुआ था, और लहरें न के बराबर थीं, इसलिए बेड़े पानी में मुश्किल से ही हिल रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे दिन-रात तेज धूप में उसी स्थान पर लंगर डाले खड़े रहने के लिए तैयार हो गए हों।

मुझे वहाँ खड़े होकर किनारे को देखना अच्छा लगता था, लंबी सफेद रेत, लाल लाइफगार्ड टावर, ताड़ के पेड़ों की हरी कतार—यह एक खूबसूरत नज़ारा था, शायद थोड़ा ज़्यादा ही किसी पोस्टकार्ड की तस्वीर जैसा सुंदर। दाईं ओर, समुद्र तट गहरे रंग की चट्टानी पहाड़ियों की एक कतार में समाप्त होता था जो होटल के कॉटेज तक जाती थी जहाँ मेरी पत्नी और मैं ठहरे हुए थे। जून का अंत था, पर्यटन का मौसम अभी शुरू ही हुआ था, और होटल या समुद्र तट पर ज़्यादा लोग नहीं थे।

पास ही में एक अमेरिकी सैन्य अड्डा था, और राफ्ट सीधे उस अड्डे पर लौट रहे हेलीकॉप्टरों के उड़ान मार्ग में पड़े थे। हेलीकॉप्टर तट से दूर दिखाई देते, दोनों राफ्टों के बीच से गुज़रते, फिर ताड़ के पेड़ों के ऊपर से उड़ते हुए गायब हो जाते। वे इतनी नीची उड़ान भरते थे कि पायलटों के चेहरे के भाव लगभग देखे जा सकते थे। फिर भी, ऊपर से उड़ते उन हेलीकॉप्टरों को छोड़कर, समुद्र तट एक शांत और सुनसान जगह थी—छुट्टियों में अकेले रहने के लिए एकदम सही जगह।

प्रत्येक कॉटेज एक सफेद दो मंजिला इमारत थी जिसे चार इकाइयों में विभाजित किया गया था, दो पहली मंजिल पर और दो दूसरी मंजिल पर। हमारा कमरा पहली मंजिल पर था, जहाँ से समुद्र का नज़ारा दिखता था। हमारी खिड़की के ठीक बाहर सफेद प्लूमेरिया के फूलों का एक छोटा सा बगीचा था, और उसके आगे करीने से कटी हुई घास वाला एक बगीचा था। सुबह और शाम, स्प्रिंकलर घास पर हल्की-हल्की आवाज़ करते थे। बगीचे के आगे एक

स्विमिंग पूल और ऊँचे ताड़ के पेड़ों की एक कतार थी, जिनकी विशाल पत्तियाँ व्यापारिक हवाओं में धीरे-धीरे लहराती थीं।

मेरी पत्नी और मेरे बगल वाले फ्लैट में एक अमेरिकी मां और बेटा ठहरे हुए थे। ऐसा लग रहा था कि हमारे आने से बहुत पहले ही वे वहां आराम से बस गए थे। मां की उम्र लगभग साठ वर्ष थी, और बेटा हमारी उम्र के करीब, अट्ठाईस या उनतीस वर्ष का था। मैंने आज तक जितने भी मां-बेटे देखे थे, उनमें से ये दोनों एक-दूसरे से इतने मिलते-जुलते थे—दोनों के चेहरे लंबे और पतले थे, माथा चौड़ा था और होंठ कसकर बंद थे। मां लंबी थीं, उनका शरीर सीधा था और उनकी हरकतें हमेशा चुस्त और फुर्तीली रहती थीं। बेटा भी लंबा लगता था, लेकिन निश्चित रूप से नहीं कह सकते थे, क्योंकि वह व्हीलचेयर पर था। हमेशा उसकी मां उसके पीछे-पीछे व्हीलचेयर धकेलती रहती थी।

वे बेहद शांत थे, उनका कमरा किसी संग्रहालय जैसा था। वे कभी टीवी नहीं चलाते थे, हालांकि दो बार मुझे उनके कमरे से संगीत सुनाई दिया—पहली बार मोजार्ट का क्लैरिनेट क्विंटेट, दूसरी बार कोई ऑर्केस्ट्रा संगीत जिसे मैं पहचान नहीं पाया। मेरा अनुमान है कि वह रिचर्ड स्ट्रॉस का संगीत था। इसके अलावा, कोई आवाज़ नहीं थी। वे एयर कंडीशनर का इस्तेमाल नहीं करते थे—इसके बजाय वे अपना सामने का दरवाज़ा खुला छोड़ देते थे, ताकि ठंडी समुद्री हवा अंदर आ सके। लेकिन, दरवाज़ा खुला होने के बावजूद, मैंने उन्हें कभी बात करते नहीं सुना। उनकी कोई भी बातचीत—मुझे लगता है कि उन्हें कभी न कभी तो बात करनी ही पड़ती होगी—लगभग फुसफुसाहट जैसी ही रही होगी। इसका असर मुझ पर और मेरी पत्नी पर भी पड़ा, और जब भी हम अपने कमरे में होते, हम धीमी आवाज़ में बात करने लगते थे।

हम अक्सर माँ-बेटे को रेस्टोरेंट में, लॉबी में या बगीचे के किसी रास्ते पर देख लेते थे। होटल छोटा और आरामदायक था, इसलिए शायद हमारा आमना-सामना होना तय था, चाहे हम चाहें या न चाहें। गुजरते समय हम एक-दूसरे को सिर हिलाकर अभिवादन करते थे। माँ और बेटे के अभिवादन करने का तरीका अलग-अलग था। माँ पूरे मन से सिर हिलाती थीं; बेटा बस हल्का सा सिर झुकाता था। लेकिन इन दोनों तरह के इशारों से जो भाव निकलता था, वो लगभग एक ही था: अभिवादन वहीं शुरू और खत्म हो जाता था, और आगे कुछ नहीं। हमने

उनसे बात करने की कभी कोशिश नहीं की। मेरे और मेरी पत्नी के पास आपस में बात करने के लिए बहुत कुछ था—घर लौटने पर नए अपार्टमेंट में जाना चाहिए या नहीं, नौकरी का क्या करना चाहिए, बच्चे पैदा करने चाहिए या नहीं। यह हमारी जवानी का आखिरी ग्रीष्मकाल था।
नाश्ते के बाद, माँ और बेटा हमेशा लॉबी में बैठकर अखबार पढ़ते थे—दोनों बड़ी ही सलीके से एक-एक पन्ना पलटते, ऊपर से नीचे तक, मानो वे इस बात की कड़ी प्रतियोगिता में लगे हों कि कौन सबसे ज़्यादा समय में पूरा अखबार पढ़ सकता है। कभी-कभी वे अखबार नहीं, बल्कि मोटी-मोटी किताबों में पढ़ते थे। वे माँ-बेटे से ज़्यादा एक ऐसे बूढ़े पति-पत्नी लगते थे जो एक-दूसरे से बहुत पहले ऊब चुके थे।



हर सुबह करीब दस बजे, मैं और मेरी पत्नी एक कूलर लेकर समुद्र तट पर जाते थे। हम खूब सारा सनस्क्रीन लगाते और फिर रेत पर बिछी चटाइयों पर लेट जाते। मैं वॉकमैन पर स्टोन या मार्विन गे के गाने सुनता, जबकि मेरी पत्नी 'गॉन विद द विंड' की एक पेपरबैक किताब पढ़ती रहती। उसका दावा था कि उसने उस किताब से जीवन के बारे में बहुत कुछ सीखा है। मैंने वह किताब कभी नहीं पढ़ी थी, इसलिए मुझे समझ नहीं आता था कि उसका क्या मतलब था।
हर दिन, सूरज समुद्र तट से निकलता, हेलिकॉप्टरों की विपरीत दिशा में, राफ्टों के बीच से धीरे-धीरे निकलता और फिर क्षितिज के नीचे आराम से डूब जाता।
हर दोपहर दो बजे, माँ और बेटा समुद्र तट पर आ जाते थे। माँ हमेशा हल्के रंग की सादी पोशाक और चौड़ी किनारी वाली भूसे की टोपी पहनती थीं। बेटा कभी टोपी नहीं पहनता था; वह धूप का चश्मा लगाए रहता था। वे ताड़ के पेड़ों की छाँव में बैठते, हवा उनके चारों ओर सरसराती रहती, और वे समुद्र को निहारते रहते, मानो कुछ कर ही नहीं रहे हों। माँ एक तह करने वाली बीच चेयर पर बैठती थीं, लेकिन बेटा कभी अपनी व्हीलचेयर से नहीं उठता था। बीच-बीच में वे छाँव में रहने के लिए थोड़ा सा हिल जाते थे। माँ के पास एक चांदी का थर्मस होता था, और कभी-कभी वह कागज़ के कप में अपने लिए कुछ पी लेतीं या बिस्किट चबाती रहतीं।

कुछ दिन वे आधे घंटे बाद चले जाते थे; कुछ दिन वे तीन बजे तक रुकते थे। जब मैं तैर रही थी, तो मुझे ऐसा लगता था कि वे मुझे देख रहे हैं। राफ्ट से ताड़ के पेड़ों की कतार तक काफी दूरी थी, इसलिए शायद मैं ऐसा सोच रही थी। या शायद मैं ज़रूरत से ज़्यादा संवेदनशील थी, लेकिन जब भी मैं किसी राफ्ट पर चढ़ती, मुझे साफ महसूस होता था कि उनकी निगाहें मुझ पर टिकी हुई हैं। कभी-कभी धूप में चांदी का थर्मस चाकू की तरह चमकता था।

एक के बाद एक नीरस दिन बीतते गए, जिनमें कोई खास अंतर नहीं था। आप क्रम बदल भी देते तो किसी को पता भी नहीं चलता। सूरज पूरब से उगता और पश्चिम में डूबता, जैतून के हरे रंग के हेलीकॉप्टर नीचे से उड़ते और मैं जी भर कर बीयर पीता और तैरता रहता।



होटल में हमारे आखिरी पूरे दिन की दोपहर को, मैं आखिरी बार तैरने के लिए निकला। मेरी पत्नी झपकी ले रही थी, इसलिए मैं अकेला ही बीच पर चला गया। शनिवार का दिन था, इसलिए वहाँ आम दिनों से ज़्यादा लोग थे। टैन त्वचा वाले जवान सैनिक, जिनके बाल छोटे कटे हुए थे और बांहों पर टैटू बने थे, वॉलीबॉल खेल रहे थे। बच्चे पानी के किनारे मस्ती कर रहे थे, रेत के महल बना रहे थे और हर बड़ी लहर पर खुशी से चिल्ला रहे थे। लेकिन पानी में लगभग कोई नहीं था; राफ्ट खाली थे। आसमान साफ था, सूरज सिर के ऊपर चमक रहा था और रेत गर्म थी। दो बज चुके थे, लेकिन माँ-बेटे अभी तक नहीं आए थे।

मैं पानी में तब तक चलता रहा जब तक पानी मेरे सीने तक नहीं आ गया, फिर घुटनों के बल रेंगते हुए बाईं ओर मौजूद बेड़ा की ओर बढ़ा। धीरे-धीरे, हथेलियों से पानी के प्रतिरोध को परखते हुए, मैं तैरता रहा और अपने स्ट्रोक गिनता रहा। पानी ठंडा था और मेरी धूप से झुलसी त्वचा पर अच्छा लग रहा था। इतने साफ पानी में तैरते हुए, मैं रेतीले तल पर अपनी परछाई देख सकता था, मानो मैं आकाश में उड़ता हुआ पक्षी हूँ। चालीस स्ट्रोक गिनने के बाद, मैंने ऊपर देखा और वाकई, बेड़ा मेरे ठीक सामने था। ठीक दस स्ट्रोक के बाद, मेरा बायाँ हाथ उसके किनारे से छू गया। मैं वहाँ एक मिनट तक तैरता रहा, साँसें लेता रहा, फिर सीढ़ी को पकड़ा और उस पर चढ़ गया।

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ पहले से ही कोई और मौजूद थी—एक मोटी, सुनहरे बालों वाली महिला। जब मैं समुद्र तट से निकला था तब मुझे राफ्ट पर कोई नहीं दिखा था, इसलिए वह तब वहाँ पहुँची होगी जब मैं उसकी ओर तैर रहा था। महिला ने एक छोटी सी बिकिनी पहनी हुई थी—वैसी ही लहराती हुई लाल बिकिनी, जैसी जापानी किसान अपने खेतों में रसायन छिड़काव की चेतावनी देने के लिए लगाते हैं—और वह पेट के बल लेटी हुई थी। महिला इतनी मोटी थी कि बिकिनी उसके आकार से भी छोटी लग रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह अभी-अभी आई है—उसकी त्वचा अभी भी पीली थी, उस पर टैन का कोई निशान नहीं था।
उसने एक पल के लिए ऊपर देखा और फिर अपनी आँखें बंद कर लीं। मैं बेड़ा के दूसरे छोर पर बैठ गया, अपने पैर पानी में लटकाए और किनारे की ओर देखने लगा। माँ और बेटा अभी भी अपने ताड़ के पेड़ों के नीचे नहीं थे। वे कहीं और भी नहीं थे। उन्हें नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन था; धूप में चमकती धातु की व्हीलचेयर उनकी मौजूदगी का स्पष्ट संकेत थी। मुझे निराशा हुई। उनके बिना, तस्वीर का एक हिस्सा अधूरा सा लग रहा था। शायद वे होटल से चेक आउट करके वापस वहीं चले गए थे जहाँ से आए थे—चाहे वह कहीं भी हो। जब मैंने उन्हें थोड़ी देर पहले होटल के रेस्तरां में देखा था, तब मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगा था कि वे जाने की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने आराम से रोज़ का स्पेशल खाना खाया था और उसके बाद चुपचाप एक कप कॉफ़ी पी थी—वही रोज़ की दिनचर्या।
मैं उस गोरी महिला की तरह पेट के बल लेट गई और लगभग दस मिनट तक धूप सेंकती रही, साथ ही राफ्ट के किनारे से टकराती छोटी-छोटी लहरों की आवाज़ सुनती रही। तेज़ धूप में मेरे कान में पानी की बूँदें गर्म हो गईं।
"अरे बाप रे, कितनी गर्मी है!" नाव के दूसरे छोर से महिला ने कहा। उसकी आवाज़ तीखी और मीठी थी।
“बिल्कुल,” मैंने जवाब दिया।
"अभी समय क्या हो रहा है?"
मेरे पास घड़ी नहीं है, लेकिन लगभग ढाई बज रहे होंगे। शायद ढाई बज रहे होंगे?

“सचमुच?” उसने कहा और आह भरी, मानो यह वह समय न हो जिसकी वह उम्मीद कर रही थी। शायद उसे समय से कोई फर्क नहीं पड़ता था।

वह उठ बैठी। पसीने की बूँदें उसके शरीर पर ऐसे चिपकी थीं जैसे खाने पर मक्खियाँ। चर्बी की परतें उसके कानों के ठीक नीचे से शुरू होकर धीरे-धीरे कंधों तक जाती थीं, फिर एक सीधी रेखा में उसकी गोल-मटोल बाहों तक। यहाँ तक कि उसकी कलाई और टखने भी उन मांसल परतों में गायब होते हुए से लग रहे थे। मुझे मिशेलिन मैन की याद आ गई। हालाँकि वह इतनी भारी-भरकम थी, फिर भी मुझे वह महिला अस्वस्थ नहीं लगी। वह दिखने में भी बुरी नहीं थी। बस उसके शरीर पर मांस कुछ ज़्यादा ही था। मैंने अंदाज़ा लगाया कि उसकी उम्र तीस के आस-पास होगी।

"तुम यहाँ काफी समय से होगे, तभी तो तुम्हारा रंग इतना गहरा हो गया है।"

“नौ दिन।”

“वाह, कितना शानदार टैन है!” उसने कहा। जवाब देने के बजाय, मैंने अपना गला साफ किया। खांसते ही मेरे कानों में पानी की गड़गड़ाहट सुनाई दी।

“मैं मिलिट्री होटल में ठहरी हुई हूँ,” उसने कहा।

मैं उस जगह को जानता था। वह समुद्र तट से थोड़ी ही दूर सड़क पर थी।

“मेरा भाई नौसेना में अधिकारी है, और उसने मुझे आने का न्योता दिया। नौसेना इतनी बुरी भी नहीं है, जानते हो? वेतन ठीक-ठाक है। बेस पर ही सब कुछ मिल जाता है, साथ ही इस रिसॉर्ट जैसी सुविधाएं भी। जब मैं कॉलेज में था, तब हालात अलग थे। वो वियतनाम युद्ध का दौर था। उस समय परिवार में किसी सैन्यकर्मी का होना थोड़ा शर्मनाक माना जाता था। छुप-छुपकर रहना पड़ता था। लेकिन तब से दुनिया काफी बदल गई है।”

मैंने अस्पष्ट रूप से सिर हिलाया।

“मेरे पूर्व पति भी नौसेना में थे,” उन्होंने आगे कहा। “एक लड़ाकू पायलट। उन्होंने वियतनाम में दो साल सेवा की, फिर वे यूनाइटेड एयरलाइंस में पायलट बन गए। मैं उस समय यूनाइटेड एयरलाइंस में एयर होस्टेस थी, और इसी तरह हमारी मुलाकात हुई। मुझे याद करने की कोशिश कर रही हूँ कि हमारी शादी किस साल हुई थी... उन्नीस सौ सत्तर के आसपास। खैर, लगभग छह साल पहले। ऐसा अक्सर होता रहता है।”

"क्या करता है?'

“आपको पता ही है—एयरलाइन के कर्मचारी बहुत ज़्यादा घंटे काम करते हैं, इसलिए वे अक्सर एक-दूसरे को डेट करने लगते हैं। काम के घंटे और जीवनशैली बिल्कुल ही अलग होती है। खैर, हमारी शादी हो गई, मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी, और फिर उसने एक दूसरी एयर होस्टेस से रिश्ता बना लिया और उससे शादी कर ली। ऐसा तो अक्सर होता ही रहता है।”

मैंने विषय बदलने की कोशिश की। "आप अभी कहाँ रहते हैं?"

“लॉस एंजिल्स,” उसने कहा। “क्या आप कभी वहाँ गए हैं?”

“नहीं,” मैंने कहा।

“मेरा जन्म वहीं हुआ था। फिर मेरे पिता का तबादला साल्ट लेक सिटी हो गया। क्या आप कभी वहां गए हैं?”

"नहीं।"

“मैं इसकी सलाह नहीं दूंगी,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। उसने अपने चेहरे से पसीना पोंछा। यह सोचना अजीब था कि वह कभी एयर होस्टेस रही होगी। मैंने कई तगड़ी एयर होस्टेस देखी थीं जो पहलवानों जैसी लगती थीं। कुछ की तो मजबूत बांहें और मुलायम होंठ भी थे। लेकिन इतनी भारी-भरकम एयर होस्टेस मैंने कभी नहीं देखी थी। शायद यूनाइटेड एयरलाइंस को एयर होस्टेस के वजन की परवाह ही नहीं थी। या शायद जब वह एयर होस्टेस का काम करती थी तब इतनी मोटी नहीं थी।

“आप कहाँ ठहर रहे हैं?” उसने मुझसे पूछा।

मैंने होटल की ओर इशारा किया।

"अपने आप से?"

मैंने बताया कि मैं और मेरी पत्नी छुट्टी पर थे।

“हनीमून?”

नहीं, मैंने जवाब दिया। हमारी शादी को छह साल हो गए हैं।

“सचमुच?” उसने हैरानी से कहा। “आप इतने बूढ़े नहीं लगते।”

मैंने समुद्र तट पर नज़र दौड़ाई। माँ और बेटे का अभी तक कोई अता-पता नहीं था। सैनिक अभी भी वॉलीबॉल खेल रहे थे। टावर पर खड़ा लाइफगार्ड अपनी बड़ी दूरबीन से किसी चीज़ को टकटकी लगाकर देख रहा था। आखिरकार दो सैन्य हेलीकॉप्टर तट से दूर दिखाई दिए और, जैसे किसी ग्रीक त्रासदी में अशुभ समाचार देने वाले संदेशवाहक हों, वे गंभीर स्वर में हमारे ऊपर से गुज़रे और भीतर की ओर गायब हो गए। हम चुपचाप उन हरी मशीनों को दूर जाते हुए देखते रहे।

"मुझे यकीन है कि ऊपर से देखने पर हम बहुत मज़े कर रहे होंगे," महिला ने कहा। "इस बेड़ा पर धूप सेंक रहे हैं, दुनिया की कोई चिंता नहीं है।"

"आप शायद सही हो सकते हैं।"

“ऊंचाई पर होने पर ज्यादातर चीजें खूबसूरत लगती हैं,” उसने कहा। वह फिर से पेट के बल लेट गई और अपनी आंखें बंद कर लीं।

समय खामोशी से बीतता चला गया। मुझे लगा कि अब जाने का सही समय है, इसलिए मैं खड़ा हो गया और उससे कहा कि मुझे वापस जाना होगा। मैं पानी में कूदा और तैरने लगा। आधे रास्ते में, मैं रुक गया, पानी में तैरता रहा और बेड़ा की ओर मुड़ गया। वह मुझे देख रही थी और उसने हाथ हिलाया। मैंने भी हल्के से हाथ हिलाकर जवाब दिया। दूर से वह डॉल्फ़िन जैसी लग रही थी। उसे बस पंखों की एक जोड़ी चाहिए थी और वह वापस समुद्र में छलांग लगा सकती थी।

मैंने अपने कमरे में थोड़ी देर झपकी ली, फिर शाम होते ही मैं और मेरी पत्नी हमेशा की तरह नीचे रेस्टोरेंट गए और खाना खाया। माँ और बेटा वहाँ नहीं थे। और जब हम रेस्टोरेंट से वापस अपने कमरे में आए तो उनका दरवाजा बंद था। दरवाजे के छोटे से फ्रॉस्टेड-ग्लास से रोशनी छनकर आ रही थी, लेकिन मैं यह नहीं बता सका कि कमरा अभी भी भरा हुआ था या नहीं।

मैंने अपनी पत्नी से कहा, "मुझे लगता है कि वे चेक आउट कर चुके हैं। वे न तो बीच पर थे और न ही डिनर पर।"

“आखिरकार सबकी मृत्यु हो जाती है,” मेरी पत्नी ने कहा। “आप हमेशा ऐसे नहीं जी सकते।”

“शायद हाँ,” मैंने सहमति जताई, लेकिन मैं पूरी तरह आश्वस्त नहीं था। मैं उस माँ और बेटे को यहीं के अलावा कहीं और नहीं देख पा रहा था।

हमने सामान पैक करना शुरू किया। सूटकेस भरने और उन्हें बिस्तर के पास रखने के बाद, कमरा अचानक ठंडा और अजनबी सा लगने लगा। हमारी छुट्टियाँ खत्म होने वाली थीं।



मैं नींद से जागा और बिस्तर के बगल वाली मेज पर रखी अपनी घड़ी पर नज़र डाली। एक बजकर बीस मिनट हो रहे थे। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। मैं बिस्तर से नीचे कालीन पर उतरा, पालथी मारकर बैठ गया और गहरी साँसें लीं। फिर मैंने अपनी साँस रोकी, कंधों को आराम दिया, सीधा बैठा और ध्यान लगाने की कोशिश की। मैंने सोचा, शायद मैं ज़्यादा तैर गया था या धूप ज़्यादा लग गई थी। मैं खड़ा हुआ और कमरे में चारों ओर देखा। बिस्तर के नीचे, हमारे दो सूटकेस छुपकर बैठे जानवरों की तरह दुबके हुए थे। हाँ, मुझे याद आया—कल हम यहाँ नहीं होंगे।

खिड़की से छनकर आती हल्की चाँदनी में मेरी पत्नी गहरी नींद में सो रही थी। मुझे उसकी साँसें बिल्कुल सुनाई नहीं दे रही थीं, ऐसा लग रहा था मानो वह मर चुकी हो। कभी-कभी वह ऐसे ही सोती है। जब हमारी शादी हुई थी, तब मुझे थोड़ा डर लगता था; कभी-कभी मुझे लगता था कि शायद वह सच में मर गई है। लेकिन यह बस एक खामोश, गहरी नींद थी। मैंने अपने पसीने से भीगे हुए पजामे उतारे और साफ कमीज और शॉर्ट्स पहन लिए। मेज पर रखी वाइल्ड टर्की की छोटी बोतल को जेब में रखते हुए, मैंने चुपचाप दरवाजा खोला और बाहर चला गया। रात की हवा ठंडी थी और उसमें आसपास के सभी पौधों की नमी भरी गंध थी। चाँद पूरा था, दुनिया को एक ऐसे अजीब रंग में नहला रहा था जो दिन के उजाले में कभी नहीं दिखता। ऐसा लग रहा था मानो किसी खास रंग के फिल्टर से देख रहे हों, जो कुछ चीजों को उनके असली रंग से ज्यादा रंगीन बना देता है, और कुछ को लाश की तरह फीका और बेजान छोड़ देता है।

मुझे बिल्कुल भी नींद नहीं आ रही थी। ऐसा लग रहा था मानो नींद कभी थी ही नहीं, मेरा दिमाग पूरी तरह से शांत और एकाग्र था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। न हवा, न कीड़े-मकोड़े, न ही रात के पक्षियों की आवाज। बस दूर से आती लहरों की हल्की सी आवाज थी, और उसे भी सुनने के लिए मुझे बहुत ध्यान से सुनना पड़ रहा था।

मैंने कॉटेज का एक चक्कर धीरे-धीरे लगाया, फिर लॉन पार किया। चांदनी में, गोलाकार लॉन जमे हुए तालाब जैसा लग रहा था। मैं सावधानी से कदम रख रहा था, ताकि बर्फ न टूटे। लॉन के आगे पत्थर की संकरी सीढ़ियाँ थीं, और ऊपर एक बार था जो उष्णकटिबंधीय थीम से सजा हुआ था। हर शाम, खाने से ठीक पहले, मैं इस बार में वोदका और टॉनिक पीता था। ज़ाहिर है, इतनी रात को वह जगह बंद थी, बार के शटर लगे हुए थे, और हर मेज पर छाते ऐसे करीने से तह करके रखे हुए थे जैसे कोई सोता हुआ टेरोडैक्टाइल हो।

व्हीलचेयर पर बैठा युवक वहाँ एक मेज पर कोहनी टिकाए पानी की ओर निहार रहा था। दूर से चाँदनी में उसकी धातु की व्हीलचेयर किसी ऐसे उपकरण की तरह लग रही थी जिसे विशेष रूप से रात के सबसे गहरे और अंधेरे घंटों के लिए बनाया गया हो।

मैंने उस आदमी को पहले कभी अकेले नहीं देखा था। मेरे मन में, वह और उसकी माँ हमेशा एक ही इकाई थे—वह अपनी कुर्सी पर बैठा होता था और उसकी माँ उसे धकेलती थी। उसे इस तरह देखना अजीब लगा—बल्कि असभ्य भी। उसने नारंगी रंग की हवाईयन कमीज़ पहनी हुई थी, जिसे मैंने पहले भी देखा था, और सफेद सूती पतलून। वह बिना हिले-डुले बस बैठा हुआ था और समुद्र को घूर रहा था।

मैं कुछ देर वहीं खड़ा रहा, सोचता रहा कि क्या मुझे उसे इशारा करके बताना चाहिए कि मैं वहाँ हूँ। लेकिन, इससे पहले कि मैं कुछ फैसला कर पाता, उसने मेरी मौजूदगी को भांप लिया और मुड़ गया। मुझे देखते ही उसने हमेशा की तरह हल्के से सिर हिलाकर अभिवादन किया।

मैंने कहा, "शुभ संध्या।"

“शुभ संध्या,” उसने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया। मैंने उसे पहली बार बोलते सुना था। उसकी आवाज़ थोड़ी नींद से भरी हुई लग रही थी, लेकिन बाकी सब कुछ बिल्कुल सामान्य था। न ज़्यादा ऊँची, न ज़्यादा नीची।

“आधी रात को टहलना?” उसने पूछा।

मैंने कहा, "मुझे नींद नहीं आ रही थी।"

उन्होंने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और उनके होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। “मैं भी यही सोचता हूँ,” उन्होंने कहा। “अगर आप चाहें तो बैठ जाइए।”

मैं एक पल के लिए झिझका, सिर हिलाया और फिर उसकी मेज की ओर चल पड़ा। मैंने प्लास्टिक की एक कुर्सी खींची और उसके सामने बैठ गया। मैंने भी उसी दिशा में देखा जिधर वह देख रहा था। समुद्र तट के अंत में नुकीली चट्टानें थीं, जैसे बीच से कटी हुई मफिन हों, जिन पर लहरें नियमित अंतराल पर टकरा रही थीं। साफ-सुथरी, मनमोहक छोटी-छोटी लहरें—जैसे उन्हें किसी स्केल से नापा गया हो। इसके अलावा, देखने लायक कुछ खास नहीं था।
मैंने कहा, "आज मैंने तुम्हें बीच पर नहीं देखा।"
"मैं पूरे दिन अपने कमरे में आराम कर रहा था," युवक ने उत्तर दिया। "मेरी माँ की तबीयत ठीक नहीं थी।"
मुझे यह सुनकर बहुत दुख हुआ।
"ये कोई शारीरिक समस्या नहीं है। ये ज़्यादातर भावनात्मक और तंत्रिका संबंधी समस्या है।" उन्होंने अपने दाहिने हाथ की बीच वाली उंगली से अपना गाल रगड़ा। देर रात होने के बावजूद उनके गाल एकदम चिकने थे, दाढ़ी का नामोनिशान नहीं था। "अब वो ठीक है। गहरी नींद में सो रही है। मेरे पैरों से अलग है – एक रात की अच्छी नींद से वो ठीक हो जाती है। पूरी तरह ठीक तो नहीं होती, लेकिन कम से कम पहले जैसी हो जाती है। सुबह तक वो बिल्कुल ठीक हो जाएगी।"
वह तीस सेकंड, शायद एक मिनट तक चुप रहा। मैंने मेज के नीचे अपने पैर सीधे किए और सोचने लगी कि क्या जाने का यही सही समय है। ऐसा लग रहा था मानो मेरी पूरी ज़िंदगी बातचीत में अलविदा कहने के सही मौके को समझने के इर्द-गिर्द घूमती हो। लेकिन मैंने मौका गंवा दिया: जैसे ही मैं उसे बताने वाली थी कि मुझे जाना है, वह बोल पड़ा।
"तंत्रिका संबंधी विकार कई प्रकार के होते हैं। भले ही उनका कारण एक ही हो, फिर भी उनके लक्षण लाखों अलग-अलग होते हैं। यह भूकंप की तरह है—ऊर्जा तो समान होती है, लेकिन स्थान के अनुसार परिणाम भिन्न होते हैं। एक स्थिति में, एक द्वीप डूब सकता है; दूसरी स्थिति में एक नया द्वीप बन सकता है।"
उसने जम्हाई ली। एक लंबी, औपचारिक जम्हाई। लगभग सुरुचिपूर्ण। "माफ़ कीजिए," उसने बाद में कहा। वह थका हुआ लग रहा था; उसकी आँखें धुंधली थीं, मानो वह किसी भी पल सो

जाएगा। मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और महसूस किया कि मैंने घड़ी नहीं पहनी थी—बस घड़ी की जगह सफ़ेद त्वचा की एक पट्टी थी।

“मेरी चिंता मत करो,” उसने कहा। “मैं भले ही नींद में दिख रहा हूँ, पर ऐसा नहीं है। रात में चार घंटे की नींद मेरे लिए काफी है, और मैं आमतौर पर भोर से ठीक पहले इतनी नींद ले लेता हूँ। इसलिए रात के इस समय मैं ज्यादातर यहीं होता हूँ, बस यूँ ही समय बिताता हूँ।”

उसने मेज पर रखी सिन्ज़ानो ऐशट्रे उठाई, कुछ देर तक उसे ऐसे निहारा जैसे वह कोई दुर्लभ वस्तु हो, फिर उसे वापस रख दिया।

“जब भी मेरी माँ को घबराहट होती है, उनके चेहरे का बायाँ हिस्सा सुन्न हो जाता है। वह अपनी आँख या मुँह नहीं हिला पातीं। अगर आप उनके चेहरे के उस हिस्से को देखें, तो वह टूटे हुए फूलदान जैसा दिखता है। यह अजीब है, लेकिन इससे कुछ जानलेवा नहीं होता। एक रात की नींद के बाद वह ठीक हो जाती हैं।”

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं, इसलिए मैंने बस एक अनिश्चित सा सिर हिला दिया। एक टूटा हुआ फूलदान?

"मेरी माँ को मत बताना कि मैंने तुम्हें इसके बारे में बताया है, ठीक है? अगर कोई भी उसकी हालत के बारे में बात करता है तो उसे बहुत बुरा लगता है।"

“ज़रूर,” मैंने कहा। “वैसे भी, हम कल यहाँ से जा रहे हैं, इसलिए मुझे नहीं लगता कि मुझे उससे बात करने का मौका मिलेगा।”

"यह तो बहुत बुरा हुआ," उसने ऐसे कहा जैसे वह सचमुच ऐसा महसूस कर रहा हो।

“हाँ, लेकिन मुझे काम पर वापस जाना है, तो मैं क्या कर सकता हूँ?” मैंने कहा।

"आप कहाँ से हैं?"

टोक्यो।

“टोक्यो,” उसने दोहराया। उसने अपनी आँखें फिर से सिकोड़ीं और समुद्र की ओर घूरने लगा, मानो वह ध्यान से घूरने पर क्षितिज के पार टोक्यो की जगमगाहट देख पाएगा।

मैंने पूछा, "क्या आप यहाँ और ज़्यादा देर तक रहेंगे?"

“कहना मुश्किल है,” उसने अपनी व्हीलचेयर के हैंडल को उंगलियों से छूते हुए जवाब दिया। “एक महीना और, शायद दो महीने। सब कुछ परिस्थितियों पर निर्भर करता है। मेरी बहन के

पति के इस होटल में शेयर हैं, इसलिए हम यहाँ लगभग मुफ्त में रह सकते हैं। मेरे पिताजी क्लीवलैंड में एक बड़ी टाइल कंपनी चलाते हैं, और मेरे जीजाजी ने उसे लगभग संभाल लिया है। मुझे वो आदमी ज़्यादा पसंद नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि आप अपने परिवार को चुन नहीं सकते, है ना? मुझे नहीं पता, शायद वो उतना बुरा न हो जितना मैं उसे समझता हूँ। मेरे जैसे अस्वस्थ लोग थोड़े संकीर्ण सोच वाले होते हैं।" उसने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला और धीरे से, नज़ाकत से अपनी नाक पोंछी, फिर रुमाल वापस जेब में रख लिया। खैर, उनके पास कई कंपनियों के शेयर हैं। निवेश के लिए काफी संपत्ति भी है। बिल्कुल मेरे पिता की तरह ही चतुर आदमी हैं। तो हम सब—मेरा परिवार, मतलब—दो तरह के लोगों में बँटे हुए हैं: स्वस्थ और बीमार। काम करने वाले और काम न करने वाले। स्वस्थ लोग टाइल बनाने, अपनी दौलत बढ़ाने और टैक्स बचाने में लगे हैं—लेकिन किसी को बताना मत कि मैंने ऐसा कहा, ठीक है?—और वे बीमारों की देखभाल करते हैं। ये काम का बढ़िया बँटवारा है।

वह बोलते-बोलते रुक गया और गहरी सांस ली। कुछ देर तक उसने अपनी उंगलियों के नाखूनों से मेज पर थपथपाहट की। मैं चुपचाप उसके बोलने का इंतजार करता रहा।

"वे सब हमारे लिए फैसला करते हैं। हमें कहते हैं कि एक महीना यहाँ रहो, एक महीना वहाँ। हम बारिश की तरह हैं, मेरी माँ और मैं। हम यहाँ बारिश करते हैं, और अगले ही पल हम कहीं और बारिश कर रहे होते हैं।"

लहरें चट्टानों से टकराती थीं और अपने पीछे सफेद झाग छोड़ जाती थीं; झाग के गायब होते-होते नई लहरें आ जाती थीं। मैं इस प्रक्रिया को खाली निगाहों से देखता रहा। चांदनी की रोशनी से चट्टानों पर अनियमित परछाइयाँ बन रही थीं।

"बेशक, क्योंकि यह श्रम विभाजन है," उन्होंने आगे कहा, "मेरी माँ और मेरी भी अपनी भूमिकाएँ हैं। यह दोतरफा मामला है। इसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है, लेकिन मुझे लगता है कि हम कुछ न करके उनकी अतिरंजनाओं को पूरा करते हैं। यही हमारे जीवन का उद्देश्य है। क्या आप समझ रहे हैं मेरा मतलब?"

"हां, कुछ हद तक," मैंने जवाब दिया, "लेकिन मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं है कि मैं ऐसा करता हूं।"

वह धीरे से हँसा। उसने कहा, “परिवार एक अजीब चीज़ है। परिवार को अपने आप में एक आधार होना चाहिए, वरना व्यवस्था काम नहीं करेगी। इस लिहाज़ से, मेरे बेकार पैर एक तरह से वह झंडा हैं जिसके चारों ओर मेरा परिवार एकजुट होता है। मेरे बेजान पैर वह धुरी हैं जिसके चारों ओर सब कुछ घूमता है।”

वह फिर से मेज पर थपथपा रहा था। चिड़चिड़ाहट में नहीं—बस अपनी उंगलियों को हिला रहा था और चुपचाप अपने ही अंदाज में चीजों पर विचार कर रहा था।

“इस प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं में से एक यह है कि अभाव अधिक अभाव की ओर, और अधिकता अधिक अधिकता की ओर आकर्षित होती है। जब डेबुसी को अपने द्वारा रचित ओपेरा में कोई सफलता नहीं मिल रही थी, तो उन्होंने इसे इस प्रकार व्यक्त किया: ‘मैंने अपने दिन उस शून्यता—रिएन—की खोज में बिताए जो यह उत्पन्न करता है।’ मेरा काम उस शून्य, उस रिएन को उत्पन्न करना है।”

वह अनिद्रा से भरी खामोशी में डूब गया, उसका मन किसी दूर देश में भटक रहा था। शायद उसके भीतर के खालीपन में। आखिरकार, उसका ध्यान वर्तमान क्षण पर लौट आया, उस बिंदु पर जहाँ वह लौटा था, जो उसके जाने के स्थान से कुछ हद तक अलग था। मैंने अपने गालों को सहलाने की कोशिश की। दाढ़ी के खुरचने से मुझे पता चला कि हाँ, समय अभी भी चल रहा है। मैंने अपनी जेब से व्हिस्की की छोटी बोतल निकाली और उसे मेज पर रख दिया।

“क्या आप कुछ पीना चाहेंगे? मुझे खेद है कि मेरे पास गिलास नहीं है।”

उन्होंने सिर हिलाया। "धन्यवाद, लेकिन मैं शराब नहीं पीता। मुझे नहीं पता कि अगर मैं पीता तो मेरी क्या प्रतिक्रिया होती, इसलिए मैं नहीं पीता। लेकिन मुझे दूसरों के शराब पीने से कोई आपत्ति नहीं है - आप बेझिझक पी सकते हैं।"

मैंने बोतल को पीछे की ओर झुकाया और व्हिस्की को धीरे-धीरे अपने गले से नीचे उतरने दिया। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और उस गर्माहट का आनंद लिया। वह मेज के दूसरी ओर से पूरी प्रक्रिया देख रहा था।

उन्होंने कहा, "यह शायद एक अजीब सवाल हो सकता है, लेकिन क्या आप चाकू के बारे में कुछ जानते हैं?"

“चाकू?”

“चाकू। मतलब, शिकार करने वाले चाकू।”
मैंने उसे बताया कि मैंने कैंपिंग के दौरान चाकू का इस्तेमाल किया था, लेकिन मुझे उनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। इससे वह थोड़ा निराश हुआ। लेकिन ज्यादा देर तक नहीं।
“कोई बात नहीं,” उसने कहा। “मेरे पास एक चाकू है जिसे मैं चाहता था कि आप देख लें। मैंने इसे लगभग एक महीने पहले एक कैटलॉग से खरीदा था। लेकिन मुझे चाकुओं के बारे में कुछ भी नहीं पता। मुझे नहीं पता कि यह अच्छा है या मैंने अपने पैसे बर्बाद कर दिए। इसलिए मैं चाहता था कि कोई और इसे देखे और मुझे अपनी राय दे। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो।”
मैंने उससे कहा, "नहीं, मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"
उसने बड़ी सावधानी से अपनी जेब से पांच इंच लंबी, खूबसूरती से घुमावदार एक वस्तु निकाली और उसे मेज पर रख दिया।
“चिंता मत करो। मेरा इरादा इससे किसी को चोट पहुँचाने का नहीं है, न ही खुद को। बस एक दिन मुझे लगा कि मुझे एक तेज़ धार वाला चाकू चाहिए। मुझे बस चाकू पाने की बहुत तीव्र इच्छा थी, बस। इसलिए मैंने कुछ कैटलॉग देखे और एक ऑर्डर कर दिया। किसी को नहीं पता कि मैं हमेशा यह चाकू अपने साथ रखता हूँ—मेरी माँ को भी नहीं। सिर्फ़ तुम ही हो जिसे पता है।”
और मैं कल टोक्यो के लिए रवाना हो रहा हूँ।
“हाँ, बिल्कुल,” उसने कहा और मुस्कुराया। उसने चाकू उठाया और कुछ पल के लिए अपनी हथेली पर टिकाकर उसका वज़न परखा, मानो उसका कोई विशेष महत्व हो। फिर उसने उसे मेज के उस पार मुझे दे दिया। चाकू का वज़न वाकई अजीब था—ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी जीवित प्राणी को पकड़े हुए हूँ जिसकी अपनी मर्ज़ी हो। पीतल के हैंडल में लकड़ी की नक्काशी थी और धातु ठंडी थी, हालाँकि वह इतने समय से उसकी जेब में ही थी।
"आगे बढ़ो और ब्लेड खोलो।"
मैंने मूठ के ऊपरी हिस्से पर बने गड्ढे को दबाया और भारी ब्लेड को बाहर निकाल लिया। पूरी तरह खोलने पर यह लगभग तीन इंच लंबा था। ब्लेड बाहर आने पर चाकू और भी भारी लगने लगा। सिर्फ़ वज़न ही नहीं, बल्कि जिस तरह से यह मेरी हथेली में एकदम सही बैठ गया, वह

भी मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने इसे दो-तीन बार ऊपर-नीचे, अगल-बगल घुमाकर देखा, और इसके सही संतुलन के कारण मुझे इसे फिसलने से रोकने के लिए ज़्यादा ज़ोर से पकड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ी। स्टील के ब्लेड पर बनी गहरी धार वाली धार, जब मैंने इससे वार किया, तो एक साफ़ चाप बनाती हुई आगे बढ़ी।

मैंने उससे कहा, "जैसा कि मैंने कहा, मुझे चाकुओं के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन यह एक शानदार चाकू है। इसे पकड़ने का अनुभव बहुत ही बढ़िया है।"

"लेकिन क्या यह शिकार के चाकू के हिसाब से थोड़ा छोटा नहीं है?"

मैंने कहा, "मुझे नहीं पता। शायद यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसका इस्तेमाल किस लिए करते हैं।"

"बिल्कुल सही," उसने कहा और खुद को यकीन दिलाने के लिए कुछ बार सिर हिलाया।

मैंने ब्लेड को हैंडल में मोड़कर उसे वापस दे दिया। उस युवक ने उसे फिर से खोला और बड़ी कुशलता से चाकू को एक बार हाथ में घुमाया। फिर, मानो वह राइफल से निशाना साध रहा हो, उसने एक आँख बंद कर ली और चाकू को सीधे पूर्णिमा के चाँद की ओर निशाना बनाया। चाँदनी ब्लेड से टकराकर परावर्तित हुई और एक पल के लिए उसके चेहरे के एक तरफ चमक उठी।

“मुझे आश्चर्य है कि क्या आप मेरी एक मदद कर सकते हैं,” उसने कहा। “क्या आप इससे कुछ काट सकते हैं?”

“कुछ काटना है? मतलब क्या?”

“कुछ भी। जो भी आसपास हो। बस आप कुछ काट दीजिए। मैं इस कुर्सी पर फंसा हुआ हूँ, इसलिए मैं कुछ काट नहीं सकता। अगर आप मेरे लिए कुछ काट दें तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।”

मुझे मना करने का कोई कारण नहीं सूझा, इसलिए मैंने चाकू उठाया और पास के एक ताड़ के पेड़ के तने पर दो-तीन वार किए। मैंने तिरछे काटकर छाल उतार दी। फिर मैंने पूल के पास पड़े स्टायरोफोम के एक तख्ते को उठाया और उसे लंबाई में दो हिस्सों में काट दिया। चाकू मेरी कल्पना से भी ज़्यादा तेज़ था।

मैंने कहा, "यह चाकू तो शानदार है।"

“यह हाथ से बनाया गया है,” युवक ने कहा। “और काफी महंगा भी है।”

मैंने भी उसी तरह चाकू को चाँद की ओर तान दिया और उसे ध्यान से देखने लगा। प्रकाश में, वह किसी भयंकर पौधे के तने जैसा लग रहा था जो अभी-अभी मिट्टी की सतह से फूट रहा हो। कुछ ऐसा जो शून्यता और अतिरेक को जोड़ता हो।

उन्होंने मुझसे आग्रह किया, "कुछ और चीजें काट दो।"

मैंने हर उस चीज़ पर वार किया जो मेरे हाथ लगी। ज़मीन पर गिरे नारियलों पर, एक उष्णकटिबंधीय पौधे की विशाल पत्तियों पर, बार के प्रवेश द्वार पर लगे मेनू पर। मैंने समुद्र तट पर पड़े लकड़ी के कुछ टुकड़ों को भी काट डाला। जब काटने के लिए कुछ नहीं बचा, तो मैं धीरे-धीरे, सोच-समझकर आगे बढ़ने लगा, मानो ताई ची कर रहा हो, रात की हवा में चुपचाप चाकू चला रहा हो। मेरे रास्ते में कुछ भी नहीं था। रात गहरी थी, और समय लचीला था। पूर्णिमा की रोशनी ने उस गहराई, उस लचीलेपन को और बढ़ा दिया।

जैसे ही मैंने हवा में वार किया, अचानक मुझे उस मोटी औरत की याद आ गई, जो पहले यूनाइटेड एयरलाइंस में एयर होस्टेस थी। मैं उसके पीले, फूले हुए शरीर को अपने चारों ओर हवा में तैरते हुए देख सकती थी, आकारहीन, धुंध की तरह। उस धुंध के भीतर सब कुछ मौजूद था। बेड़े, समुद्र, आकाश, हेलीकॉप्टर, पायलट। मैंने उन्हें दो टुकड़ों में काटने की कोशिश की, लेकिन परिप्रेक्ष्य सही नहीं था, और सब कुछ मेरी तलवार की नोक से बस थोड़ा ही दूर रहा। क्या यह सब एक भ्रम था? या मैं ही भ्रम थी? शायद इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कल तक, मैं यहाँ नहीं रहूँगी।

“कभी-कभी मुझे एक सपना आता है,” व्हीलचेयर पर बैठे उस युवक ने कहा। उसकी आवाज़ में एक अजीब सी गूंज थी, मानो किसी गहरी गुफा की गहराई से उठ रही हो। “मेरे सिर के कोमल हिस्से में, जहाँ यादें बसी हैं, एक तेज़ चाकू चुभा हुआ है। वह अंदर तक धंसा हुआ है। उससे न तो दर्द होता है और न ही कोई बोझ महसूस होता है—बस वहीं अटका हुआ है। और मैं एक तरफ खड़ा होकर इसे ऐसे देख रहा हूँ जैसे किसी और के साथ हो रहा हो। मैं चाहता हूँ कि कोई उस चाकू को निकाल दे, लेकिन किसी को पता नहीं कि वह मेरे सिर के अंदर फंसा हुआ है। मैं खुद उसे निकालने के बारे में सोचता हूँ, लेकिन मेरे हाथ मेरे सिर के अंदर तक नहीं पहुँच पाते। यह बहुत अजीब बात है। मैं खुद को चाकू मार सकता हूँ, लेकिन चाकू को

निकालने के लिए मैं उस तक नहीं पहुँच पाता। और फिर सब कुछ गायब होने लगता है। मैं भी धीरे-धीरे मिटने लगता हूँ। बस चाकू हमेशा वहीं रहता है—बिल्कुल अंत तक। जैसे समुद्र तट पर किसी प्रागैतिहासिक जानवर की हड्डी पड़ी हो। मुझे इसी तरह के सपने आते हैं," उसने कहा।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

कंगारुओं के लिए एक शानदार दिन

पिंजरे में चार कंगारू थे—एक नर, दो मादा और एक नवजात शिशु कंगारू।

मैं और मेरी प्रेमिका पिंजरे के सामने खड़े थे। यह चिड़ियाघर वैसे भी इतना लोकप्रिय नहीं था, और सोमवार की सुबह होने के कारण जानवरों की संख्या आगंतुकों से कहीं अधिक थी। कोई अतिशयोक्ति नहीं। कसम से।

हमारा पूरा मकसद तो कंगारू के बच्चे को देखना था। आखिर हम चिड़ियाघर में और किसलिए जाते?

एक महीने पहले अखबार के स्थानीय अनुभाग में हमने नन्हे कंगारू के जन्म की घोषणा देखी थी, और तब से हम नन्हे कंगारू से मिलने के लिए एक उपयुक्त सुबह का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। लेकिन किसी तरह वह सही दिन आ ही नहीं रहा था। एक सुबह बारिश हो रही थी, और अगले दिन भी वैसी ही बारिश हुई। उसके अगले दिन तो बहुत कीचड़ था, और फिर दो दिन तक लगातार तेज हवा चलती रही। एक सुबह मेरी प्रेमिका को दांत में दर्द था, और दूसरी सुबह मुझे नगर पालिका कार्यालय में कुछ काम निपटाना था। मैं यहाँ कोई गहरी बात कहने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मैं इतना जरूर कहूँगा:

यही जीवन है।

खैर, एक महीना पलक झपकते ही बीत गया।

एक महीना पलक झपकते ही बीत जाता है। मुझे पूरे महीने में किए गए कामों में से कुछ भी याद नहीं रहता था। कभी-कभी लगता था कि मैंने बहुत कुछ किया है, कभी-कभी लगता था कि कुछ भी हासिल नहीं किया। महीने के अंत में जब अखबार बांटने के पैसे लेने वाला आया, तब मुझे एहसास हुआ कि पूरा महीना पलक झपकते ही बीत गया।

हाँ, यही तो जीवन है।

आखिरकार, वह सुबह आ ही गई जब हमें नन्हे कंगारू को देखना था। हम सुबह छह बजे उठे, पर्दे हटाए और तय किया कि कंगारुओं को देखने के लिए यह बिल्कुल सही दिन है। हमने जल्दी से नहाया, नाश्ता किया, बिल्ली को खाना खिलाया, फटाफट कपड़े धोए, धूप से बचने के लिए टोपी पहनी और निकल पड़े।

"क्या आपको लगता है कि कंगारू का बच्चा अभी भी जीवित है?" उसने ट्रेन में मुझसे पूछा।

“मुझे पूरा यकीन है। इसके मरने के बारे में कोई लेख नहीं छपा था। अगर यह मर गया होता, तो मुझे पूरा यकीन है कि हमने इसके बारे में पढ़ा होता।”

"हो सकता है कि वह मरा न हो, बल्कि बीमार हो और किसी अस्पताल में भर्ती हो।"

"खैर, मुझे लगता है कि उस बारे में भी एक लेख लिखा गया होता।"

"लेकिन क्या होगा अगर उसे नर्वस ब्रेकडाउन हो गया हो और वह किसी कोने में छिप गया हो?"

“क्या कोई बच्चा मानसिक रूप से परेशान है?”

“बच्चा नहीं। माँ! हो सकता है उसे किसी तरह का सदमा लगा हो और वह बच्चे के साथ किसी अंधेरे पिछले कमरे में छिपी हुई हो।”

मैं प्रभावित होकर सोचने लगी, महिलाएं वाकई हर संभव स्थिति के बारे में सोचती हैं। कोई आघात? किस तरह का आघात कंगारू को प्रभावित कर सकता है?

“अगर मैंने अभी उस नन्हे कंगारू को नहीं देखा तो मुझे नहीं लगता कि मुझे फिर कभी ऐसा मौका मिलेगा,” उसने कहा।

मुझे नहीं लगता।

"मेरा मतलब है, क्या आपने कभी ऐसा कोई देखा है?"

“नहीं, मैं नहीं,” मैंने कहा।

"क्या आपको इतना यकीन है कि आपको कभी दूसरा मौका मिलेगा?"

"मुझें नहीं पता।"

“इसीलिए मुझे चिंता हो रही है।”

“हाँ, लेकिन देखो,” मैंने पलटकर जवाब दिया, “मैंने कभी जिराफ को बच्चे को जन्म देते नहीं देखा, न ही व्हेल को तैरते देखा है, तो फिर एक कंगारू के बच्चे को लेकर इतना हंगामा क्यों मचा रहे हो?”

“क्योंकि यह एक छोटा कंगारू है,” उसने कहा। “इसलिए।”

मैंने हार मान ली और अखबार के पन्ने पलटने लगा। मैं आज तक किसी लड़की से बहस नहीं जीत पाया था।



कंगारू स्वाभाविक रूप से अभी भी जीवित और स्वस्थ था, और वह (या वह मादा थी?) अखबार में छपी तस्वीर से कहीं ज्यादा बड़ा लग रहा था, क्योंकि वह कंगारू के बाड़े में इधर-उधर उछल-कूद कर रहा था। वह बच्चा नहीं, बल्कि एक तरह का नन्हा कंगारू था। मेरी प्रेमिका निराश हो गई।

“यह अब बच्चा नहीं रहा,” उसने कहा।

मैंने उसे खुश करने की कोशिश करते हुए कहा, "हाँ, बिल्कुल है।"

मैंने उसकी कमर में हाथ डालकर उसे धीरे से सहलाया। उसने अपना सिर हिलाया। मैं उसे दिलासा देने के लिए कुछ करना चाहता था, लेकिन मैं जो भी कहता, उससे एक ज़रूरी बात नहीं बदलती: नन्हा कंगारू सचमुच बड़ा हो चुका था। इसलिए मैं चुप रहा।

मैं खाने-पीने की दुकान पर गया और दो चॉकलेट आइसक्रीम कोन खरीदे, और जब मैं वापस आया तो वह अभी भी पिंजरे से टेक लगाकर कंगारुओं को घूर रही थी।

“यह अब बच्चा नहीं रहा,” उसने दोहराया।

मैंने उसे एक आइसक्रीम देते हुए पूछा, "क्या तुम्हें यकीन है?"

"बच्चा अपनी मां की थैली के अंदर होगा।"

मैंने सिर हिलाया और अपनी आइसक्रीम चाट ली।

लेकिन यह उसकी थैली में नहीं है।

हमने मादा कंगारू को ढूंढने की कोशिश की। पिता को पहचानना आसान था—वह चारों में सबसे बड़ा और शांत था। किसी ऐसे संगीतकार की तरह जिसकी प्रतिभा सूख चुकी हो, वह बिल्कुल स्थिर खड़ा रहा और अपने चारे के बर्तन में पत्तियों को घूरता रहा। बाकी सभी कंगारू मादा थीं, आकार, रंग और हावभाव में एक जैसी। उनमें से कोई भी बच्चे की माँ हो सकती थी।

मैंने टिप्पणी की, "उनमें से एक तो मां होगी, और दूसरी नहीं।"

"एक।"

तो फिर वो कौन है जो माँ नहीं है?

“तुमने मुझे पकड़ लिया,” उसने कहा।

इन सब बातों से बेखबर, नन्हा कंगारू बाड़े में उछल-कूद कर रहा था, कभी-कभी बिना किसी स्पष्ट कारण के मिट्टी में कुछ खरोंचने के लिए रुक जाता था। उसे व्यस्त रखने के लिए वाकई बहुत कुछ मिल गया था। नन्हा कंगारू अपने पिता के पास उछल-कूद करता, कुछ पत्ते चबाता, मिट्टी खोदता, मादा कंगारूओं को परेशान करता, ज़मीन पर लेट जाता, फिर उठकर और उछल-कूद करता।

“कंगारू इतनी तेजी से कैसे कूदते हैं?” मेरी प्रेमिका ने पूछा।

अपने शत्रुओं से बचने के लिए।

“कौन से दुश्मन?”

मैंने कहा, "इंसान। इंसान उन्हें बूमरैंग से मारते हैं और खा जाते हैं।"

"कंगारू के बच्चे अपनी मां की थैली में क्यों चढ़ जाते हैं?"

"ताकि वे उसे लेकर भाग सकें। बच्चे इतनी तेजी से नहीं दौड़ सकते।"

तो क्या वे सुरक्षित हैं?

“हां,” मैंने कहा। “वे अपने सभी बच्चों की रक्षा करते हैं।”

"वे उन्हें इस तरह कब तक सुरक्षित रखते हैं?"

मुझे पता था कि इस छोटी सी यात्रा पर जाने से पहले मुझे किसी विश्वकोश में कंगारुओं के बारे में पढ़ लेना चाहिए था। इस तरह के सवालों की बौछार होना तो बिल्कुल अपेक्षित था।

"मुझे लगता है, एक या दो महीने।"

“अच्छा, वह बच्चा तो अभी सिर्फ एक महीने का है,” उसने नन्हे कंगारू की ओर इशारा करते हुए कहा। “इसलिए उसे अभी भी अपनी माँ की थैली में चढ़ना पड़ता है।”

“हम्म,” मैंने कहा। “मुझे लगता है ऐसा ही है।”

"क्या आपको नहीं लगता कि उस थैली के अंदर होना बहुत अच्छा लगेगा?"

"हां, ऐसा ही होगा।"

इस समय तक सूरज आसमान में काफी ऊपर आ चुका था, और पास ही स्थित स्विमिंग पूल में बच्चों के चिल्लाने की आवाजें सुनाई दे रही थीं। सफेद रंग के घने बादल धीरे-धीरे बह रहे थे।

मैंने उससे पूछा, "क्या आप कुछ खाना चाहेंगी?"

“एक हॉट डॉग,” उसने कहा। “और एक कोक।”

एक कॉलेज का छात्र मिनीवैन के आकार के हॉट डॉग स्टैंड पर काम कर रहा था। उसने एक बूम बॉक्स चला रखा था और स्टीवी वंडर और बिली जोएल के गाने मुझे तब तक सुनाई देते रहे जब तक मैं हॉट डॉग पकने का इंतजार कर रहा था।

जब मैं कंगारू के पिंजरे के पास वापस आई तो उसने कहा, "देखो!" और एक मादा कंगारू की ओर इशारा करते हुए बोली, "देखा? यह उसकी थैली के अंदर है!"

और वाकई, नन्हा कंगारू अपनी माँ की थैली में दुबका हुआ था। (मान लीजिए कि यह उसकी माँ ही थी।) थैली फूल गई थी, और उसमें से नुकीले छोटे कान और पूंछ का सिरा झाँक रहा था। यह एक अद्भुत नज़ारा था, और इसने हमारी यात्रा को वाकई सार्थक बना दिया।

"बच्चे के पेट में होने के कारण यह काफी भारी होगा," उसने कहा।

"चिंता मत करो—कंगारू मजबूत होते हैं।"

"वास्तव में?"

“बेशक वे हैं। इसी तरह वे जीवित रहे हैं।”

तेज धूप के बावजूद मादा कंगारू को पसीना नहीं आ रहा था। वह ऐसी लग रही थी मानो उसने दोपहर में आओयामा के पॉश इलाके की मुख्य सड़क पर स्थित एक सुपरमार्केट से खरीदारी पूरी की हो और पास के किसी कॉफी शॉप में आराम कर रही हो।

"वह अपने बच्चे की रक्षा कर रही है, है ना?"

“हाँ।”

मुझे आश्चर्य है कि क्या बच्चा सो रहा है।

"शायद।"



हमने अपने हॉट डॉग खाए, कोक पी और कंगारू के पिंजरे से निकल गए।

जब हम वहां से निकले, तो नर कंगारू अभी भी खोए हुए नोट्स की तलाश में चारागाह में घूर रहा था। मादा कंगारू और उसका बच्चा एक इकाई बन चुके थे, समय के प्रवाह में विश्राम

कर रहे थे, जबकि रहस्यमय दूसरी मादा बाड़े में ऐसे उछल-कूद कर रही थी मानो अपनी पूंछ को परीक्षण के तौर पर बाहर निकाल रही हो।

ऐसा लग रहा था कि आज का दिन उमस भरा होगा, काफी समय बाद इतना गर्म दिन आने वाला था।

"हे, क्या तुम कहीं बीयर पीने चलना चाहोगे?" उसने पूछा।

मैंने कहा, "बहुत बढ़िया।"

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

Dabchick

जब मैं एक संकरी कंक्रीट की सीढ़ी के नीचे पहुँचा, तो मैंने खुद को एक ऐसे गलियारे में पाया जो सीधे आगे अनंत तक फैला हुआ था—एक लंबा गलियारा जिसकी छतें इतनी ऊँची थीं कि वह गलियारे की बजाय सूखे नाले जैसा लग रहा था। उसमें किसी भी तरह की कोई सजावट नहीं थी। वह सचमुच एक गलियारा था, बस गलियारा ही गलियारा। रोशनी मंद और असमान थी, मानो प्रकाश कई भयानक दुर्घटनाओं के बाद आखिरकार अपने गंतव्य तक पहुँचा हो। उसे छत पर अनियमित अंतरालों पर लगी फ्लोरोसेंट ट्यूबों पर जमी मोटी काली धूल की परत से होकर गुजरना पड़ा था। और उन ट्यूबों में से हर तीन में से एक खराब थी। मेरी आँखों के सामने मुझे अपना हाथ भी मुश्किल से दिखाई दे रहा था। जगह एकदम शांत थी। उस अंधेरे गलियारे में एकमात्र आवाज़ मेरे टेनिस जूतों की कंक्रीट के फर्श पर अजीब सी सपाट थपथपाहट थी।

मैं चलता रहा: दो सौ गज, तीन सौ गज, शायद आधा मील, बिना सोचे-समझे, बस चलता रहा, समय का कोई एहसास नहीं, दूरी का कोई आभास नहीं, आगे बढ़ने का कोई आभास नहीं। लेकिन मैं ज़रूर आगे बढ़ रहा था। अचानक मैं एक टी-आकार के चौराहे पर खड़ा था।

एक टी-आकार का चौराहा?



मैंने अपनी जैकेट की जेब से एक मुड़ा हुआ पोस्टकार्ड निकाला और उस पर लिखे संदेश को पढ़ा: “गलियारे में सीधे चलते जाइए। जहाँ यह दूसरे गलियारे से समकोण पर मिलता है, वहाँ आपको एक दरवाज़ा मिलेगा।” मैंने सामने की दीवार को देखा, लेकिन वहाँ दरवाज़े का कोई निशान नहीं था, न ही कभी कोई दरवाज़ा होने का कोई संकेत था, न ही इस दीवार में कभी कोई दरवाज़ा लगने का कोई संकेत था। यह एक सादी, साधारण कंक्रीट की दीवार थी, जिसमें अन्य कंक्रीट की दीवारों के अलावा कोई और खास बात नहीं थी। न कोई आध्यात्मिक दरवाज़ा, न कोई प्रतीकात्मक दरवाज़ा, न कोई लाक्षणिक दरवाज़ा, न कुछ भी नहीं। मैंने दीवार के लंबे हिस्सों पर अपनी हथेली फिराई, लेकिन यह बस एक दीवार थी, चिकनी और खाली।

मुझे पूरा यकीन था कि कोई न कोई गलती जरूर हुई है।
दीवार से टेक लगाकर मैंने सिगरेट पी। अब क्या? आगे बढ़ूँ या वापस लौट जाऊँ?
ऐसा नहीं था कि जवाब को लेकर कभी कोई गंभीर संदेह था। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मुझे आगे बढ़ना ही था। मैं गरीबी से तंग आ चुका था। मासिक किश्तों से, गुजारा भत्ता से, अपने तंग से अपार्टमेंट से, बाथटब में कॉकरोचों से, भीड़भाड़ वाली मेट्रो से, हर चीज़ से तंग आ चुका था। अब, आखिरकार, मुझे एक अच्छी नौकरी मिल गई थी। काम आसान होगा, और तनख्वाह बहुत अच्छी होगी। साल में दो बार बोनस मिलेगा। लंबी गर्मियों की छुट्टियां मिलेंगी। मैं अब हार मानने वाला नहीं था—सिर्फ इसलिए कि मुझे एक घटिया सा दरवाजा ढूंढने में परेशानी हो रही थी। अगर मुझे यहाँ दरवाजा नहीं मिला, तो मैं तब तक आगे बढ़ता रहूंगा जब तक मुझे वह मिल न जाए।
मैंने अपनी जेब से दस येन का सिक्का निकाला और उसे उछाला। हेड आया। मैं दाहिनी ओर वाले गलियारे में चला गया।
गलियारा दो बार दाईं ओर मुड़ा, एक बार बाईं ओर, दस सीढ़ियाँ नीचे उतरा और फिर दाईं ओर मुड़ गया। यहाँ की हवा मुझे कॉफी जेली की याद दिला रही थी: ठंडी और अजीब तरह से गाढ़ी। मैंने तनख्वाह की उम्मीद और वातानुकूलित दफ्तर की ताज़गी भरी ठंडक के बारे में सोचा। नौकरी होना एक अद्भुत बात थी। मैंने अपने कदम तेज़ किए और गलियारे में आगे बढ़ गया।
अंततः सामने एक दरवाजा दिखाई दिया। इतनी दूरी से देखने पर यह एक फटे-पुराने डाक टिकट जैसा लग रहा था, लेकिन जैसे-जैसे मैं करीब आता गया, यह एक दरवाजे जैसा दिखने लगा—यहाँ तक कि अब कोई संदेह नहीं रह गया था।
मैंने गला साफ किया और दरवाजे पर हल्की सी दस्तक देकर एक कदम पीछे हट गया और जवाब का इंतजार करने लगा। पंद्रह सेकंड बीत गए। कोई जवाब नहीं आया। मैंने फिर दस्तक दी, इस बार थोड़ा जोर से, फिर पीछे हटकर इंतजार करने लगा। फिर भी कोई जवाब नहीं आया।
मेरे चारों ओर हवा धीरे-धीरे जमती जा रही थी।

अपनी ही आशंका से प्रेरित होकर, मैं तीसरी बार दस्तक देने के लिए एक कदम आगे बढ़ा ही रहा था कि दरवाजा बिना किसी आवाज के, स्वाभाविक रूप से खुल गया, मानो हवा का झोंका उसे अपने कब्जों पर घुमा रहा हो, हालांकि, सच कहें तो, इसमें प्रकृति का कोई हाथ नहीं था। पहले एक बटन की आवाज आई, और फिर एक आदमी मेरे सामने प्रकट हुआ।
वह लगभग पच्चीस वर्ष का था और मुझसे शायद दो इंच छोटा था। उसके ताज़े धुले बालों से पानी टपक रहा था और शरीर पर केवल एक मैरून रंग का बाथरोब था। उसकी टांगें असामान्य रूप से सफेद थीं और उसके पैर किसी बच्चे के पैरों जितने छोटे थे। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, मानो वह किसी पुरानी लिखावट की अभ्यास पुस्तिका पर लिखा हो, लेकिन उसके होंठों पर हल्की सी क्षमा भरी मुस्कान थी। वह शायद बुरा आदमी नहीं था।
"माफ़ करना। तुमने मुझे नहाते हुए पकड़ लिया," उसने तौलिए से अपने बाल सुखाते हुए कहा।
“स्नान?” मैंने अनायास ही अपनी घड़ी पर नज़र डाली।
“यह एक नियम है। हमें दोपहर के भोजन के बाद नहाना पड़ता है।”
"अच्छा ऐसा है।"
"क्या मैं आपके व्यवसाय की प्रकृति के बारे में पूछ सकता हूँ?"
मैंने अपनी जैकेट की जेब से पोस्टकार्ड निकाला और उस आदमी को दे दिया। उसने उसे गीला होने से बचाने के लिए अपनी उंगलियों के बीच में लिया और कई बार पढ़ा।
मैंने कहा, "मुझे लगता है कि मुझे पांच मिनट की देरी हो गई है। क्षमा करें।"
उसने सिर हिलाया और कार्ड मुझे लौटा दिया। "हम्म। तो तुम यहीं काम शुरू करोगे?"
"यह सही है।"
"अजीब बात है, मुझे किसी नए कर्मचारी की भर्ती के बारे में पता ही नहीं चला। मुझे आपके बारे में अपने वरिष्ठ अधिकारी को बताना होगा। यही तो मेरा काम है। मेरा काम बस दरवाजा खोलना और लोगों के बारे में अपने वरिष्ठ अधिकारी को बताना है।"
“अच्छा, बढ़िया। क्या आप कृपया मेरा नाम घोषित करेंगे?”
“बेशक। बस आप मुझे पासवर्ड बता दीजिए।”
“पासवर्ड?”

“क्या आपको पता नहीं था कि पासवर्ड भी है?”

मैंने सिर हिलाया। "मुझे किसी ने पासवर्ड के बारे में नहीं बताया था।"

“तो मैं आपकी मदद नहीं कर सकता। मेरे वरिष्ठ अधिकारी इस मामले में बहुत सख्त हैं। मुझे किसी ऐसे व्यक्ति को अंदर आने की अनुमति नहीं है जिसे पासवर्ड पता न हो।”

यह सब मेरे लिए बिल्कुल नया था। मैंने अपनी जेब से दोबारा पोस्टकार्ड निकाला और उसे ध्यान से पढ़ा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसमें पासवर्ड के बारे में कुछ भी नहीं लिखा था।

“शायद वे लिखना भूल गए,” मैंने कहा। “यहाँ आने के निर्देश भी थोड़े गलत थे। अगर आप बस अपने वरिष्ठ अधिकारी को मेरे बारे में बता दें, तो मुझे पूरा यकीन है कि सब ठीक हो जाएगा। मुझे आज से यहाँ काम पर रखा गया है। मुझे पूरा यकीन है कि आपके वरिष्ठ अधिकारी को इसके बारे में सब पता है। अगर आप बस मेरे आने की सूचना दे दें...”

“मुझे पासवर्ड इसीलिए चाहिए,” उसने कहा और सिगरेट ढूंढने लगा, लेकिन उसे पता चला कि उसके बाथरोब में जेब नहीं है। मैंने उसे अपनी एक सिगरेट दी और लाइटर से जलाकर उसे दे दी।

“धन्यवाद, यह आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है,” उन्होंने कहा। “अब, क्या आप वाकई आश्वस्त हैं कि आपको ऐसा कुछ भी याद नहीं है जो पासवर्ड हो सकता था?”

मैं केवल अपना सिर हिला सका।

“मुझे भी ये नखरेबाज़ी बिल्कुल पसंद नहीं है, लेकिन मेरे सुपीरियर के अपने कारण होंगे। समझे? मुझे नहीं पता वो किस तरह के इंसान हैं। मैं उनसे कभी मिला नहीं हूँ। लेकिन आप जानते ही हैं कि ऐसे लोग कैसे होते हैं—उनके दिमाग में अचानक से नए-नए विचार आ जाते हैं। कृपया इसे व्यक्तिगत रूप से न लें।”

"नही बिल्कुल नही।"

“मुझसे पहले वाले व्यक्ति ने किसी ऐसे व्यक्ति का नाम बताया जिसके लिए उसे दुख था क्योंकि उस व्यक्ति ने दावा किया था कि वह पासवर्ड ‘भूल गया’ था। उसे तुरंत नौकरी से निकाल दिया गया। और आप तो अच्छी तरह जानते हैं कि आजकल नौकरी मिलना कितना मुश्किल है।”

मैंने सिर हिलाया। "तो कैसा रहेगा?" मैंने कहा। "क्या आप मुझे थोड़ा सा संकेत दे सकते हैं? बस एक छोटा सा संकेत।"

दरवाजे से टिके हुए उस आदमी ने धुएं का एक गुबार छोड़ा। "माफ़ कीजिए। यह नियमों के खिलाफ है।"

"अरे, छोड़ो भी। एक छोटे से इशारे से क्या नुकसान हो सकता है?"

"हां, लेकिन अगर यह बात कभी बाहर आ गई, तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाऊंगा।"

“मैं किसी को नहीं बताऊँगा। तुम भी किसी को नहीं बताओगे। उन्हें पता कैसे चलेगा?” यह मेरे लिए बेहद गंभीर मामला था। मैं हार मानने वाला नहीं था।

कुछ देर असमंजस के बाद, वह आदमी मेरे कान के पास झुककर फुसफुसाया, "क्या आप इसके लिए तैयार हैं? ठीक है, अब, यह एक सरल शब्द है और इसका पानी से कुछ संबंध है। यह आपके हाथ में समा जाएगा, लेकिन आप इसे खा नहीं सकते।"

अब सोचने-समझने की बारी मेरी थी।

पहला अक्षर क्या है?

“डी,” उसने कहा।

मैंने कहा, "बहती हुई लकड़ी।"

“गलत,” उसने कहा। “दो और।”

“दो और क्या?”

“दो और मौके। अगर आप इनमें भी चूक गए, तो खेल खत्म। मुझे माफ करना, लेकिन इस तरह नियम तोड़कर मैं बहुत बड़ा जोखिम उठा रहा हूं। मैं आपको यूं ही अंदाज़ा लगाते रहने नहीं दे सकता।”

“देखिए, मुझे इस तरह का मौका देने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं, लेकिन क्या आप मुझे कुछ और संकेत दे सकते हैं? जैसे कि शब्द में कितने अक्षर हैं?”

उसने frowning करते हुए कहा, "अगली बार तुम मुझसे पूरी कहानी बताने को कहोगे।"

नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा। कभी नहीं। बस मुझे बता दो कि उस शब्द में कितने अक्षर हैं।

“ठीक है। आठ,” उसने आह भरते हुए कहा। “मेरे पिता हमेशा मुझसे कहते थे: किसी की मदद करो तो वो बदले में अपना हाथ दे देगा।”

मुझे खेद है। सचमुच।

खैर, इसमें आठ अक्षर हैं।

"इसका पानी से कुछ लेना-देना है, यह आपके हाथ में आ जाता है लेकिन आप इसे खा नहीं सकते।"

"यह सही है।"

“यह 'डी' से शुरू होता है और इसमें आठ अक्षर हैं।”

"सही।"

मैंने पहेली पर ध्यान केंद्रित किया। अंत में मैंने कहा, "डैबचिक।"

नहीं। वैसे भी, तुम एक डैबचिक खा सकते हो।

"आपको यकीन है?"

“शायद। इसका स्वाद अच्छा नहीं होगा,” उसने थोड़े अनिश्चित भाव से कहा। “और यह तुम्हारे हाथ में भी नहीं आएगा।”

क्या आपने कभी किसी डैबचिक को देखा है?

“नहीं,” उन्होंने कहा। “मुझे पक्षियों के बारे में कुछ नहीं पता। खासकर जलपक्षियों के बारे में। मैं टोक्यो के बीचोंबीच पला-बढ़ा हूँ। मैं आपको यामानोते लाइन के सभी स्टेशन क्रम से बता सकता हूँ, लेकिन मैंने कभी डैबचिक नहीं देखा।”

मुझे भी नहीं पता था, बिल्कुल। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि मुझे यह शब्द आता है, जब तक मैंने खुद को इसे बोलते हुए नहीं सुना। लेकिन "डैबचिक" ही एकमात्र आठ अक्षरों वाला शब्द था जो सुरागों से मेल खाता था।

मैंने जोर देकर कहा, "यह 'डैबचिक' ही होना चाहिए। हथेली के आकार के ये छोटे-छोटे डैबचिक इतने बेस्वाद होते हैं कि कोई कुत्ता भी इन्हें नहीं खाएगा।"

“अरे, एक मिनट रुको,” उसने कहा। “तुम जो भी कहो, कोई फर्क नहीं पड़ता: ‘डैबचिक’ पासवर्ड नहीं है। तुम चाहे जितनी बहस कर लो, लेकिन तुमने गलत शब्द चुना है।”

"लेकिन यह सारे सुरागों से मेल खाता है—पानी से जुड़ा हुआ, हाथ में समा जाता है, इसे खाया नहीं जा सकता, आठ अक्षर। यह एकदम सही है।"

"बस एक ही चीज गलत है।"

“यह क्या है?”

“‘डैबचिक’ पासवर्ड नहीं है।”

"तो फिर, यह क्या है?"

उन्हें खुद को संभालना पड़ा। "मैं आपको नहीं बता सकता।"

मैंने जितना हो सके ठंडे स्वर में कहा, "क्योंकि ऐसा कुछ है ही नहीं। पानी से जुड़ी ऐसी कोई चीज़, जो हाथ में समा जाए लेकिन जिसे खाया न जा सके, उसके लिए आठ अक्षरों का कोई दूसरा शब्द है ही नहीं।"

“लेकिन है,” उसने लगभग रोते हुए विनती की।

"क्या नहीं है।"

"है।"

“आप इसे साबित नहीं कर सकते। और ‘डैबचिक’ सभी मानदंडों को पूरा करता है।”

मुझे पता है, लेकिन फिर भी, कहीं न कहीं कोई कुत्ता ऐसा हो सकता है जिसे हथेली के आकार की छोटी-छोटी चूजों को खाना पसंद हो।

"ठीक है, अगर तुम इतने समझदार हो, तो मुझे बताओ कि तुम्हें वैसा कुत्ता कहाँ मिल सकता है। किस तरह का कुत्ता? मुझे पुख्ता सबूत चाहिए।"

वह कराह उठा और उसने अपनी आँखें घुमाईं।

मैंने आगे कहा: "मैं कुत्तों के बारे में सब कुछ जानता हूँ, लेकिन मैंने कभी भी ऐसा कुत्ता नहीं देखा जो हथेली के आकार के छोटे चूजे खाना पसंद करता हो।"

“क्या इनका स्वाद इतना खराब होता है?” उसने सिसकते हुए पूछा।

“भयानक। बेहद भयानक। छी!”

क्या आपने कभी इसका स्वाद चखा है?

“कभी नहीं। क्या आप मुझसे उम्मीद करते हैं कि मैं इतनी घिनौनी चीज अपने मुंह में डालूँ?”

"नहीं, मुझे नहीं लगता।"

“खैर, मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे अपने वरिष्ठ अधिकारी को बता दो,” मैंने मांग की। “‘डैबचिक’।”

“मैं हार मानता हूँ,” उसने तौलिए से अपने बाल एक बार फिर पोंछते हुए कहा। “मैं एक बार कोशिश करके देखूंगा। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि इससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा।”

मैंने कहा, "धन्यवाद। मैं आपका एहसानमंद हूँ।"

“लेकिन मुझे बताओ,” उसने कहा। “क्या सचमुच हथेली के आकार की डैबचिक जैसी कोई चीज होती है?”

“हां। निःसंदेह। वे कहीं न कहीं मौजूद हैं,” मैंने कहा, हालांकि मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि यह शब्द मेरे दिमाग में कैसे आया।



हथेली के आकार के उस दुबले-पतले लड़के ने मखमली कपड़े से अपने चश्मे को पोंछा और एक और आह भरी। उसके निचले दाहिने दाँत में तेज़ दर्द हो रहा था। क्या फिर से डेंटिस्ट के पास जाना पड़ेगा? उसने सोचा। अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। ये दुनिया कितनी उबाऊ है: डेंटिस्ट, टैक्स रिटर्न, कार की किश्तें, खराब एयर कंडीशनर... उसने अपना सिर चमड़े की कुर्सी पर टिकाया, आँखें बंद कीं और मौत के बारे में सोचने लगा। मौत समुद्र की गहराई जितनी शांत और मई के गुलाब जितनी मीठी थी। इन दिनों वह लड़का मौत के बारे में बहुत सोच रहा था। मन ही मन उसने खुद को शाश्वत विश्राम का आनंद लेते हुए देखा।

"यहाँ हथेली के आकार की छोटी बच्ची लेटी है," ये शब्द समाधि के पत्थर पर खुदे हुए थे।

तभी उनके इंटरकॉम में घंटी बजी।

उसने गुस्से में उस उपकरण की ओर चिल्लाते हुए कहा: "क्या!"

“आपसे मिलने कोई आया है, महोदय,” द्वारपाल की आवाज़ आई। “कहते हैं कि उन्हें आज से यहाँ काम शुरू करना है। उन्हें पासवर्ड पता है।”

हथेली के आकार के उस छोटे से बच्चे ने तेवर चढ़ाए और अपनी घड़ी की ओर देखा।

"पंद्रह मिनट की देरी।"

— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

आदमखोर बिल्लियाँ

मैंने बंदरगाह से एक अखबार खरीदा और उसमें एक ऐसी बूढ़ी औरत के बारे में लेख पढ़ा जिसे बिल्लियों ने खा लिया था। वह सत्तर साल की थी और एथेंस के एक छोटे से उपनगर में अकेली रहती थी—एक शांत जीवन, बस वह और उसकी तीन बिल्लियाँ एक छोटे से एक कमरे के अपार्टमेंट में। एक दिन, वह अचानक सोफे पर औंधे मुंह गिर पड़ी—संभवतः दिल का दौरा पड़ा था। गिरने के बाद उसकी मृत्यु में कितना समय लगा, यह कोई नहीं जानता था। उस बूढ़ी औरत के कोई रिश्तेदार या दोस्त नहीं थे जो उससे नियमित रूप से मिलने आते हों, और उसका शव मिलने में एक सप्ताह लग गया। खिड़कियाँ और दरवाजा बंद थे, और बिल्लियाँ अंदर फंसी हुई थीं। अपार्टमेंट में कोई खाना नहीं था। हाँ, फ्रिज में शायद कुछ रहा होगा, लेकिन बिल्लियाँ इतनी विकसित नहीं हुई हैं कि वे फ्रिज खोल सकें। भूख से बेहाल होकर, उन्होंने अपनी मालकिन का मांस खा लिया।

मैंने यह लेख इज़ुमी को पढ़कर सुनाया, जो मेरे सामने बैठी थी। धूप वाले दिनों में, हम बंदरगाह तक पैदल जाते, एथेंस का अंग्रेज़ी अखबार खरीदते, कर कार्यालय के बगल वाले कैफे में कॉफी मंगवाते, और रास्ते में जो भी रोचक जानकारी मिलती, मैं उसे जापानी में संक्षेप में बता देता। द्वीप पर हमारा रोज़ का कार्यक्रम बस इतना ही था। अगर किसी लेख में कोई बात हमें आकर्षित करती, तो हम कुछ देर तक उस पर चर्चा करते। इज़ुमी की अंग्रेज़ी काफी अच्छी थी, और वह आसानी से खुद लेख पढ़ सकती थी। लेकिन मैंने उसे कभी अखबार उठाते नहीं देखा।

“मुझे किसी के द्वारा पढ़कर सुनाना अच्छा लगता है,” उसने बताया। “बचपन से ही मेरा सपना रहा है कि मैं किसी धूप वाली जगह पर बैठूं, आसमान या समुद्र को निहारूं और कोई मुझे पढ़कर सुनाए। मुझे फर्क नहीं पड़ता कि वे क्या पढ़ते हैं—अखबार, किताब, उपन्यास। कोई बात नहीं। लेकिन इससे पहले किसी ने मुझे पढ़कर नहीं सुनाया। तो शायद आप उन सभी छूटे हुए मौकों की भरपाई कर रहे हैं। और वैसे भी, मुझे आपकी आवाज़ बहुत पसंद है।”

वहाँ आसमान और समुद्र तो थे ही। और मुझे ज़ोर से पढ़ना अच्छा लगता था। जब मैं जापान में रहती थी, तब मैं अपने बेटे को चित्र-पुस्तकें पढ़कर सुनाया करती थी। ज़ोर से पढ़ना, सिर्फ़

आँखों से वाक्य पढ़ने से बिल्कुल अलग होता है। मन में कुछ अनपेक्षित सा भाव उमड़ आता है, एक ऐसी अनूठी गूंज जिसका विरोध करना मेरे लिए नामुमकिन है।

कड़वी कॉफ़ी की कभी-कभार चुस्की लेते हुए, मैं धीरे-धीरे लेख पढ़ रहा था। मैं कुछ पंक्तियाँ मन ही मन पढ़ता, सोचता कि इसे जापानी में कैसे अनुवाद करूँ, फिर ज़ोर से अनुवाद करता। कुछ मधुमक्खियाँ कहीं से प्रकट हुईं और मेज़ पर गिरे हुए जैम को चाटने लगीं, जो किसी पिछले ग्राहक ने गिरा दिया था। उन्होंने कुछ देर उसे चाटा, फिर जैसे अचानक कुछ याद आ गया हो, एक औपचारिक भिनभिनाहट के साथ हवा में उड़ गईं, मेज़ के चारों ओर दो-तीन चक्कर लगाए, और फिर—जैसे किसी बात ने उन्हें याद दिला दिया हो—एक बार फिर मेज़ पर बैठ गईं। पूरा लेख पढ़ने के बाद, इज़ुमी वहीं बैठी रही, बिना हिले-डुले, कोहनियाँ मेज़ पर टिकी हुई थीं। उसने अपने दाहिने हाथ की उंगलियों के सिरों को अपने बाएं हाथ की उंगलियों के सिरों से मिलाकर एक तंबू बना लिया था। मैंने कागज़ को अपनी गोद में रखा और उसकी पतली उंगलियों को निहारा। उसने अपनी उंगलियों के बीच से मुझे देखा।

"फिर क्या हुआ?" उसने पूछा।

"बस यही है," मैंने जवाब दिया और कागज़ को मोड़ दिया। मैंने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला और अपने होठों पर लगे कॉफी के कण पोंछे। "कम से कम, इसमें तो यही लिखा है।"

लेकिन बिल्लियों का क्या हुआ?

मैंने रुमाल वापस अपनी जेब में रख लिया। "मुझे कुछ पता नहीं। इस पर लिखा ही नहीं है।"

इज़ुमी ने अपने होंठ एक तरफ सिकोड़ लिए, यह उसकी एक छोटी सी आदत थी। जब भी वह कोई राय देने वाली होती—जो हमेशा एक संक्षिप्त घोषणा के रूप में होती थी—वह अपने होंठ ऐसे सिकोड़ लेती थी, मानो किसी चादर को खींचकर उसकी सिलवट को सीधा कर रही हो। जब मैं उससे पहली बार मिली, तो मुझे उसकी यह आदत बहुत प्यारी लगी।

अंत में उसने कहा, "आप कहीं भी जाएं, अखबार सब एक जैसे ही होते हैं। वे कभी भी आपको वह नहीं बताते जो आप वास्तव में जानना चाहते हैं।"

उसने डिब्बे से एक सलेम सिगरेट निकाली, उसे अपने मुंह में रखा और माचिस जलाई। वह हर दिन सलेम सिगरेट का एक पैकेट पी जाती थी—न ज़्यादा, न कम। वह सुबह एक नया

पैकेट खोलती और दिन खत्म होने तक उसे पूरा पी जाती। मैं सिगरेट नहीं पीता था। मेरी पत्नी ने मुझे पाँच साल पहले, जब वह गर्भवती थी, सिगरेट पीना छुड़वा दिया था।

“मैं असल में जानना चाहती हूँ,” इजुमी ने सिगरेट का धुआँ हवा में धीरे-धीरे फैलाते हुए कहना शुरू किया, “कि उसके बाद उन बिल्लियों का क्या हुआ? क्या अधिकारियों ने उन्हें इसलिए मार डाला क्योंकि उन्होंने इंसानी मांस खाया था? या उन्होंने कहा, ‘तुम लोगों ने बहुत बुरा समय देखा है,’ उन्हें थपथपाया और जाने दिया? आपको क्या लगता है?”

मैंने मेज के ऊपर मंडराती मधुमक्खियों को देखा और सोचने लगा। एक पल के लिए, जाम चाटती बेचैन छोटी मधुमक्खियाँ और बूढ़ी औरत का मांस नोंचती तीन बिल्लियाँ मेरे मन में एक हो गईं। दूर से आती एक सीगल की तीखी चीख मधुमक्खियों की भिनभिनाहट में दब गई, और एक-दो सेकंड के लिए मेरा ध्यान वास्तविकता और अवास्तविकता के बीच भटक गया। मैं कहाँ था? मैं यहाँ क्या कर रहा था? मुझे स्थिति समझ नहीं आ रही थी। मैंने गहरी साँस ली, आकाश की ओर देखा और इजुमी की ओर मुड़ा।

"मुझे पता नहीं है।"

"ज़रा सोचिए। अगर आप उस शहर के मेयर या पुलिस प्रमुख होते, तो आप उन बिल्लियों के साथ क्या करते?"

मैंने कहा, "क्यों न इन्हें सुधार के लिए किसी संस्था में रखा जाए? इन्हें शाकाहारी बना दिया जाए।"

इजुमी नहीं हंसी। उसने सिगरेट का एक कश लिया और धीरे-धीरे धुआं छोड़ा। "वह कहानी मुझे उस प्रवचन की याद दिलाती है जो मैंने अपने कैथोलिक जूनियर हाई स्कूल में दाखिला लेने के तुरंत बाद सुना था। क्या मैंने आपको बताया था कि मैं एक बहुत ही सख्त कैथोलिक स्कूल में पढ़ती थी? प्रवेश समारोह के तुरंत बाद, एक मुख्य नन ने हम सभी को सभागार में इकट्ठा किया, और फिर वह मंच पर गईं और कैथोलिक सिद्धांतों के बारे में भाषण दिया। उन्होंने हमें बहुत सी बातें बताईं, लेकिन जो मुझे सबसे ज़्यादा याद है—असल में, जो मुझे याद है—वह यह कहानी है जो उन्होंने हमें एक बिल्ली के साथ एक सुनसान द्वीप पर जहाज़ टूटने के बाद फंस जाने के बारे में सुनाई थी।"

मैंने कहा, "यह दिलचस्प लग रहा है।"

"'तुम एक जहाज़ दुर्घटना में फँस गए हो,' उसने हमें बताया। 'लाइफ़बोट तक पहुँचने वाले सिर्फ़ तुम और एक बिल्ली हो। तुम किसी अनजान रेगिस्तानी द्वीप पर उतरते हो, और वहाँ खाने के लिए कुछ नहीं है। तुम्हारे पास बस इतना पानी और सूखे बिस्कुट हैं कि एक व्यक्ति लगभग दस दिनों तक गुज़ारा कर सके।' उसने कहा, 'ठीक है, सब लोग, मैं चाहती हूँ कि तुम सब खुद को इस स्थिति में महसूस करो। अपनी आँखें बंद करो और इसे समझने की कोशिश करो। तुम रेगिस्तानी द्वीप पर अकेले हो, सिर्फ़ तुम और तुम्हारी बिल्ली। तुम्हारे पास खाने के लिए लगभग कुछ भी नहीं है। क्या तुम समझते हो? तुम्हें भूख लगी है, प्यास लगी है, और अंततः तुम मर जाओगे। तुम्हें क्या करना चाहिए? क्या तुम्हें अपना थोड़ा सा खाना बिल्ली के साथ बाँटना चाहिए? नहीं, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। यह एक गलती होगी। तुम सब अनमोल प्राणी हो, ईश्वर द्वारा चुने गए हो, और बिल्ली नहीं। इसलिए तुम्हें सारा खाना खुद खाना चाहिए।' नन ने हमें एक बेहद गंभीर नज़र से देखा। मैं थोड़ा हैरान था। भला उन बच्चों को ऐसी कहानी सुनाने का क्या मतलब हो सकता है जिन्होंने अभी-अभी स्कूल जाना शुरू किया था। स्कूल? मैंने सोचा, अरे बाप रे, मैं किस तरह की जगह पर आ गया हूँ?



इज़ुमी और मैं एक छोटे से ग्रीक द्वीप पर एक छोटे से अपार्टमेंट में रह रहे थे। यह ऑफ-सीज़न था, और द्वीप कोई बहुत प्रसिद्ध पर्यटन स्थल नहीं था, इसलिए किराया सस्ता था। हम दोनों ने वहाँ पहुँचने से पहले उस द्वीप के बारे में नहीं सुना था। यह तुर्की की सीमा के पास स्थित था, और साफ़ दिनों में आप हरे-भरे तुर्की पहाड़ों को देख सकते थे। स्थानीय लोग मज़ाक में कहते थे कि तेज़ हवा वाले दिनों में शीश कबाब की खुशबू आती थी। मज़ाक को छोड़ दें तो, यह द्वीप अगले सबसे नज़दीकी ग्रीक द्वीप की तुलना में तुर्की तट के ज़्यादा करीब था, और वहाँ—ठीक हमारी आँखों के सामने—एशिया माइनर स्थित था।

शहर के चौक में यूनानी स्वतंत्रता संग्राम के एक नायक की प्रतिमा थी। उन्होंने यूनानी मुख्य भूमि पर विद्रोह का नेतृत्व किया था और तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह की योजना बनाई थी, जो उस समय द्वीप पर शासन कर रहे थे। लेकिन तुर्कों ने उन्हें पकड़ लिया और उनकी हत्या कर दी। उन्होंने बंदरगाह के पास चौक में एक नुकीला खंभा गाड़ दिया, उस बेचारे नायक को नंगा

कर दिया और उसे उस पर नीचे उतार दिया। उसके शरीर के भार से खंभा उसके गुदाद्वार से होते हुए उसके शरीर के बाकी हिस्सों में घुस गया और अंत में उसके मुंह से बाहर निकल आया—मृत्यु का एक अविश्वसनीय रूप से धीमा और पीड़ादायक तरीका। प्रतिमा उसी स्थान पर स्थापित की गई थी जहाँ यह घटना घटी थी। जब यह पहली बार बनी थी, तब यह प्रभावशाली रही होगी, लेकिन अब, समुद्री हवा, धूल और सीगल की बीट के कारण, उस व्यक्ति के चेहरे के भाव मुश्किल से ही दिखाई देते हैं। स्थानीय लोग उस जर्जर प्रतिमा पर मुश्किल से ही एक नज़र डालते हैं, और स्वयं नायक ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने लोगों, द्वीप और दुनिया से मुंह मोड़ लिया हो।

जब इज़ुमी और मैं अपने आउटडोर कैफ़े में बैठकर कॉफ़ी या बीयर पीते हुए, बंदरगाह में नावों, सीगल पक्षियों और दूर-दूर तक फैले तुर्की की पहाड़ियों को निहार रहे थे, तब हम मानो यूरोप के छोर पर बैठे थे। हवा ऐसी थी मानो दुनिया के छोर पर चल रही हो। एक अनवरत रेट्रो रंग पूरे स्थान को घेरे हुए था। इसने मुझे ऐसा महसूस कराया जैसे मैं किसी पराई वास्तविकता में धीरे-धीरे समा रहा हूँ, कुछ ऐसा जो विदेशी और पहुँच से परे है, अस्पष्ट लेकिन अजीब तरह से कोमल। और उस पदार्थ की छाया बंदरगाह में जमा लोगों के चेहरों, आँखों और त्वचा पर छाई हुई थी।

कई बार मुझे यह बात समझ में ही नहीं आती थी कि मैं इस दृश्य का हिस्सा हूँ। चाहे मैं अपने आस-पास के नज़ारों को कितना भी निहार लूँ, चाहे मैं कितनी भी गहरी साँसें ले लूँ, मेरे और इस सब के बीच कोई स्वाभाविक जुड़ाव नहीं था।

दो महीने पहले, मैं अपनी पत्नी और चार साल के बेटे के साथ टोक्यो के उनोकी में एक तीन बेडरूम वाले अपार्टमेंट में रह रहा था। यह कोई बहुत बड़ा अपार्टमेंट नहीं था, बस एक साधारण, कामचलाऊ अपार्टमेंट था। मेरा और मेरी पत्नी का अपना-अपना बेडरूम था, हमारे बेटे का भी, और बचा हुआ कमरा मेरा स्टडी रूम था। अपार्टमेंट शांत था और वहाँ से नज़ारा भी अच्छा दिखता था। सप्ताहांत में, हम तीनों तामा नदी के किनारे टहलने जाते थे। बसंत ऋतु में, नदी के किनारे लगे चेरी के पेड़ खिल उठते थे, और मैं अपने बेटे को साइकिल पर बिठाकर हम जायंट्स की ट्रिपल ए टीम का स्प्रिंग ट्रेनिंग मैच देखने चले जाते थे।

मैंने एक मध्यम आकार की डिज़ाइन कंपनी में काम किया जो किताबों और पत्रिकाओं के लेआउट में विशेषज्ञता रखती थी। मुझे डिज़ाइनर कहना जितना दिलचस्प लगता है, उतना था नहीं, क्योंकि काम काफी सीधा-सादा था। कुछ भी आकर्षक या कल्पनाशील नहीं था। ज़्यादातर समय हमारा शेड्यूल बहुत व्यस्त रहता था, और महीने में कई बार मुझे रात भर जागकर काम करना पड़ता था। कुछ काम तो मुझे इतना उबाऊ लगता था कि मेरी आँखों में आँसू आ जाते थे। फिर भी, मुझे नौकरी से कोई परेशानी नहीं थी, और कंपनी का माहौल काफी आरामदायक था। वरिष्ठता के कारण, मैं अपने काम खुद चुन सकता था, और लगभग जो चाहे कह सकता था। मेरे बॉस ठीक थे, और मेरे सहकर्मियों के साथ मेरे अच्छे संबंध थे। और वेतन भी बुरा नहीं था। इसलिए अगर कुछ न हुआ होता, तो शायद मैं आने वाले समय में भी कंपनी में ही रहता। और मेरा जीवन, मोल्डाऊ नदी की तरह—या यूँ कहें कि उस अनाम जल की तरह जो मोल्डाऊ नदी का निर्माण करता है—तेजी से समुद्र में बहता रहता।
लेकिन रास्ते में मेरी मुलाकात इजुमी से हुई।



इजुमी मुझसे दस साल छोटी थी। हमारी मुलाकात एक व्यावसायिक बैठक में हुई। पहली ही नज़र में हम दोनों के बीच एक खास जुड़ाव महसूस हुआ। ऐसा अक्सर नहीं होता। उसके बाद हम कुछ बार मिले, अपने संयुक्त प्रोजेक्ट की बारीकियों पर चर्चा करने के लिए। मैं उसके कार्यालय जाती थी, या वह मेरे कार्यालय आती थी। हमारी बैठकें हमेशा संक्षिप्त होती थीं, उनमें अन्य लोग भी शामिल होते थे, और मूलतः सब कुछ व्यावसायिक ही होता था। लेकिन जब हमारा प्रोजेक्ट पूरा हुआ, तो मुझ पर एक भयानक अकेलापन छा गया, मानो मुझसे कोई बेहद महत्वपूर्ण चीज़ छीन ली गई हो। मैंने ऐसा सालों से महसूस नहीं किया था। और मुझे लगता है कि उसने भी ऐसा ही महसूस किया होगा।
एक हफ्ते बाद उसने किसी मामूली बात पर मेरे दफ्तर में फोन किया और हमने थोड़ी देर बातचीत की। मैंने एक चुटकुला सुनाया और वह हंस पड़ी। मैंने पूछा, "चलना चाहोगी?" हम एक छोटे से बार में गए और कुछ ड्रिंक्स लिए। मुझे ठीक से याद नहीं कि हमने क्या-क्या बातें कीं, लेकिन हमें अनगिनत विषय मिल गए और हम घंटों बातें कर सकते थे। उसकी हर बात

मुझे इतनी स्पष्टता से समझ आ रही थी कि मैं क्या कहना चाहती थी। और जो बातें मैं किसी और को ठीक से समझा नहीं पाती थी, वह उन्हें इतनी सटीकता से समझ रही थी कि मैं हैरान रह गई। हम दोनों शादीशुदा थे और हमें अपने वैवाहिक जीवन से कोई बड़ी शिकायत नहीं थी। हम अपने जीवनसाथियों से प्यार करते थे और उनका सम्मान करते थे। फिर भी, यह किसी चमत्कार से कम नहीं था—किसी ऐसे व्यक्ति से मिलना जिससे आप अपने दिल की बात इतनी स्पष्टता से, इतनी खुलकर कह सकें। ज्यादातर लोग पूरी जिंदगी ऐसे इंसान से मिले बिना ही गुजार देते हैं। इसे "प्यार" कहना गलत होता। यह तो पूर्ण सहानुभूति जैसा था।
हम नियमित रूप से ड्रिंक्स के लिए बाहर जाने लगे। उसके पति की नौकरी ऐसी थी कि उसे देर रात तक बाहर रहना पड़ता था, इसलिए वह अपनी मर्जी से आ-जा सकती थी। लेकिन जब हम मिलते थे, तो समय का पता ही नहीं चलता था। हम अपनी घड़ियाँ देखते और पाते कि हम मुश्किल से आखिरी ट्रेन पकड़ पा रहे हैं। मेरे लिए अलविदा कहना हमेशा मुश्किल होता था। हम दोनों को एक-दूसरे से बहुत कुछ कहना बाकी था।
हम दोनों में से किसी ने भी एक-दूसरे को बिस्तर पर आने के लिए फुसलाया नहीं, लेकिन हमने साथ सोना शुरू कर दिया। उस समय तक हम दोनों अपने-अपने जीवनसाथियों के प्रति वफादार रहे थे, लेकिन किसी तरह हमें अपराधबोध नहीं हुआ, क्योंकि हमें ऐसा करना ही था। उसके कपड़े उतारना, उसकी त्वचा को सहलाना, उसे गले लगाना, उसके भीतर प्रवेश करना, चरम सुख प्राप्त करना—यह सब हमारी बातचीत का स्वाभाविक विस्तार था। इतना स्वाभाविक कि हमारा प्रेम-प्रसंग किसी हृदयविदारक शारीरिक सुख का स्रोत नहीं था; यह बस एक शांत, सुखद क्रिया थी, जिसमें कोई बनावट नहीं थी। सबसे अच्छी बात थी संभोग के बाद बिस्तर पर हमारी शांत बातें। मैं उसके नग्न शरीर को अपने करीब रखता, और वह मेरी बाहों में सिमट जाती और हम अपनी निजी भाषा में एक-दूसरे के रहस्य फुसफुसाते।
हम जब भी मौका मिलता, मिलते थे। अजीब बात है, या शायद इतनी अजीब भी नहीं, हमें पूरा यकीन था कि हमारा रिश्ता हमेशा चलता रहेगा, एक तरफ हमारी शादीशुदा जिंदगी, दूसरी तरफ हमारा अपना रिश्ता, और कोई समस्या नहीं आएगी। हमें पूरा यकीन था कि हमारा अफेयर कभी सामने नहीं आएगा। हां, हम शारीरिक संबंध बनाते थे, लेकिन उससे किसी को क्या नुकसान हो रहा था? जिन रातों को मैं इजुमी के साथ सोता था, मैं देर से घर आता था और

अपनी पत्नी से झूठ बोलने के लिए कुछ बहाना बनाना पड़ता था, और मुझे थोड़ी सी अंतरात्मा की आवाज़ भी आती थी, लेकिन यह कभी भी असल विश्वासघात जैसा नहीं लगता था। इज़ुमी और मेरा रिश्ता पूरी तरह से गोपनीय होते हुए भी बेहद अंतरंग था।

और, अगर कुछ नहीं हुआ होता, तो शायद हम हमेशा ऐसे ही चलते रहते, वोदका और टॉनिक पीते रहते, जब भी मौका मिलता, एक-दूसरे के साथ अंतरंग हो जाते। या शायद हम अपने जीवनसाथियों से झूठ बोलते-बोलते थक जाते और इस रिश्ते को अपने आप खत्म होने देते ताकि हम अपनी आरामदायक जीवनशैली में लौट सकें। किसी भी तरह से, मुझे नहीं लगता कि हालात बिगड़ते। मैं इसे साबित नहीं कर सकता; बस मुझे ऐसा महसूस होता है।

लेकिन किस्मत का एक अजीब मोड़ आया—जो बाद में समझ आया कि होना ही था—और इज़ुमी के पति को हमारे अफेयर की भनक लग गई। उससे पूछताछ करने के बाद, वह पूरी तरह बेकाबू होकर मेरे घर में घुस आया। संयोग से, उस समय मेरी पत्नी घर पर अकेली थी, और मामला बिगड़ गया। जब मैं घर पहुँचा, तो उसने मुझसे सब कुछ समझाने को कहा। इज़ुमी ने सब कुछ मान लिया था, इसलिए मैं कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं बना सकता था। मैंने अपनी पत्नी को सब कुछ साफ-साफ बताया। "ऐसा नहीं है कि मैं उससे प्यार करता हूँ," मैंने समझाया। “यह एक खास रिश्ता है, लेकिन तुम्हारे साथ मेरे रिश्ते से बिलकुल अलग है। दिन-रात का फर्क है। तुम्हें कुछ भी पता नहीं चला, है ना? इससे साबित होता है कि यह वैसा अफेयर नहीं है जैसा तुम सोच रही हो।”

लेकिन मेरी पत्नी ने मेरी बात सुनने से इनकार कर दिया। यह मेरे लिए एक बड़ा झटका था, वह एकदम सन्न रह गई और मुझसे एक शब्द भी नहीं बोली। अगले दिन, उसने अपना सारा सामान कार में रखा और अपने बेटे को साथ लेकर चिगासाकी में अपने माता-पिता के घर चली गई। मैंने उसे कई बार फोन किया, लेकिन उसने फोन नहीं उठाया। उसकी जगह उसके पिता ने फोन उठाया। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, "मैं तुम्हारे कोई भी बहाने नहीं सुनना चाहता, और मैं अपनी बेटी को तुम्हारे जैसे नीच इंसान के पास वापस जाने नहीं दूंगा।" वह शुरू से ही हमारी शादी के सख्त खिलाफ थे, और उनकी आवाज़ के लहजे से साफ पता चल रहा था कि आखिरकार उनका इरादा सही साबित हुआ।

मैं पूरी तरह से हताश थी, इसलिए मैंने कुछ दिन की छुट्टी ली और अकेले बिस्तर पर पड़ी रही। इज़ुमी ने मुझे फ़ोन किया। वह भी अकेली थी। उसका पति भी उसे छोड़कर चला गया था, लेकिन जाने से पहले उसने उसे खूब पीटा था। उसने कैंची से उसके सारे कपड़े काट डाले थे। उसके ओवरकोट से लेकर उसके अंडरवियर तक, सब कुछ तार-तार हो गया था। उसे पता नहीं था कि वह कहाँ चला गया है। "मैं थक गई हूँ," उसने कहा। "मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। सब कुछ बर्बाद हो गया है, और अब कभी पहले जैसा नहीं होगा। वह कभी वापस नहीं आएगा।" वह फ़ोन पर रो रही थी। वह और उसका पति हाई स्कूल के समय से एक-दूसरे को पसंद करते थे। मैं उसे दिलासा देना चाहती थी, लेकिन मैं क्या कह सकती थी?

“चलो कहीं चलते हैं और ड्रिंक करते हैं,” उसने आखिरकार सुझाव दिया। हम शिबुया गए और एक रात भर खुले रहने वाले बार में सुबह तक पीते रहे। मैंने वोदका गिम्लेट पी और उसने डाइक्विरी। मुझे याद ही नहीं रहा कि हमने कितनी पी ली। जब से हम मिले थे, पहली बार हमारे पास बोलने के लिए कुछ खास नहीं था। सुबह होते ही हम पैदल चलकर हाराजुकु पहुँचे, जहाँ हमने डेनीज़ में कॉफी और नाश्ता किया। तभी उसने ग्रीस जाने का सुझाव दिया।

“ग्रीस?” मैंने पूछा।

"हम जापान में नहीं रह सकते," उसने मेरी आंखों में गहराई से देखते हुए कहा।

मैंने अपने मन में इस विचार को घुमाया। ग्रीस? शराब के नशे में डूबा मेरा दिमाग इस तर्क को समझ ही नहीं पा रहा था।

“मैं हमेशा से ग्रीस जाना चाहती थी,” उसने कहा। “यह मेरा सपना रहा है। मैं हनीमून पर वहाँ जाना चाहती थी, लेकिन हमारे पास पर्याप्त पैसे नहीं थे। तो चलो, हम दोनों चलते हैं। और बस वहीं रहते हैं, बिना किसी चिंता के। जापान में रहने से हम उदास ही होंगे, और इससे कुछ भी अच्छा नहीं होगा।”

मुझे ग्रीस में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन मुझे उसकी बात माननी पड़ी। हमने हिसाब लगाया कि हमारे पास कुल कितने पैसे हैं। उसके पास ढाई मिलियन येन की बचत थी, जबकि मैं डेढ़ मिलियन येन दे सकता था। कुल मिलाकर चार मिलियन येन—लगभग चालीस हजार डॉलर।

"ग्रीस के ग्रामीण इलाके में चालीस हज़ार डॉलर कुछ सालों के लिए काफ़ी होंगे," इज़ुमी ने कहा। "रियायती हवाई टिकटों पर लगभग चार हज़ार डॉलर खर्च होंगे। तो छत्तीस हज़ार डॉलर बचते हैं। अगर हर महीने एक हज़ार डॉलर का हिसाब लगाएँ, तो तीन साल के लिए काफ़ी होगा। ढाई हज़ार डॉलर, सुरक्षा के लिहाज़ से। क्या कहते हो? चलो चलते हैं। बाकी चीज़ें बाद में देख लेंगे।"

मैंने चारों ओर देखा। सुबह-सुबह डेनीज़ में युवा जोड़ों की भीड़ थी। हम तीस साल से ज़्यादा उम्र के इकलौते जोड़े थे। और यकीनन, हम ही इकलौते जोड़े थे जो एक नाकाम प्रेम प्रसंग के बाद अपना सारा पैसा लेकर ग्रीस भागने की बात कर रहे थे। मैंने सोचा, क्या मुसीबत है! मैं काफी देर तक अपनी हथेली को देखती रही। क्या मेरी ज़िंदगी का यही हाल हो गया था?

"ठीक है," मैंने अंत में कहा। "चलो करते हैं।"



अगले दिन काम पर मैंने अपना इस्तीफ़ा सौंप दिया। मेरे बॉस ने अफवाहें सुनी थीं और उन्होंने फैसला किया कि फिलहाल मुझे लंबी छुट्टी पर रखना ही बेहतर होगा। मेरे सहकर्मी यह सुनकर चौंक गए कि मैं नौकरी छोड़ना चाहता हूँ, लेकिन किसी ने भी मुझे ऐसा करने से रोकने की ज़्यादा कोशिश नहीं की। आखिरकार, नौकरी छोड़ना इतना मुश्किल नहीं है, मैंने पाया। एक बार जब आप किसी चीज़ से छुटकारा पाने का मन बना लेते हैं, तो ऐसी बहुत कम चीज़ें होती हैं जिन्हें आप छोड़ नहीं सकते। नहीं—बहुत कम नहीं। एक बार जब आप ठान लेते हैं, तो ऐसी कोई चीज़ नहीं होती जिससे आप छुटकारा न पा सकें। और एक बार जब आप चीज़ें फेंकना शुरू कर देते हैं, तो आप खुद को हर चीज़ से छुटकारा पाना चाहते हुए पाते हैं। यह ऐसा है जैसे आपने लगभग सारा पैसा जुए में हार दिया हो और फिर सोचा हो, चलो, जो बचा है उस पर ही दांव लगा देते हैं। बाकी को बचाए रखना बहुत झंझट का काम है।

मैंने अपनी जरूरत का सारा सामान एक मध्यम आकार के नीले सैमसोनाइट सूटकेस में पैक कर लिया। इज़ुमी ने भी लगभग उतना ही सामान लिया।

जब हम मिस्र के ऊपर से उड़ रहे थे, अचानक मुझे एक भयानक डर सताने लगा कि कहीं किसी और ने गलती से मेरा बैग न ले लिया हो। दुनिया में ऐसे हज़ारों नीले सैमसोनाइट बैग

होंगे। शायद मैं ग्रीस पहुँचूँ, सूटकेस खोलूँ और देखूँ कि उसमें किसी और का सामान भरा हुआ है। मुझे ज़बरदस्त घबराहट होने लगी। अगर सूटकेस खो गया, तो मेरे जीवन से मेरा कोई संबंध नहीं बचेगा—सिर्फ़ इज़ुमी। मुझे अचानक ऐसा लगा जैसे मैं गायब हो गई हूँ। यह एक अजीब सा एहसास था। उस विमान में बैठी हुई मैं नहीं थी। मेरा दिमाग गलती से किसी ऐसे सुविधाजनक आवरण से जुड़ गया था जो मेरे जैसा दिखता था। मेरा दिमाग पूरी तरह से अस्त-व्यस्त था। मुझे जापान वापस जाना था और अपने असली शरीर में लौटना था। लेकिन मैं यहाँ एक जेट में थी, मिस्र के ऊपर से उड़ रही थी, और पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं था। यह शरीर जिसमें मैं अस्थायी रूप से रह रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे प्लास्टर का बना हो। अगर मैं खुद को खरोंचती, तो उसके टुकड़े निकल आते। मैं बेकाबू होकर काँपने लगी। मुझे पता था कि अगर ये कंपकंपी ज़्यादा देर तक जारी रही तो मेरा शरीर चूर-चूर हो जाएगा। विमान में एयर कंडीशनिंग होने के बावजूद, मुझे पसीना आ रहा था। मेरी कमीज़ मेरी त्वचा से चिपक गई थी। मुझसे एक भयानक बदबू आ रही थी। इस पूरे समय इज़ुमी ने मेरा हाथ कसकर पकड़ रखा था और बीच-बीच में मुझे गले लगा रही थी। उसने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन वह जानती थी कि मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ। ये कंपकंपी लगभग आधे घंटे तक चलती रही। मैं मरना चाहता था—अपने कान में रिवाल्वर की नली रखकर ट्रिगर दबा देना चाहता था, ताकि मेरा दिमाग और मेरा शरीर दोनों चूर-चूर हो जाएँ।

कंपकंपी शांत होने के बाद, अचानक मुझे हल्कापन महसूस हुआ। मैंने अपने तनावग्रस्त कंधों को ढीला छोड़ा और समय के प्रवाह में बह गया। मैं गहरी नींद में सो गया, और जब मैंने अपनी आँखें खोलीं, तो मेरे सामने एजियन सागर का नीला जल फैला हुआ था।



द्वीप पर हमारी सबसे बड़ी समस्या यह थी कि यहाँ करने के लिए कुछ भी नहीं था। हम काम नहीं करते थे, हमारे कोई दोस्त नहीं थे। द्वीप पर न तो सिनेमाघर थे, न टेनिस कोर्ट, न ही पढ़ने के लिए किताबें। हमने जापान इतनी अचानक छोड़ा था कि मैं किताबें लाना पूरी तरह भूल गई थी। मैंने हवाई अड्डे से खरीदी हुई दो उपन्यासें पढ़ीं और इज़ुमी द्वारा लाई गई एशिलस की त्रासदियों की एक प्रति पढ़ी। मैंने उन्हें दो बार पढ़ा। पर्यटकों की सुविधा के लिए बंदरगाह पर

बने स्टॉल में कुछ अंग्रेजी पेपरबैक किताबें रखी थीं, लेकिन उनमें से कोई भी मुझे पसंद नहीं आई। पढ़ना मेरा शौक था, और मैंने हमेशा सोचा था कि अगर मुझे खाली समय मिले तो मैं किताबों में डूब जाऊंगी, लेकिन विडंबना यह थी कि मेरे पास दुनिया का सारा समय था और पढ़ने के लिए कुछ भी नहीं था।

इज़ुमी ने ग्रीक भाषा सीखना शुरू किया। वह अपने साथ ग्रीक भाषा की एक पाठ्यपुस्तक लाई थी और क्रियाओं के रूपों की एक चार्ट बनाकर अपने साथ रखती थी, जिसे वह मंत्र की तरह ज़ोर-ज़ोर से दोहराती रहती थी। वह इस स्तर तक पहुँच गई कि अपनी टूटी-फूटी ग्रीक में दुकानदारों से और कैफे में रुकने पर वेटरों से बात कर पाती थी, इस तरह हमारी कुछ जान-पहचान हो गई। मैंने भी पीछे न रहने के लिए अपनी फ्रेंच भाषा को फिर से याद किया। मुझे लगा कि यह कभी न कभी काम आएगी, लेकिन इस छोटे से सुनसान द्वीप पर मुझे एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो फ्रेंच बोलता हो। शहर में हम अंग्रेज़ी से काम चला लेते थे। कुछ बुज़ुर्ग इतालवी या जर्मन जानते थे। लेकिन फ्रेंच तो बिलकुल बेकार थी।

कुछ खास करने को न होने के कारण हम हर जगह पैदल ही घूमते रहे। हमने बंदरगाह में मछली पकड़ने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी हाथ नहीं लगा। मछलियों की कमी समस्या नहीं थी; समस्या यह थी कि पानी बहुत साफ था। मछलियाँ कांटे से लेकर पकड़ने वाले के चेहरे तक सब कुछ देख सकती थीं। उस तरह से पकड़े जाने के लिए आपको बहुत बेवकूफ मछली होना पड़ेगा। मैंने एक स्थानीय दुकान से एक स्केचबुक और जलरंगों का एक सेट खरीदा और द्वीप पर घूम-घूम कर नज़ारों और लोगों के चित्र बनाने लगा। इज़ुमी मेरे बगल में बैठती, मेरे चित्रों को देखती और ग्रीक क्रियाओं को याद करती रहती। स्थानीय लोग अक्सर मुझे चित्र बनाते देखने आते थे। समय बिताने के लिए, मैं उनके चित्र बनाता था, जो उन्हें बहुत पसंद आते थे। अगर मैं उन्हें चित्र देता, तो वे अक्सर हमें बीयर पिलाते थे। एक बार तो एक मछुआरे ने हमें पूरा ऑक्टोपस दे दिया।

“आप पोर्ट्रेट बनाकर अपना गुजारा कर सकते हैं,” इज़ुमी ने कहा। “आपमें पोर्ट्रेट बनाने की कला है, और आप इससे एक अच्छा-खासा छोटा-सा व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। इस बात का ज़ोर-शोर से प्रचार कीजिए कि आप एक जापानी कलाकार हैं। यहाँ आसपास ऐसे कलाकार ज़्यादा नहीं होंगे।”

मैं हँस पड़ा, लेकिन उसके चेहरे पर गंभीरता थी। मैंने कल्पना की कि मैं ग्रीक द्वीपों में घूम रहा हूँ, चित्र बनाकर पैसे कमा रहा हूँ और कभी-कभार मुफ्त में बीयर का आनंद ले रहा हूँ। मैंने सोचा, यह कोई बुरा विचार नहीं है।

“और मैं जापानी पर्यटकों के लिए टूर कोऑर्डिनेटर बनूंगी,” इज़ुमी ने आगे कहा। “समय के साथ उनकी संख्या बढ़नी चाहिए, और इससे मेरी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी। ज़ाहिर है, इसका मतलब है कि मुझे ग्रीक भाषा सीखने पर गंभीरता से ध्यान देना होगा।”

मैंने पूछा, "क्या आपको सच में लगता है कि हम ढाई साल तक कुछ भी नहीं करेंगे?"

“जब तक हमारे साथ चोरी या बीमारी जैसी कोई समस्या न हो, तब तक सब ठीक है। अप्रत्याशित घटना को छोड़कर, हम अपना गुजारा कर लेंगे। फिर भी, अप्रत्याशित परिस्थितियों के लिए तैयार रहना हमेशा अच्छा होता है।”

मैंने उसे बताया कि तब तक मैं लगभग कभी डॉक्टर के पास नहीं गई थी।

इज़ुमी ने सीधे मेरी ओर देखा, अपने होंठ सिकोड़े और उन्हें एक तरफ कर दिया।

“मान लीजिए मैं गर्भवती हो गई,” उसने कहना शुरू किया। “आप क्या करेंगी? आप अपनी सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करेंगी, लेकिन इंसान से गलतियां हो जाती हैं। अगर ऐसा हुआ तो हमारा पैसा बहुत जल्दी खत्म हो जाएगा।”

मैंने कहा, "अगर ऐसी नौबत आई तो शायद हमें जापान वापस चले जाना चाहिए।"

“तुम्हें समझ नहीं आ रहा, है ना?” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “हम कभी जापान वापस नहीं जा सकते।”



इज़ुमी ने ग्रीक भाषा का अध्ययन जारी रखा, और मैं रेखाचित्र बनाने में लगा रहा। यह मेरे पूरे जीवन का सबसे शांतिपूर्ण समय था। हम सादा भोजन करते थे और सबसे सस्ती शराब का आनंद बड़ी सावधानी से लेते थे। हर दिन, हम पास की एक पहाड़ी पर चढ़ते थे। चोटी पर एक छोटा सा गाँव था, और वहाँ से हम दूर-दूर तक फैले अन्य द्वीपों को देख सकते थे। ताज़ी हवा और व्यायाम से मैं जल्द ही अच्छी सेहत में आ गया। द्वीप पर सूरज डूबने के बाद, कोई आवाज़ सुनाई नहीं देती थी। और उस सन्नाटे में, इज़ुमी और मैं चुपचाप प्रेम करते और तरह-

तरह की बातें करते। अब आखिरी ट्रेन छूटने की चिंता नहीं थी, न ही अपने जीवनसाथी से झूठ बोलने की। यह अविश्वसनीय रूप से अद्भुत था। पतझड़ धीरे-धीरे गहराता गया, और सर्दी की शुरुआत हो गई। हवा तेज़ हो गई, और समुद्र में लहरें उठने लगीं।
लगभग इसी समय हमने अखबार में आदमखोर बिल्लियों की कहानी पढ़ी। उसी अखबार में जापानी सम्राट की बिगड़ती हालत की खबर भी थी, लेकिन हमने उसे सिर्फ विनिमय दर की जाँच करने के लिए खरीदा था। येन, ड्रैक्मा के मुकाबले लगातार मजबूत हो रहा था। यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण था; येन जितना मजबूत होता, हमारे पास उतना ही अधिक पैसा होता।
लेख पढ़ने के कुछ दिनों बाद मैंने कहा, "बिल्लियों की बात करें तो, जब मैं बच्चा था तब मेरे पास एक बिल्ली थी जो सबसे अजीब तरीके से गायब हो गई थी।"
इज़ुमी और भी सुनना चाहती थी। उसने अपनी क्रियाओं के संयोजन चार्ट से अपना चेहरा उठाया और मेरी तरफ देखा। "ऐसा क्यों?"
मैं दूसरी या शायद तीसरी कक्षा में थी। हम एक कंपनी के घर में रहते थे, जिसमें एक बड़ा बगीचा था। बगीचे में एक बहुत पुराना चीड़ का पेड़ था, इतना लंबा कि उसकी चोटी मुश्किल से दिखाई देती थी। एक दिन, मैं पीछे के बरामदे में बैठकर किताब पढ़ रही थी, जबकि हमारी कछुए के रंग की बिल्ली बगीचे में खेल रही थी। बिल्ली अपने आप उछल-कूद कर रही थी, जैसे बिल्लियाँ कभी-कभी करती हैं। वह किसी बात को लेकर बहुत उत्तेजित थी, इस बात से बिल्कुल बेखबर कि मैं उसे देख रही हूँ। जितना ज़्यादा मैं उसे देखती रही, उतना ही ज़्यादा डरती गई। बिल्ली जैसे किसी भूत के वश में थी, उछल-कूद कर रही थी, उसके बाल खड़े हो गए थे। ऐसा लग रहा था जैसे उसने कुछ ऐसा देख लिया हो जो मैं नहीं देख पा रही थी। आखिरकार, वह चीड़ के पेड़ के चारों ओर दौड़ने लगी, बिल्कुल 'लिटिल ब्लैक सांबो' के बाघ की तरह। फिर वह अचानक चीखते हुए रुकी और पेड़ की सबसे ऊँची शाखाओं पर चढ़ गई। मैं सबसे ऊपर की शाखाओं में उसका छोटा सा चेहरा मुश्किल से देख पा रही थी। बिल्ली अभी भी उत्तेजित और तनाव में थी। वह शाखाओं में छिपी हुई थी, किसी चीज़ को घूर रही थी। मैंने उसका नाम पुकारा, लेकिन उसने ऐसा व्यवहार किया जैसे... मुझे सुना नहीं।
“बिल्ली का नाम क्या था?” इज़ुमी ने पूछा।

मैंने उससे कहा, "मैं भूल गई थी। धीरे-धीरे शाम हो गई और अंधेरा छाने लगा। मैं चिंतित थी और बिल्ली के नीचे उतरने का काफी देर तक इंतजार करती रही। आखिरकार घना अंधेरा हो गया। और फिर हमने बिल्ली को दोबारा नहीं देखा।"

“यह कोई असामान्य बात नहीं है,” इज़ुमी ने कहा। “बिल्लियाँ अक्सर ऐसे ही गायब हो जाती हैं। खासकर जब वे मद में होती हैं। वे बहुत उत्तेजित हो जाती हैं और फिर घर का रास्ता भूल जाती हैं। आपकी बिल्ली चीड़ के पेड़ से नीचे उतरी होगी और आपकी नज़र न होने पर कहीं चली गई होगी।”

“शायद,” मैंने कहा। “लेकिन तब मैं बच्चा ही था, और मुझे पूरा यकीन था कि बिल्ली ने पेड़ पर ही रहने का फैसला कर लिया था। ज़रूर कोई न कोई वजह रही होगी कि वह नीचे नहीं आ पा रही थी। मैं हर दिन बरामदे में बैठकर चीड़ के पेड़ को देखता रहता था, इस उम्मीद में कि शायद बिल्ली डालियों के बीच से झाँक रही हो।”

इज़ुमी की रुचि मानो समाप्त हो गई थी। उसने अपनी दूसरी सलेम सिगरेट जलाई, फिर सिर उठाकर मेरी तरफ देखा।

“क्या आप कभी-कभी अपने बच्चे के बारे में सोचते हैं?” उसने पूछा।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं। मैंने ईमानदारी से कहा, "कभी-कभी। लेकिन हमेशा नहीं। कभी-कभार कोई बात मुझे याद दिला देती है।"

क्या आप उसे देखना नहीं चाहते?

“कभी-कभी ऐसा होता है,” मैंने कहा। लेकिन यह झूठ था। मुझे बस लगता था कि मुझे ऐसा ही महसूस करना चाहिए। जब मैं अपने बेटे के साथ रहता था, तो मुझे लगता था कि वह अब तक का सबसे प्यारा बच्चा है। जब भी मैं देर से घर आता, तो सबसे पहले अपने बेटे के कमरे में जाता, उसका सोता हुआ चेहरा देखने के लिए। कभी-कभी मेरा मन करता था कि उसे इतनी ज़ोर से गले लगा लूँ कि वह टूट जाए। अब उसकी हर चीज़—उसका चेहरा, उसकी आवाज़, उसकी हरकतें—एक दूर देश में सिमट गई थीं। मुझे बस इतना ही याद था कि उसके साबुन की खुशबू। मुझे उसके साथ नहाना और उसे रगड़ना अच्छा लगता था। उसकी त्वचा बहुत संवेदनशील थी, इसलिए मेरी पत्नी हमेशा उसके लिए एक खास साबुन रखती थी। मुझे अपने बेटे के बारे में बस इतना ही याद था कि उस साबुन की खुशबू।

“अगर आप जापान वापस जाना चाहते हैं, तो मुझे रोकने की ज़रूरत नहीं है,” इज़ुमी ने कहा। “मेरी चिंता मत करो। मैं किसी तरह सब संभाल लूंगी।”

मैंने सिर हिलाया। लेकिन मुझे पता था कि ऐसा नहीं होने वाला है।

“मुझे आश्चर्य होता है कि जब आपका बच्चा बड़ा होगा तो क्या वह आपके बारे में इसी तरह सोचेगा,” इज़ुमी ने कहा। “जैसे आप कोई बिल्ली हों जो चीड़ के पेड़ पर गायब हो गई हों।”

मैं हँस पड़ा। मैंने कहा, "शायद ऐसा ही हो।"

इज़ुमी ने ऐशट्रे में सिगरेट बुझाई और आह भरी। "चलो घर चलते हैं और प्यार करते हैं, ठीक है?" उसने कहा।

मैंने कहा, "अभी सुबह ही है।"

"उसमें गलत क्या है?"

मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं।"



बाद में, जब मैं आधी रात को जागा, तो इज़ुमी वहाँ नहीं थी। मैंने बिस्तर के पास रखी अपनी घड़ी देखी। साढ़े बारह बज रहे थे। मैंने लैंप ढूँढा, उसे जलाया और कमरे में चारों ओर देखा। सब कुछ इतना शांत था मानो कोई मेरे सोते समय चुपके से अंदर आ गया हो और चारों ओर खामोशी से धूल छिड़क दी हो। ऐशट्रे में सिगरेट के दो मुड़े हुए टुकड़े थे, उनके बगल में सिगरेट का एक खाली पैकेट पड़ा था। मैं बिस्तर से उठा और बैठक में गया। इज़ुमी वहाँ नहीं थी। वह रसोई या बाथरूम में भी नहीं थी। मैंने दरवाजा खोला और सामने के आँगन में देखा। बस दो विनाइल की कुर्सियाँ थीं, जो तेज़ चाँदनी में नहा रही थीं। "इज़ुमी," मैंने धीमी आवाज़ में पुकारा। कोई जवाब नहीं। मैंने फिर पुकारा, इस बार ज़ोर से। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। क्या यह मेरी आवाज़ थी? यह बहुत तेज़, अस्वाभाविक लग रही थी। फिर भी कोई जवाब नहीं। समुद्र से आती हल्की हवा ने पैम्पास घास की पत्तियों को हिला दिया। मैंने दरवाजा बंद किया, रसोई में वापस गई और खुद को शांत करने के लिए आधा गिलास वाइन डाली।

रसोई की खिड़की से चांदनी की चमक अंदर आ रही थी, जिससे दीवारों और फर्श पर अजीबोगरीब परछाइयाँ बन रही थीं। पूरा दृश्य किसी आधुनिक नाटक के प्रतीकात्मक सेट

जैसा लग रहा था। मुझे अचानक याद आया: जिस रात बिल्ली चीड़ के पेड़ पर चढ़ गई थी, वह रात बिल्कुल ऐसी ही थी, पूर्णिमा की रात थी और आसमान में एक भी बादल नहीं था। उस रात खाना खाने के बाद, मैं बिल्ली को ढूंढने के लिए फिर से बरामदे में गया था। जैसे-जैसे रात गहरी होती गई, चांदनी और तेज होती गई। किसी अज्ञात कारण से, मेरी नज़र चीड़ के पेड़ से हट ही नहीं रही थी। कभी-कभी मुझे लगता था कि मैं डालियों के बीच बिल्ली की चमकती हुई आँखें देख सकता हूँ। लेकिन यह सिर्फ एक भ्रम था।

मैंने एक मोटा स्वेटर और जींस पहनी, मेज पर पड़े सिक्के उठाए, जेब में रखे और बाहर निकल गया। इज़ुमी को नींद नहीं आ रही होगी और वह टहलने चली गई होगी। यही वजह हो सकती है। हवा बिल्कुल थम गई थी। मुझे सिर्फ अपने टेनिस शूज़ की बजरी पर चरमराहट की आवाज़ सुनाई दे रही थी, जैसे किसी फिल्म के बढ़ा-चढ़ाकर दिखाए गए साउंडट्रैक में होती है। मैंने तय किया कि इज़ुमी बंदरगाह गई होगी। उसके जाने की और कोई जगह नहीं थी। बंदरगाह तक सिर्फ एक ही सड़क थी, इसलिए मैं उसे देख सकता था। सड़क के किनारे बने घरों की बत्तियाँ बुझी हुई थीं, चाँदनी से ज़मीन चाँदी जैसी चमक रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे समुद्र की तलहटी हो।

बंदरगाह के लगभग आधे रास्ते में, मुझे संगीत की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी और मैं रुक गया। पहले तो मुझे लगा कि यह कोई भ्रम है—जैसे हवा के दबाव में बदलाव होने पर कानों में झनझनाहट सुनाई देती है। लेकिन ध्यान से सुनने पर मुझे एक धुन सुनाई दी। मैंने अपनी सांस रोक ली और पूरी लगन से सुनने लगा। मानो मैं अपने शरीर के भीतर के अंधेरे में डूब गया हूँ। इसमें कोई शक नहीं था, यह संगीत ही था। कोई वाद्य यंत्र बजा रहा था। सीधा, बिना किसी एम्पलीफायर के संगीत। लेकिन यह किस तरह का वाद्य यंत्र था? क्या यह वही मैंडोलिन जैसा वाद्य यंत्र था जिसे एंथनी क्विन ने ज़ोर्बा द ग्रीक में बजाया था? या एक बूज़ूकी? लेकिन आधी रात को बूज़ूकी कौन बजा रहा होगा? और कहाँ?



ऐसा लग रहा था कि संगीत उस गाँव से आ रहा है जो उस पहाड़ी की चोटी पर बसा है जहाँ हम रोज़ कसरत के लिए चढ़ते थे। मैं चौराहे पर खड़ा सोच रहा था कि क्या करूँ, किस दिशा

में जाऊँ। इज़ुमी ने भी ठीक इसी जगह पर वही संगीत सुना होगा। और मुझे पक्का यकीन था कि अगर उसने सुना होता तो वह उसी दिशा में चली जाती।
मैंने हिम्मत जुटाई और चौराहे पर दाहिनी ओर मुड़कर उस ढलान की ओर चल पड़ा जिसे मैं अच्छी तरह जानता था। रास्ते में कोई पेड़ नहीं थे, बस चट्टानों की छाया में छिपी घुटनों तक ऊँची कंटीली झाड़ियाँ थीं। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, संगीत और तेज़ और स्पष्ट होता गया। धुन भी मुझे साफ़ सुनाई देने लगी। उसमें एक उत्सव जैसा उत्साह था। मैंने कल्पना की कि पहाड़ी की चोटी पर बसे गाँव में कोई भोज चल रहा होगा। तभी मुझे याद आया कि उसी दिन सुबह बंदरगाह पर हमने एक भव्य शादी का जुलूस देखा था। यह ज़रूर शादी का भोज होगा, जो रात तक चलेगा।
ठीक उसी समय—बिना किसी चेतावनी के—मैं गायब हो गया।
शायद चांदनी थी, या आधी रात का वो संगीत। हर कदम के साथ, मैं खुद को एक ऐसे दलदल में धंसता हुआ महसूस कर रहा था जहाँ मेरी पहचान खोती जा रही थी; ठीक वही भावना जो मुझे मिस्र के ऊपर से उड़ते हुए हवाई जहाज में हुई थी। चांदनी में चलने वाला वो मैं नहीं था। वो मैं नहीं था, बल्कि प्लास्टर से बना एक नकली पुतला था। मैंने अपना हाथ अपने चेहरे पर फेरा। लेकिन वो मेरा चेहरा नहीं था। और न ही मेरा हाथ। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, खून मेरे शरीर में बेतहाशा दौड़ रहा था। ये शरीर प्लास्टर की एक कठपुतली थी, एक तांत्रिक की गुड़िया जिसमें किसी जादूगर ने पल भर के लिए जान फूंक दी थी। असली ज़िंदगी की चमक गायब थी। मेरी बनावटी, नकली मांसपेशियां बस दिखावा कर रही थीं। मैं एक कठपुतली था, किसी बलि में इस्तेमाल होने वाला।
तो फिर मेरा असली स्वरूप कहाँ है? मैंने सोचा।
अचानक, इज़ुमी की आवाज़ कहीं से सुनाई दी। "असली तुम बिल्लियों ने खा लिए हो। जब तुम यहाँ खड़े थे, तब उन भूखी बिल्लियों ने तुम्हें चट कर लिया—पूरा खा लिया। अब बस हड्डियाँ ही बची हैं।"
मैंने अपने चारों ओर देखा। ज़ाहिर है, यह एक भ्रम था। मुझे बस पथरीली ज़मीन, छोटी-छोटी झाड़ियाँ और उनकी नन्ही परछाइयाँ ही दिखाई दे रही थीं। वह आवाज़ मेरे दिमाग में ही थी।

मैंने खुद से कहा, ऐसे निराशावादी विचार मत सोचो। मानो किसी विशाल लहर से बचने की कोशिश कर रही हो, मैं समुद्र की तलहटी में एक चट्टान से चिपक गई और अपनी सांस रोक ली। लहर तो गुजर ही जाएगी। मैंने खुद से कहा, तुम बस थकी हुई हो और परेशान हो। जो सच है, उसे थाम लो। चाहे कुछ भी हो—बस किसी असली चीज को थाम लो। मैंने अपनी जेब में सिक्के ढूंढने के लिए हाथ डाला। वे मेरे हाथ में पसीने से भीग गए।

मैंने कुछ और सोचने की बहुत कोशिश की। उनोकी में मेरा धूपदार अपार्टमेंट। मेरा वो रिकॉर्ड संग्रह जो मैं पीछे छोड़ आया था। मेरा प्यारा सा जैज़ संग्रह। मेरी खासियत पचास और साठ के दशक के श्वेत जैज़ पियानोवादक थे। लेनी ट्रिस्टानो, अल हैग, क्लाउड विलियमसन, लू लेवी, रस्स फ्रीमैन। इनमें से ज़्यादातर एल्बम अब उपलब्ध नहीं थे, और इन्हें इकट्ठा करने में बहुत समय और पैसा लगा था। मैंने लगन से रिकॉर्ड की दुकानों के चक्कर लगाए, दूसरे संग्राहकों से अदला-बदली की, और धीरे-धीरे अपना संग्रह बनाया। ज़्यादातर प्रस्तुतियाँ "उत्कृष्ट" नहीं थीं। लेकिन मुझे उन पुराने, खस्ताहाल रिकॉर्डों से मिलने वाला अनोखा, आत्मीय माहौल बहुत पसंद था। अगर दुनिया में सिर्फ़ उत्कृष्ट चीज़ें ही हों, तो यह बहुत नीरस जगह होगी, है ना? उन रिकॉर्ड के कवर की हर छोटी-छोटी बात मुझे याद आ गई—मेरे हाथों में एल्बमों का वज़न और भारीपन।

लेकिन अब वे सब हमेशा के लिए चले गए थे। और मैंने उन्हें खुद ही मिटा दिया था। इस जन्म में मैं उन रिकॉर्ड्स को फिर कभी नहीं सुन पाऊंगा।

जब मैंने इजुमी को चूमा, तो मुझे तंबाकू की गंध याद आ गई। उसके होंठों और जीभ का स्पर्श। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। मैं चाहता था कि वह मेरे पास हो। मैं चाहता था कि वह मेरा हाथ थामे, जैसे उसने मिस्र के ऊपर से उड़ान भरते समय किया था, और कभी न छोड़े।

आखिरकार लहर मेरे ऊपर से गुजरी और चली गई, और उसके साथ ही संगीत भी।

क्या उन्होंने बजाना बंद कर दिया था? यह तो संभव था। आखिर, लगभग एक बज चुका था। या शायद शुरू से ही कोई संगीत नहीं था। यह भी पूरी तरह संभव था। मुझे अब अपनी सुनने की शक्ति पर भरोसा नहीं रहा। मैंने अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं और अपनी चेतना में डूब गया—उस अँधेरे में एक पतली, भारी रेखा खींच दी। लेकिन मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दिया। एक गूँज भी नहीं।

मैंने अपनी घड़ी देखी। और मुझे एहसास हुआ कि मैंने घड़ी पहनी ही नहीं थी। आह भरकर मैंने दोनों हाथ जेब में डाल लिए। मुझे समय की कोई परवाह नहीं थी। मैंने आसमान की ओर देखा। चाँद एक ठंडी चट्टान जैसा था, जिसकी सतह वर्षों के कष्टों से घिस चुकी थी। उसकी सतह पर परछाइयाँ कैंसर की तरह थीं, जो अपनी भयानक शाखाएँ फैला रहा हो। चाँदनी लोगों के दिमाग से खेल खेलती है। और बिल्लियों को गायब कर देती है। इसने इज़ुमी को गायब कर दिया था। शायद यह सब पहले से ही सोच-समझकर रचा गया था, जिसकी शुरुआत बहुत पहले उस एक रात से हुई थी।
मैंने अंगड़ाई ली, अपनी बांहें और उंगलियां मोड़ीं। क्या मुझे आगे बढ़ना चाहिए, या जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से वापस जाना चाहिए? इज़ुमी कहाँ चली गई? उसके बिना, इस सुनसान द्वीप पर मैं अकेले कैसे जी पाऊंगा? वही तो थी जिसने मुझ जैसे कमज़ोर और अस्थिर इंसान को थामे रखा था।
मैं पहाड़ी पर चढ़ता रहा। मैं इतनी दूर आ चुका था, अब चोटी पर पहुंचना ही था। क्या सचमुच वहाँ संगीत था? मुझे खुद देखना था, भले ही बहुत कम सुराग ही क्यों न बचा हो। पाँच मिनट में मैं चोटी पर पहुँच गया। दक्षिण की ओर, पहाड़ी ढलान से नीचे समुद्र, बंदरगाह और सोए हुए कस्बे की ओर जा रही थी। कुछ स्ट्रीटलाइट्स तटीय सड़क को रोशन कर रही थीं। पहाड़ का दूसरा हिस्सा अंधेरे में डूबा हुआ था। इस बात का कोई संकेत नहीं था कि कुछ ही समय पहले यहाँ एक जीवंत उत्सव मनाया गया था।
मैं अपार्टमेंट में लौटा और एक गिलास ब्रांडी पी गया। मैंने सोने की कोशिश की, लेकिन सो नहीं पाया। जब तक पूरब का आकाश उजाला नहीं हुआ, मैं चाँद की रोशनी में तल्लीन रहा। फिर अचानक, मुझे वे बिल्लियाँ दिखाई दीं, जो एक बंद अपार्टमेंट में भूख से मर रही थीं। मैं—असली मैं—मर चुका था, और वे बिल्लियाँ ज़िंदा थीं, मेरा मांस खा रही थीं, मेरे दिल को नोच रही थीं, मेरा खून चूस रही थीं, मेरे लिंग को निगल रही थीं। दूर से, मैं उन्हें मेरे दिमाग को चाटते हुए सुन सकता था। मैकबेथ की चुड़ैलों की तरह, वे तीन फुर्तीली बिल्लियाँ मेरे टूटे हुए सिर के चारों ओर थीं, अंदर के गाढ़े सूप को चाट रही थीं। उनकी खुरदरी जीभों के सिरे मेरे दिमाग की कोमल परतों को चाट रहे थे। और हर चाटने के साथ मेरी चेतना एक लौ की तरह टिमटिमाती और बुझती जा रही थी।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

एक ‘‘बेचारी चाची’’ की कहानी

1

यह जुलाई के एक बेहद खूबसूरत रविवार की दोपहर से शुरू हुआ—जुलाई के पहले रविवार की दोपहर। आसमान के एक दूर कोने में बादलों के दो-तीन छोटे-छोटे सफेद टुकड़े तैर रहे थे, मानो बड़ी सावधानी से लगाए गए विराम चिह्न हों। बिना किसी रुकावट के, सूरज की रोशनी पूरी दुनिया पर अपनी पूरी शक्ति से बरस रही थी। जुलाई के इस माहौल में, लॉन पर फेंका हुआ चॉकलेट रैपर का सिकुड़ा हुआ चांदी जैसा गोला भी किसी झील की तलहटी में पड़े पौराणिक क्रिस्टल की तरह चमक रहा था। अगर आप इस दृश्य को कुछ देर तक निहारते, तो आपको पता चलता कि सूरज की रोशनी में एक और तरह की रोशनी समाई हुई है, मानो एक चीनी डिब्बे के अंदर दूसरा। अंदर की रोशनी अनगिनत पराग कणों जैसी लग रही थी—नरम और अपारदर्शी कण जो आसमान में लगभग स्थिर लटके हुए थे, और अंत में धरती पर आकर ठहर गए।

रविवार की सैर से लौटते समय, मैं पिक्चर गैलरी के बाहर बने चौक पर रुक गया। तालाब के किनारे बैठकर, मैं और मेरा साथी पानी के उस पार किनारे पर बने दो कांस्य के यूनिकॉर्न को देख रहे थे। बारिश का लंबा मौसम आखिरकार खत्म हो गया था, और गर्मियों की नई हवा ओक के पेड़ों की पत्तियों को हिला रही थी, जिससे उथले तालाब की सतह पर कभी-कभी छोटी-छोटी लहरें उठ रही थीं। समय हवा की तरह बह रहा था: शुरू और रुक, रुक और शुरू। तालाब के साफ पानी में शीतल पेय के डिब्बे चमक रहे थे। मुझे वे किसी प्राचीन खोए हुए शहर के डूबे हुए खंडहरों जैसे लग रहे थे। हमारे सामने से वर्दी पहने एक सॉफ्टबॉल टीम, साइकिल पर एक लड़का, अपने कुत्ते को टहलाता एक बूढ़ा आदमी, जॉगिंग शॉर्ट्स पहने एक युवा विदेशी गुजरे। घास पर रखे एक बड़े पोर्टेबल रेडियो से हवा संगीत के टुकड़े उड़ा रही थी: प्यार का एक मीठा गीत, जो या तो खो गया था या मिलने वाला था। मुझे धुन जानी-पहचानी सी लग रही थी, लेकिन मैं निश्चित नहीं था। हो सकता है कि वह सिर्फ किसी जानी-पहचानी धुन जैसी लग रही हो। आधी-अधूरी आवाज़ में, मैं महसूस कर सकती थी कि मेरी नंगी बाहें चुपचाप, धीरे-धीरे, कोमल भाव से धूप सोख रही हैं। बीच-बीच में मैं अपनी बाहों को चेहरे के स्तर तक ऊपर उठाती और उन्हें सीधा फैला देती। गर्मी आ चुकी थी।

मुझे समझ नहीं आता कि भला एक बेचारी चाची ने रविवार की दोपहर को ही मेरा दिल क्यों जीत लिया। आस-पास कोई चाची नज़र नहीं आ रही थी, ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे मैं उनके होने का ख्याल रख सकूँ। फिर भी, वो मेरे पास आईं और फिर चली गईं। मानो पल भर के लिए ही सही, वो मेरे दिल में बसी थीं। और जब वो चली गईं, तो अपने पीछे एक अजीब सा, इंसान के आकार का खालीपन छोड़ गईं। ऐसा लगा जैसे कोई खिड़की के पास से तेज़ी से गुज़रा और गायब हो गया हो। आप खिड़की की तरफ दौड़ते हैं और अपना सिर बाहर निकालते हैं, लेकिन वहाँ कोई नहीं होता।

एक गरीब चाची?

मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाई, फिर आसमान की ओर देखा। आए और चले गए। गोली के पारदर्शी निशान की तरह, शब्द रविवार की सुबह की हल्की रोशनी में समा गए थे। शुरुआत हमेशा ऐसी ही होती है। एक पल सब कुछ मौजूद होता है, अगले ही पल सब कुछ खो जाता है।

मैंने अपने साथी से ये शब्द कहे। “मैं एक गरीब चाची के बारे में कुछ लिखना चाहता/चाहती हूँ।” मैं उन लोगों में से एक हूँ जो कहानियाँ लिखने की कोशिश करते हैं।

“एक गरीब चाची?”

वह थोड़ी हैरान लग रही थी। एक पल के लिए उसने मुझे ऐसी निगाहों से देखा मानो कुछ समझने की कोशिश कर रही हो। "क्यों? एक बेचारी चाची ही क्यों?"

इसका जवाब तो मुझे भी नहीं पता था। न जाने क्यों, जो चीजें मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित करती थीं, वे हमेशा ऐसी चीजें होती थीं जिन्हें मैं समझ नहीं पाता था।

मैंने कुछ देर तक कुछ नहीं कहा, बस अपनी उंगली को अपने अंदर रह गए मानव-आकार के खालीपन के किनारे पर फेरता रहा।

"मुझे आश्चर्य है कि क्या कोई इस तरह की कहानी पढ़ना चाहेगा?" उसने कहा।

मैंने कहा, "सच है, लेकिन शायद यह पढ़ने में अच्छी किताब न हो।"

तो फिर ऐसी बात के बारे में क्यों लिखें?

मैंने कहा, "मैं इसे शब्दों में ठीक से व्यक्त नहीं कर सकता। एक गरीब चाची के बारे में कहानी लिखने की मेरी इच्छा को समझाने के लिए, मुझे कहानी लिखनी होगी, लेकिन कहानी

पूरी हो जाने के बाद, कहानी लिखने के कारण को समझाने की कोई आवश्यकता नहीं होगी—या होगी?"

वह मुस्कुराई और अपनी जेब से निकाली हुई एक मुड़ी हुई सिगरेट को जलाया। वह हमेशा सिगरेट को मोड़-मोड़ देती थी, कभी-कभी तो इतनी बुरी तरह कि वह जलती ही नहीं थी। लेकिन यह वाली जल गई।

“वैसे,” उसने कहा। “क्या आपके रिश्तेदारों में कोई गरीब चाची हैं?”

मैंने कहा, "एक भी नहीं।"

“जी हां, मैं करती हूं। बिलकुल एक। असली वाली। मैं तो कुछ साल उसके साथ रही भी थी।”

मैंने उसकी आँखों को देखा। वे हमेशा की तरह शांत थीं।

“लेकिन मैं उसके बारे में लिखना नहीं चाहती,” उसने आगे कहा। “मैं अपनी उस चाची के बारे में एक शब्द भी नहीं लिखना चाहती।”

पोर्टेबल रेडियो पर एक अलग धुन बजने लगी, जो पहली धुन जैसी ही थी, लेकिन मैं इसे बिल्कुल भी पहचान नहीं पाया।

“आपके परिवार में एक भी गरीब चाची नहीं है, फिर भी आप ‘गरीब चाची’ की कहानी लिखना चाहती हैं। वहीं, मेरी एक असली, जीवित गरीब चाची हैं, लेकिन मैं उनके बारे में लिखना नहीं चाहती। अजीब बात है, है ना?”

मैंने सिर हिलाया। "मुझे आश्चर्य है कि ऐसा क्यों है।"

उसने बस अपना सिर थोड़ा सा झुकाया और कुछ नहीं कहा। मेरी तरफ पीठ करके, उसने अपनी पतली उंगलियों को पानी में फिराया। ऐसा लगा मानो मेरा सवाल उसकी उंगलियों से होकर पानी के नीचे डूबे उस खंडहर शहर तक पहुँच रहा हो। मुझे यकीन है कि वह शहर अभी भी वहीं है, तालाब की तलहटी में चमकता हुआ प्रश्नचिह्न, जैसे कोई पॉलिश किया हुआ धातु का टुकड़ा हो। शायद, वह अपने आसपास पड़े कोला के डिब्बों पर भी वही सवाल बरसा रहा हो।

मुझे आश्चर्य है क्यों। मुझे आश्चर्य है क्यों। मुझे आश्चर्य है क्यों।

अपनी कुचली हुई सिगरेट के सिरे से उसने राख ज़मीन पर गिरा दी। “सच कहूँ तो,” उसने कहा, “मैं अपनी बेचारी चाची के बारे में कुछ कहना चाहती हूँ। लेकिन सही शब्द मिलना

नामुमकिन है। मैं कह ही नहीं सकती—क्योंकि मैं एक सचमुच की बेचारी चाची को जानती हूँ।” उसने अपने होंठ दबाए। “यह मुश्किल है—जितना तुम समझती हो उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल।”

मैंने फिर से कांस्य से बने उन यूनिकॉर्न की ओर देखा, जिनके अगले खुर समय की धारा के विरुद्ध गुस्से से बाहर निकले हुए थे, मानो समय ने उन्हें अपने पीछे छोड़ दिया हो। उसने अपनी कमीज़ के किनारे से अपनी उंगलियों से तालाब का पानी पोंछा, फिर पोंछा और मेरी ओर मुड़कर बोली, “तुम एक गरीब चाची के बारे में लिखने की कोशिश करोगे। तुम यह ज़िम्मेदारी उठाओगे। और मेरी नज़र में, किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी उठाने का मतलब है उसे मुक्ति देना। लेकिन मुझे हैरानी है कि क्या तुम अभी ऐसा कर पाओगे। तुम्हारे पास तो कोई असली गरीब चाची भी नहीं है।”

मैंने एक लंबी, गहरी आह भरी।

“माफ़ कीजिए,” उसने कहा।

“कोई बात नहीं,” मैंने जवाब दिया। “शायद आप सही कह रहे हैं।”

और वो थी। मेरी तो अपनी कोई गरीब चाची भी नहीं थी।

हम्म। जैसे किसी गाने की पंक्तियाँ हों।

2

शायद आपके रिश्तेदारों में भी कोई गरीब चाची न हो। ऐसे में, हम दोनों में कुछ समानता है। हालांकि यह एक अजीब समानता है—जैसे किसी शांत सुबह में पोखर में पानी के पोखर को साझा करना।

लेकिन फिर भी, आपने किसी न किसी की शादी में एक गरीब चाची को तो जरूर देखा होगा। जैसे हर किताबों की अलमारी में एक ऐसी किताब होती है जिसे पढ़े बिना रहना पड़ता है और हर अलमारी में एक ऐसी कमीज होती है जिसे पहने बिना रहना पड़ता है, वैसे ही हर शादी के रिसेप्शन में एक गरीब चाची जरूर होती है।

लगभग कोई भी उसका परिचय नहीं कराता। लगभग कोई उससे बात तक नहीं करता। कोई उसे भाषण देने के लिए नहीं कहता। वह अपनी जगह पर बैठी है, लेकिन बस वहीं पड़ी है—जैसे कोई खाली दूध की बोतल। उदास, धीमी आवाज़ में वह अपना सूप पीती है। वह मछली

वाले कांटे से सलाद खाती है। वह अपनी सारी हरी बीन्स नहीं उठा पाती। और जब आइसक्रीम आती है, तो वही अकेली होती है जिसके पास चम्मच नहीं होता। अगर किस्मत अच्छी रही, तो वह उस युवा जोड़े को जो तोहफ़ा देगी, वह अलमारी के पीछे कहीं खो जाएगा। और अगर किस्मत ने साथ नहीं दिया, तो उसका तोहफ़ा भी उस धूल भरी, अनजानी ट्रॉफी और उससे जुड़ी हर चीज़ के साथ, घर बदलते समय फेंक दिया जाएगा।

हाँ, शादी की तस्वीरों का एल्बम निकालते ही उसकी तस्वीर तो दिखती है, लेकिन उसकी छवि किसी हाल ही में डूबे हुए शव की तरह निराशाजनक होती है।

हनी, ये दूसरी पंक्ति में चश्मा पहने बैठी महिला कौन है?

कोई बात नहीं, वो कोई खास नहीं है, युवा पति ने कहा। बस मेरी एक बेचारी चाची हैं।

कोई नाम नहीं। बस एक बेचारी चाची।



बेशक, सभी नाम समय के साथ मिट जाते हैं। इतना तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं। लेकिन ऐसा होने के कई तरीके हैं। पहले तो वे लोग हैं जिनके नाम मरते ही मिट जाते हैं। ये तो सबसे आसान हैं। हम उनकी मृत्यु पर शोक मनाते हैं: "नदी सूख गई और मछलियाँ मर गईं," या "जंगल में आग लग गई और उसमें मौजूद हर पक्षी जलकर राख हो गया।" फिर वे लोग हैं जो पुराने टेलीविजन की तरह धीरे-धीरे बुझ जाते हैं, टीवी की सतह पर सफेद झिलमिलाहट छोड़ते हुए, जब तक कि अचानक एक दिन वह पूरी तरह से जलकर खत्म नहीं हो जाता। ये भी बुरे नहीं हैं: कुछ-कुछ उस भारतीय हाथी के पदचिह्नों की तरह जो रास्ता भटक गया हो। नहीं, बिल्कुल भी बुरे नहीं। और अंत में वे लोग हैं जिनके नाम मरने से पहले ही मिट जाते हैं—बेचारी चाचियाँ।

मैं खुद भी कभी-कभी गुमनामी की इस बेचारी चाची जैसी स्थिति में आ जाती हूँ। अचानक, टर्मिनल की भीड़भाड़ में, मेरी मंज़िल, मेरा नाम, मेरा पता सब मेरे दिमाग से गायब हो जाते हैं। लेकिन यह ज़्यादा देर तक नहीं टिकता: ज़्यादा से ज़्यादा पाँच या दस सेकंड।

और फिर आपके पास यह है:

“मुझे लाख कोशिश करने पर भी तुम्हारा नाम याद नहीं आ रहा,” किसी ने कहा।

कोई बात नहीं। इसे लेकर परेशान मत होइए। वैसे भी यह कोई खास नाम नहीं है।

वह बार-बार अपने मुंह की ओर इशारा करते हुए कहता है, "यह यहीं है, मेरी जीभ की नोक पर, कसम से..."

मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे ज़मीन में गाड़ दिया गया हो और मेरा बायाँ पैर आधा बाहर निकला हुआ हो। लोग उससे टकरा जाते हैं और माफ़ी माँगने लगते हैं। "कसम से, यह यहीं है, मेरी ज़बान की नोक पर..."



ठीक है, तो फिर गुमनाम नाम कहाँ जाते हैं? इस शहर के भूलभुलैया जैसे जाल में उनके जीवित रहने की संभावना बेहद कम है। कुछ विशाल ट्रकों के नीचे कुचल जाते हैं, कुछ सड़क पर पड़े-पड़े मर जाते हैं क्योंकि उनके पास ट्राम का टिकट खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं होते, जबकि कुछ अपनी जेब में भरे स्वाभिमान के बोझ के साथ नदी की तलहटी में डूब जाते हैं।

फिर भी, कुछ लोग बच गए होंगे और गुमनाम नामों वाले उस कस्बे तक पहुँच गए होंगे जहाँ उन्होंने एक शांत, छोटा सा समुदाय बसाया होगा। एक छोटा सा कस्बा, जिसके प्रवेश द्वार पर एक चिन्ह अवश्य लगा होगा:

व्यापारिक कार्य के अलावा प्रवेश वर्जित है।

जो लोग बिना किसी काम के प्रवेश करने का साहस करते हैं, उन्हें स्वाभाविक रूप से मामूली दंड दिया जाता है।



शायद यह मेरे लिए तैयार की गई छोटी सी सजा थी। एक बेचारी चाची—एक नन्ही सी—मेरी पीठ से चिपकी हुई थी।

मुझे पहली बार अगस्त के मध्य में एहसास हुआ कि वह वहाँ थी। ऐसा कुछ खास नहीं हुआ जिससे मुझे उसकी मौजूदगी का पता चले। बस एक दिन मुझे यह महसूस हुआ: मेरी बेचारी चाची मेरी पीठ पर बैठी थी।

यह कोई अप्रिय अनुभूति नहीं थी। वह ज़्यादा भारी नहीं थी। उसकी साँसों से मेरे कंधे पर दुर्गंध नहीं आती थी। वह बस मेरी पीठ पर एक धुंधली परछाई की तरह टिकी हुई थी। लोगों को ध्यान से देखना पड़ता था, तब जाकर उन्हें पता चलता था कि वह वहाँ है। सच है, मेरे साथ अपार्टमेंट में रहने वाली बिल्लियाँ पहले कुछ दिनों तक उसे शक की नज़रों से देखती रहीं, लेकिन जैसे ही उन्हें समझ आया कि उसका उनके इलाके पर कब्ज़ा करने का कोई इरादा नहीं है, वे उससे घुलमिल गईं।

उसने मेरे कुछ दोस्तों को असहज कर दिया था। हम लोग टेबल पर बैठकर ड्रिंक्स पी रहे होते थे और वह अचानक मेरे कंधे के ऊपर से उन्हें देखने लगती थी।

एक दोस्त ने कहा, "मुझे इससे डर लगता है।"

“उसे आपको परेशान न करने दें। वह अपने काम से काम रखती है। वह काफी हद तक हानिरहित है।”

मुझे पता है, मुझे पता है। लेकिन, मुझे नहीं पता क्यों, वह निराशाजनक है।

इसलिए देखने की कोशिश न करें।

“हाँ, शायद।” फिर एक आह भरी। “अपनी पीठ पर ऐसा कुछ पहनने के लिए तुम्हें कहाँ जाना पड़ा?”

“ऐसा नहीं है कि मैं कहीं चला गया था। मैं बस कुछ चीजों के बारे में सोचता रहा। बस इतना ही।”

उसने सिर हिलाया और फिर आह भरी। "मुझे लगता है मैं समझ गया। ये तुम्हारी पर्सनैलिटी है। तुम हमेशा से ऐसे ही रहे हो।"

"अहां।"

अगले एक घंटे में हमने कई व्हिस्की पी लीं, लेकिन किसी खास उत्साह के साथ नहीं।

मैंने कहा, "मुझे बताओ, उसमें ऐसी क्या बात है जो इतनी निराशाजनक है?"

मुझे नहीं पता, ऐसा लगता है जैसे मेरी मां मुझ पर नजर रख रही है।

"मुझे आश्चर्य है क्योंकि?"
“तुम्हें आश्चर्य क्यों हो रहा है?! अरे, शायद वह मेरी माँ ही है जो तुम्हारी पीठ पर चिपकी हुई है।”



कई लोगों की धारणाओं के आधार पर (क्योंकि मैं स्वयं उसे देख नहीं सका), मेरी पीठ पर जो था वह एक स्थिर आकृति वाली बेचारी चाची नहीं थी: वह स्पष्ट रूप से एक प्रकार का ईथर थी जो प्रत्येक प्रेक्षक की मानसिक छवियों के अनुसार अपना आकार बदलती थी।
एक दोस्त के लिए, यह उसका एक कुत्ता था, एक अकिता, जिसकी पिछली शरद ऋतु में ग्रासनली के कैंसर से मृत्यु हो गई थी।
“वैसे भी उसकी जिंदगी खत्म होने वाली थी। पंद्रह साल की थी। लेकिन बेचारी की मौत का कितना भयानक तरीका था।”
“क्या यह ग्रासनली का कैंसर है?”
“हाँ। यह बहुत दर्दनाक था। काश ऐसा न होता। वह बस रोती ही रही—हालाँकि तब तक उसकी आवाज़ लगभग चली चुकी थी। मैं उसे सुला देना चाहती थी, लेकिन मेरी माँ ने मुझे ऐसा करने नहीं दिया।”
"क्यों नहीं?"
“कौन जाने? शायद उसे अपराधबोध होता। हमने उसे दो महीने तक फीडिंग ट्यूब के सहारे ज़िंदा रखा। शेड में। हे भगवान, कितनी बदबू थी!”
वह कुछ देर तक चुप रहा।
“वह कोई खास कुत्ता नहीं थी। अपनी परछाई से भी डरती थी। जो भी पास से गुजरता, भौंकती थी। बिलकुल बेकार जानवर। शोर मचाने वाली, घावों से भरी हुई...”
मेंने सिर हिलाया।
"अगर वह टिड्डा पैदा होती तो बेहतर होता। जी भर के चीख सकती थी और किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे ग्रासनली का कैंसर भी नहीं होता।"

लेकिन वह अभी भी मेरी पीठ पर बैठी थी, एक कुतिया जिसके मुंह से एक प्लास्टिक की नली बाहर निकली हुई थी।



एक रियल एस्टेट एजेंट के लिए, वह उनकी पुरानी प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका थीं।
“शायद 1950 की बात है, कोरियाई युद्ध का पहला साल,” उन्होंने अपने चेहरे से पसीना पोंछते हुए एक मोटे तौलिए से कहा। “मैंने उसे लगातार दो साल तक अपने पास रखा। उसे फिर से देखकर पुराने दिन याद आ गए। ऐसा नहीं है कि मुझे उसकी बहुत याद आई हो। मैं तो मानो भूल ही गया था कि वह कभी अस्तित्व में भी थी।”
जिस तरह से उन्होंने मुझे बर्फ जैसी ठंडी जौ की चाय का एक कप पेश किया, उससे ऐसा लगा मानो वे सोच रहे हों कि मैं उनके पुराने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक का कोई रिश्तेदार हूँ।
“वैसे, सोचो तो सही, उसकी कहानी बड़ी दुखद थी। शादी के साल ही उसके पति को सेना में भर्ती कर लिया गया। वो एक परिवहन जहाज पर था और धमाका! शायद 1943 की बात है। उसके बाद भी वो स्कूल में पढ़ाती रही। 1944 के हवाई हमलों में उसके चेहरे का बायां हिस्सा, बांह तक बुरी तरह जल गया।” उसने अपने गाल से बाईं बांह तक एक चाप बनाया। फिर उसने जौ की चाय का प्याला खाली किया और अपना चेहरा पोंछा। “बेचारी। उस घटना से पहले वो बहुत सुंदर रही होगी। कहते हैं कि उसके बाद उसका व्यक्तित्व भी बदल गया। अगर वो अभी भी जीवित है तो उसकी उम्र लगभग साठ होगी। हम्म... 1950, है ना...?”



और इस तरह शादी के रिसेप्शन के लिए बैठने की व्यवस्था के तरह-तरह के चार्ट और मोहल्ले के नक्शे आकार लेने लगे। मेरी पीठ उस बेचारी चाची के धीरे-धीरे बढ़ते हुए घेरे के केंद्र में थी।

लेकिन उसी समय, एक के बाद एक दोस्त मुझसे दूर होते चले गए, ठीक वैसे ही जैसे कंघी के दांत टूट जाते हैं।
वे मेरे बारे में कहते थे, "वह बुरा आदमी नहीं है, लेकिन मैं जब भी उसे देखूं तो अपनी उदास बूढ़ी माँ (या उस बूढ़े कुत्ते की, जिसकी ग्रासनली के कैंसर से मृत्यु हो गई थी, या उस शिक्षिका की, जिसके शरीर पर जलने के निशान हैं) को नहीं देखना चाहता।"
मुझे ऐसा लगने लगा था जैसे मैं किसी दंत चिकित्सक की कुर्सी पर बैठा हूँ—कोई मुझसे नफरत तो नहीं करता, लेकिन सब मुझसे दूर भागते हैं। अगर सड़क पर मेरे दोस्त मुझसे टकरा जाते, तो वे जल्द से जल्द गायब होने का कोई न कोई बहाना ढूंढ लेते। एक लड़की ने बड़ी मुश्किल से—और ईमानदारी से—कहा, “पता नहीं, आजकल तुम्हारे साथ रहना थोड़ा मुश्किल हो गया है। अगर तुम अपनी पीठ पर छाता रखने का स्टैंड वगैरह लेकर चलतीं, तो मुझे इतनी परेशानी नहीं होती...”
एक छाता स्टैंड।
अरे छोड़ो भी, मैं खुद से कहती थी, मैं वैसे भी कभी ज्यादा सामाजिक प्राणी नहीं थी। और मैं अपनी पीठ पर छाता रखने वाला स्टैंड लेकर जीना बिल्कुल नहीं चाहती थी।
जब मेरे दोस्त मुझसे दूर रहने लगे, तो मीडिया को मेरी हर बात में दिलचस्पी बनी रही। खासकर साप्ताहिक पत्रिकाओं को। रिपोर्टर हर दो दिन में आते, मेरी और मेरी चाची की तस्वीरें खींचते, जब उनकी तस्वीर साफ नहीं आती तो शिकायत करते और मुझसे बेमतलब के सवाल पूछते। मैं उम्मीद करती रही कि पत्रिकाओं के साथ मेरा सहयोग उस बेचारी चाची के बारे में कोई नई जानकारी या घटनाक्रम सामने लाएगा, लेकिन बदले में मुझे सिर्फ थकान ही मिली।
एक बार मैं मॉर्निंग शो में गया। मुझे सुबह छह बजे बिस्तर से घसीटकर उठाया गया, टीवी स्टूडियो ले जाया गया और मुझे बेहद घटिया कॉफ़ी पिलाई गई। मेरे चारों ओर अजीबोगरीब लोग अजीबोगरीब हरकतें कर रहे थे। मैंने वहाँ से भागने का सोचा, लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता, उन्होंने कहा कि अब मेरी बारी है। जब कैमरे बंद होते थे, तो शो का होस्ट एक चिड़चिड़ा, घमंडी और बदतमीज़ आदमी होता था जो लोगों पर चिल्लाने के अलावा कुछ नहीं

करता था, लेकिन जैसे ही कैमरे की लाल बत्ती जलती, वह मुस्कुराता हुआ और समझदार दिखने लगता था: एक आम अधेड़ उम्र का नेक इंसान।

“और अब हमारे दैनिक विशेष कार्यक्रम, ‘देखो बाहर और क्या है’ का समय आ गया है,” उन्होंने कैमरे की ओर देखते हुए घोषणा की। “आज के अतिथि हैं श्रीमान ——, जिन्हें अचानक पता चला कि उनकी पीठ पर एक बेचारी चाची बैठी हैं। बहुत कम लोगों को यह समस्या होती है, और आज मैं अपने अतिथि से यह पूछना चाहता हूँ कि उनके साथ ऐसा कैसे हुआ और उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।” मेरी ओर मुड़ते हुए उन्होंने आगे कहा, “क्या आपको अपनी पीठ पर एक बेचारी चाची का होना किसी भी तरह से असुविधाजनक लगता है?”

“नहीं,” मैंने कहा। “मैं इसे असुविधाजनक या मुश्किल नहीं कहूंगी। वह भारी नहीं है, और मुझे उसे खाना भी नहीं खिलाना पड़ता।”

"कमर में दर्द नहीं है?"

“नहीं, बिलकुल भी नहीं।”

"आपको वह वहां फंसी हुई कब मिली?"

मैंने संक्षेप में तालाब के किनारे कांस्य के यूनिकॉर्न के साथ बिताई अपनी दोपहर का वर्णन किया, लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ कि वह मेरी बात समझ नहीं पाया।

“दूसरे शब्दों में कहें तो,” उसने गला साफ करते हुए कहा, “वह उस तालाब में छिपी हुई थी जहाँ आप बैठे थे, और उसने आपकी पीठ पर कब्जा कर लिया था। क्या यही बात है?”

नहीं, मैंने सिर हिलाते हुए कहा, बात ये नहीं थी। ओह, नहीं! मैं इस मुसीबत में कैसे फंस गई? उन्हें तो बस चुटकुले या डरावनी कहानियाँ चाहिए थीं। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।

“बेचारी चाची भूत नहीं हैं,” मैंने समझाने की कोशिश की। “वह कहीं ‘छिपी’ नहीं रहतीं, न ही किसी को ‘अपने वश में’ करती हैं। बेचारी चाची तो बस शब्द हैं,” मैंने कहा। “सिर्फ शब्द।”

किसी ने कुछ नहीं कहा। मुझे और स्पष्ट बताना होगा।

“शब्द दिमाग से जुड़े एक इलेक्ट्रोड की तरह होते हैं। अगर आप लगातार एक ही तरह का उद्दीपन भेजते रहें, तो कोई न कोई प्रतिक्रिया जरूर पैदा होगी, कोई न कोई प्रभाव जरूर

उत्पन्न होगा। बेशक, हर व्यक्ति की प्रतिक्रिया बिल्कुल अलग होगी, और मेरे मामले में यह प्रतिक्रिया एक तरह से स्वतंत्र अस्तित्व का एहसास है। यह वैसा ही है जैसे आपकी जीभ मुंह के अंदर किसी विशाल चीज की तरह फूल जाए। अंत में, जो चीज मेरी पीठ पर चिपकी है, वह है 'बेचारी चाची' वाक्यांश—वही शब्द, बिना अर्थ के, बिना रूप के। अगर मुझे इसे कोई नाम देना हो, तो मैं इसे 'वैचारिक संकेत' या कुछ ऐसा ही कहूंगा।”

मेज़बान असमंजस में दिख रहा था। उसने कहा, "आप कहते हैं कि इसका कोई अर्थ या रूप नहीं है, लेकिन हम आपकी पीठ पर स्पष्ट रूप से कुछ देख सकते हैं... कोई वास्तविक छवि। और यह हममें से प्रत्येक के भीतर किसी न किसी प्रकार का अर्थ उत्पन्न करती है..."

मैंने कंधे उचका दिए। "बेशक," मैंने कहा। "साइनबोर्ड का यही काम होता है।"

शो के चारों ओर छा रहे नीरस माहौल को तोड़ने की उम्मीद में, मेजबान की युवा महिला सहायक ने बीच में टोकते हुए कहा, "तो आप चाहें तो अपनी स्वतंत्र इच्छा से इस छवि या इस प्राणी या जो भी यह है, उसे मिटा सकते हैं।"

“नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता,” मैंने कहा। “एक बार कोई चीज़ अस्तित्व में आ जाए, तो वह मेरी इच्छा से स्वतंत्र रूप से विद्यमान रहती है। यह एक स्मृति की तरह है। आप जानते हैं कि स्मृति कैसी होती है—विशेषकर वह स्मृति जिसे आप भूलना चाहते हैं लेकिन भूल नहीं पाते। यह बिल्कुल वैसा ही है।”

वह आगे बोली, मानो आश्वस्त न हो: "शब्द को एक वैचारिक संकेत में बदलने की जिस प्रक्रिया का आपने जिक्र किया, क्या वह कुछ ऐसा है जो मैं भी कर सकती हूँ?"

मैंने जवाब दिया, "मैं यह तो नहीं कह सकता कि यह कितना कारगर होगा, लेकिन सिद्धांत रूप में, कम से कम आप ऐसा कर सकते हैं।"

अब मेज़बान ने भी इसमें हिस्सा लिया। "मान लीजिए कि अगर मैं हर दिन बार-बार 'वैचारिक' शब्द दोहराता रहूँ, तो एक दिन 'वैचारिक' की छवि मेरी पीठ पर दिखाई दे सकती है, क्या यही बात है?"

“सैद्धांतिक रूप से, कम से कम, ऐसा हो सकता है,” मैंने यंत्रवत रूप से अपनी बात दोहराई। इसलिए ‘वैचारिक’ शब्द को एक वैचारिक चिह्न में बदल दिया जाएगा।

“बिल्कुल,” मैंने जवाब दिया, लेकिन स्टूडियो की तेज़ रोशनी और दुर्गंधयुक्त हवा से मुझे सिरदर्द होने लगा था। दूसरे वक्ताओं की तीखी आवाज़ें भी दर्द को और बढ़ा रही थीं।
मेजबान ने यह सवाल पूछा, "एक 'वैचारिक' मॉडल कैसा दिखेगा?" इस पर अन्य मेहमानों में से कुछ हंस पड़े।
मैंने कहा कि मुझे नहीं पता। मैं इस बारे में सोचना नहीं चाहती थी। मेरी तो पहले से ही एक बेचारी चाची थी, जिसकी वजह से मेरी ज़िंदगी अलग सी हो गई थी। उनमें से किसी को भी इस सब की कोई परवाह नहीं थी। उन्हें बस अगले विज्ञापन तक बातचीत जारी रखने की चिंता थी।



यह तो कहने की ज़रूरत ही नहीं कि पूरी दुनिया एक तमाशा है। भला इससे कौन बच सकता है? टीवी स्टूडियो की चकाचौंध से लेकर जंगल में साधु की कुटिया के अंधेरे तक, सब कुछ एक ही जड़ से उपजा है। अपनी पीठ पर बेचारी चाची को लिए इस मसखरेपन भरी दुनिया में घूमते हुए, मैं खुद सबसे बड़ा मसखरा था। शायद वह लड़की सही थी: शायद वहाँ छाता स्टैंड होता तो बेहतर होता। शायद तब लोग मुझे अपने समूहों में शामिल कर लेते। मैं महीने में दो बार छाता स्टैंड को नए रंग से रंगकर सभी पार्टियों में जा सकता था।
“बिल्कुल सही! इस हफ्ते आपका छाता स्टैंड गुलाबी रंग का है!” किसी ने कहा।
“ज़रूर,” मैंने जवाब दिया। “अगले हफ्ते मैं ब्रिटिश ग्रीन रंग में रंगवा रहा हूँ।”
और शायद कुछ लड़कियां ऐसी भी हों जो अपनी पीठ पर गुलाबी रंग का छाता स्टैंड पहने हुए लड़के के साथ बिस्तर पर जाने के लिए बेताब हों।
लेकिन दुर्भाग्य से, मेरी पीठ पर छाता स्टैंड नहीं, बल्कि एक बेचारी चाची थीं। समय बीतने के साथ, लोगों की दिलचस्पी मुझमें और मेरी पीठ पर बैठी उस बेचारी चाची में कम होती गई। मेरे साथी की बात सही थी: किसी को भी बेचारी चाचियों में दिलचस्पी नहीं होती। शुरुआती हल्की जिज्ञासा शांत होने के बाद, बस एक गहरी खामोशी छा गई, मानो मैं और वह बेचारी चाची एक हो गए हों।

3

मेरे साथी ने कहा, "मैंने आपको टीवी पर देखा था।"
हम फिर से तालाब के किनारे बैठे थे। मैंने उसे तीन महीने से नहीं देखा था। अब पतझड़ का मौसम शुरू हो चुका था। समय पलक झपकते ही बीत गया था। हमने कभी एक-दूसरे को देखे बिना इतना लंबा समय नहीं बिताया था।
आप थोड़े थके हुए लग रहे थे।
मैं पूरी तरह थक चुका था।
तुम अपने आप में नहीं थे।
मैंने सिर हिलाया। यह सच था: मैं खुद नहीं था।
वह घुटनों के बल रखी स्वेटशर्ट को बार-बार मोड़ती और खोलती रही। मोड़ती और खोलती रही। मानो समय को पीछे की ओर ले जा रही हो या उसे आगे बढ़ा रही हो।
"मुझे लगता है कि आखिरकार तुम अपनी अलग गरीब चाची पाने में सफल हो ही गए।"
"मेरे ख़याल से।"
"आपको कैसा लगता है?"
“जैसे कुएं की तलहटी में पड़ा तरबूज।”
वह मुस्कुराई और अपने घुटनों पर रखी मुलायम लेकिन कसकर तह की हुई स्वेटशर्ट को ऐसे सहलाने लगी मानो वह कोई बिल्ली हो।
"क्या अब आप उसे बेहतर ढंग से समझ पाए हैं?"
“थोड़ा-बहुत,” मैंने कहा। “मुझे लगता है। शायद।”
और क्या इससे आपको कुछ लिखने में मदद मिली है?
“नहीं।” मैंने अपना सिर थोड़ा हिलाया। “बिल्कुल नहीं। लिखने की इच्छा ही नहीं है। शायद मैं कभी लिख ही न पाऊं।”
“हार मानने वाला।”
“आपने खुद एक बार मुझसे कहा था कि मैं अपने लेखन से कुछ भी नहीं बचा सकता। अगर ऐसा है, तो उस बेचारी चाची के बारे में लिखने का क्या मतलब है?”
उसने अपने निचले होंठ को काटा और कुछ देर तक कुछ नहीं बोली।
मेरे पास एक विचार है। मुझसे कुछ सवाल पूछिए। शायद मैं थोड़ी मदद कर सकूँ।

"क्या गरीब चाची ही अधिकारी हैं?"

“हम्म।” वह मुस्कुराई। “तो पूछो ना। ऐसा मूड शायद फिर कभी न आए, जब मुझे बेचारी आंटी के सवालों का जवाब देने का मन करे।”

मुझे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि शुरुआत कहाँ से करनी है।

“मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि किस तरह का व्यक्ति गरीब चाची बनता है। क्या वे जन्म से ही ऐसे होते हैं? या इसके लिए कुछ विशेष परिस्थितियाँ ज़रूरी होती हैं—जैसे कि कोई बड़ा कीड़ा जो किसी खास गली के कोने से गुजरने वाले हर व्यक्ति को निगल जाता है और उन्हें गरीब चाची में बदल देता है?”

उसने कई बार सिर हिलाया, मानो यह कह रही हो कि मेरे प्रश्न बहुत अच्छे थे।

“दोनों,” उसने कहा। “वे एक ही चीज हैं।”

"एक ही बात?"

“हम्म। अच्छा, देखो। एक गरीब चाची का बचपन या जवानी गरीबी भरी हो सकती है। या नहीं भी हो सकती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। दुनिया भर में लाखों कारण हैं, जिनके लाखों परिणाम निकलते हैं। जीने के लाखों कारण हैं, और मरने के लाखों कारण हैं। दूसरों को कारण देने के लाखों कारण हैं। ऐसे कारण आसानी से मिल जाते हैं—बस एक फोन करके पता चल जाता है कि कितने लोग हैं। लेकिन आप जो ढूंढ रहे हैं, वह इनमें से कोई नहीं है, है ना?”

मैंने कहा, "अच्छा, मुझे लगता है नहीं।"

“वह मौजूद है। बस इतना ही। आपको इस तथ्य को पहचानना और स्वीकार करना होगा। कारण, वजहें: इनका कोई महत्व नहीं है। बेचारी चाची वहाँ है। वह मौजूद है। और यही एक बेचारी चाची की पहचान है। उसका अस्तित्व ही उसकी वजह है। बिल्कुल हमारी तरह। हम यहाँ और अभी मौजूद हैं, बिना किसी विशेष कारण के।”

हम काफी देर तक तालाब के किनारे बैठे रहे, न तो हम हिले और न ही बोले। शरद ऋतु की साफ धूप में उसके चेहरे पर हल्की-हल्की परछाइयाँ पड़ रही थीं।

“तो?” उसने कहा। “क्या तुम मुझसे यह नहीं पूछोगे कि तुम्हारी पीठ पर मुझे क्या दिख रहा है?”

“मेरी पीठ पर आपको क्या दिख रहा है?”
“कुछ भी नहीं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “मुझे सिर्फ तुम ही दिखते हो।”
मैंने कहा, "धन्यवाद।"



समय, बेशक, अपने रास्ते में आने वाले हर किसी को समान रूप से गिरा देता है—ठीक वैसे ही जैसे उस ड्राइवर ने अपने बूढ़े घोड़े को तब तक पीटा जब तक वह सड़क पर मर नहीं गया। लेकिन हमें जो मार पड़ती है, वह भयानक कोमलता से भरी होती है। हममें से बहुत कम लोग यह महसूस भी करते हैं कि हमें पीटा जा रहा है।
लेकिन एक बेचारी चाची में, हम समय के अत्याचार को अपनी आँखों के सामने देख सकते हैं, मानो किसी मछलीघर की खिड़की से देख रहे हों। उस तंग कांच के पिंजरे में, समय उस बेचारी चाची को संतरे की तरह निचोड़ रहा है, जब तक कि उसमें रस की एक बूंद भी बाकी न रह जाए। जो बात मुझे उसकी ओर खींचती है, वह है उसका संपूर्ण स्वरूप, उसके भीतर की वह परिपूर्णता।
यह सच है—बर्बाद करने के लिए एक बूंद भी नहीं बची है!



हाँ, पूर्णता। यह बेचारी चाची के अस्तित्व के मूल पर अपना पूरा भार डालती है, मानो किसी हिमखंड के अंदर दफ़न कोई शव हो—एक भव्य हिमखंड जो स्टेनलेस स्टील जैसी बर्फ से बना है। ऐसे हिमखंड को पिघलाने के लिए केवल दस हज़ार वर्षों की धूप ही पर्याप्त है। लेकिन कोई बेचारी चाची दस हज़ार साल तक तो जी नहीं सकती, इसलिए उसे अपनी पूर्णता के साथ जीना होगा, अपनी पूर्णता के साथ मरना होगा और अपनी पूर्णता के साथ ही दफ़न होना होगा।
पूर्णता और जमीन के नीचे दबी हुई चाची।

दस हजार साल बीत जाते हैं। फिर, शायद, अंधकार में हिमनद पिघल जाता है और पूर्णता कब्र से निकलकर पृथ्वी की सतह पर प्रकट होती है। तब तक पृथ्वी पर सब कुछ पूरी तरह बदल चुका होता है, लेकिन अगर संयोगवश "शादी" नामक समारोह अभी भी मौजूद है, तो उस बेचारी चाची द्वारा छोड़ी गई पूर्णता को शायद किसी शादी में आमंत्रित किया जाए, जहाँ वह उत्तम शिष्टाचार के साथ पूरा भोजन करे और हार्दिक बधाई के शब्द कहे।
लेकिन कोई बात नहीं। ये घटनाएँ 11,980 ईस्वी तक नहीं घटित होंगी।

4

शरद ऋतु के आखिरी दिनों में मेरी बेचारी चाची मुझे छोड़कर चली गईं। सर्दियों के आने से पहले मुझे कुछ काम निपटाना था, यह याद करके मैं और मेरी बेचारी चाची एक उपनगरीय ट्रेन में सवार हो गए। दोपहर के समय किसी भी उपनगरीय ट्रेन की तरह, यह लगभग खाली थी। काफी समय बाद यह शहर से बाहर मेरी पहली यात्रा थी, और मुझे नज़ारे देखना बहुत अच्छा लगा। हवा ताज़ी और साफ़ थी, पहाड़ियाँ लगभग अप्राकृतिक रूप से हरी थीं, और पटरियों के किनारे जगह-जगह चमकीले लाल बेरों से लदे पेड़ खड़े थे।
वापसी की यात्रा में मेरे ठीक सामने वाली सीट पर लगभग पैंतीस साल की एक दुबली-पतली महिला अपने दो बच्चों के साथ बैठी थी। बड़ी बच्ची अपनी माँ के बाईं ओर बैठी थी, जिसने नेवी ब्लू रंग की साड़ी पहनी थी—जो किंडरगार्टन की यूनिफॉर्म थी। उसके सिर पर एक नई ग्रे रंग की फेल्ट की टोपी थी, जिस पर लाल रिबन लगा था—गोल और पतले किनारे वाली एक सुंदर टोपी। माँ के दाईं ओर लगभग तीन साल का एक लड़का बैठा था। माँ और उसके बच्चों में कुछ भी खास नहीं था। उनके चेहरे, उनके कपड़े, सब कुछ बेहद साधारण था। माँ के हाथ में एक बड़ा सा पैकेट था। वह थकी हुई लग रही थी—लेकिन वैसे भी, ज़्यादातर माताएँ थकी हुई ही लगती हैं। मैंने उन्हें ट्रेन में चढ़ते हुए मुश्किल से ही देखा था, शायद एक बार जब वे मेरे सामने वाली सीटों पर बैठे, तो मैंने उनकी तरफ देखा होगा, जिसके बाद मैं अपनी किताब में ही खोया रहा।
हालांकि, कुछ ही देर बाद, गलियारे के उस पार से उस छोटी बच्ची की आवाज़ मुझ तक पहुँचने लगी। उसकी आवाज़ में एक तीखापन था, एक ऐसी बेचैनी जो विनती का संकेत दे रही थी।

फिर मैंने माँ को कहते सुना, "मैंने तुमसे कहा था कि ट्रेन में चुपचाप बैठे रहना!" उसके हाथ में एक पत्रिका थी जो उसके बंडल के ऊपर फैली हुई थी और ऐसा लग रहा था कि वह उससे अपनी नज़रें हटाना नहीं चाहती थी।

"लेकिन माँ, देखो वो मेरी टोपी के साथ क्या कर रहा है," छोटी बच्ची ने कहा।

"बस चुप रहो!"

लड़की बोलने की कोशिश तो कर रही थी, लेकिन फिर उसने अपने शब्द निगल लिए। माँ द्वारा उससे अलग किए जाने पर, छोटा लड़का उसकी टोपी पकड़े हुए था, जिसे वह पहले पहने हुए थी, और वह उसे बार-बार छूकर खींच रहा था। लड़की ने हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह खुद को उससे दूर कर लिया, ताकि वह टोपी उसकी पहुँच से बाहर रहे।

"वह मेरी टोपी खराब कर देगा," लड़की ने लगभग रोते हुए कहा।

मां ने झुंझलाहट भरे चेहरे से पत्रिका से नज़रें उठाकर टोपी छीनने का नाटक किया, लेकिन लड़के ने टोपी के किनारे को दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया और उसे छोड़ने से इनकार कर दिया। टोपी वापस लेने की मां की कोशिश नाकाम रही। मां ने लड़की से कहा, "उसे थोड़ी देर खेलने दो। वह जल्द ही ऊब जाएगा।" लड़की को यकीन नहीं हुआ, लेकिन उसने बहस करने की कोशिश नहीं की। उसने होंठ सिकोड़ लिए और अपने भाई के हाथों में पकड़ी टोपी को घूरने लगी। मां पढ़ती रही। मां की बेपरवाही से उत्साहित होकर, लड़का लाल रिबन को खींचने लगा। ज़ाहिर है, वह शरारत में ऐसा कर रहा था। वह जानता था कि इससे उसकी बहन पागल हो जाएगी—और इसका असर मुझ पर भी हुआ। मैं गलियारे के उस पार जाकर उसके हाथों से टोपी छीनने को तैयार थी।

लड़की चुपचाप अपने भाई को देखती रही, पर यह साफ दिख रहा था कि उसके मन में कोई योजना थी। फिर अचानक वह खड़ी हुई और उसके गाल पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। उसके बाद जो सन्नाटा पसरा, उसी में उसने टोपी उठाई और वापस अपनी जगह पर बैठ गई। छोटी लड़की ने यह इतनी तेज़ी से किया कि माँ और भाई को समझ आने में एक गहरी साँस का समय लग गया। भाई के चीखने पर माँ ने लड़की के नंगे घुटने पर थप्पड़ मारा। फिर वह

लड़के के गाल पर हाथ फेरने लगी और उसे दिलासा देने की कोशिश की, पर वह रोता ही रहा।

"लेकिन माँ, वह मेरी टोपी खराब कर रहा था," छोटी बच्ची ने कहा।

“मुझसे बात मत करो,” मां ने कहा। “अब तुम मेरे नहीं हो।”

लड़की ने अपने होंठ काटे और नीचे की ओर देखते हुए अपनी टोपी को घूरने लगी।

“मुझसे दूर रहो,” माँ ने कहा। “वहाँ जाओ।” उसने मेरी बगल वाली खाली सीट की ओर इशारा किया।

लड़की ने अपनी मां की फैली हुई उंगली को नजरअंदाज करने की कोशिश करते हुए दूसरी तरफ देखा, लेकिन वह उंगली मेरी बाईं ओर इशारा करती रही, मानो हवा में ही जम गई हो।

“जाओ,” मां ने जोर देकर कहा। “अब तुम इस परिवार का हिस्सा नहीं हो।”

अपनी किस्मत को स्वीकार करते हुए, लड़की अपनी टोपी और स्कूल बैग लेकर उठी, गलियारे को पार करते हुए धीरे-धीरे मेरे बगल में सिर झुकाकर बैठ गई। टोपी गोद में रखकर, वह अपनी छोटी उंगलियों से उसके किनारे को सहलाने की कोशिश कर रही थी। वह मन ही मन सोच रही थी, यह सब उसी की गलती है; वह मेरी टोपी का रिबन फाड़ने वाला था। उसके गाल आंसुओं से भीगे हुए थे।

अब लगभग शाम हो चुकी थी। कार की बत्तियों से मंद पीली रोशनी ऐसे छनकर आ रही थी मानो किसी उदास पतंगे के पंखों से धूल झाड़ रही हो। वह हवा में मंडराती हुई चुपचाप यात्रियों के मुंह और नाक से अंदर जा रही थी। मैंने अपनी किताब बंद कर दी। घुटनों पर हाथ रखकर, मैं काफी देर तक अपनी हथेलियों को देखती रही। मैंने आखिरी बार अपने हाथों को इस तरह कब देखा था? धुंधली रोशनी में, वे मैली, बल्कि गंदी लग रही थीं—बिल्कुल भी मेरे हाथों जैसी नहीं। उन्हें देखकर मैं उदासी से भर गई: ये वे हाथ थे जो कभी किसी को खुश नहीं कर सकते थे, कभी किसी को बचा नहीं सकते थे। मैं अपने बगल में सिसक रही छोटी बच्ची के कंधे पर दिलासा देने वाला हाथ रखना चाहती थी, उसे बताना चाहती थी कि वह सही थी, उसने टोपी को उस तरह लेकर बहुत अच्छा काम किया था। लेकिन ज़ाहिर है, मैंने उसे छुआ तक नहीं, उससे बात तक नहीं की। इससे वह और भी ज़्यादा भ्रमित और भयभीत हो जाती। और वैसे भी, मेरे वे हाथ इतने काले और गंदे थे।

जब मैं ट्रेन से उतरी, तब तक सर्द हवा चलने लगी थी। स्वेटर का मौसम जल्द ही खत्म होने वाला था, और अब मोटे सर्दियों के कोट पहनने का समय आ गया था। मैंने कुछ देर कोट के बारे में सोचा, यह तय करने की कोशिश की कि नया कोट खरीदूँ या नहीं। मैं सीढ़ियों से उतरकर गेट से बाहर निकल ही गई थी कि मुझे एहसास हुआ कि बेचारी चाची मेरी पीठ से गायब हो गई थीं।

मुझे पता ही नहीं चला कि यह कब हुआ। जैसे वह आई थी, वैसे ही किसी के ध्यान देने से पहले ही चली गई। वह वापस उसी जगह चली गई जहाँ वह पहले थी, और मैं फिर से अपने असली रूप में आ गया।

लेकिन मेरा असली स्वरूप क्या था? अब मैं निश्चित नहीं हो पा रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि यह कोई और ही मैं हूँ, एक और स्वरूप जो मेरे असली स्वरूप से बहुत मिलता-जुलता है। तो अब मैं क्या करूँ? मैं बिलकुल अकेली थी, जैसे रेगिस्तान के बीचोंबीच कोई खाली पड़ा हुआ साइनपोस्ट। मैंने दिशा का सारा ज्ञान खो दिया था। मैंने जेब में हाथ डाला और जितने भी सिक्के मिले, सब एक पेफोन में डाल दिए। आठ बार घंटी बजी। नौ बार। और फिर उसने फोन उठाया।

“मैं सो रही थी,” उसने जम्हाई लेते हुए कहा।

"शाम को छह बजे?"

मैं पूरी रात काम करता रहा। अभी दो घंटे पहले ही काम खत्म किया है।

“माफ़ कीजिए, मेरा इरादा आपको जगाने का नहीं था,” मैंने कहा। “यह शायद अजीब लगे, लेकिन मैंने सिर्फ़ यह सुनिश्चित करने के लिए फ़ोन किया था कि आप ज़िंदा हैं। बस इतना ही। सच में।”

मुझे महसूस हो रहा था कि वह फोन पर मुस्कुरा रही है।

“शुक्रिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद,” उसने कहा। “लेकिन चिंता मत करो, मैं अभी भी ज़िंदा हूँ। और ज़िंदा रहने के लिए मैं जी-तोड़ मेहनत कर रही हूँ। इसीलिए मैं बहुत थकी हुई हूँ। ठीक है? अब आपको राहत मिली?”

"मुझे राहत महसूस हो रही है।"

“तुम्हें पता है,” उसने ऐसे कहा जैसे वह मुझसे कोई राज़ साझा करने वाली हो, “जिंदगी वाकई बहुत मुश्किल है।”
“मुझे पता है,” मैंने कहा। और वह सही थी। “तो अब आप मेरे साथ रात का खाना खाना चाहेंगी?”
"माफ़ कीजिए, मुझे भूख नहीं है। इस समय मैं बस इतना चाहता हूँ कि अपना दिमाग़ बंद करूँ और सो जाऊँ।"
मैंने कहा, "मुझे भी भूख नहीं है। मैं बस तुमसे कुछ बातें करना चाहता था। कुछ विषयों पर।"
उसके अंतिम क्षणों की खामोशी में, मैं महसूस कर सकता था कि वह अपने होंठ काट रही थी और अपनी छोटी उंगली से अपनी भौंह को छू रही थी।
“अभी नहीं,” उसने हर शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा। “बाद में बात करेंगे। अभी मुझे सोने दो। ज़्यादा नहीं। अगर मैं थोड़ी देर सो जाऊँ तो सब ठीक हो जाएगा। उठने के बाद मैं तुम्हें फ़ोन करूँगी। ठीक है?”
“ठीक है,” मैंने कहा। “शुभ रात्रि।”
आपको भी। शुभ रात्रि।
वह एक पल के लिए हिचकिचाई। "क्या आप किसी आपातकालीन स्थिति के बारे में बात करना चाहते थे?"
“नहीं, कोई आपात स्थिति नहीं है,” मैंने कहा। “हम इस बारे में बाद में बात कर सकते हैं।”
सच है, हमारे पास बहुत समय था। दस हज़ार साल, बीस हज़ार। मैं इंतज़ार कर सकता था।
“शुभ रात्रि,” उसने फिर कहा और फोन रख दिया। कुछ देर तक मैं अपने हाथ में पकड़े पीले रिसीवर को देखता रहा, फिर उसे स्टैंड में रख दिया। जैसे ही वह मेरे हाथ से छूटा, मुझे ज़बरदस्त भूख लग गई। अगर मुझे कुछ खाने को नहीं मिला तो मैं पागल हो जाऊँगा। कुछ भी। बिल्कुल कुछ भी। अगर वे मुझे कुछ खाने को दे दें, तो मैं उनके पास घुटनों के बल रेंगकर जाऊँगा। शायद मैं उनकी उंगलियाँ भी चाट लूँ।
हाँ, मैं ऐसा करूँगा, मैं तुम्हारी उंगलियाँ चाट-चाट कर साफ कर दूँगा। और फिर मैं एक पुराने कपड़े की तरह गहरी नींद सो जाऊँगा। कितनी भी ज़ोरदार लात मारो, मैं नहीं जागूँगा। दस हज़ार साल तक मैं गहरी नींद में सोता रहूँगा।

मैं टेलीफोन से टिककर बैठ गया, अपने मन के सारे विचार भुला दिए और आँखें बंद कर लीं। तभी मुझे कदमों की आहट सुनाई दी, हजारों कदमों की। वे एक लहर की तरह मुझ पर छा गए। वे चलते ही रहे, निरंतर, ताल में चलते हुए। बेचारी चाची अब कहाँ होंगी? मैंने सोचा। वह कहाँ चली गई होंगी? और मैं कहाँ लौट आया हूँ?

यदि दस हजार साल बाद एक ऐसा समाज अस्तित्व में आए जिसमें केवल गरीब चाचियाँ ही निवास करती हों, तो क्या वे अपने शहर के द्वार मेरे लिए खोल देंगी? उस शहर में एक सरकार और नगर पालिका होगी जिसे गरीब चाचियाँ ही चलाएंगी और जिनका चुनाव भी गरीब चाचियों ने ही किया होगा, एक ऐसी रेलगाड़ी होगी जिसे गरीब चाचियाँ ही चलाएंगी, और उपन्यास भी गरीब चाचियों द्वारा ही लिखे जाएंगे।

या फिर, हो सकता है कि उन्हें इनमें से किसी भी चीज की जरूरत न हो—न सरकार की, न ही रेलगाड़ियों की, न ही उपन्यासों की।

शायद वे अपनी बनाई विशाल सिरके की बोतलों में शांति से रहना पसंद करें। ऊपर से देखने पर आपको दसियों-लाखों सिरके की बोतलें कतार में लगी हुई दिखाई देंगी, जो धरती को दूर-दूर तक ढके रहेंगी। और यह नजारा इतना खूबसूरत होगा कि आपकी सांसें थम जाएंगी।

हाँ, बस यही बात है। और अगर किसी भी तरह उस दुनिया में एक कविता लिखने की जगह होती, तो मैं खुशी-खुशी उसे लिखती: गरीब चाचियों की दुनिया की पहली सम्मानित कवयित्री।

बुरा नहीं। बुरा नहीं।

और मैं हरी बोतलों में सूर्य की शानदार चमक की प्रशंसा में गीत गाता, नीचे फैले घास के विशाल सागर की प्रशंसा में गीत गाता, जो सुबह की ओस से जगमगा रहा था।

लेकिन यह तो बहुत आगे की बात है, 11,980 ईस्वी की, और दस हजार साल मेरे लिए इंतजार करने के लिए बहुत लंबा समय है। तब तक मुझे कई सर्दियाँ झेलनी होंगी।

— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

मतली 1979

लंबे समय तक बिना एक भी दिन छोड़े डायरी लिखने की उनकी असाधारण प्रतिभा के कारण, वे उल्टी शुरू होने की सही तारीख और उल्टी बंद होने की सही तारीख बता सके। उल्टी 4 जून, 1979 (साफ़ मौसम) को शुरू हुई और 14 जुलाई, 1979 (बादल छाए हुए मौसम) को बंद हुई। मैं इस युवा चित्रकार को तब से जानता था जब उसने एक पत्रिका में प्रकाशित मेरी एक कहानी के लिए चित्र बनाया था।

वह मुझसे कुछ साल छोटा था, लेकिन हम दोनों को पुराने जैज़ एलपी रिकॉर्ड इकट्ठा करने का शौक था। उसे अपने दोस्तों की गर्लफ्रेंड और पत्नियों के साथ सोने का भी शौक था। पिछले कुछ सालों में उसकी कई गर्लफ्रेंड और पत्नियां बन चुकी थीं, और वह अक्सर मुझे अपने कारनामों के बारे में बताता था। उसने तो कई बार ऐसा तब भी किया था जब उसका दोस्त बीयर खरीदने गया था या नहा रहा था।

“आप इसे जितनी जल्दी हो सके, अपने ज़्यादातर कपड़े पहने हुए ही करें,” उसने कहा। “सामान्य सेक्स बहुत लंबा खिंच सकता है, है ना? इसलिए कभी-कभी आप बिल्कुल विपरीत तरीका अपनाते हैं। इससे आपको एक बिल्कुल नया नज़रिया मिलता है। यह मज़ेदार है।”

इस तरह का ज़बरदस्त यौन संबंध ही उसकी एकमात्र रुचि नहीं थी। वह इसे धीमी, पारंपरिक शैली में भी आनंदित कर सकता था। लेकिन अपने दोस्तों की प्रेमिकाओं और पत्नियों के साथ सोना ही उसे सबसे ज़्यादा उत्तेजित करता था।

“मुझे अपने दोस्तों को धोखा देने में, उन्हें बेवफ़ा बनाने में, इस तरह की किसी भी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं है। उनकी पत्नियों के साथ सोने से मुझे उनके करीब होने का एहसास होता है। यह पारिवारिक मामला है। और आख़िरकार, यह सिर्फ़ सेक्स ही तो है। जब तक यह बात सार्वजनिक नहीं होती, इससे किसी को कोई नुकसान नहीं होता।”

"ऐसा कभी नहीं हुआ?"

“नहीं, कभी नहीं।” मेरे सवाल पर वह थोड़ा हैरान लग रहा था। “जब तक आपके मन में अपने काम को सबके सामने ज़ाहिर करने की कोई दबी हुई इच्छा न हो, तब तक ये बातें सामने नहीं आतीं। हाँ, आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि आप ऐसा कुछ न करें या कहें जिससे उस लड़के को कोई गलत विचार आए। और आपको शुरुआत में ही साफ़-साफ़ नियम तय

कर लेने होंगे, यह सुनिश्चित करना होगा कि महिला को पता हो कि यह सिर्फ़ एक दोस्ताना खेल है, कि आप किसी के साथ दखल नहीं देंगे या किसी को चोट नहीं पहुँचाएँगे। बेशक, आप इसे सीधे-सीधे नहीं कहेंगे।”

मुझे यह विश्वास करना मुश्किल लग रहा था कि ऐसी चीजें इतनी आसानी से हो सकती हैं, लेकिन वह खुद को अच्छा दिखाने के लिए बहुत सारी बकवास करने वाला व्यक्ति नहीं लग रहा था, इसलिए मैंने सोचना शुरू कर दिया कि शायद वह सही हो।

“और अंत में, ज़्यादातर औरतें इसी तरह की चीज़ की तलाश में रहती हैं। उनके पति या प्रेमी—यानी मेरे दोस्त—आमतौर पर मुझसे कहीं बेहतर होते हैं: वे ज़्यादा सुंदर होते हैं, या ज़्यादा बुद्धिमान होते हैं, या उनके लिंग बड़े होते हैं। लेकिन औरतों को इन सब बातों से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। उन्हें तब तक कोई फ़र्क नहीं पड़ता जब तक उनके पुरुष सामान्य और दयालु हों और उनके बीच कुछ हद तक समझ विकसित हो जाए। वे बस इतना चाहती हैं कि कोई उनमें ‘प्रेमिका’ या ‘पत्नी’ की स्थिर परिभाषा से परे दिलचस्पी ले। यही इस सबमें सबसे बुनियादी नियम है। बेशक, सतही तौर पर देखा जाए तो उनके इरादे बहुत अलग-अलग हो सकते हैं।”

"उदाहरण के लिए?"

उदाहरण के लिए, पति के बेवफाई करने का बदला लेना, या ऊब जाना, या किसी दूसरे पुरुष को आकर्षित करने की संतुष्टि। इस तरह की बातें। मुझे बस उन्हें देखकर ही पता चल जाता है। यह कोई तकनीक सीखने की बात नहीं है। यह पूरी तरह से जन्मजात प्रतिभा है। या तो यह आपमें होती है या नहीं होती।

उसकी खुद की कोई स्थायी प्रेमिका नहीं थी।

जैसा कि मैंने बताया, हम दोनों रिकॉर्ड कलेक्टर थे और कभी-कभी मिलकर रिकॉर्ड्स का लेन-देन करते थे। हम पचास और साठ के दशक के शुरुआती दौर का जैज़ संगीत इकट्ठा करते थे, लेकिन हमारी रुचियां इतनी अलग थीं कि हमें हमेशा कुछ न कुछ अदला-बदली करने को मिल जाता था। मैं वेस्ट कोस्ट के कुछ कम प्रसिद्ध संगीतकारों पर ध्यान केंद्रित करता था, और उसे कोलमैन हॉकिन्स या लियोनेल हैम्पटन जैसे मध्यम स्तर के संगीतकारों की बाद की रिकॉर्डिंग पसंद थीं। इसलिए अगर उसके पास विक्टर एल्बम पर पीट जॉली

ट्रायो का रिकॉर्ड होता और मेरे पास विक डिकेंसन का मेनस्ट्रीम एल्बम होता, तो हम इसे बराबर का लेन-देन मान लेते थे। हम पूरा दिन बीयर पीते, परफॉर्मेंस देखते, अपनी डिस्क में खामियां ढूंढते और सौदे करते बिताते थे।



हमारे एलपी-ट्रेडिंग सेशन में से एक के बाद उसने मुझे अपनी उल्टी के बारे में बताया। हम उसके अपार्टमेंट में थे और व्हिस्की पी रहे थे। हमारी बातचीत संगीत से व्हिस्की और फिर नशे में होने के अनुभवों की ओर बढ़ गई थी।

"एक बार मैं लगातार चालीस दिनों तक रोज़ उल्टी करता रहा। बिना रुके, हर एक दिन। हालांकि, शराब पीने की वजह से नहीं। और मैं बीमार भी नहीं था। बस बिना किसी वजह के उल्टी करता रहता था। चालीस दिन तक लगातार ऐसा ही चलता रहा। चालीस दिन। यह वाकई बहुत अजीब था।"

उन्हें पहली बार मतली और उल्टी 4 जून को हुई। यह घटना उनके लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित नहीं थी क्योंकि उन्होंने पिछली रात काफी मात्रा में व्हिस्की और बीयर पी थी। साथ ही, हमेशा की तरह, उन्होंने 3 जून की रात को एक दोस्त की पत्नी के साथ संबंध बनाए थे।

इसलिए जब 4 जून की सुबह आठ बजे उसने अपने पेट का सारा खाना टॉयलेट बाउल में उल्टी कर दिया, तो सामान्य समझ के हिसाब से इसे कोई असामान्य घटना नहीं कहा जा सकता था। यह बात भी असामान्य नहीं थी कि कॉलेज के बाद पहली बार उसने शराब पीने के कारण उल्टी की थी। फ्लश का हैंडल दबाकर उसने अपने पेट की उस अप्रिय चीज़ को नाली में बहा दिया, अपनी डेस्क पर बैठा और काम में लग गया। उसे ज़रा भी अस्वस्थता महसूस नहीं हुई। बल्कि, उस दिन उसने अपने चित्र बनाने के काम में और भी ज़्यादा जोश भर दिया। उसका काम अच्छे से चला और दोपहर तक उसे अच्छी भूख लग गई थी।

उसने अपने लिए हैम और खीरे का सैंडविच बनाया और उसे एक कैन बियर के साथ खा लिया। आधे घंटे बाद, उसे मतली की दूसरी लहर आई और उसने पूरा सैंडविच शौचालय में उगल दिया। ब्रेड और हैम के गीले टुकड़े कमोड में पानी की सतह पर तैरने लगे। फिर भी,

उसे कोई अस्वस्थता महसूस नहीं हुई। उसने बस उल्टी की थी। उसे ऐसा लगा जैसे उसके गले के पिछले हिस्से में कुछ फंसा हुआ है, और वह जिज्ञासावश शौचालय के पास घुटनों के बल बैठ गया, तभी उसके पेट का सारा खाना ऐसे बाहर निकल आया जैसे कोई जादूगर टोपी से कबूतर, खरगोश या दुनिया के झंडे निकालता है।

“मुझे कई बार मतली महसूस हुई थी—कॉलेज में, जब मैं बेहिसाब शराब पीता था, या कभी-कभी बसों वगैरह में, लेकिन यह बिल्कुल अलग था। पेट में वैसी ऐंठन भी नहीं थी जैसी आमतौर पर होती है। ऐसा लग रहा था जैसे मेरा पेट बिना किसी खास एहसास और बिना किसी रुकावट के खाने को ऊपर धकेल रहा हो। मुझे कोई तकलीफ नहीं थी, और न ही वो घुटन भरी बदबू थी। फिर मुझे बहुत अजीब सा महसूस होने लगा। मतलब, ऐसा एक बार नहीं बल्कि दो बार हुआ था। मुझे चिंता होने लगी थी, इसलिए मैंने कुछ समय के लिए शराब छोड़ देने का फैसला किया।”

हालांकि, अगली सुबह ठीक समय पर उसे तीसरी बार उल्टी हुई। पिछली रात खाई गई मछली और उस सुबह मुरब्बे से सना हुआ इंग्लिश मफिन लगभग बिना किसी नुकसान के उसके पेट से बाहर निकल गया।

बाद में जब वह अपने दांत साफ कर रहा था, तभी टेलीफोन की घंटी बजी। उसने रिसीवर उठाया तो एक आदमी की आवाज में उसका नाम सुनाई दिया, और फिर कनेक्शन कट गया, बस इतना ही हुआ।

“तुम्हें नहीं लगता कि वह उन महिलाओं में से किसी एक का पति या प्रेमी रहा होगा जिनके साथ तुमने संबंध बनाए थे?” मैंने पूछा।

“बिल्कुल नहीं,” उसने कहा। “मैं उन सबकी आवाज़ें जानता था। ये तो ऐसी आवाज़ थी जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। और इसमें एक अजीब सी घिनौनी सी बात थी। मुझे रोज़ाना इस तरह के फोन आने लगे। 5 जून से 14 जुलाई तक। आप समझ सकते हैं, ये लगभग उसी समय के आसपास हुआ जब मुझे उल्टी हो रही थी।”

"ठीक है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इन शरारती कॉलों और आपकी उल्टी के बीच कोई संबंध हो सकता है।"

“मुझे भी नहीं,” उसने कहा। “इसीलिए मैं इस पूरी बात से अब भी थोड़ा परेशान हूँ। खैर, हर कॉल एक जैसी ही होती थी। फोन बजता, वो मेरा नाम लेता और काट देता। दिन में एक बार, हर दिन, लेकिन मुझे कभी पता नहीं चलता था कि कब—सुबह, शाम, आधी रात। बेशक, मैं फोन का जवाब न भी दे सकता था, लेकिन इसी तरह मुझे काम मिलता है, और लड़कियाँ भी कभी-कभी मुझे फोन करती हैं।”

“ठीक है, जरूर...,” मैंने कहा।

“और लगातार फोन कॉल्स के साथ-साथ जी मिचलाना भी बिना रुके जारी रहा। मुझे लगता है कि मैंने जो कुछ भी खाया, लगभग सब कुछ उल्टी कर दिया। फिर मुझे भूख लगती और मैं दोबारा खाती, और फिर वह सब कुछ उल्टी कर देती। यह एक दुष्चक्र था। फिर भी, मैं किसी तरह तीन में से एक बार का खाना पचा लेती थी—शायद बस इतना ही काफी था कि मैं ज़िंदा रह सकूँ। अगर मैं हर तीन बार का खाना उल्टी कर देती, तो मुझे नसों के ज़रिए खाना या कुछ और चढ़ाना पड़ता।”

क्या आपने डॉक्टर से सलाह नहीं ली?

“हाँ, बिल्कुल। मैं अपने पड़ोस के एक अस्पताल में गया, जो काफी बड़ा था। उन्होंने मेरा एक्स-रे किया और मेरे पेशाब की जाँच की। कैंसर की पूरी संभावना थी, इसलिए उन्होंने मेरी अच्छी तरह से जाँच की। लेकिन उन्हें मुझमें कुछ भी गड़बड़ नहीं मिली। मैं बिल्कुल स्वस्थ था। उन्होंने मुझे 'लंबे समय से पेट में थकान' या शायद तनाव की दवा लिख दी। उन्होंने मुझे वही पुरानी सलाह दी, 'जल्दी सोओ, जल्दी उठो', शराब कम पीने को कहा और छोटी-छोटी बातों को लेकर परेशान न होने को कहा। लेकिन वे किसे बेवकूफ बना रहे थे? मुझे लंबे समय से पेट में थकान के बारे में पता है: अगर आपको यह नहीं पता कि आपको यह है, तो आप मूर्ख ही होंगे। पेट में भारीपन महसूस होता है, सीने में जलन होती है, भूख नहीं लगती, और ऐसे ही लक्षण होते हैं। अगर आपको मतली होती भी है, तो वह इन सभी लक्षणों के बाद ही होती है। आप अचानक से उल्टी नहीं करने लगते। मेरे साथ भी यही हुआ। मुझे हर समय भूख तो लगती थी, लेकिन इसके अलावा मैं बिल्कुल ठीक महसूस कर रहा था और मेरा दिमाग बिल्कुल साफ था।”

और जहाँ तक 'तनाव' की बात है—यह तो मुझमें है ही नहीं। हाँ, काम का ढेर लगा हुआ था, पर इतना नहीं कि वो मुझ पर हावी हो जाए, और लड़कियाँ भी कोई समस्या नहीं थीं। साथ ही, मैं हफ्ते में दो-तीन बार स्विमिंग पूल में तैरने जाता था। मैं सब कुछ सही कर रहा था, है ना?

मैंने कहा, "मुझे तो ऐसा ही लगता है।"

उन्होंने कहा, "मुझे बस उल्टी हो रही थी, बस इतना ही।"

दो हफ़्तों तक यही सिलसिला चलता रहा, उल्टी और फ़ोन कॉल। पंद्रहवें दिन, उसने तय किया कि अब उसे दोनों से बहुत तंग आ चुका है और उसने काम से छुट्टी ले ली। उल्टी तो रुक नहीं रही थी, लेकिन कम से कम वो फ़ोन कॉल से तो छुटकारा पाना चाहता था, इसलिए वो एक होटल चला गया और पूरा दिन टीवी देखने और पढ़ने में बिताया। शुरू में, जगह बदलने का असर दिखने लगा। दोपहर के खाने में उसने रोस्ट बीफ़ सैंडविच और एस्पैरगस सलाद खाया और उसे पचा लिया। 3:30 बजे वो होटल के चायघर में एक दोस्त की प्रेमिका से मिला, जहाँ उसने चेरी पाई का एक टुकड़ा और काली कॉफ़ी पी ली, जो उसे ठीक लगी। फिर वो और वो महिला सोने चले गए। यह भी बिना किसी परेशानी के हो गया। उसे घर छोड़ने के बाद, उसने पास के एक रेस्टोरेंट में अकेले रात का खाना खाया: क्योटो स्टाइल की भुनी हुई मैकेरल मछली टोफू, सिरके वाली सब्ज़ियों, मिसो सूप और एक कटोरी सफेद चावल के साथ। हमेशा की तरह, उसने शराब से परहेज़ किया। शाम के 6:30 बज रहे थे।

वह अपने कमरे में वापस गया, समाचार देखा और एड मैकबेन के 87 वें प्रीसिंक्ट उपन्यास को पढ़ना शुरू किया। जब नौ बज गए और उसे अभी भी मतली महसूस नहीं हो रही थी, तो उसने राहत की सांस ली। आखिरकार, दो लंबे हफ्तों के बाद, वह पेट भरे होने के साधारण सुख का आनंद ले पा रहा था। उसे लगा कि अब सब कुछ सामान्य हो जाएगा। उसने अपनी किताब बंद की, टीवी फिर से चालू किया और रिमोट से चैनल बदलते हुए एक पुरानी वेस्टर्न फिल्म देखने का फैसला किया। फिल्म ग्यारह बजे खत्म हुई और देर रात के समाचार शुरू हो गए। समाचार खत्म होते ही उसने टीवी बंद कर दिया। अब उसे सबसे ज्यादा एक अच्छी व्हिस्की चाहिए थी और वह ऊपर बार में जाकर एक और ड्रिंक लेने के बारे में सोच ही रहा था, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। एक अच्छे दिन को क्यों खराब करना? उसने रीडिंग लैंप बुझाया और कंबल ओढ़कर आराम से लेट गया।

आधी रात का समय था जब फोन की घंटी बजी। उसने आंखें खोलीं तो घड़ी में 2:15 बज रहे थे। नींद से बेहाल होने के कारण उसे समझ नहीं आया कि आसपास घंटी क्यों बज रही है, लेकिन उसने सिर हिलाया और लगभग अनजाने में ही रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया।
"नमस्ते।"
अब जानी-पहचानी आवाज ने उसका नाम फिर से पुकारा और एक सेकंड बाद ही कनेक्शन कट गया।
“लेकिन आपने किसी को बताया तो नहीं था कि आप होटल में ठहरे हुए हैं, है ना?” मैंने पूछा।
"बिल्कुल नहीं—सिवाय उस महिला के जिसके साथ मैंने शारीरिक संबंध बनाए थे।"
"हो सकता है उसने यह जानकारी किसी और को लीक कर दी हो।"
"ऐसा करने के पीछे उसका क्या कारण हो सकता है?"
उसकी बात में दम था।
"फोन कॉल के बाद, मैंने अपने पेट में मौजूद सारा खाना उल्टी कर दिया। मछली, चावल—सब कुछ। ऐसा लगा जैसे उस फोन कॉल ने एक दरवाजा खोल दिया हो और मतली को मेरे अंदर घुसने का रास्ता बना दिया हो।"
जब मेरी उल्टी बंद हुई, तो मैं टब के किनारे बैठ गया और अपने दिमाग में सब कुछ समझने की कोशिश करने लगा। मेरा पहला ख्याल यही आया कि वो फोन किसी का मज़ाक या शरारत भरा काम था। मुझे नहीं पता था कि उन्हें कैसे पता चला कि मैं होटल में हूँ, लेकिन इस बात को एक तरफ रखते हुए, मैंने सोचा कि शायद कोई मेरे साथ चाल चल रहा हो। दूसरी संभावना ये थी कि शायद मैं फोन कॉल की कल्पना कर रहा था। ये बात मुझे पहले तो बेतुकी लगी, लेकिन स्थिति का थोड़ा शांत होकर विश्लेषण करने पर मैं इसे सिरे से खारिज नहीं कर सका। हो सकता है कि मुझे लगा हो कि फोन की घंटी बजी है, और जब मैंने रिसीवर उठाया तो मुझे लगा कि कोई मेरा नाम ले रहा है, लेकिन असल में कुछ भी नहीं हुआ था। सैद्धांतिक रूप से, कम से कम, ऐसा होना मुमकिन था, है ना?
“हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है...”
मैंने रिसेप्शन पर फोन किया और उनसे पूछा कि क्या मेरे कमरे में कोई कॉल आई थी, लेकिन वे मेरी मदद नहीं कर सके। उनके सिस्टम में सभी आउटगोइंग कॉल का रिकॉर्ड तो

था, लेकिन इनकमिंग कॉल का कोई रिकॉर्ड नहीं था। इससे मेरे पास कोई और जानकारी नहीं बची।

"होटल में वो रात मेरे लिए एक तरह का निर्णायक मोड़ थी। उसी समय मैंने इन चीजों के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू किया—मतली और फोन कॉल—और ये विचार कि शायद ये आपस में जुड़े हुए हैं—पूरी तरह से या आंशिक रूप से, मुझे नहीं पता था। लेकिन मुझे यह समझ आने लगा था कि मैं इन दोनों को पहले की तरह हल्के में नहीं ले सकता।"

“मैंने होटल में दो रातें बिताईं, लेकिन अपने अपार्टमेंट में वापस आने के बाद भी उल्टी और फोन कॉल पहले की तरह ही जारी रहे। मैंने कुछ बार अपने दोस्तों को अपने घर में ठहराया यह देखने के लिए कि क्या होता है, लेकिन फोन कॉल हमेशा मुझे ढूंढ लेते थे—और हमेशा तब जब मैं उनके घरों में अकेला होता था। कहने की जरूरत नहीं है, इससे मुझे डर लगने लगा, जैसे कोई अदृश्य शक्ति मेरे पीछे खड़ी होकर मेरी हर हरकत पर नजर रख रही हो: उसे ठीक-ठीक पता होता था कि मुझे कब फोन करना है और कब मेरी गर्दन में उंगली डालनी है। जब आपको इस तरह के विचार आने लगते हैं, तो यह सिज़ोफ्रेनिया का पहला लक्षण होता है, आप जानते हैं।”

मैंने कहा, "शायद ऐसा हो, लेकिन ऐसे बहुत से सिज़ोफ्रेनिक लोग नहीं हैं जो सिज़ोफ्रेनिया होने को लेकर चिंतित हों, है ना?"

“नहीं, आप सही कह रहे हैं। और सिज़ोफ्रेनिया और उल्टी के बीच किसी भी तरह के संबंध का कोई ज्ञात मामला नहीं है। कम से कम, विश्वविद्यालय अस्पताल में मनोचिकित्सकों ने मुझे यही बताया। उन्होंने मेरी तरफ देखा तक नहीं। उन्हें सिर्फ़ ऐसे मरीज़ चाहिए जिनके लक्षण स्पष्ट हों। उन्होंने कहा कि यामानोते लाइन पर हर ट्रेन में मेरे जैसे लक्षणों वाले 2.5 से 3 लोग होते हैं: उनके पास हर एक का इलाज करने की सुविधा नहीं है। मुझे अपनी उल्टी के लिए किसी आंतरिक चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए और पुलिस को फोन करना चाहिए।”

“लेकिन जैसा कि आप जानते होंगे, दो तरह के अपराध हैं जिनमें पुलिस दखल नहीं देती: शरारती कॉल और साइकिल चोरी। ऐसे मामले बहुत ज़्यादा होते हैं, और अपराध के लिहाज़ से ये बहुत छोटे-मोटे मामले हैं। अगर पुलिस हर मामले में उलझ जाए तो उसका कामकाज ठप्प हो जाएगा। उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। शरारती कॉल? वो आदमी आपसे क्या कहता है?

आपका नाम? बस इतना ही? ठीक है, ये फॉर्म भरिए और अगर कुछ बुरा होता है तो हमसे संपर्क कीजिएगा। बस इतना ही उन्होंने कहा। ठीक है, मैंने कहा, लेकिन वो आदमी हर बार ठीक-ठीक कैसे जान लेता है कि मैं कहाँ हूँ? उन्होंने मेरी बात को गंभीरता से नहीं लिया। और मुझे पता था कि अगर मैंने ज़्यादा ज़िद की तो वे मुझे पागल समझेंगे।”

“ज़ाहिर सी बात है, मुझे डॉक्टरों, पुलिस या किसी और से कोई मदद नहीं मिलने वाली थी। मुझे खुद ही इसका ख्याल रखना होगा। यह बात मुझे 'मतली की शिकायत वाले फोन कॉल' शुरू होने के बीसवें दिन समझ में आ गई। मैं खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से काफी मजबूत समझती हूं, लेकिन इस समय तक यह मुझ पर असर डालने लगा था।”

"लेकिन उस दोस्त की गर्लफ्रेंड के साथ सब ठीक था?"

"लगभग ऐसा ही था। मेरा एक दोस्त व्यापार के सिलसिले में दो सप्ताह के लिए फिलीपींस गया था, इसलिए हम दोनों ने एक-दूसरे के साथ खूब समय बिताया।"

"जब आप उसके साथ थे, तब क्या आपको कोई कॉल नहीं आया?"

“एक भी नहीं। मैं अपनी डायरी देख सकती हूँ, लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसा कभी हुआ। कॉल तभी आते थे जब मैं अकेली होती थी। उल्टी के साथ भी ऐसा ही था। तो फिर मुझे हैरानी होने लगी: मैं इतनी अकेली क्यों रहती हूँ? असल में, मैं शायद दिन में तेईस घंटे से ज़्यादा अकेली रहती हूँ। मैं अकेले रहती हूँ, काम के सिलसिले में शायद ही कभी किसी से मिलती हूँ, ज़्यादातर काम फ़ोन पर ही निपटाती हूँ, मेरी गर्लफ्रेंड्स अलग-अलग लोगों की हैं, मैं 90% समय बाहर खाना खाती हूँ, मैं बस अकेले में लंबी तैराकी करती हूँ, मेरा एकमात्र शौक अकेले में पुराने रिकॉर्ड सुनना है, और मैं अपना काम तभी कर पाती हूँ जब मैं अकेले में उस पर ध्यान केंद्रित करती हूँ। मेरे कुछ दोस्त हैं, लेकिन इस उम्र में तो सब व्यस्त होते हैं, और हर समय मिलना नामुमकिन है। मुझे यकीन है कि आप जानती हैं कि यह ज़िंदगी कैसी होती है।”

“हाँ, लगभग,” मैंने कहा।

उसने अपने गिलास में बर्फ के ऊपर और व्हिस्की डाली, उंगली से उसे हिलाया और एक घूंट लिया। “फिर मैंने गंभीरता से सोचना शुरू किया। अब मैं आगे क्या करने वाला था? क्या मैं इसी तरह परेशान करने वाले फोन कॉल और उल्टी जैसी समस्याओं से जूझता रहा?”

“तुम्हें गर्लफ्रेंड मिल सकती थी। तुम्हारी अपनी ही कोई लड़की।”

“मैंने इस बारे में सोचा था, बिल्कुल। उस समय मेरी उम्र सत्ताईस साल थी, शादी करके बसने के लिए यह कोई बुरी उम्र नहीं थी। लेकिन मैं उस तरह का इंसान नहीं हूँ। मैं इतनी आसानी से हार नहीं मान सकता था। मैं मतली और फोन कॉल जैसी इतनी छोटी और बेमतलब की चीजों से खुद को हारने नहीं दे सकता था, अपनी पूरी जीवनशैली को इस तरह बदलने नहीं दे सकता था। इसलिए मैंने पलटवार करने का फैसला किया। मैं तब तक लड़ूंगा जब तक मेरी शारीरिक और मानसिक शक्ति का आखिरी कतरा भी निकल न जाए।”

"बहुत खूब।"

"मुझे बताइए, श्री मुराकामी, आप क्या करते?"

मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य हो रहा है। मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है।" और यह सच था: मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था।

“उसके बाद भी लंबे समय तक लगातार उल्टी और चक्कर आते रहे। मेरा वज़न बहुत तेज़ी से कम हो गया। ज़रा रुकिए—देखिए: 4 जून को मेरा वज़न 141 पाउंड था। 21 जून को 134 पाउंड। 10 जुलाई को, बाप रे! 128 पाउंड! मेरी लंबाई के हिसाब से तो यह लगभग अकल्पनीय है! मेरे कोई भी कपड़े मुझे फिट नहीं आते थे। चलते समय मुझे अपनी पैंट को ऊपर पकड़ना पड़ता था।”

"मुझे एक सवाल पूछने दीजिए: आपने बस एक आंसरिंग मशीन या ऐसा ही कुछ क्यों नहीं लगा दिया?"

“क्योंकि मैं भागना नहीं चाहता था, ज़ाहिर है। अगर मैं भाग जाता, तो यह दुश्मन के सामने हार मान लेने जैसा होता। यह इच्छाशक्ति की लड़ाई थी! या तो वह थककर चूर हो जाता या मैं मर जाता। उल्टी के मामले में भी मैंने यही तरीका अपनाया। मैंने इसे वज़न घटाने का एक आदर्श तरीका मान लिया। सौभाग्य से, मेरी मांसपेशियों में कोई ज़्यादा कमी नहीं आई, और मैं अपना काम और रोज़मर्रा के काम करता रहा। इसलिए मैंने फिर से पीना शुरू कर दिया। मैं नाश्ते में बीयर पीता और सूरज ढलने के बाद खूब व्हिस्की पीता। मैं चाहे पीता या नहीं, मुझे उल्टी तो आती ही थी, तो फिर क्यों न पी लूँ? पीने से अच्छा लगता था, और सब कुछ ज़्यादा समझ में आता था।”

“तो फिर मैंने अपने बचत खाते से कुछ पैसे निकाले और अपने नए शरीर के आकार के हिसाब से एक सूट और दो पैंट सिलवाए। दर्जी के शीशे में खुद को इतना पतला देखकर मुझे अच्छा लगा। अब सोचता हूँ तो उल्टी करना कोई बड़ी बात नहीं थी। यह बवासीर या दांत सड़ने से कहीं कम दर्दनाक थी, और दस्त से कहीं ज़्यादा सभ्य थी। वैसे, यह तुलनात्मक था। पोषण की समस्या हल हो गई थी और कैंसर की समस्या भी दूर हो गई थी, तो उल्टी करना लगभग हानिरहित था। मतलब, अमेरिका में तो वज़न घटाने के लिए उल्टी की दवाइयाँ तक बेची जाती हैं।”

मैंने कहा, "तो फिर, 14 जुलाई तक उल्टी और फोन कॉल का सिलसिला जारी रहा, क्या बस इतना ही था?"

“सच कहूँ तो—एक मिनट रुकिए—सच कहूँ तो, उल्टी का मेरा आखिरी दौर 14 जुलाई को सुबह साढ़े नौ बजे आया था, जब मैंने टोस्ट, टमाटर का सलाद और दूध उल्टी कर दिया था। आखिरी फोन कॉल उसी रात दस बजकर पच्चीस मिनट पर आया था, जब मैं एरॉल गार्नर का 'कॉन्सर्ट बाय द सी' सुन रहा था और सीग्राम्स वीओ पी रहा था। है ना काम की बात, इस तरह डायरी रखना?”

“बिल्कुल सही,” मैंने सहमति जताते हुए कहा। “लेकिन आप कह रहे हैं कि 14 जुलाई के बाद दोनों चीजें अचानक रुक गईं?”

“बस यूं ही,” उन्होंने कहा। “यह हिचकॉक की फिल्म 'द बर्ड्स' जैसा था। अगली सुबह आप दरवाजा खोलते हैं और सब कुछ गायब हो जाता है। जी मिचलाना, शरारती फोन: मुझे फिर कभी ऐसा कुछ नहीं हुआ। मेरा वजन तुरंत बढ़कर 140 पाउंड हो गया, और नया सूट और पैंट अभी भी मेरी अलमारी में टंगे हुए हैं। वे यादगार चीजों की तरह हैं।”

और फोन पर बात करने वाला वह व्यक्ति, अंत तक एक ही बात को एक ही तरीके से दोहराता रहा?

उन्होंने अपना सिर हल्का सा हिलाया और मेरी तरफ कुछ अस्पष्ट नज़र से देखा। “बिल्कुल नहीं,” उन्होंने कहा। “उनकी आखिरी कॉल अलग थी। पहले उन्होंने मेरा नाम लिया। यह कोई नई बात नहीं थी। लेकिन फिर उन्होंने पूछा, ‘क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ?’ उसके बाद वे बिना कुछ बोले बस इंतज़ार करते रहे। मैं भी चुप रहा। हम दोनों में से किसी ने भी एक शब्द

नहीं कहा, शायद दस-पंद्रह सेकंड तक। फिर उन्होंने फोन काट दिया, और सिर्फ डायल टोन की आवाज़ सुनाई दी।”

“सच में, उसने बस इतना ही कहा? ‘क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?’”

“बिल्कुल यही बात है। उसने धीरे-धीरे शब्द बोले: ‘क्या तुम जानते हो मैं कौन हूँ?’ मुझे उस आवाज़ की ज़रा भी याद नहीं थी। कम से कम पिछले पाँच-छह सालों में जिन लोगों से मेरा वास्ता पड़ा था, उनमें से किसी की भी आवाज़ ऐसी नहीं थी। शायद वो मेरे बचपन का कोई दोस्त रहा हो, या कोई ऐसा जिससे मैंने मुश्किल से ही बात की हो, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैंने ऐसा क्या किया होगा जिससे कोई मुझसे इतनी नफ़रत करे, और मैं इतना मशहूर भी नहीं हूँ कि कोई दूसरा इलस्ट्रेटर मुझसे दुश्मनी रखे। बेशक, जैसा कि मैंने आपको बताया है, मेरी प्रेम कहानी को लेकर मेरा ज़मीर पूरी तरह साफ़ नहीं था, मैं यह मानता हूँ। सत्ताईस साल जीने के बाद मैं कोई भोला-भाला बच्चा तो नहीं था। लेकिन मैं उन सब लोगों की आवाज़ें जानता था। मैं उन्हें पल भर में पहचान लेता।”

मैंने कहा, "फिर भी, आपको यह मानना पड़ेगा कि अपने दोस्तों के पार्टनर के साथ सोने में विशेषज्ञता हासिल करना बिल्कुल सामान्य बात नहीं है।"

"तो, श्री मुराकामी, आप मुझसे यह कह रहे हैं कि मेरे अपने अपराधबोध की भावनाएँ—जिनके बारे में मैं स्वयं अनभिज्ञ था—मतली का रूप ले सकती थीं या मुझे ऐसी बातें सुना सकती थीं जो वास्तव में मौजूद नहीं थीं?"

“नहीं, मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ,” मैंने उसे सुधारते हुए कहा। “तुम कह रहे हो।”

"हम्म," उसने व्हिस्की का एक घूंट लेते हुए और छत की ओर देखते हुए कहा।

मैंने कहा, “और भी संभावनाएं हैं। हो सकता है कि आपके जिन दोस्तों को आपने धोखा दिया है, उनमें से किसी ने आपको रोकने और आपको सबक सिखाने या पीछे हटने की चेतावनी देने के लिए एक निजी जासूस को काम पर रखा हो। और मतली महज़ एक अस्थायी स्थिति हो सकती है जो संयोगवश उन फोन कॉल्स के साथ हुई हो।”

“हम्म,” उसने फिर कहा। “दोनों बातें समझ में आती हैं। शायद इसीलिए तुम लेखक हो और मैं नहीं। लेकिन फिर भी, जासूसी वाली थ्योरी की बात करें तो, मैंने उन महिलाओं के साथ

सोना बंद नहीं किया, लेकिन अचानक फोन आने बंद हो गए। ऐसा क्यों हुआ होगा? यह बात समझ में नहीं आती।"

"हो सकता है कि वह आदमी तंग आ गया हो, या उसके पास जासूस को बार-बार काम पर रखने के लिए पैसे खत्म हो गए हों। खैर, यह सिर्फ एक अनुमान है। मैं आपको ऐसे सैकड़ों अनुमान दे सकता हूँ। असली सवाल यह है कि आप कौन सा अनुमान स्वीकार करने को तैयार हैं और उससे आप क्या सीखते हैं।"

"इससे सीखो?" उसने तीखे स्वर में पूछा। उसने कुछ सेकंड के लिए अपने व्हिस्की के गिलास का निचला हिस्सा अपने माथे पर टिकाया। "तुम्हारा मतलब क्या है, 'इससे सीखो'?"

"अगर ऐसा दोबारा हुआ तो क्या करेंगे, यह तो ज़ाहिर सी बात है। अगली बार शायद चालीस दिन में भी बात खत्म न हो। जो चीज़ें बिना किसी वजह के शुरू होती हैं, वे बिना किसी वजह के ही खत्म होती हैं। और इसका उल्टा भी सच हो सकता है।"

"कितनी घटिया बात कही आपने," उसने हंसते हुए कहा। फिर गंभीर होते हुए उसने आगे कहा, "लेकिन यह अजीब है। जब तक आपने यह नहीं कहा, तब तक मुझे कभी यह ख्याल ही नहीं आया था कि ऐसा दोबारा हो सकता है। क्या आपको लगता है कि ऐसा होगा?"

मुझे कैसे पता चलेगा?

अपने गिलास को बीच-बीच में घुमाते हुए, उसने व्हिस्की के कुछ घूंट लिए। गिलास खाली होने पर, उसने उसे मेज पर रख दिया और टिशू पेपर से अपनी नाक पोंछी।

उन्होंने कहा, "शायद अगली बार ऐसा किसी और के साथ हो जाए। उदाहरण के लिए, आपके साथ, श्री मुराकामी। मुझे शक है कि आप भी उतने निर्दोष नहीं हैं।"



तब से हम दोनों कुछ मौकों पर मिले हैं, अपने साधारण से रिकॉर्ड्स एक-दूसरे को सुनाने और साथ में ड्रिंक करने के लिए, शायद साल में दो या तीन बार। मैं डायरी लिखने वाला इंसान नहीं हूँ, इसलिए पक्का नहीं कह सकता। सौभाग्य से, न तो उसे और न ही मुझे अब तक मतली या फोन की कोई शिकायत हुई है।

— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

सातवां आदमी

सातवें व्यक्ति ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, "एक विशाल लहर मुझे लगभग बहा ले गई थी। यह घटना सितंबर की एक दोपहर को घटी थी, जब मैं दस साल का था।"

उस रात अपनी कहानी सुनाने वाला वह आखिरी व्यक्ति था। घड़ी की सुइयाँ दस बज चुकी थीं। घेरे में बैठे छोटे समूह को बाहर अँधेरे में पश्चिम की ओर बहती हवा की तेज़ आवाज़ सुनाई दे रही थी। हवा पेड़ों को हिला रही थी, खिड़कियों को खड़खड़ा रही थी, और अंत में एक आखिरी सीटी बजाते हुए घर के पास से गुज़र गई।

उन्होंने कहा, "मैंने अपनी जिंदगी में इतनी बड़ी लहर कभी नहीं देखी थी। एक अजीब लहर। बिलकुल विशालकाय।"

वह रुका।

“यह मुझे बाल-बाल बचा गया, लेकिन मेरी जगह इसने मेरी हर वो चीज़ निगल ली जो मेरे लिए सबसे ज़्यादा मायने रखती थी और उसे दूसरी दुनिया में ले गया। मुझे उसे फिर से पाने और उस अनुभव से उबरने में सालों लग गए— वो अनमोल साल जो कभी वापस नहीं आ सकते।”

सातवां व्यक्ति लगभग पचास वर्ष का लग रहा था। वह दुबला-पतला, लंबा, मूंछों वाला था और उसकी दाहिनी आंख के पास एक छोटा लेकिन गहरा निशान था, जो किसी छोटी सी छुरी के वार से बना प्रतीत होता था। उसके छोटे बालों में जगह-जगह सफेद, कड़े गुच्छे थे। उसके चेहरे पर वही भाव था जो तब दिखाई देता है जब लोग अपने भाव व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं ढूंढ पाते। हालांकि, उसके मामले में, यह भाव मानो बहुत पहले से उसके चेहरे पर था, जैसे उसका अभिन्न अंग हो। उस व्यक्ति ने एक सादी नीली कमीज के ऊपर एक धूसर ट्वीड कोट पहना हुआ था और वह बीच-बीच में अपना हाथ कॉलर पर फेरता रहता था। वहां मौजूद किसी को भी उसका नाम या पेशा नहीं पता था।

उसने अपना गला साफ किया, और एक-दो पल के लिए उसके शब्द मौन में खो गए। बाकी लोग उसके बोलने का इंतजार करते रहे।

उन्होंने कहा, “मेरे मामले में, यह एक लहर थी। बेशक, मैं यह नहीं बता सकता कि आपमें से प्रत्येक के लिए यह क्या होगा। लेकिन मेरे मामले में, यह एक विशाल लहर का रूप ले लिया।

यह एक दिन अचानक, बिना किसी चेतावनी के, एक विशाल लहर के रूप में मेरे सामने आ गई। और यह विनाशकारी थी।"



मैं एस——प्रीफेक्चर के एक समुद्रतटीय कस्बे में पला-बढ़ा। वह इतना छोटा कस्बा था कि अगर मैं उसका नाम बताऊं तो शायद ही आपमें से कोई उसे पहचान पाए। मेरे पिताजी स्थानीय डॉक्टर थे, इसलिए मेरा बचपन काफी सुखमय बीता। जब से मुझे याद है, मेरा सबसे अच्छा दोस्त एक लड़का था जिसे मैं के नाम से पुकारता था। उसका घर हमारे घर के पास ही था और वह मुझसे एक कक्षा पीछे था। हम भाइयों की तरह थे, साथ-साथ स्कूल आते-जाते थे और घर आकर हमेशा साथ खेलते थे। हमारी लंबी दोस्ती में हमने कभी एक बार भी लड़ाई नहीं की। मेरा एक भाई था, जो मुझसे छह साल बड़ा था, लेकिन उम्र के अंतर और हमारे स्वभाव में भिन्नता के कारण हम कभी बहुत करीब नहीं रहे। मेरा सच्चा भाई जैसा स्नेह मेरे दोस्त के के लिए था।

के एक दुबला-पतला, कमज़ोर लड़का था, जिसकी रंगत फीकी थी और चेहरा इतना सुंदर था कि मानो किसी लड़की का हो। उसे बोलने में कुछ दिक्कत थी, जिसकी वजह से जो लोग उसे नहीं जानते थे, उन्हें वह मंदबुद्धि लग सकता था। और क्योंकि वह इतना कमज़ोर था, मैं हमेशा स्कूल हो या घर, उसका ख्याल रखता था। मैं थोड़ा लंबा-चौड़ा और फुर्तीला था, और बाकी बच्चे मुझे बहुत मानते थे। लेकिन के के साथ समय बिताने का सबसे बड़ा कारण यह था कि वह बहुत ही प्यारा और मासूम दिल का लड़का था। वह बिल्कुल भी मंदबुद्धि नहीं था, लेकिन अपनी बोलने की समस्या की वजह से स्कूल में उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं था। ज़्यादातर विषयों में वह मुश्किल से ही पढ़ाई में पीछे रह जाता था। लेकिन कला की कक्षा में वह बहुत अच्छा था। बस उसे एक पेंसिल या रंग दे दो, वह ऐसी जीवंत तस्वीरें बना देता था कि शिक्षक भी हैरान रह जाते थे। उसने एक के बाद एक कई प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते, और मुझे यकीन है कि अगर वह बड़े होकर भी कला को जारी रखता, तो एक मशहूर चित्रकार बन जाता। उसे समुद्री दृश्य बनाना पसंद था। वह घंटों समुद्र तट पर जाकर चित्रकारी करता था। मैं अक्सर उसके बगल में बैठकर उसके ब्रश की तेज और सटीक चाल

को देखता रहता था, और सोचता था कि कैसे कुछ ही सेकंड में वह खाली सफेद कागज पर इतनी जीवंत आकृतियाँ और रंग बना लेता था। अब मुझे एहसास होता है कि यह विशुद्ध प्रतिभा का कमाल था।

एक साल, सितंबर में, हमारे इलाके में एक भयंकर तूफान आया। रेडियो पर बताया गया कि यह पिछले दस सालों का सबसे भयानक तूफान होगा। स्कूल बंद कर दिए गए और शहर की सभी दुकानों ने तूफान की तैयारी में अपने शटर नीचे कर लिए। सुबह-सुबह ही मेरे पिताजी और भाई घर के सभी दरवाजों को कीलों से बंद करने में जुट गए, जबकि मेरी माँ ने पूरा दिन रसोई में आपातकालीन राशन बनाने में बिताया। हमने बोतलों और पानी की बोतलों में पानी भर लिया और संभावित निकासी के लिए अपनी सबसे ज़रूरी चीज़ें थैलों में पैक कर लीं। बड़ों के लिए, तूफान एक झंझट और एक खतरा था जिसका उन्हें लगभग हर साल सामना करना पड़ता था, लेकिन बच्चों के लिए, जो ऐसी व्यावहारिक चिंताओं से दूर थे, यह बस एक बड़ा सा सर्कस था, रोमांच का एक अद्भुत स्रोत।

दोपहर के ठीक बाद आसमान का रंग अचानक बदलने लगा। उसमें कुछ अजीब और अवास्तविक सा था। मैं बरामदे में बाहर आसमान को देखता रहा, जब तक कि हवा ज़ोर से चलने लगी और बारिश की बूँदें घर पर एक अजीब सी सूखी आवाज़ के साथ गिरने लगीं, जैसे मुट्ठी भर रेत फेंकी जा रही हो। फिर हमने आख़िरी तूफ़ान का दरवाज़ा बंद कर दिया और अँधेरे घर के एक कमरे में इकट्ठा होकर रेडियो सुनने लगे। रेडियो पर बताया गया कि इस तूफ़ान में ज़्यादा बारिश नहीं होगी, लेकिन हवाएँ बहुत नुकसान पहुँचा रही हैं, घरों की छतें उड़ा रही हैं और जहाज़ पलट रही हैं। उड़ते हुए मलबे से कई लोग मारे गए या घायल हुए हैं। बार-बार लोगों को अपने घर न छोड़ने की चेतावनी दी जा रही थी। थोड़ी-थोड़ी देर में घर चरमराता और काँपता था, जैसे कोई बड़ा हाथ उसे हिला रहा हो, और कभी-कभी किसी भारी चीज़ के तूफ़ान के दरवाज़े से टकराने की ज़ोरदार आवाज़ आती थी। मेरे पिताजी ने अंदाज़ा लगाया कि ये पड़ोसियों के घरों से उड़ती हुई टाइलें हैं। दोपहर के भोजन में हमने माँ के बनाए हुए चावल और ऑमलेट खाए, रेडियो सुनते रहे और तूफ़ान के गुज़र जाने का इंतज़ार करते रहे।

लेकिन तूफान के गुजरने का कोई आसार नहीं था। रेडियो पर खबर थी कि एस—— प्रीफेक्चर में तट पर पहुंचते ही इसकी रफ्तार धीमी पड़ गई थी और अब यह एक धीमे धावक की गति से उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ रहा था। हवा लगातार ज़ोर-ज़ोर से गरज रही थी मानो ज़मीन पर खड़ी हर चीज़ को उखाड़कर दुनिया के कोने-कोने तक ले जाने की कोशिश कर रही हो।

लगभग एक घंटा बीत चुका था और हवा अपने चरम पर थी, तभी अचानक चारों ओर सन्नाटा छा गया। एकदम सन्नाटा छा गया, दूर से किसी चिड़िया की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। मेरे पिताजी ने तूफान से बचाव वाले दरवाजे को थोड़ा सा खोलकर बाहर देखा। हवा रुक चुकी थी और बारिश भी थम गई थी। आसमान में घने, भूरे बादल छाए हुए थे और कहीं-कहीं नीले रंग के धब्बे दिखाई दे रहे थे। आंगन के पेड़ों से अब भी भारी मात्रा में पानी टपक रहा था।

“हम तूफान के केंद्र में हैं,” मेरे पिता ने मुझसे कहा। “कुछ देर के लिए, शायद पंद्रह-बीस मिनट तक, ऐसे ही शांति रहेगी, जैसे कोई विराम हो। फिर हवा पहले की तरह चलने लगेगी।”

मैंने उनसे पूछा कि क्या मैं बाहर जा सकता हूँ। उन्होंने कहा कि अगर मैं ज्यादा दूर न जाऊँ तो थोड़ी देर टहल सकता हूँ। "लेकिन हवा चलने का पहला संकेत मिलते ही तुम तुरंत यहीं वापस आ जाना।"

मैं बाहर निकला और आसपास देखने लगा। यह विश्वास करना मुश्किल था कि कुछ मिनट पहले तक वहाँ भयंकर तूफान चल रहा था। मैंने आकाश की ओर देखा: मुझे लगा जैसे तूफान की विशाल "आँख" ऊपर से हम सब पर अपनी ठंडी निगाहें गड़ाए खड़ी कर रही हो। दरअसल, ऐसी कोई "आँख" थी ही नहीं: हम बस घूमती हुई हवा के उस घेरे के बीचोंबीच उस क्षणिक शांत जगह पर थे।

जब बड़े लोग घर में हुए नुकसान का जायज़ा ले रहे थे, मैं समुद्र तट पर चला गया। सड़क टूटी हुई पेड़ों की डालियों से भरी पड़ी थी, जिनमें से कुछ चीड़ की मोटी डालियाँ थीं जिन्हें एक वयस्क भी अकेले नहीं उठा सकता था। हर जगह छत की टूटी हुई टाइलें थीं, कारों के शीशे टूटे हुए थे, और यहाँ तक कि एक कुत्ते का घर भी सड़क के बीचोंबीच गिरा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो आसमान से कोई बड़ा हाथ आया हो और अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को कुचल दिया हो।

के ने मुझे सड़क पर चलते देखा और बाहर आ गई।

“तुम कहाँ जा रहे हो?” उसने पूछा।

मैंने कहा, "बस समुद्र तट देखने जा रहा हूँ।"

बिना कुछ कहे, वह मेरे साथ आ गया। उसके पास एक छोटा सा सफेद कुत्ता था जो हमारे पीछे-पीछे चल रहा था।

"जैसे ही हमें थोड़ी सी भी हवा मिलेगी, हम सीधे घर वापस चले जाएंगे," मैंने कहा, और के ने मुझे चुपचाप सिर हिलाकर सहमति दी।

समुद्र तट मेरे घर से दो सौ गज की दूरी पर था। यह कंक्रीट के एक विशाल बांध से घिरा हुआ था, जो उन दिनों मेरी ऊंचाई जितना ऊंचा था। पानी के किनारे तक पहुंचने के लिए हमें एक छोटी सी सीढ़ी चढ़नी पड़ती थी। हम लगभग हर दिन यहीं खेलने आते थे, इसलिए इसका कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं था जिसे हम अच्छी तरह से न जानते हों। लेकिन तूफान के केंद्र में, सब कुछ अलग दिख रहा था: आकाश और समुद्र का रंग, लहरों की आवाज़, ज्वार की गंध, तट का पूरा विस्तार। हम कुछ देर तक बांध के ऊपर बैठे रहे, एक-दूसरे से एक शब्द भी बोले बिना नज़ारे का आनंद लेते रहे। हम एक भयंकर तूफान के बीच में थे, फिर भी लहरें अजीब तरह से शांत थीं। और वह बिंदु जहां वे समुद्र तट से टकराती थीं, सामान्य से कहीं अधिक दूर था, यहां तक कि कम ज्वार के समय भी। सफेद रेत हमारे सामने दूर-दूर तक फैली हुई थी, जहां तक हमारी नज़र जा सकती थी। वह विशाल जगह बिना फर्नीचर वाले कमरे जैसी लग रही थी, सिवाय समुद्र तट पर बिखरे हुए कचरे के।

हम तटबंध के दूसरी ओर उतरे और चौड़े समुद्र तट पर टहलते हुए वहाँ पड़ी चीज़ों को निहारने लगे। प्लास्टिक के खिलौने, चप्पलें, लकड़ी के टुकड़े जो शायद कभी फर्नीचर के हिस्से रहे होंगे, कपड़े, अनोखी बोतलें, विदेशी भाषा में लिखे टूटे हुए बक्से और अन्य कम पहचानी जाने वाली वस्तुएँ: यह एक बड़े मिठाई के भंडार जैसा था। तूफान इन चीजों को बहुत दूर से उड़ाकर लाया होगा। जब भी कोई अनोखी चीज़ हमारा ध्यान खींचती, हम उसे उठाकर चारों ओर से देखते और जब हम देख लेते, तो के का कुत्ता आकर उसे सूंघता।

हमें ऐसा करते हुए अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि मुझे एहसास हुआ कि लहरें मेरे ठीक बगल में आ आई हैं। बिना किसी आवाज़ या चेतावनी के, समुद्र ने अचानक अपनी लंबी,

चिकनी जीभ को उस जगह तक फैला दिया जहाँ मैं किनारे पर खड़ा था। मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। हालाँकि मैं बच्चा था, लेकिन मैं किनारे पर ही पला-बढ़ा था और जानता था कि समुद्र कितना डरावना हो सकता है—वह कितनी बेरहमी से बिना किसी चेतावनी के हमला कर सकता है। इसलिए मैंने पानी की सतह से काफी दूर रहने का ध्यान रखा था। इसके बावजूद, लहरें मेरे खड़े होने की जगह से कुछ इंच की दूरी तक आ गईं। और फिर, उतनी ही खामोशी से, पानी पीछे हट गया—और वहीं रुक गया। जो लहरें मेरी ओर आ रही थीं, वे उतनी ही हानिरहित थीं जितनी कोई लहर हो सकती है—रेतीले किनारे का एक कोमल बहाव। लेकिन उनमें कुछ अशुभ सा था—किसी सरीसृप की त्वचा के स्पर्श जैसा—जिसने मेरी रीढ़ में सिहरन पैदा कर दी थी। मेरा डर पूरी तरह निराधार था—और पूरी तरह वास्तविक भी। मुझे सहज रूप से पता था कि वे जीवित थीं। लहरें जीवित थीं। उन्हें पता था कि मैं यहाँ हूँ और वे मुझे पकड़ने की योजना बना रहे थे। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई विशालकाय नरभक्षी जानवर किसी घास के मैदान में लेटा हो, और उस पल का सपना देख रहा हो जब वह झपट्टा मारेगा और अपने नुकीले दाँतों से मुझे टुकड़े-टुकड़े कर देगा। मुझे भागना ही था।

“मैं यहाँ से जा रही हूँ!” मैंने के को चिल्लाकर कहा। वह शायद दस गज दूर समुद्र तट पर बैठा था, मेरी तरफ पीठ करके उकड़ू बैठा था और कुछ देख रहा था। मुझे यकीन था कि मैंने काफी जोर से चिल्लाया था, लेकिन मेरी आवाज़ उस तक नहीं पहुँची। शायद वह अपनी खोज में इतना मग्न था कि मेरी आवाज़ का उस पर कोई असर ही नहीं हुआ। के ऐसा ही था। वह किसी काम में इतना मग्न हो जाता था कि बाकी सब कुछ भूल जाता था। या शायद मैंने उतनी जोर से नहीं चिल्लाया था जितना मैंने सोचा था। मुझे याद है कि मेरी आवाज़ मुझे अजीब सी लग रही थी, जैसे किसी और की हो।

फिर मुझे एक गहरी गड़गड़ाहट सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे धरती हिल रही हो। दरअसल, गड़गड़ाहट से पहले मुझे एक और आवाज़ सुनाई दी, एक अजीब सी गड़गड़ाहट, मानो ज़मीन में किसी छेद से बहुत सारा पानी ऊपर आ रहा हो। यह कुछ देर तक जारी रही, फिर रुक गई, जिसके बाद मुझे वह अजीब सी गड़गड़ाहट सुनाई दी। लेकिन इतनी आवाज़ भी K को ऊपर देखने के लिए काफ़ी नहीं थी। वह अभी भी उकड़ू बैठा था, अपने पैरों के पास किसी चीज़ को गहरी एकाग्रता से देख रहा था। शायद उसने गड़गड़ाहट नहीं सुनी होगी।

इतनी ज़ोरदार आवाज़ को वह कैसे नहीं सुन पाया, यह मेरी समझ से परे है। यह अजीब लग सकता है, लेकिन हो सकता है कि वह कोई ऐसी आवाज़ हो जिसे सिर्फ़ मैं ही सुन सकता था—कोई खास तरह की आवाज़। K के कुत्ते को भी वह आवाज़ सुनाई नहीं दी, और आप जानते ही हैं कि कुत्ते आवाज़ के प्रति कितने संवेदनशील होते हैं।

मैंने खुद से कहा कि मैं के के पास दौड़ूं, उसे पकड़ लूं और वहां से भाग जाऊं। यही एकमात्र उपाय था। मुझे पता था कि लहर आ रही है, और के को नहीं पता था। हालांकि मुझे साफ-साफ पता था कि मुझे क्या करना चाहिए, फिर भी मैं दूसरी तरफ दौड़ने लगी—पूरी रफ्तार से अकेले ही बांध की ओर। मुझे यकीन है कि ऐसा करने के लिए मुझे डर ने मजबूर किया, एक ऐसा डर जो इतना हावी था कि मेरी आवाज ही रुक गई और मेरे पैर अपने आप दौड़ने लगे। मैं नरम रेतीले किनारे पर लड़खड़ाते हुए तटबंध तक दौड़ी, जहां मैंने मुड़कर के को आवाज दी।

"जल्दी करो, के! वहाँ से निकल जाओ! लहर आ रही है!" इस बार मेरी आवाज़ ठीक से सुनाई दी। मुझे एहसास हुआ कि गड़गड़ाहट बंद हो गई थी, और अब, आखिरकार, के ने मेरी चीख सुनी और ऊपर देखा। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। एक विशाल साँप जैसी लहर, जिसका सिर ऊँचा था, वार करने के लिए तैयार, किनारे की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी। मैंने अपने जीवन में ऐसा कुछ कभी नहीं देखा था। यह कम से कम तीन मंज़िला इमारत जितनी ऊँची होगी। बिना आवाज़ के (कम से कम मेरी याद में, वह दृश्य बिना आवाज़ के है), वह के के पीछे आसमान को ढकते हुए उठी। के कुछ सेकंड तक मुझे देखता रहा, कुछ समझ नहीं पा रहा था। फिर, जैसे कुछ महसूस करते हुए, वह लहर की ओर मुड़ा। उसने भागने की कोशिश की, लेकिन अब भागने का समय नहीं था। अगले ही पल, लहर ने उसे निगल लिया। वह उस पर पूरी ताकत से टकराई, जैसे कोई ट्रेन पूरी गति से चल रही हो।

लहर किनारे से टकराई, लाखों उछलती लहरों में बिखर गई जो हवा में उड़ती हुई उस बांध के ऊपर से गुज़र गईं जहाँ मैं खड़ा था। मैं ब्रेकवाटर के पीछे छिपकर उसके प्रभाव से बच गया। पानी की बौछार से मेरे कपड़े भीग गए, बस इतना ही। मैं वापस दीवार पर चढ़ गया और किनारे का जायज़ा लिया। तब तक लहर मुड़ चुकी थी और एक ज़ोरदार चीख के साथ वापस समुद्र की ओर भाग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे किसी विशाल कालीन का एक टुकड़ा हो

जिसे दुनिया के दूसरे छोर पर बैठे किसी व्यक्ति ने खींच लिया हो। किनारे पर मुझे K या उसके कुत्ते का कोई निशान नहीं मिला। वहाँ बस खाली किनारा था। पीछे हटती लहर किनारे से इतना पानी खींच लाई थी कि ऐसा लग रहा था जैसे पूरा समुद्र तल दिखाई दे रहा हो। मैं ब्रेकवाटर पर अकेला खड़ा था, अपनी जगह पर जम गया था।

चारों ओर फिर सन्नाटा छा गया—एक भयानक सन्नाटा, मानो धरती से आवाज़ ही छिन गई हो। लहर K को निगल गई और दूर कहीं गायब हो गई। मैं वहीं खड़ा सोचता रहा कि क्या करूँ। क्या मुझे समुद्र तट पर जाना चाहिए? K शायद वहीं कहीं रेत में दबी हो... लेकिन मैंने बांध न छोड़ने का फैसला किया। मुझे अनुभव से पता था कि बड़ी लहरें अक्सर दो-तीन के समूह में आती हैं।

मुझे ठीक से याद नहीं कि कितना समय बीता—शायद दस या बीस सेकंड का सन्नाटा छाया रहा—और ठीक जैसा मैंने अनुमान लगाया था, अगली लहर आ गई। एक और ज़ोरदार गर्जना से किनारा हिल गया, और फिर, आवाज़ थमने के बाद, एक और विशाल लहर ने अपना सिर उठाकर वार किया। वह मेरे सामने खड़ी थी, मानो आसमान को ढक रही हो, किसी जानलेवा चट्टान की तरह। लेकिन इस बार मैं नहीं भागा। मैं समुद्र की दीवार पर जड़वत खड़ा रहा, जैसे मंत्रमुग्ध होकर उसके हमले का इंतज़ार कर रहा हो। मैंने सोचा, अब जब के को ले जाया जा चुका है, तो भागने का क्या फायदा? या शायद मैं डर से जम ही गया था। मुझे पक्का नहीं पता कि किस चीज़ ने मुझे वहाँ खड़ा रखा था।

दूसरी लहर भी पहली जितनी ही बड़ी थी—शायद उससे भी बड़ी। मेरे सिर के बहुत ऊपर से वह नीचे गिरने लगी, अपना आकार खोती हुई, मानो कोई ईंट की दीवार धीरे-धीरे ढह रही हो। वह इतनी विशाल थी कि अब वह असली लहर जैसी नहीं लग रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह कोई और ही चीज़ हो, किसी दूसरी, दूर की दुनिया से आई हुई कोई चीज़, जिसने संयोगवश लहर का रूप धारण कर लिया हो। मैंने खुद को उस पल के लिए तैयार कर लिया जब अंधेरा मुझे अपनी गिरफ्त में ले लेगा। मैंने अपनी आँखें भी बंद नहीं कीं। मुझे याद है कि मेरा दिल अविश्वसनीय स्पष्टता से धड़क रहा था।

जैसे ही लहर मेरे सामने आई, वह रुक गई। मानो अचानक उसकी सारी ऊर्जा समाप्त हो गई हो, उसकी आगे बढ़ने की गति रुक गई हो और वह अंतरिक्ष में स्थिर होकर वहीं ठहर गई हो,

मानो शांत होकर बिखर रही हो। और उसकी चोटी पर, उसकी क्रूर, पारदर्शी जीभ के भीतर, मैंने K को देखा।

आपमें से कुछ लोगों को इस पर यकीन करना मुश्किल लग सकता है, और अगर ऐसा है तो मैं आपको दोष नहीं देता। मुझे खुद भी अब तक इसे स्वीकार करने में परेशानी हो रही है। मैं जो कुछ मैंने देखा उसे आपसे बेहतर समझा नहीं सकता, लेकिन मुझे पता है कि यह कोई भ्रम या मतिभ्रम नहीं था। मैं आपको पूरी ईमानदारी से बता रहा हूँ कि उस पल क्या हुआ था—वास्तव में क्या हुआ था। लहर के ऊपरी सिरे पर, मानो किसी पारदर्शी कैप्सूल में बंद हो, के का शरीर एक तरफ लेटा हुआ तैर रहा था। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। के सीधे मेरी तरफ देख रहा था, मुस्कुरा रहा था। ठीक मेरे सामने, इतना करीब कि मैं हाथ बढ़ाकर उसे छू सकता था, मेरा दोस्त, मेरा दोस्त के था, जो कुछ ही पल पहले लहर में समा गया था। और वह मेरी तरफ मुस्कुरा रहा था। कोई साधारण मुस्कान नहीं—यह एक बड़ी, खुली हुई मुस्कान थी जो सचमुच कान से कान तक फैली हुई थी। उसकी ठंडी, जमी हुई आँखें मेरी आँखों में टिकी हुई थीं। वह अब वह के नहीं था जिसे मैं जानता था। और उसका दाहिना हाथ मेरी ओर फैला हुआ था, मानो वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे उस दूसरी दुनिया में खींच लाना चाहता हो जहाँ वह अब था। थोड़ा और करीब होता तो उसका हाथ मेरे हाथ को पकड़ लेता। लेकिन चूकने पर, के ने एक बार फिर मेरी ओर मुस्कुराया, उसकी मुस्कान पहले से कहीं अधिक चौड़ी थी।

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उसी समय बेहोश हो गई थी। होश में आते ही मैंने खुद को अपने पिता के क्लिनिक में बिस्तर पर पाया। जैसे ही मेरी नींद खुली, नर्स ने मेरे पिता को बुलाया, जो दौड़ते हुए आए। उन्होंने मेरी नब्ज़ जाँची, मेरी आँखों की पुतलियाँ जाँचीं और अपना हाथ मेरे माथे पर रखा। मैंने अपना हाथ हिलाने की कोशिश की, लेकिन उठा नहीं पाई। मुझे तेज़ बुखार था और मेरा दिमाग सुन्न हो गया था। ज़ाहिर है, मैं कुछ समय से तेज़ बुखार से जूझ रही थी। मेरे पिता ने मुझसे कहा, "तुम तीन दिन से सो रही थी।" एक पड़ोसी, जिसने सब कुछ देखा था, मुझे उठाकर घर ले गया। वे K को नहीं ढूंढ पाए थे। मैं अपने पिता से कुछ कहना चाहती थी। मुझे उनसे कुछ कहना ही था। लेकिन मेरी सुन्न और सूजी हुई जीभ से शब्द नहीं निकल रहे थे। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरे मुँह में कोई अजीब सा जीव बस गया हो। मेरे

पिता ने मुझसे मेरा नाम पूछा, लेकिन इससे पहले कि मुझे याद आता कि मेरा नाम क्या था, मैं फिर से बेहोश हो गई और अंधेरे में डूब गई।

कुल मिलाकर, मैं एक सप्ताह तक बिस्तर पर पड़ा रहा और मुझे तरल आहार दिया गया। मुझे कई बार उल्टी हुई और बेहोशी के दौरे भी पड़े। मेरे पिता ने बाद में बताया कि मेरी हालत इतनी खराब थी कि उन्हें डर था कि सदमे और तेज बुखार से मुझे स्थायी तंत्रिका संबंधी क्षति हो सकती है। फिर भी, किसी न किसी तरह मैं ठीक हो गया—कम से कम शारीरिक रूप से। लेकिन मेरा जीवन फिर कभी पहले जैसा नहीं रहा।

के का शव कभी नहीं मिला। उसका कुत्ता भी नहीं मिला। आमतौर पर जब उस इलाके में कोई डूब जाता था, तो शव कुछ दिनों बाद पूरब की ओर एक छोटी खाड़ी के किनारे बहकर आ जाता था। लेकिन के का शव कभी नहीं मिला। बड़ी-बड़ी लहरें शायद उसे बहुत दूर समुद्र में बहा ले गईं—इतनी दूर कि वह किनारे तक नहीं पहुँच सका। वह समुद्र की तलहटी में डूब गया होगा और मछलियाँ उसे खा गईं होंगी। स्थानीय मछुआरों के सहयोग से खोज बहुत लंबे समय तक चली, लेकिन अंततः वह धीमी पड़ गई। शव न मिलने के कारण कभी अंतिम संस्कार भी नहीं हुआ। आधे पागल से के के माता-पिता हर दिन समुद्र तट पर इधर-उधर भटकते रहते थे, या फिर वे घर में बंद होकर मंत्रों का जाप करते रहते थे।

हालांकि यह उनके लिए बहुत बड़ा झटका था, फिर भी के के माता-पिता ने मुझे कभी इस बात के लिए नहीं डांटा कि मैं उनके बेटे को तूफान के बीच समुद्र तट पर ले गया था। वे जानते थे कि मैं के को हमेशा अपने छोटे भाई की तरह प्यार करता था और उसकी रक्षा करता था। मेरे माता-पिता ने भी मेरी मौजूदगी में इस घटना का ज़िक्र कभी नहीं किया। लेकिन मैं सच जानता था। मैं जानता था कि अगर मैंने कोशिश की होती तो मैं के को बचा सकता था। शायद मैं दौड़कर उसके पास जाता और उसे लहरों की पहुँच से बाहर खींच लेता। यह बहुत मुश्किल होता, लेकिन जब मैंने घटनाओं के क्रम को याद किया, तो मुझे हमेशा लगा कि मैं ऐसा कर सकता था। जैसा कि मैंने पहले कहा, डर के मारे मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और सिर्फ अपनी जान बचाई। मुझे इस बात का और भी ज़्यादा दुख हुआ कि के के माता-पिता ने मुझे दोषी नहीं ठहराया और बाकी सबने भी मुझसे इस बारे में कुछ नहीं कहा। मुझे इस

भावनात्मक आघात से उबरने में बहुत समय लगा। मैं हफ़्तों तक स्कूल नहीं गया। मैंने मुश्किल से कुछ खाया और हर दिन बिस्तर पर लेटा छत को घूरता रहा।

के हमेशा वहीं होता था, लहर के किनारे पर लेटा हुआ, मेरी तरफ देखकर मुस्कुराता हुआ, हाथ फैलाए, इशारा करता हुआ। मैं उस भयावह छवि को अपने दिमाग से निकाल ही नहीं पा रही थी। और जब मैं सो पाती, तो वह मेरे सपनों में भी होती—बस फर्क इतना था कि सपनों में के लहर में अपने कैप्सूल से बाहर निकलता और मेरी कलाई पकड़कर मुझे वापस अपने साथ अंदर खींच लेता।

फिर मुझे एक और सपना आया। मैं समुद्र में तैर रही थी। गर्मी की एक खूबसूरत दोपहर थी, और मैं किनारे से दूर आराम से ब्रेस्टस्ट्रोक कर रही थी। सूरज की किरणें मेरी पीठ पर पड़ रही थीं, और पानी बहुत अच्छा लग रहा था। तभी अचानक, किसी ने मेरा दाहिना पैर पकड़ लिया। मुझे अपने टखने पर बर्फ जैसी ठंडी पकड़ महसूस हुई। यह इतनी मजबूत थी कि मैं उसे झटक नहीं पा रही थी। मुझे पानी के नीचे खींचा जा रहा था। मुझे वहाँ K का चेहरा दिखाई दिया। उसके चेहरे पर वही बड़ी सी मुस्कान थी, कान से कान तक फैली हुई, उसकी आँखें मेरी आँखों में गड़ी हुई थीं। मैंने चीखने की कोशिश की, लेकिन मेरी आवाज़ नहीं निकली। मैंने पानी निगल लिया, और मेरे फेफड़े पानी से भरने लगे।

मैं अंधेरे में चीखते हुए, हांफते हुए, पसीने से भीगा हुआ जागता हूं।

साल के अंत में, मैंने अपने माता-पिता से मुझे दूसरे शहर में जाने देने की विनती की। मैं उस समुद्र तट के पास नहीं रह सकती थी जहाँ K बह गया था, और मेरे बुरे सपने रुक ही नहीं रहे थे। अगर मैं वहाँ से नहीं निकलती, तो मैं पागल हो जाती। मेरे माता-पिता समझ गए और उन्होंने मेरे लिए कहीं और रहने का इंतज़ाम किया। मैं जनवरी में नागानो प्रांत में कोमोरो के पास एक पहाड़ी गाँव में अपने पिता के परिवार के साथ रहने चली गई। मैंने नागानो में प्राथमिक शिक्षा पूरी की और वहीं से जूनियर और सीनियर हाई स्कूल की पढ़ाई की। मैं कभी घर नहीं गई, छुट्टियों में भी नहीं। मेरे माता-पिता कभी-कभार मुझसे मिलने आते थे।

मैं आज भी नागानो में रहता हूँ। मैंने नागानो शहर के एक इंजीनियरिंग कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और वहीं के एक कुशल औजार निर्माता के यहाँ काम करने लगा। मैं अभी भी वहीं काम करता हूँ। मैं बाकी लोगों की तरह ही रहता हूँ। जैसा कि आप देख सकते हैं,

मुझमें कुछ भी असामान्य नहीं है। मैं बहुत मिलनसार नहीं हूँ, लेकिन मेरे कुछ दोस्त हैं जिनके साथ मैं पहाड़ चढ़ने जाता हूँ। अपने गृहनगर से दूर जाने के बाद, मुझे हर समय आने वाले बुरे सपने आना बंद हो गए। फिर भी, वे मेरे जीवन का हिस्सा बने रहे। वे कभी-कभी मेरे पास आते थे, जैसे बिल वसूलने वाले दरवाजे पर आ जाते हों। ऐसा तब होता था जब मैं कुछ भूलने ही वाला होता था। और सपना हमेशा एक जैसा ही होता था, छोटी से छोटी बात तक। मैं चीखते हुए जाग जाता था, मेरी चादरें पसीने से भीगी होती थीं।

शायद इसीलिए मैंने कभी शादी नहीं की। मैं आधी रात को अपनी चीखों से बगल में सो रहे किसी को जगाना नहीं चाहता था। सालों में मुझे कई महिलाओं से प्यार हुआ, लेकिन मैंने उनमें से किसी के साथ भी रात नहीं बिताई। डर मेरे रोंगटे खड़े कर देता था। यह एक ऐसी चीज थी जिसे मैं किसी और के साथ कभी साझा नहीं कर सकता था।

मैं चालीस साल से भी ज़्यादा समय तक अपने गृहनगर से दूर रहा। मैं उस समुद्र तट के पास—या किसी और के पास—कभी नहीं गया। मुझे डर था कि अगर मैं गया, तो मेरा सपना सच हो सकता है। मुझे हमेशा तैरना अच्छा लगता था, लेकिन उस दिन के बाद मैं कभी स्विमिंग पूल तक नहीं गया। मैं गहरी नदियों या झीलों के पास नहीं जाता था। मैं नावों से बचता था और विदेश जाने के लिए हवाई जहाज़ से यात्रा नहीं करता था। इन सभी सावधानियों के बावजूद, मैं खुद को डूबते हुए देखने की छवि से छुटकारा नहीं पा सका। के के ठंडे हाथ की तरह, इस भयानक आशंका ने मेरे मन को जकड़ लिया और पीछा नहीं छोड़ा।

फिर, पिछली वसंत ऋतु में, मैंने आखिरकार उस समुद्र तट का दोबारा दौरा किया जहाँ के को लहर बहा ले गई थी।

मेरे पिता की पिछले साल कैंसर से मृत्यु हो गई थी, और मेरे भाई ने पुराना घर बेच दिया था। गोदाम की तलाशी लेते समय, उसे मेरे बचपन की चीज़ों से भरा एक गत्ते का डिब्बा मिला, जिसे उसने नागानो में मुझे भेज दिया। उसमें से ज़्यादातर बेकार की चीज़ें थीं, लेकिन एक बंडल में K द्वारा बनाई गई तस्वीरें थीं जो उसने मुझे दी थीं। मेरे माता-पिता ने शायद K की याद के तौर पर उन्हें मेरे लिए संभाल कर रखा था, लेकिन उन तस्वीरों ने मेरे पुराने डर को फिर से जगा दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे K की आत्मा उनमें से फिर से जीवित हो उठेगी, इसलिए मैंने उन्हें फेंकने के इरादे से जल्दी से वापस कागज़ में लपेट दिया। लेकिन मैं ऐसा

नहीं कर पाई। कई दिनों तक असमंजस में रहने के बाद, मैंने बंडल को फिर से खोला और खुद को मजबूर करके K के जलरंग चित्रों को ध्यान से देखा।

उनमें से अधिकतर प्राकृतिक दृश्य थे, समुद्र के जाने-पहचाने विस्तार, रेतीले तट, चीड़ के जंगलों और कस्बे की तस्वीरें, और सभी उसी खास स्पष्टता और रंगों से सजी थीं जिन्हें मैं के की कला में बखूबी पहचानता था। इतने वर्षों बाद भी वे आश्चर्यजनक रूप से जीवंत थीं, और उन्हें मेरी याद से भी कहीं अधिक कुशलता से बनाया गया था। जैसे ही मैंने चित्रों का बंडल पलटा, मैं सुखद यादों में डूब गया। लड़के के की गहरी भावनाएँ उसकी तस्वीरों में झलक रही थीं—जिस तरह से उसकी आँखें दुनिया को देख रही थीं। जो चीजें हमने साथ कीं, जिन जगहों पर हम साथ गए, वे सब मुझे बड़ी तीव्रता से याद आने लगीं। और मुझे एहसास हुआ कि उसकी आँखें मेरी आँखें थीं, कि मैंने भी उस समय दुनिया को उसी जीवंत, निर्मल दृष्टि से देखा था, जिस दृष्टि से वह लड़का देखता था जो मेरे साथ चलता था।

उसके बाद से मेरी आदत बन गई कि काम से घर लौटने पर मैं हर दिन अपनी डेस्क पर बैठकर के. की एक पेंटिंग का अध्ययन करती थी। मैं घंटों एक ही पेंटिंग को देखती रहती थी। हर पेंटिंग में मुझे बचपन के वो कोमल दृश्य मिलते थे जिन्हें मैंने इतने लंबे समय से अपनी स्मृति से मिटा रखा था। के. की किसी भी कृति को देखते ही मुझे ऐसा लगता था मानो कोई चीज मेरे शरीर में समा रही हो।

शायद एक हफ़्ता इसी तरह बीत गया था कि एक शाम अचानक मेरे मन में यह ख्याल आया: शायद मैं इतने सालों से एक बहुत बड़ी गलती कर रही थी। जब वह लहर के किनारे लेटा हुआ था, यकीनन, के मुझे नफ़रत या गुस्से से नहीं देख रहा था; वह मुझे अपने साथ ले जाने की कोशिश नहीं कर रहा था। और वह भयानक मुस्कान जो उसने मुझे दी थी: वह भी शायद कोण या रोशनी और छाया का संयोग था, के का कोई सचेत कार्य नहीं। शायद वह बेहोश हो चुका था, या शायद वह मुझे हमेशा के लिए बिछड़ने की एक कोमल मुस्कान दे रहा था। उसके चेहरे पर जो तीव्र नफ़रत मैंने देखी थी, वह उस गहरे डर का प्रतिबिंब मात्र थी जिसने उस पल मुझे जकड़ लिया था।

उस शाम जैसे-जैसे मैं के. के जलरंग चित्र का अध्ययन करता गया, मेरे ये नए विचार और भी पुख्ता होते गए। क्योंकि चाहे मैं चित्र को कितनी भी देर तक देखता रहूँ, मुझे उसमें एक लड़के की कोमल, मासूम आत्मा के अलावा कुछ भी नहीं दिखाई दिया।

मैं बहुत देर तक अपनी डेस्क पर बैठा रहा। मेरे पास और कोई चारा नहीं था। सूरज डूब गया और शाम का हल्का अंधेरा कमरे को घेरने लगा। फिर रात का गहरा सन्नाटा छा गया, जो मानो कभी खत्म नहीं होगा। आखिरकार, पलड़ा छटा और सुबह हो गई। नए दिन के सूरज ने आसमान को गुलाबी रंग से भर दिया और पक्षी चहचहाने लगे।

तभी मुझे एहसास हुआ कि मुझे वापस जाना ही होगा।

मैंने कुछ सामान एक बैग में डाला, कंपनी को फोन करके बताया कि मैं नहीं आ पाऊंगा, और अपने पुराने गृहनगर के लिए ट्रेन पकड़ ली।

मुझे वह शांत छोटा सा समुद्रतटीय कस्बा नहीं मिला जो मुझे याद था। साठ के दशक के तीव्र विकास के दौरान पास ही में एक औद्योगिक शहर बस गया था, जिससे परिदृश्य में बहुत बदलाव आ गए थे। स्टेशन के पास की इकलौती उपहार की दुकान एक मॉल में बदल गई थी, और कस्बे का इकलौता सिनेमाघर एक सुपरमार्केट में परिवर्तित हो गया था। मेरा घर अब वहाँ नहीं था। उसे कुछ महीने पहले ही ध्वस्त कर दिया गया था, अब ज़मीन पर बस एक गड्ढा बचा था। आँगन के सारे पेड़ काट दिए गए थे, और ज़मीन के उस काले हिस्से पर जगह-जगह खरपतवार उग आए थे। के का पुराना घर भी गायब हो गया था, उसकी जगह यात्रियों की कारों और वैन से भरा एक कंक्रीट का पार्किंग स्थल बन गया था। ऐसा नहीं था कि मैं भावुक हो गया था। वह कस्बा तो बहुत पहले ही मेरा नहीं रह गया था।

मैं किनारे तक चलकर गया और तटबंध की सीढ़ियाँ चढ़ गया। दूसरी ओर, हमेशा की तरह, विशाल, निर्मल सागर दूर तक फैला हुआ था, क्षितिज एक सीधी रेखा जैसा था। तटरेखा भी पहले जैसी ही दिख रही थी: लंबा समुद्र तट, लहरों की हल्की आवाज़, और लोग किनारे पर टहलते हुए। शाम के चार बज चुके थे, और ढलती धूप पश्चिम की ओर धीरे-धीरे ढल रही थी, मानो मानो ध्यानमग्न हो रही हो। मैंने अपना बैग रेत पर रखा और उसके पास बैठकर शांत समुद्री दृश्य का आनंद लिया। इस दृश्य को देखकर यह कल्पना करना असंभव था कि कभी यहाँ एक भयंकर तूफान आया था, कि एक विशाल लहर ने मेरे सबसे प्यारे दोस्त को निगल

लिया था। अब शायद ही कोई बचा हो जिसे वे भयानक घटनाएँ याद हों। ऐसा लगने लगा मानो यह सब एक भ्रम था जिसे मैंने इतने विस्तार से सपने में देखा था।

और फिर मुझे एहसास हुआ कि मेरे अंदर का गहरा अंधकार गायब हो गया था। अचानक। जितनी अचानक वह आया था, उतनी ही अचानक। मैं रेत से उठा और अपने जूते उतारने या पैंट की आस्तीन मोड़ने की परवाह किए बिना, लहरों को अपने टखनों से टकराने देने के लिए पानी में चला गया। मानो सुलह कर रहे हों, वही लहरें जो बचपन में मेरे किनारे पर आती थीं, अब प्यार से मेरे पैरों को धो रही थीं, मेरे जूतों और पैंट की आस्तीनों को काला कर रही थीं। एक धीमी लहर आती, फिर लंबा विराम, और फिर दूसरी लहर आती और चली जाती। आस-पास से गुजर रहे लोग मुझे अजीब नजरों से देख रहे थे, लेकिन मुझे परवाह नहीं थी। आखिरकार, मुझे अपना रास्ता वापस मिल गया था।

मैंने आसमान की ओर देखा। बादलों के कुछ भूरे रुई जैसे टुकड़े वहाँ स्थिर लटके हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो वे मेरे लिए ही वहाँ हों, हालाँकि मुझे नहीं पता कि मुझे ऐसा क्यों महसूस हुआ। मुझे याद आया कि मैंने तूफ़ान की "आँख" की तलाश में इसी तरह आसमान की ओर देखा था। और फिर, मेरे भीतर, समय की धुरी में एक ज़ोरदार झटका लगा। चालीस लंबे साल एक जर्जर घर की तरह ढह गए, पुराने समय और नए समय को एक ही घूमते हुए पिंड में मिला दिया। सारी आवाज़ें मंद पड़ गईं, और मेरे चारों ओर की रोशनी काँप उठी। मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं लहरों में गिर गया। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, और मेरे हाथ-पैर सुन्न हो गए थे। मैं काफी देर तक उसी तरह पानी में चेहरा डुबोए पड़ा रहा, खड़ा होने में असमर्थ। लेकिन मुझे डर नहीं था। नहीं, बिल्कुल भी नहीं। अब मुझे किसी बात का डर नहीं था। वे दिन बीत चुके थे।

मेरे भयानक बुरे सपने अब बंद हो गए हैं। मैं अब आधी रात को चीखते हुए नहीं जागती। और अब मैं जीवन को फिर से शुरू करने की कोशिश कर रही हूँ। नहीं, मुझे पता है कि शायद फिर से शुरू करने में बहुत देर हो चुकी है। शायद मेरे पास जीने के लिए ज़्यादा समय नहीं बचा है। लेकिन भले ही बहुत देर हो जाए, मैं शुक्रगुजार हूँ कि अंत में मुझे किसी तरह की मुक्ति मिली, किसी तरह का सुधार हुआ। हाँ, शुक्रगुजार हूँ: मैं बिना मुक्ति पाए, अंधेरे में चीखती हुई, डरी हुई, अपने जीवन के अंत तक पहुँच सकती थी।



सातवां व्यक्ति चुप हो गया और उसने अपनी निगाहें बाकी सभी पर घुमाईं। कोई बोला नहीं, हिला नहीं, यहाँ तक कि साँस भी नहीं ले रहा था। सभी उसकी कहानी का शेष भाग सुनने के लिए उत्सुक थे। बाहर हवा थम गई थी और कुछ भी हलचल नहीं थी। सातवें व्यक्ति ने एक बार फिर अपना हाथ अपने कॉलर पर रखा, मानो शब्दों की तलाश में हो।

"वे हमसे कहते हैं कि हमें केवल डर से ही डरना चाहिए, लेकिन मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता," उन्होंने कहा। फिर थोड़ी देर बाद उन्होंने आगे कहा: "हाँ, डर तो होता ही है। यह कई रूपों में, अलग-अलग समय पर हमारे सामने आता है और हमें पूरी तरह से जकड़ लेता है। लेकिन ऐसे समय में सबसे डरावनी बात जो हम कर सकते हैं, वह है इससे मुंह मोड़ लेना, अपनी आँखें बंद कर लेना। क्योंकि तब हम अपने भीतर की सबसे अनमोल चीज़ को किसी और चीज़ के हवाले कर देते हैं। मेरे मामले में, वह चीज़ लहर थी।"

— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

स्पैगेटी का वर्ष

1971 स्पैगेटी का वर्ष था।

1971 में, मैं स्पैगेटी पकाकर अपना जीवन यापन करता था, और स्पैगेटी पकाने के लिए ही जीता था। एल्युमिनियम के बर्तन से उठती भाप मेरा गौरव और खुशी थी, और सॉस पैन में उबलती टमाटर की चटनी मेरे जीवन की एकमात्र आशा थी।

मैं खाना पकाने की एक खास दुकान पर गया और एक किचन टाइमर और एक बड़ा सा एल्युमिनियम का बर्तन खरीदा, इतना बड़ा कि उसमें एक जर्मन शेफर्ड को नहलाया जा सके। फिर मैं विदेशियों के लिए बने सभी सुपरमार्केट में घूमा और तरह-तरह के अजीब-से नाम वाले मसाले इकट्ठा किए। मैंने किताबों की दुकान से पास्ता बनाने की एक किताब ली और दर्जन भर टमाटर खरीदे। मैंने हर तरह की स्पेगेटी खरीदी जो मुझे मिल सकती थी, और हर तरह की चटनी बनाई। लहसुन, प्याज और जैतून के तेल के बारीक कण हवा में घुल गए, एक मनमोहक खुशबू का बादल बना दिया जो मेरे छोटे से अपार्टमेंट के हर कोने में फैल गया, फर्श, छत और दीवारों में, मेरे कपड़ों में, मेरी किताबों में, मेरे रिकॉर्ड में, मेरे टेनिस रैकेट में, मेरे पुराने पत्रों के बंडलों में समा गया। यह एक ऐसी खुशबू थी जो प्राचीन रोमन जलसेतुओं पर महसूस की जा सकती थी।

यह कहानी सन् 1971 के स्पैगेटी वर्ष की है।

आम तौर पर मैं स्पेगेटी बनाता और अकेले ही खाता था। मुझे पूरा यकीन था कि स्पेगेटी अकेले खाने में ही सबसे अच्छी लगती है। मैं ठीक से समझा नहीं सकता कि मुझे ऐसा क्यों लगता था, लेकिन यही बात थी।

मैं हमेशा स्पेगेटी के साथ चाय पीती थी और सादा सलाद (सलाद और खीरे का) खाती थी। मैं हमेशा दोनों चीज़ें भरपूर मात्रा में लेती थी। मैं सब कुछ मेज पर करीने से सजाकर रखती थी और आराम से खाना खाती थी, खाते समय अखबार पर नज़र डालती रहती थी। रविवार से शनिवार तक, एक स्पेगेटी दिवस के बाद दूसरा आता था। और हर नए रविवार से एक नया स्पेगेटी सप्ताह शुरू होता था।

जब भी मैं स्पेगेटी की प्लेट लेकर बैठता—खासकर बारिश की दोपहर में—मुझे हमेशा यह आभास होता था कि कोई मेरे दरवाजे पर दस्तक देने वाला है। हर बार, मैं जिस व्यक्ति के

आने की कल्पना करता, वह अलग होता था। कभी कोई अजनबी होता, कभी कोई जाना-पहचाना। एक बार, वह पतली टांगों वाली लड़की थी, जिसके साथ मैंने हाई स्कूल में डेट की थी, और एक बार मैं खुद, कुछ साल पहले का अपना परिचित, मिलने आया था। एक बार, वह कोई और नहीं बल्कि विलियम होल्डन थे, जिनके साथ जेनिफर जोन्स थीं।

विलियम होल्डन?

लेकिन इनमें से कोई भी व्यक्ति वास्तव में मेरे अपार्टमेंट में नहीं आया। वे बिना दस्तक दिए, स्मृति के टुकड़ों की तरह, दरवाजे के ठीक बाहर मंडराते रहे और फिर चुपचाप चले गए।



बसंत, गर्मी और पतझड़, मैं खाना पकाती रही, मानो स्पेगेटी पकाना बदला लेने जैसा हो। एक अकेली, ठुकराई हुई लड़की की तरह जो पुराने प्रेम पत्रों को आग में फेंक देती है, मैं एक के बाद एक मुट्ठी स्पेगेटी बर्तन में डालती रही।

मैं समय की कुचली हुई परछाइयों को इकट्ठा करता, उन्हें गूंथकर जर्मन शेफर्ड कुत्ते का आकार देता, उबलते पानी में डालता और उन पर नमक छिड़कता। फिर मैं बड़े-बड़े चॉपस्टिक हाथ में लिए बर्तन के ऊपर तब तक खड़ा रहता जब तक कि टाइमर अपनी दुख भरी ध्वनि न बजा दे।

स्पैगेटी के रेशे बड़े ही चालाक होते हैं, और मैं उन्हें अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दे सकता था। अगर मैं ज़रा भी पीठ फेर लेता, तो वे बर्तन के किनारे से फिसलकर रात के अंधेरे में गायब हो सकते थे। जैसे उष्णकटिबंधीय जंगल रंग-बिरंगी तितलियों को अनंत काल में निगलने के लिए इंतज़ार करता है, वैसे ही रात खामोशी से उन भटकते हुए रेशों को पकड़ने की उम्मीद में छाई हुई थी।

परमेसन चीज़ के साथ स्पेगेटी

नेपोलिटन स्पेगेटी

फॉइल में लिपटी स्पेगेटी

लहसुन और तेल के साथ स्पेगेटी

स्पैगेटी कार्बोनारा

अनानास स्पेगेटी
और फिर फ्रिज में लापरवाही से फेंका गया वह बेचारा, बिना नाम का बचा हुआ स्पेगेटी था।
गर्मी में पैदा हुए, स्पेगेटी के रेशे 1971 की नदी में बह गए और गायब हो गए।
और मैं उन सभी के लिए शोक व्यक्त करता हूँ—वर्ष 1971 के सभी स्पैगेटी के लिए।



जब साढ़े तीन बजे फोन की घंटी बजी, मैं चटाई पर लेटा हुआ छत को घूर रहा था। मेरे लेटे हुए स्थान पर सर्दियों की धूप की एक किरण सी पड़ गई थी। दिसंबर 1971 की रोशनी में, मैं एक मरी हुई मक्खी की तरह खाली-खाली पड़ा था।
पहले तो मुझे फोन की घंटी सुनाई ही नहीं दी। ऐसा लगा जैसे कोई अनजान सी याद हवा की परतों के बीच धीरे-धीरे आ गई हो। लेकिन आखिरकार, वो साफ दिखने लगी और अंत में, यह एक बजता हुआ फोन ही था। यह पूरी तरह से असली हवा में बज रही फोन की घंटी थी। अभी भी लेटे हुए ही, मैंने हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठाया।
दूसरी तरफ एक लड़की थी, इतनी धुंधली सी कि साढ़े चार बजे तक वो पूरी तरह गायब ही हो सकती थी। वो मेरे एक दोस्त की पूर्व प्रेमिका थी। किसी बात ने उन दोनों को मिलाया था, उस लड़के को और उस धुंधली सी लड़की को, और किसी बात ने उनके ब्रेकअप का कारण भी बना दिया था। मैं मानता हूँ कि मैंने अनिच्छा से ही सही, उन्हें मिलाने में भूमिका निभाई थी।
"आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें, लेकिन क्या आप जानते हैं कि वह इस समय कहाँ है?" उसने कहा।
मैंने फोन पर नजर डाली और तार की लंबाई पर एक नज़र दौड़ाई। तार वाकई फोन से जुड़ा हुआ था। मैंने अस्पष्ट सा जवाब दिया। लड़की की आवाज में कुछ अशुभ सा था, और जो भी मुसीबत आने वाली थी, मैं जानता था कि मैं उसमें शामिल नहीं होना चाहता था।
“कोई मुझे नहीं बता रहा कि वह कहाँ है,” उसने ठंडे स्वर में कहा। “सब लोग ऐसा दिखावा कर रहे हैं जैसे उन्हें पता ही नहीं। लेकिन मुझे उसे कुछ ज़रूरी बात बतानी है, इसलिए कृपया मुझे बताएँ कि वह कहाँ है। मैं वादा करती हूँ कि मैं आपको इसमें नहीं घसीटूँगी। वह कहाँ है?”

“सच कहूँ तो मुझे नहीं पता,” मैंने उससे कहा। “मैंने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा है।” मेरी आवाज़ मेरी अपनी नहीं लग रही थी। मैंने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा था, यह बात तो सच थी, लेकिन दूसरी बात झूठ थी—मुझे उसका पता और फ़ोन नंबर पता था। जब भी मैं झूठ बोलती हूँ, मेरी आवाज़ में कुछ अजीब सा बदलाव आ जाता है।

उनकी ओर से कोई टिप्पणी नहीं आई।

फोन बर्फ के खंभे जैसा था।

फिर मेरे आसपास की सभी वस्तुएं बर्फ के खंभों में बदल गईं, मानो मैं जे. जी. बैलार्ड की किसी विज्ञान कथा की कहानी में हूं।

मैंने दोहराया, "मुझे सच में नहीं पता। वह बहुत पहले बिना कुछ कहे चला गया।"

लड़की हंस पड़ी। "बस करो यार। वो इतना चालाक नहीं है। हम एक ऐसे आदमी की बात कर रहे हैं जिसे चाहे कुछ भी करे, शोर मचाना ही होता है।"

वह सही थी। वह आदमी सचमुच थोड़ा मंदबुद्धि था।

लेकिन मैं उसे ये बताने वाली नहीं थी कि वो कहाँ है। अगर मैंने ऐसा किया, तो अगली ही पल उसका फ़ोन आएगा और वो मुझे खूब खरी-खोटी सुनाएगा। मैं दूसरों के झंझटों में पड़ने से तंग आ चुकी थी। मैंने पहले ही पिछवाड़े में एक गड्ढा खोदकर उसमें सब कुछ दफना दिया था जिसे दफनाना ज़रूरी था। अब कोई उसे दोबारा खोद नहीं सकता था।

मैंने कहा, "मुझे खेद है।"

“तुम्हें मैं पसंद नहीं हूँ, है ना?” उसने अचानक कहा।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मुझे उससे कोई खास नफरत नहीं थी। उसके बारे में मेरी कोई खास राय नहीं थी। और जिस व्यक्ति के बारे में आपकी कोई राय ही न हो, उसके बारे में बुरी राय रखना मुश्किल होता है।

मैंने फिर कहा, "मुझे माफ करना। लेकिन मैं अभी स्पेगेटी बना रही हूँ।"

"क्या?"

मैंने झूठ बोला, “मैंने कहा कि मैं स्पेगेटी बना रही हूँ।” मुझे खुद भी नहीं पता था कि मैंने ऐसा क्यों कहा। लेकिन वो झूठ मेरे अंदर इतना रच-बस गया था कि उस पल तो मुझे वो झूठ लगा ही नहीं।

मैंने आगे बढ़कर एक काल्पनिक बर्तन में पानी भरा, और एक काल्पनिक माचिस से एक काल्पनिक चूल्हा जलाया।
“तो?” उसने पूछा।
मैंने उबलते पानी में काल्पनिक नमक छिड़का, धीरे से मुट्ठी भर काल्पनिक स्पेगेटी को काल्पनिक बर्तन में डाला, और काल्पनिक किचन टाइमर को बारह मिनट के लिए सेट कर दिया।
“इसलिए मैं बात नहीं कर सकता। स्पेगेटी खराब हो जाएगी।”
वह कुछ नहीं बोली।
मुझे बहुत खेद है, लेकिन स्पेगेटी पकाना एक नाजुक काम है।
लड़की चुप रही। मेरे हाथ में मौजूद फोन फिर से जमने लगा।
“तो क्या आप मुझे वापस कॉल कर सकते हैं?” मैंने जल्दी से पूछा।
"क्योंकि तुम स्पेगेटी बना रहे हो?" उसने पूछा।
"हाँ।"
"क्या आप इसे किसी के लिए बना रहे हैं, या आप इसे अकेले ही खाने वाले हैं?"
मैंने कहा, "मैं इसे अकेले ही खा लूंगा।"
उसने काफी देर तक अपनी सांस रोके रखी, फिर धीरे-धीरे सांस छोड़ी। “तुम्हें पता भी नहीं चलेगा, लेकिन मैं सचमुच मुसीबत में हूँ। मुझे नहीं पता कि क्या करूं।”
मैंने कहा, "मुझे खेद है कि मैं आपकी मदद नहीं कर सकता।"
"इसमें कुछ पैसों का भी लेन-देन शामिल है।"
"अच्छा ऐसा है।"
“उस पर मेरा पैसा बकाया है,” उसने कहा। “मैंने उसे कुछ पैसे उधार दिए थे। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, लेकिन मुझे करना पड़ा।”
मैं एक मिनट के लिए चुप रहा, मेरे विचार स्पेगेटी की ओर चले गए। "मुझे माफ़ करना," मैंने कहा। "लेकिन मैंने स्पेगेटी बना ली है, इसलिए..."
उसने बेजान हंसी हंसते हुए कहा, "अलविदा। मेरी तरफ से अपनी स्पेगेटी को नमस्ते कहना। उम्मीद है सब ठीक होगा।"

मैंने कहा, "अलविदा।"
जब मैंने फोन रखा, तो फर्श पर बना प्रकाश का घेरा एक-दो इंच खिसक गया था। मैं फिर से उस प्रकाश के घेरे में लेट गया और छत को घूरने लगा।



उस स्पेगेटी के बारे में सोचना जो अनंत काल तक उबलती रहती है लेकिन कभी पकती नहीं, एक बेहद दुखद बात है।
अब मुझे थोड़ा अफ़सोस हो रहा है कि मैंने उस लड़की को कुछ नहीं बताया। शायद मुझे बता देना चाहिए था। मतलब, उसका पूर्व प्रेमी वैसे भी कोई खास नहीं था—एक खोखला इंसान, कलात्मक होने का दिखावा करने वाला, बड़ी-बड़ी बातें करने वाला जिस पर किसी को भरोसा नहीं था। उसकी बातों से लग रहा था कि वह सचमुच पैसों की तंगी में है, और चाहे जो भी स्थिति हो, उधार लिया हुआ पैसा तो चुकाना ही पड़ता है।
कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि उस लड़की का क्या हुआ होगा—यह ख्याल अक्सर मेरे मन में तब आता है जब मेरे सामने गरमागरम स्पैगेटी की प्लेट रखी होती है। फोन रखने के बाद, क्या वह हमेशा के लिए गायब हो गई, शाम साढ़े चार बजे के अंधेरे में कहीं खो गई? क्या इसमें मेरी भी कुछ गलती थी?
लेकिन मैं चाहती हूं कि आप मेरी स्थिति को समझें। उस समय मैं किसी के साथ उलझना नहीं चाहती थी। इसीलिए मैं अकेले ही स्पैगेटी पकाती रही। उस बड़े से बर्तन में, जो एक जर्मन शेफर्ड कुत्ते को भी समा सकता था।



ड्यूरम सूजी, इतालवी खेतों में लहराता सुनहरा गेहूं।
क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि इटालियंस कितने आश्चर्यचकित होंगे यदि उन्हें पता चले कि 1971 में वे वास्तव में अकेलेपन का निर्यात कर रहे थे?
— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

टोनी ताकितानी

टोनी ताकीतानी का असली नाम वास्तव में यही था: टोनी ताकीतानी।

अपने नाम, घुंघराले बालों और कुछ हद तक गहरी बनावट के कारण, उन्हें अक्सर मिश्रित नस्ल का समझा जाता था। यह युद्ध के तुरंत बाद का समय था, जब आसपास कई ऐसे बच्चे थे जिनके खून में आधा अमेरिकी सैनिक का अंश था। लेकिन टोनी ताकितानी के माता-पिता दोनों ही सौ प्रतिशत असली जापानी थे। उनके पिता, शोज़ाबुरो ताकितानी, एक जाने-माने जैज़ ट्रॉम्बोन वादक थे, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने से चार साल पहले, एक महिला से जुड़े विवाद के कारण उन्हें टोक्यो छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने सोचा कि अगर शहर छोड़ना ही है, तो पूरी तरह से छोड़ देना ही बेहतर होगा, इसलिए वे अपने ट्रॉम्बोन के अलावा कुछ भी साथ लिए बिना चीन चले गए। उन दिनों, नागासाकी से शंघाई तक नाव से एक दिन में आसानी से पहुंचा जा सकता था। शोज़ाबुरो के पास टोक्यो में - या जापान में कहीं भी - ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे वे खोना नहीं चाहते थे। उन्होंने बिना किसी पछतावे के प्रस्थान किया। उन्हें संदेह था कि शंघाई, अपने आकर्षक माहौल के साथ, टोक्यो की तुलना में उनके व्यक्तित्व के लिए कहीं अधिक उपयुक्त होगा। जब वह यांग्त्ज़ी नदी में तैरती एक नाव के डेक पर खड़ा था, तभी उसने पहली बार शंघाई की भव्य सड़कों को सुबह की धूप में जगमगाते देखा, और बस, यही पल था। उसे उस शहर से प्यार हो गया। उस रोशनी ने मानो उसे एक उज्ज्वल भविष्य का वादा कर दिया था। उसकी उम्र इक्कीस वर्ष थी।

और इसलिए युद्ध की उथल-पुथल के दौरान—जापान द्वारा चीन पर आक्रमण से लेकर पर्ल हार्बर पर हमले और दो परमाणु बम गिराए जाने तक—उन्होंने आराम से शंघाई के नाइट क्लबों में अपना ट्रॉम्बोन बजाया। युद्ध कहीं दूर चल रहा था। शोज़ाबुरो ताकितानी एक ऐसे व्यक्ति थे जिनमें इतिहास के प्रति इच्छाशक्ति या आत्मनिरीक्षण का जरा सा भी अंश नहीं था। उनकी एकमात्र इच्छा यही थी कि वे अपना ट्रॉम्बोन बजा सकें, दिन में तीन बार भोजन कर सकें और कुछ स्त्रियाँ उनके आसपास हों। वे एक ही समय में विनम्र और अभिमानी थे। गहरे आत्मकेंद्रित होने के बावजूद, वे अपने आसपास के लोगों के साथ बड़ी दयालुता और सद्भावना से पेश आते थे। यही कारण था कि अधिकांश लोग उन्हें पसंद करते थे। युवा, सुंदर और ट्रॉम्बोन बजाने में माहिर, वे जहाँ भी जाते थे, बर्फीले दिन में कौवे की तरह अलग दिखते

थे। उन्होंने अनगिनत स्त्रियों के साथ संबंध बनाए। जापानी, चीनी, श्वेत रूसी, वेश्याएँ, विवाहित महिलाएँ, खूबसूरत लड़कियाँ और जो उतनी खूबसूरत नहीं थीं: वे हर उस महिला के साथ संबंध बनाते थे जिस पर वे हाथ डाल सकते थे। कुछ ही समय में, उनके बेहद मधुर ट्रॉमबोन वादन और उनके बेहद सक्रिय विशाल लिंग ने उन्हें शंघाई में सनसनी बना दिया।

शोज़ाबुरो ताकितानी को एक खास हुनर मिला हुआ था—हालांकि उन्हें खुद इसका एहसास नहीं था—कि वे "काम के" दोस्त बना लेते थे। जापानी सेना के बड़े अधिकारियों, चीनी करोड़पतियों और हर तरह के प्रभावशाली लोगों से उनके अच्छे संबंध थे, जो गुप्त तरीकों से युद्ध से भारी मुनाफा कमा रहे थे। उनमें से कई लोग अपनी जैकेट के नीचे पिस्तौल रखते थे और किसी भी इमारत से बाहर निकलते समय सड़क पर दाएं-बाएं नजर डाले बिना नहीं निकलते थे। पता नहीं क्यों, शोज़ाबुरो ताकितानी और उनके बीच गहरी दोस्ती हो गई थी। और वे उनका खास ख्याल रखते थे। जब भी कोई समस्या आती, वे हमेशा उनके लिए दरवाजे खोलने को तैयार रहते थे। उन दिनों शोज़ाबुरो ताकितानी का जीवन बहुत आसान था।

हालांकि, कभी-कभी असाधारण प्रतिभा भी मुसीबत खड़ी कर देती है। युद्ध समाप्त होने पर, उसके संदिग्ध संपर्कों ने चीनी सेना का ध्यान उसकी ओर आकर्षित कर लिया और उसे लंबे समय तक कैद में रखा गया। शोज़ाबुरो ताकितानी की तरह कैद किए गए अन्य लोगों को दिन-प्रतिदिन उनकी कोठरियों से निकालकर बिना किसी मुकदमे के मार डाला जाता था। गार्ड आते, उन्हें जेल के प्रांगण में घसीटकर लाते और स्वचालित पिस्तौल से उनके सिर उड़ा देते। यह सब हमेशा दोपहर दो बजे होता था। पिस्तौल की तेज, तीखी आवाज प्रांगण में गूंज उठती थी।

शोज़ाबुरो ताकितानी के जीवन का यह सबसे बड़ा संकट था। जीवन और मृत्यु के बीच बस एक बाल बराबर का फासला था। उसे लगा कि उसकी मृत्यु यहीं होगी। लेकिन मृत्यु की आशंका से उसे ज़्यादा डर नहीं लगा। वे उसके दिमाग में गोली मार देंगे, और सब कुछ खत्म हो जाएगा। बस एक पल का दर्द। उसने सोचा, "मैंने इतने सालों तक अपनी मर्ज़ी से ज़िंदगी जी है, बहुत सी औरतों के साथ सोया हूँ। मैंने खूब स्वादिष्ट खाना खाया है, और खूब मज़े किए हैं। ज़िंदगी में ऐसा कुछ नहीं है जिसका मुझे अफ़सोस हो कि मैंने खो दिया। वैसे भी, मुझे मारे जाने की कोई शिकायत नहीं है। यही तो नियति है। मैं और क्या माँग सकता हूँ? इस युद्ध में

लाखों जापानी मारे गए हैं, और उनमें से कई तो मुझसे कहीं ज़्यादा भयानक तरीके से मरे हैं।" उसने अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया और अपनी कोठरी में सीटी बजाते हुए समय बिताया। दिन-ब-दिन वह अपनी छोटी सी खिड़की की सलाखों से बादलों को बहते हुए देखता रहा और अपनी कोठरी की गंदी दीवारों पर उन तमाम औरतों के चेहरों और शरीरों की तस्वीरें उकेरता रहा जिनके साथ उसने संबंध बनाए थे। लेकिन अंत में, शोज़ाबुरो ताकितानी उन दो जापानी कैदियों में से एक निकला जो जेल से ज़िंदा निकलकर जापान वापस लौटे। उस समय तक दूसरा आदमी, एक उच्च पदस्थ अधिकारी, लगभग अपना मानसिक संतुलन खो चुका था। शोज़ाबुरो ताकितानी उसे वापस लाने वाली नाव के डेक पर खड़ा था और जैसे-जैसे शंघाई की सड़कें दूर होती जा रही थीं, वह सोचता रहा, जीवन: मैं इसे कभी समझ नहीं पाऊंगा।

दुबले-पतले और बेहाल शोज़ाबुरो ताकितानी युद्ध समाप्त होने के नौ महीने बाद, 1946 की वसंत ऋतु में जापान लौटे। उन्हें पता चला कि मार्च 1945 में टोक्यो पर हुए भीषण हवाई हमले में उनका घर जलकर राख हो गया था और उनके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी थी। उनका इकलौता भाई बर्मा के मोर्चे पर लापता हो गया था। दूसरे शब्दों में, शोज़ाबुरो ताकितानी अब दुनिया में अकेले थे। हालाँकि, यह उनके लिए कोई बड़ा सदमा नहीं था, न ही इससे उन्हें कोई विशेष दुख या उदासी हुई। बेशक, उन्हें किसी की कमी का एहसास ज़रूर हुआ, लेकिन उन्हें लगा कि आखिरकार ज़िंदगी का मोड़ कुछ ऐसा ही होना था। हर कोई कभी न कभी अकेला हो ही जाता है। उस समय उनकी उम्र तीस वर्ष थी, अकेलेपन की शिकायत करने की उम्र से परे। उन्हें ऐसा लगा जैसे उनकी उम्र अचानक कई साल बढ़ गई हो। लेकिन बस इतना ही। उनके भीतर और कोई भावना नहीं उमड़ी।

हां, शोज़ाबुरो ताकितानी किसी न किसी तरह जीवित रहने में कामयाब हो गया था, और जब तक वह जीवित रहने में कामयाब रहा है, उसे जीने के तरीके सोचने शुरू करने होंगे।

क्योंकि उसे काम का सिर्फ एक ही तरीका आता था, इसलिए उसने अपने कुछ पुराने दोस्तों को ढूंढा और एक छोटा सा जैज़ बैंड बनाया जो अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर बजाने लगा। संपर्क बनाने की उसकी काबिलियत ने उसे जैज़ के शौकीन एक अमेरिकी सेना के मेजर से दोस्ती दिला दी, जो न्यू जर्सी का रहने वाला एक इतालवी-अमेरिकी था और खुद भी बहुत

बढ़िया क्लैरिनेट बजाता था। क्वार्टरमास्टर कोर में एक अधिकारी होने के नाते, मेजर अमेरिका से सीधे शोज़ाबुरो ताकितानी के लिए सभी जैज़ रिकॉर्ड मंगवा सकता था। दोनों अक्सर अपने खाली समय में साथ में जैज़ बजाते थे। शोज़ाबुरो ताकितानी मेजर के क्वार्टर में जाता, एक बीयर खोलता और बॉबी हैकेट, जैक टीगार्डन या बेनी गुडमैन का खुशनुमा जैज़ सुनता, और जितना हो सके उनके अच्छे सुर सीखता। मेजर उसे हर तरह का खाना, दूध और शराब मुहैया कराता था, जो उन दिनों मुश्किल से मिलते थे। उसने सोचा, बुरा नहीं है: जीने के लिए बुरा समय नहीं है।

शोज़ाबुरो ताकितानी का विवाह 1947 में हुआ था। उनकी नवविवाहित पत्नी उनकी मां की ओर से दूर की चचेरी बहन थीं। एक दिन संयोगवश उनकी मुलाकात सड़क पर हुई और चाय पीते हुए उन्होंने अपने रिश्तेदारों के बारे में बातें कीं और पुराने दिनों को याद किया। इसके बाद वे एक-दूसरे से मिलने लगे और जल्द ही साथ रहने लगे—संभवतः इसका कारण वह गर्भवती हो गई थीं।

कम से कम टोनी ताकितानी ने अपने पिता से यही सुना था। टोनी ताकितानी को इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उसके पिता, शोज़ाबुरो ताकितानी, उसकी माँ से कितना प्यार करते थे। उसकी माँ सुंदर और शांत स्वभाव की थी, लेकिन उसके पिता के अनुसार वह ज़्यादा स्वस्थ नहीं थी।

शादी के एक साल बाद ही उसने एक बेटे को जन्म दिया और तीन दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। बस यूं ही। और यूं ही उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया, सब कुछ जल्दी और शांति से। उसे कोई गंभीर तकलीफ नहीं हुई और न ही कोई कष्ट सहा। वह मानो मानो किसी ने पर्दे के पीछे जाकर स्विच बंद कर दिया हो, मानो वह क्षण भर के लिए गायब हो गई हो।

शोज़ाबुरो ताकितानी को समझ नहीं आ रहा था कि उसे इस बारे में कैसा महसूस करना चाहिए। वह ऐसी भावनाओं से बिल्कुल अनजान था। वह ठीक से यह नहीं समझ पा रहा था कि "मृत्यु" क्या होती है, और न ही वह इस बात का कोई निष्कर्ष निकाल पा रहा था कि इस मृत्यु का उसके लिए क्या अर्थ है। वह बस इसे एक घटित तथ्य के रूप में स्वीकार कर सकता था। और इसलिए उसे ऐसा महसूस होने लगा कि कोई चपटी, डिस्क जैसी चीज़ उसकी छाती में अटक गई है। वह क्या थी, या वहाँ क्यों थी, वह कह नहीं सकता था। वह वस्तु बस वहीं

अटकी रही और उसे इस बारे में गहराई से सोचने से रोकती रही कि उसके साथ क्या हुआ था। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद पूरे एक सप्ताह तक उसने कुछ भी नहीं सोचा। वह उस बच्चे के बारे में भी भूल गया जिसे वह अस्पताल में छोड़ आया था।

मेजर ने शोज़ाबुरो ताकितानी को अपने संरक्षण में ले लिया और उसे सांत्वना देने के लिए हर संभव प्रयास किया। वे लगभग हर दिन बेस बार में साथ में शराब पीते थे। मेजर उससे कहते, "तुम्हें खुद को संभालना होगा। तुम्हें बस इतना करना है कि उस बच्चे की सही परवरिश करो।" शोज़ाबुरो ताकितानी के लिए इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं था, वह बस चुपचाप सिर हिला देता था। हालांकि, उसे भी यह स्पष्ट था कि मेजर उसकी मदद करने की कोशिश कर रहा था। एक दिन अचानक मेजर ने कहा, "अरे, मुझे पता है। क्यों न तुम मुझे उस बच्चे का धर्मपिता बना दो? मैं उसका नाम रख दूंगा।" शोज़ाबुरो ताकितानी ने सोचा, "ओह, वह तो बच्चे का नाम रखना ही भूल गया था।"

मेजर ने अपना पहला नाम टोनी सुझाया। बेशक, टोनी किसी जापानी बच्चे के लिए उपयुक्त नाम नहीं था, लेकिन मेजर के मन में ऐसा ख्याल कभी आया ही नहीं। घर पहुँचकर शोज़ाबुरो ताकितानी ने एक कागज़ पर "टोनी ताकितानी" लिखा, उसे दीवार पर चिपकाया और अगले कई दिनों तक उसे देखते रहे। हम्म, "टोनी ताकितानी।" बुरा नहीं है। बुरा नहीं है। जापान पर अमेरिकी कब्ज़ा शायद अभी कुछ समय तक चलेगा, और अमेरिकी शैली का यह नाम शायद कभी बच्चे के काम आ जाए।

लेकिन उस बच्चे के लिए, ऐसे नाम के साथ जीना मुश्किल था। स्कूल के दूसरे बच्चे उसे आधा इंसान और आधा नस्ल का कहकर चिढ़ाते थे, और जब भी वह किसी को अपना नाम बताता, तो लोग हैरानी या नापसंदगी भरी नज़रों से देखते थे। कुछ लोग इसे मज़ाक समझते थे, तो कुछ गुस्से से भर उठते थे। कुछ लोगों के लिए, "टोनी ताकितानी" नाम के बच्चे से आमना-सामना करना ही पुराने ज़ख्मों को फिर से हरा करने के लिए काफी था।

ऐसे अनुभवों ने लड़के को दुनिया से और भी अलग कर दिया। उसने कभी कोई सच्चा दोस्त नहीं बनाया, लेकिन इससे उसे कोई तकलीफ नहीं हुई। उसे अकेले रहना स्वाभाविक लगता था: यह उसके जीवन का एक आधार बन गया था। जब तक उसे थोड़ी आत्म-जागरूकता आई, तब तक उसके पिता हमेशा बैंड के साथ यात्रा करते रहते थे। जब वह छोटा था, तो दिन

में उसकी देखभाल के लिए एक नौकरानी आती थी, लेकिन प्राथमिक विद्यालय के अंतिम वर्षों में पहुँचते-पहुँचते वह उसके बिना ही काम चला सकता था। वह खुद खाना बनाता, रात को कमरा बंद कर लेता और अकेले सोता था। ऐसा नहीं था कि उसे कभी अकेलापन महसूस हुआ हो: वह बस इस तरह से ज्यादा सहज महसूस करता था बजाय इसके कि कोई हर समय उसकी देखभाल करे। अपनी पत्नी को खोने के बाद, शोज़ाबुरो ताकितानी ने किसी कारणवश दोबारा शादी नहीं की। बेशक, उसकी कई प्रेमिकाएँ थीं, लेकिन वह उनमें से किसी को भी घर नहीं लाता था। अपने बेटे की तरह, वह भी अपना ख्याल खुद रखने का आदी था। पिता और पुत्र एक-दूसरे से उतने दूर नहीं थे जितना कोई उनकी जीवनशैली से सोच सकता है। लेकिन उनके स्वभाव के कारण, जो एकांतप्रियता से समान रूप से ग्रस्त थे, दोनों में से किसी ने भी दूसरे के प्रति अपने दिल की बात कहने की पहल नहीं की। न ही किसी को ऐसा करने की आवश्यकता महसूस हुई। शोज़ाबुरो ताकितानी पिता बनने के लिए उपयुक्त नहीं थे, और टोनी ताकितानी पुत्र बनने के लिए उपयुक्त नहीं थे।

टोनी ताकितानी को चित्र बनाना बहुत पसंद था, और वह दिन भर घंटों अपने कमरे में बैठकर यही करता रहता था। उसे मशीनों के चित्र बनाना विशेष रूप से अच्छा लगता था। अपनी पेंसिल की नोक को सुई की तरह नुकीला रखते हुए, वह साइकिल, रेडियो, इंजन और ऐसी ही अन्य चीजों के स्पष्ट और सटीक चित्र बनाता था, जिनमें छोटी से छोटी बारीकी भी झलकती थी। अगर वह कोई फूल बनाता, तो उसकी हर पत्ती की हर नस को हूबहू चित्रित करता था। कोई उसे कुछ भी कहे, चित्र बनाने का यही एकमात्र तरीका था जो उसे आता था। अन्य विषयों के विपरीत, कला में उसके अंक हमेशा उत्कृष्ट रहते थे, और वह अक्सर स्कूल की कला प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार जीतता था।

इसलिए टोनी ताकितानी के लिए हाई स्कूल से कला महाविद्यालय जाना (और इस दौरान, बिना किसी के कहे, पिता-पुत्र स्वाभाविक रूप से अलग रहने लगे) और चित्रकार के रूप में करियर बनाना बिल्कुल स्वाभाविक था। वास्तव में, उन्हें अन्य विकल्पों पर विचार करने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। जहाँ उनके आसपास के युवा जीवन में अपने मार्ग को लेकर दुविधा में थे, वहीं वे बिना किसी और बात की परवाह किए अपने सटीक, यांत्रिक चित्र बनाते रहे। और क्योंकि यह वह दौर था जब युवा सत्ता और व्यवस्था के विरुद्ध जोश और हिंसा के

साथ विद्रोह कर रहे थे, इसलिए उनके समकालीनों में से किसी को भी उनकी उपयोगितावादी कला में कोई मूल्य नहीं दिखा। उनके कला महाविद्यालय के प्रोफेसर उनकी रचनाओं को व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ देखते थे। उनके सहपाठियों ने वैचारिक सार की कमी के कारण उनकी आलोचना की। टोनी ताकितानी स्वयं भी वैचारिक सार वाली उनकी रचनाओं में कुछ खास नहीं देख पाते थे। उनके लिए, उनकी सभी तस्वीरें अपरिपक्व, बदसूरत और त्रुटिपूर्ण लगती थीं।

कॉलेज से स्नातक होने के बाद, टोनी ताकितानी की ज़िंदगी पूरी तरह बदल गई। उनकी यथार्थवादी तकनीक की व्यावहारिकता और उपयोगिता के कारण, टोनी ताकितानी को काम ढूंढने में कभी कोई परेशानी नहीं हुई। जटिल मशीनों और वास्तुकला के उनके सटीक चित्रण की कोई बराबरी नहीं कर सकता था। हर कोई कहता था, "ये तो असली चीज़ से भी ज़्यादा असली लगते हैं।" उनके चित्र तस्वीरों से भी ज़्यादा सटीक थे, और उनमें ऐसी स्पष्टता थी कि किसी भी व्याख्या की कोई ज़रूरत नहीं थी। अचानक, वो सबके लिए ज़रूरी चित्रकार बन गए। उन्होंने ऑटोमोबाइल पत्रिकाओं के कवर से लेकर विज्ञापन चित्रों तक, हर तरह के काम किए, जिनमें मशीनों का इस्तेमाल होता था। उन्हें काम में मज़ा आता था और वो अच्छी कमाई भी करते थे।

इस बीच, शोज़ाबुरो ताकितानी अपना हॉर्न बजाते रहे। आधुनिक जैज़ आया, फिर फ्री जैज़, फिर इलेक्ट्रिक जैज़, लेकिन शोज़ाबुरो ताकितानी कभी नहीं बदले: वे उसी पुराने अंदाज़ में प्रदर्शन करते रहे। वे प्रथम श्रेणी के संगीतकार नहीं थे, लेकिन उनका नाम आज भी लोगों को आकर्षित करता था और उनके पास हमेशा काम रहता था। उन्हें मनचाही सारी चीज़ें मिलती थीं और हमेशा उनके साथ कोई न कोई महिला रहती थी। व्यक्तिगत संतुष्टि के लिहाज़ से उनका जीवन सबसे सफल जीवन में से एक था।

टोनी ताकितानी अपने हर खाली मिनट का इस्तेमाल काम के लिए करते थे। शौकों में समय बर्बाद न करते हुए, उन्होंने पैंतीस साल की उम्र तक अच्छी-खासी संपत्ति जमा कर ली थी। लोगों के कहने पर उन्होंने सेतागाया के एक समृद्ध उपनगर में एक बड़ा घर खरीद लिया और उनके पास कई अपार्टमेंट भी थे जिनसे उन्हें किराए के रूप में आय होती थी। उनके अकाउंटेंट सभी काम संभालते थे।

जीवन के इस पड़ाव तक, टोनी ताकितानी कई महिलाओं के साथ संबंध रख चुके थे। यहाँ तक कि युवावस्था में वे उनमें से एक के साथ कुछ समय के लिए रहे भी थे। लेकिन उन्होंने कभी शादी के बारे में नहीं सोचा, उन्हें कभी इसकी ज़रूरत महसूस नहीं हुई। खाना बनाना, सफाई करना, कपड़े धोना, ये सब काम वे खुद कर लेते थे, और जब काम की वजह से इनमें दिक्कत आती थी, तो वे नौकरानी रख लेते थे। उन्हें कभी बच्चे पैदा करने की इच्छा नहीं हुई। उनके कोई ऐसे करीबी दोस्त नहीं थे जो उनसे सलाह लें या अपने राज़ खोलें, यहाँ तक कि कोई ऐसा भी नहीं था जिसके साथ वे शराब पी सकें। ऐसा भी नहीं था कि वे एकांतवासी थे। उनमें अपने पिता जैसा आकर्षण नहीं था, लेकिन जिन लोगों से वे रोज़ मिलते थे, उनसे उनके रिश्ते बिल्कुल सामान्य थे। उनमें ज़रा भी घमंड या शेखी नहीं थी। वे कभी खुद का बचाव नहीं करते थे और न ही दूसरों की बुराई करते थे। खुद के बारे में बात करने के बजाय, उन्हें दूसरों की बातें सुनना सबसे ज़्यादा पसंद था। इसलिए, जो भी उन्हें जानता था, वे उन्हें पसंद करते थे। फिर भी, उनके लिए लोगों के साथ रोज़मर्रा की हकीकत से परे कोई रिश्ता बनाना नामुमकिन था। अपने पिता से उनकी मुलाकात दो-तीन साल में एक बार ही होती थी, वो भी किसी व्यापारिक काम के सिलसिले में। और जब काम खत्म हो जाता, तो दोनों में से किसी की भी आपस में ज्यादा बातचीत नहीं होती थी। इस तरह टोनी ताकितानी का जीवन शांति और सुकून से बीतता रहा। उन्होंने मन ही मन सोचा, "शायद मेरी कभी शादी नहीं होगी।"

लेकिन फिर एक दिन, बिना किसी पूर्वसूचना के, टोनी ताकितानी को प्यार हो गया। यह सब अविश्वसनीय रूप से अचानक हुआ। वह एक प्रकाशन कंपनी में अंशकालिक कर्मचारी थी जो एक चित्र लेने के लिए उसके कार्यालय आई थी। बाईस वर्ष की वह शांत स्वभाव की लड़की थी, जिसके चेहरे पर कार्यालय में रहने के दौरान हमेशा एक सौम्य मुस्कान रहती थी। उसके चेहरे के भाव काफी आकर्षक थे, लेकिन वस्तुनिष्ठ रूप से कहें तो वह कोई असाधारण रूप से सुंदर नहीं थी। फिर भी, उसमें कुछ ऐसा था जिसने टोनी ताकितानी के दिल को झकझोर दिया। उसे देखते ही उसकी छाती जकड़ गई और वह मुश्किल से सांस ले पा रहा था। वह खुद भी नहीं बता सकता था कि उसमें ऐसा क्या था जिसने उसे इतनी गहराई से प्रभावित किया था। और अगर उसे यह बात समझ भी आ जाती, तो वह इसे शब्दों में बयान नहीं कर पाता।

अगली चीज़ जिसने उसका ध्यान खींचा, वह थी उसके कपड़े पहनने का तरीका। उसे लोगों के पहनावे में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, न ही वह उस तरह का आदमी था जो किसी औरत के हर कपड़े पर गौर करता हो, लेकिन इस लड़की के कपड़े पहनने का तरीका इतना अद्भुत था कि उसने उस पर गहरा असर डाला: सच कहें तो, उसे भावुक कर दिया। आसपास बहुत सी औरतें थीं जो सलीके से कपड़े पहनती थीं, और बहुत सी ऐसी थीं जो दूसरों को प्रभावित करने के लिए कपड़े पहनती थीं, लेकिन यह लड़की अलग थी। बिलकुल अलग। उसने अपने कपड़े इतनी सहजता और शालीनता से पहने थे कि मानो कोई चिड़िया किसी खास हवा में लिपटी हुई किसी दूसरी दुनिया में उड़ने के लिए तैयार हो रही हो। उसने कभी किसी औरत को इतने आनंद से कपड़े पहने नहीं देखा था। और कपड़े भी ऐसे लग रहे थे मानो उसके शरीर पर लिपटते ही उन्हें नया जीवन मिल गया हो।
"बहुत-बहुत धन्यवाद," उसने चित्र लेते हुए कहा और उसके कार्यालय से बाहर चली गई, जिससे वह कुछ देर के लिए अवाक रह गया। वह शाम होने तक और कमरा पूरी तरह अंधेरा होने तक अपनी मेज पर अचंभित बैठा रहा।
अगले दिन उसने पब्लिशर को फोन किया और कोई बहाना बनाकर उसे फिर से अपने ऑफिस बुला लिया। काम खत्म होने पर उसने उसे दोपहर के खाने पर बुलाया। खाते समय दोनों ने हल्की-फुल्की बातें कीं। उम्र में पंद्रह साल का अंतर होने के बावजूद, उनके बीच बहुत कुछ ऐसा था जिस पर वे एक-दूसरे से बात कर सकते थे, लगभग अजीब तरह से। हर विषय पर उनकी आपस में खूब बनती थी। उसे ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था, और न ही उसे। पहले तो वह थोड़ी घबराई हुई थी, लेकिन धीरे-धीरे वह सहज हो गई और खुलकर हंसने और बातें करने लगी। विदा होते समय टोनी ताकितानी ने कहा, "तुम्हें कपड़े पहनने का बहुत अच्छा तरीका आता है।" उसने शरमाते हुए मुस्कुराते हुए कहा, "मुझे कपड़े पसंद हैं। मेरी तनख्वाह का ज़्यादातर हिस्सा कपड़ों पर खर्च हो जाता है।"
उसके बाद वे कुछ बार मिले। वे कहीं खास नहीं जाते थे, बस शांत जगहें ढूंढकर घंटों बातें करते थे—अपने बैकग्राउंड के बारे में, अपने काम के बारे में, इस या उस बारे में अपने विचारों और भावनाओं के बारे में। उन्हें कभी एक-दूसरे से बात करते-करते थकान नहीं होती थी, मानो वे एक-दूसरे के खालीपन को भर रहे हों। पांचवीं बार जब वे मिले, तो उसने उससे शादी

का प्रस्ताव रखा। लेकिन उसका एक बॉयफ्रेंड था, जिसके साथ वह हाई स्कूल से ही डेटिंग कर रही थी। समय बीतने के साथ उनका रिश्ता उतना अच्छा नहीं रह गया था, और अब जब भी वे मिलते, वे छोटी-छोटी बातों पर झगड़ते नज़र आते थे। सच तो यह है कि उससे मिलना टोनी ताकितानी से मिलने जितना सहज और मज़ेदार नहीं था, लेकिन फिर भी, इसका मतलब यह नहीं था कि वह रिश्ता तोड़ दे। उसके अपने कारण थे, चाहे जो भी हों। और इसके अलावा, उम्र में पंद्रह साल का अंतर भी था। वह अभी भी युवा और अनुभवहीन थी। उसने सोचा कि भविष्य में उस पंद्रह साल के अंतर का उन पर क्या असर होगा। उसने कहा कि उसे सोचने के लिए समय चाहिए।

हर वो दिन जो वो सोच में बिताती थी, टोनी ताकितानी के लिए नरक जैसा था। वो काम नहीं कर पाता था। वो अकेले शराब पीता था। अचानक उसका अकेलापन एक भारी बोझ, पीड़ा का स्रोत, एक जेल बन गया। उसने सोचा, "मैंने पहले कभी इस पर ध्यान ही नहीं दिया था।" निराशा भरी आँखों से उसने अपने चारों ओर की मोटी और ठंडी दीवारों को घूरते हुए सोचा, "अगर वो मुझसे शादी नहीं करना चाहती, तो शायद मैं खुदकुशी कर लूँ।"

वह उससे मिलने गया और उसे अपने सारे दिल की बात बताई। अब तक उसका जीवन कितना अकेला रहा था। उसने इतने सालों में कितना कुछ खोया था। और उसने ही उसे इन सब बातों का एहसास दिलाया था।

वह एक बुद्धिमान युवती थी। उसे टोनी ताकितानी पसंद आने लगा था। शुरुआत से ही वह उसे पसंद करती थी, और हर मुलाकात के साथ उसकी पसंद बढ़ती ही जाती थी। इसे प्यार कह सकते हैं या नहीं, यह वह नहीं जानती थी। लेकिन उसे लगता था कि उसके अंदर कुछ अद्भुत है, और अगर वह उसके साथ जीवन बिताए तो वह खुश रहेगी। और इस तरह उन्होंने शादी कर ली।



उससे शादी करके टोनी ताकितानी ने अपने जीवन के अकेलेपन के दौर को खत्म कर दिया। सुबह उठते ही सबसे पहले वह उसे ढूंढता। जब वह उसे अपने बगल में सोता हुआ पाता, तो उसे राहत मिलती। जब वह वहां नहीं होती, तो वह बेचैन हो जाता और पूरे घर में उसे

खोजता। अकेलेपन से मुक्ति पाना उसके लिए थोड़ा अजीब था। अकेलेपन से मुक्ति पाने की वजह से ही उसे फिर से अकेले हो जाने का डर सताने लगा था। यह सवाल उसे परेशान करता रहता था: वह क्या करेगा? कभी-कभी इस डर से उसे पसीना आ जाता था। शादी के पहले तीन महीने तक यही चलता रहा। लेकिन जैसे-जैसे वह अपने नए जीवन में ढलता गया और उसके अचानक गायब हो जाने की संभावना कम होती गई, वैसे-वैसे उसका डर भी धीरे-धीरे कम होता गया। अंत में वह शांत हो गया और अपनी नई, शांतिपूर्ण खुशी में डूब गया।

एक बार दंपति शोज़ाबुरो ताकितानी का संगीत सुनने गए। वह जानना चाहती थी कि उसके ससुर किस तरह का संगीत बजाते हैं। उसने पूछा, "क्या आपको लगता है कि अगर हम उन्हें सुनने जाएं तो आपके पिता को कोई आपत्ति होगी?" उन्होंने कहा, "शायद नहीं।"

वे गिन्ज़ा के एक नाइटक्लब में गए जहाँ शोज़ाबुरो ताकितानी प्रस्तुति दे रहे थे। टोनी ताकितानी बचपन के बाद पहली बार अपने पिता का संगीत सुनने गए थे। शोज़ाबुरो ताकितानी वही संगीत बजा रहे थे जो वे पुराने दिनों में बजाते थे, वही गाने जो टोनी ताकितानी ने बचपन में रिकॉर्ड्स पर अक्सर सुने थे। उनके पिता की शैली सहज, सुरुचिपूर्ण और मधुर थी। यह कला तो नहीं थी, लेकिन एक कुशल संगीतकार के हाथों से बना संगीत था जो श्रोताओं को खुश कर सकता था। टोनी ताकितानी बैठकर संगीत सुनते रहे और सामान्य से कहीं अधिक शराब पीते रहे।

लेकिन जल्द ही, जैसे ही उन्होंने संगीत को ध्यान से सुना, संगीत में कुछ ऐसा था जिससे उन्हें ऐसा महसूस होने लगा जैसे कोई संकरा पाइप धीरे-धीरे, लेकिन लगातार, कीचड़ से भर रहा हो। उन्हें सांस लेना और यहाँ तक कि वहाँ बैठे रहना भी मुश्किल होता जा रहा था। उन्हें यह महसूस होने लगा कि जो संगीत वे अब सुन रहे थे, वह उनके पिता द्वारा बजाए जाने वाले संगीत से थोड़ा अलग था। बेशक, यह वर्षों पहले की बात थी, और आखिरकार, वे एक बच्चे के कानों से सुन रहे थे, लेकिन उन्हें लगा कि यह अंतर बहुत महत्वपूर्ण था। यह मामूली था लेकिन महत्वपूर्ण था, और यह उनके लिए बिल्कुल स्पष्ट था। वे मंच पर जाना चाहते थे, अपने पिता का हाथ पकड़कर पूछना चाहते थे, पिताजी, क्या बात है? यह इतना अलग क्यों है? लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया। एक तो, वे अपने मन की बात कभी समझा ही नहीं सकते थे। इसलिए उन्होंने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, वे व्हिस्की और पानी पीते हुए अपने पिता के

पूरे सेट को अंत तक सुनते रहे। जब यह समाप्त हुआ, तो उन्होंने और उनकी पत्नी ने तालियाँ बजाईं और घर चले गए।

दंपति का वैवाहिक जीवन अंधकारमय था। दोनों में कभी झगड़ा नहीं हुआ और उनका काम पहले की तरह ही सफल रहा। उन्होंने साथ में कई खुशनुमा पल बिताए, सैर की, फिल्में देखीं और यात्राएं कीं। इतनी कम उम्र में भी वह एक असाधारण रूप से सक्षम गृहिणी थीं। वह संयम का महत्व समझती थीं, घरेलू कामों में फुर्तीली और कुशल थीं, और उन्होंने अपने पति को कभी चिंता का कोई कारण नहीं दिया। हालांकि, एक बात थी जो उन्हें थोड़ी परेशान करती थी, और वह थी उनकी अत्यधिक कपड़े खरीदने की आदत। किसी कपड़े को देखते ही वह खुद को रोक नहीं पाती थीं। पल भर में उनके चेहरे पर एक अजीब सा भाव आ जाता और उनकी आवाज भी बदल जाती। जब टोनी ताकितानी ने पहली बार ऐसा होते देखा, तो उन्हें लगा कि वह अचानक बीमार पड़ गई हैं। सच है, उन्होंने शादी से पहले भी यह देखा था, लेकिन यूरोप में हनीमून के दौरान यह समस्या गंभीर हो गई। उन्होंने यात्रा के दौरान चौंकाने वाली संख्या में कपड़े खरीदे। मिलान और पेरिस में, वह सुबह से शाम तक मानो पागलों की तरह बुटीक के चक्कर लगाती रहीं। उन्होंने कहीं भी घूमने-फिरने का प्लान नहीं बनाया। उन्होंने डुओमो या लूव्र संग्रहालय भी नहीं देखा। उनकी यात्रा से उसे बस कपड़ों की दुकानें ही याद थीं। वैलेंटिनो, मिसोनी, यवेस सेंट लॉरेंट, गिवेंची, फेरागामो, अरमानी, सेरुटी, जियानफ्रेंको फेरे: उसकी आँखों में एक सम्मोहित चमक थी, और वह जो कुछ भी उसके हाथ लगा, सब खरीदती चली गई, और वह उसके पीछे-पीछे बिल चुकाता चला गया। उसे लगभग चिंता होने लगी थी कि कहीं उसके क्रेडिट कार्ड पर छपे अंक घिस न गए हों।

जापान लौटने के बाद भी उसका बुखार कम नहीं हुआ। वह लगभग हर दिन नए कपड़े खरीदती रही। उसके पास कपड़ों की संख्या बहुत बढ़ गई। उन्हें रखने के लिए उसने कई बड़ी अलमारियाँ बनवाईं। उसने उसके जूतों के लिए एक अलमारी भी बनवाई। फिर भी सब कुछ रखने के लिए जगह कम पड़ गई। अंत में, उसने एक पूरा कमरा वॉक-इन क्लोसेट में बदलवा दिया। उनके बड़े घर में काफी कमरे थे और पैसों की कोई कमी नहीं थी। इसके अलावा, वह जो भी कपड़े खरीदती थी, उन्हें इतने अच्छे से पहनती थी और जब भी उसे नए

कपड़े मिलते थे, वह इतनी खुश दिखती थी कि टोनी ताकितानी ने उससे शिकायत न करने का फैसला किया। खैर, उसने मन ही मन सोचा, कोई भी परफेक्ट नहीं होता।

जब उसके कपड़ों की मात्रा इतनी बढ़ गई कि विशेष कमरे में भी जगह नहीं बची, तो टोनी ताकितानी को भी कुछ शंका होने लगी। एक बार जब वह बाहर गई हुई थी, तो उसने उसके कपड़ों को गिना। उसने हिसाब लगाया कि वह दिन में दो बार कपड़े बदल सकती है और फिर भी लगभग दो साल तक एक ही कपड़े को दोहराए बिना काम चला सकती है। किसी भी तरह से देखा जाए, उसके पास बहुत ज़्यादा कपड़े थे। वह समझ नहीं पा रहा था कि उसे इस तरह एक के बाद एक कपड़े क्यों खरीदने पड़ते हैं। वह उन्हें खरीदने में इतनी व्यस्त रहती थी कि उसे पहनने का समय ही नहीं मिलता था। उसने सोचा कि कहीं उसे कोई मानसिक समस्या तो नहीं है। अगर ऐसा है, तो उसे किसी न किसी समय उसकी इस आदत पर लगाम लगानी ही पड़ेगी।

एक रात खाने के बाद उसने आखिरकार यह बात कह ही दी। उसने कहा, "काश तुम कपड़े खरीदने का अपना तरीका थोड़ा कम कर लेतीं। यह पैसों का सवाल नहीं है, मैं उस बारे में बात नहीं कर रहा। मुझे तुम्हारे ज़रूरत के कपड़े खरीदने से कोई आपत्ति नहीं है, और तुम्हें इतना सुंदर देखकर मुझे खुशी होती है, लेकिन क्या तुम्हें सच में इतने महंगे कपड़े चाहिए?"

उनकी पत्नी ने अपनी निगाहें झुका लीं और कुछ देर तक इस बारे में सोचती रहीं। फिर उन्होंने उनकी ओर देखा और कहा, "आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, मुझे इतनी सारी पोशाकों की ज़रूरत नहीं है, मैं जानती हूँ। लेकिन यह जानते हुए भी मैं खुद को रोक नहीं पाती। जब मुझे कोई सुंदर पोशाक दिखती है, तो मुझे उसे खरीदना ही पड़ता है। चाहे मुझे उसकी ज़रूरत हो या न हो, या मेरे पास पहले से ही बहुत सारी पोशाकें हों या न हों: ये सब बातें मायने नहीं रखतीं। मैं बस खुद को रोक नहीं पाती।"

लेकिन मैं खुद को ठीक करने की कोशिश ज़रूर करूंगी, उसने कहा (और साथ ही यह भी जोड़ा कि यह नशे की लत जैसा है)। अगर मैं इसी तरह चलती रही, तो जल्द ही मेरा घर कपड़ों से भर जाएगा। इसलिए उसने खुद को एक हफ्ते के लिए घर में बंद कर लिया और कपड़ों की दुकानों से दूर रहने में कामयाब रही। यह उसके लिए बहुत कष्ट का समय था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी ऐसे ग्रह की सतह पर चल रही हो जहाँ हवा बहुत कम

है। वह हर दिन अपने कपड़ों से भरे कमरे में बिताती, एक-एक करके कपड़े उतारकर उन्हें निहारती। वह कपड़े को सहलाती, उसकी खुशबू सूंघती, फिर उसे पहन लेती और आईने में खुद को देखती, कभी नहीं थकती। और जितना ज़्यादा वह देखती, उतना ही उसे कुछ नया चाहिए होता। नए कपड़ों की चाहत असहनीय हो गई थी।

वह इसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकी।

लेकिन वह अपने पति से बहुत प्यार करती थी और उनका सम्मान भी करती थी। वह जानती थी कि वह सही थे। मुझे इतने कपड़ों की ज़रूरत नहीं है। मेरे पास पहनने के लिए सिर्फ़ एक ही शरीर है। उसने अपने पसंदीदा बुटीक में फ़ोन किया और दुकानदार से पूछा कि क्या वह दस दिन पहले खरीदा हुआ कोट और ड्रेस लौटा सकती है, जिसे उसने कभी पहना नहीं था। उसे बताया गया, "कोई बात नहीं, मैडम; अगर आप इन्हें ले आएंगी, तो हमें इन्हें वापस लेने में खुशी होगी।" ज़ाहिर है, वह उनकी सबसे अच्छी ग्राहकों में से एक थी; वे उसके लिए इतना तो कर ही सकते थे। उसने कोट और ड्रेस अपनी नीली रेनॉल्ट सिंक में रखी और फैशनेबल आओयामा इलाके की ओर चल पड़ी। वहाँ उसने कपड़े लौटा दिए और अपने कार्ड पर क्रेडिट प्राप्त किया। उसने उन्हें धन्यवाद दिया और जल्दी से अपनी कार की ओर बढ़ी, कोशिश कर रही थी कि किसी और चीज़ को न देखे, फिर सीधे हाईवे पर घर की ओर चल पड़ी। कपड़े लौटाने के बाद उसे एक अजीब सी हल्कापन महसूस हुआ। हाँ, उसने खुद से कहा, यह सच था: मुझे इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं थी। मेरे पास जीवन भर के लिए पर्याप्त कोट और ड्रेस हैं। लेकिन जब वह लाल बत्ती के बदलने का इंतज़ार करते हुए लाइन में सबसे आगे खड़ी थी, तो उसके दिमाग में बस कोट और ड्रेस ही घूम रहे थे। रंग, कट और बनावट: उसे सब कुछ साफ़-साफ़ याद था। वह उन्हें इतनी स्पष्टता से देख पा रही थी मानो वे उसके सामने ही रखे हों। उसके माथे पर पसीना आ गया। उसने अपनी बांहें स्टीयरिंग व्हील पर टिका दीं, एक लंबी, गहरी सांस ली और आंखें बंद कर लीं। जब उसने दोबारा आंखें खोलीं, तो उसने देखा कि बत्ती हरी हो गई है। सहज ही, उसने एक्सीलरेटर पर पैर रख दिया।

एक बड़ा ट्रक पीली बत्ती होने के बावजूद चौराहे को पार करने की कोशिश कर रहा था और पूरी रफ्तार से उसकी रेनॉल्ट कार से टकरा गया। उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

टोनी ताकितानी के पास सात नंबर के कपड़ों से भरा एक कमरा और 112 जोड़ी जूते रह गए थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इनका क्या करें। वह अपनी पत्नी के पहने हुए सारे कपड़े जीवन भर अपने पास तो नहीं रखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने एक डीलर को बुलाया और उससे कहा कि वह कम से कम टोपियाँ और अन्य सामान जो भी शुरुआती कीमत बताए, ले जाए। मोज़े और अंडरवियर उन्होंने एक साथ बांधे और बगीचे में लगे भट्टी में जला दिए। इतने सारे कपड़े और जूते थे कि उनका निपटान करना मुश्किल था, इसलिए उन्होंने उन्हें वहीं छोड़ दिया। अंतिम संस्कार के बाद, उन्होंने खुद को उस विशाल अलमारी में बंद कर लिया और दिन भर उन कपड़ों की कतारों को देखते रहे जिन्होंने कमरे की हर जगह को भर दिया था।
दस दिन बाद, टोनी ताकितानी ने अखबार में एक महिला सहायक के लिए विज्ञापन दिया, जिसमें ड्रेस साइज़ 7, लगभग 161 सेंटीमीटर ऊँचाई, 22 सेंटीमीटर जूते का साइज़, अच्छा वेतन और अनुकूल कार्य परिस्थितियाँ अपेक्षित थीं। उनके द्वारा बताया गया वेतन असामान्य रूप से अधिक था, इसलिए तेरह महिलाएँ मिनामी-आओयामा स्थित उनके स्टूडियो-सह-कार्यालय में साक्षात्कार के लिए आईं। उनमें से पाँच ने स्पष्ट रूप से अपने ड्रेस साइज़ के बारे में झूठ बोला था। शेष आठ में से, उन्होंने उस महिला को चुना जिसका कद-काठी उनकी पत्नी से सबसे मिलता-जुलता था, जो लगभग पच्चीस वर्ष की थी और जिसका चेहरा साधारण सा था। उसने एक सादा सफेद ब्लाउज और नीली तंग स्कर्ट पहनी हुई थी। उसके कपड़े और जूते साफ-सुथरे थे, लेकिन उन पर उम्र के निशान साफ दिख रहे थे।
टोनी ताकितानी ने उस महिला से कहा, "काम ज़्यादा मुश्किल नहीं है। आपको बस रोज़ सुबह नौ से शाम पाँच बजे तक दफ्तर आना है, फ़ोन उठाना है, चित्र पहुँचाने हैं, मेरे लिए सामान लाना है, कॉपी बनानी है। बस इतना ही। बस एक शर्त है। मेरी पत्नी का हाल ही में निधन हो गया है, और मेरे घर में उनके बहुत सारे कपड़े हैं। उन्होंने जो कुछ छोड़ा है, उसमें से ज़्यादातर नया या लगभग नया है। मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ काम करते समय उनके कपड़े यूनिफॉर्म की तरह पहनें, इसीलिए मैंने नौकरी की शर्तों में ड्रेस का साइज़, जूते का साइज़ और लंबाई बताई है। मुझे पता है कि यह आपको अजीब लग रहा होगा, लेकिन यकीन मानिए, मेरा कोई गलत इरादा नहीं है। बस मुझे यह स्वीकार करने का समय चाहिए कि मेरी पत्नी अब नहीं रहीं। मुझे वातावरण के हिसाब से थोड़ा एडजस्टमेंट करना होगा। मुझे इसके

लिए कुछ समय चाहिए। और इस दौरान, मैं चाहता हूँ कि आप उनके कपड़े पहनकर मेरे आस-पास रहें। मुझे पूरा यकीन है कि इस तरह मुझे आखिरकार यह एहसास हो जाएगा कि मेरी पत्नी अब इस दुनिया में नहीं हैं।"

होंठ दबाते हुए, युवती ने तुरंत काम पर ध्यान केंद्रित किया। जैसा कि उसने कहा था, यह एक बहुत ही अजीब अनुरोध था—इतना अजीब कि वह इसे पूरी तरह समझ ही नहीं पा रही थी। उसे यह बात समझ में आ रही थी कि उसकी पत्नी का हाल ही में निधन हो गया है। और यह भी कि पत्नी अपने पीछे बहुत सारे कपड़े छोड़ गई है। लेकिन वह यह नहीं समझ पा रही थी कि उसे उसकी उपस्थिति में पत्नी के कपड़े पहनकर काम क्यों करना पड़ रहा है। सामान्य तौर पर, वह मान लेती कि इसमें कुछ और भी बात है। लेकिन, उसने सोचा, यह आदमी बुरा इंसान नहीं लग रहा था। उसकी बातों को सुनकर ही यह पता चल जाता था। शायद पत्नी की मृत्यु ने उसके दिमाग पर कुछ असर डाला हो, लेकिन वह उस तरह का आदमी नहीं लग रहा था जो इस तरह की बात से किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाए। और अंत में, चाहे जो भी हो, उसे काम की ज़रूरत थी। वह बहुत लंबे समय से नौकरी ढूंढ रही थी, और उसकी बेरोजगारी भत्ता योजना अगले महीने समाप्त हो जाएगी। फिर वह किराया नहीं दे पाएगी। और शायद, उसे फिर कभी ऐसी नौकरी नहीं मिलेगी जिसमें इस नौकरी जितनी अच्छी तनख्वाह मिलती हो।

मुझे लगता है मैं समझ गई, उसने कहा। हालांकि पूरी तरह नहीं। और मुझे लगता है मैं वो कर सकती हूँ जो आप मुझसे करने को कह रहे हैं। लेकिन पहले मैं जानना चाहती हूँ कि क्या आप मुझे वो कपड़े दिखा सकते हैं जो मुझे पहनने होंगे। मुझे पहले ये देख लेना चाहिए कि क्या वो वाकई मेरे नाप के हैं। ज़रूर, टोनी ताकितानी ने कहा और वह उस महिला को अपने घर ले गया और उसे कमरा दिखाया। उसने डिपार्टमेंट स्टोर के बाहर कभी भी एक जगह पर इतने सारे कपड़े एक साथ नहीं देखे थे, और हर कपड़ा साफ तौर पर एक उच्च गुणवत्ता वाला था जिस पर काफी पैसा खर्च हुआ था। पसंद भी बेमिसाल थी। नज़ारा लगभग चकाचौंध कर देने वाला था। महिला की साँसें थम सी गईं। उसका दिल बिना किसी कारण के ज़ोर से धड़कने लगा। उसे एहसास हुआ जैसे उसे यौन उत्तेजना हो रही हो।

टोनी ताकितानी ने महिला को कपड़ों की फिटिंग जांचने का सुझाव दिया और उसे कमरे में अकेला छोड़ दिया। उसने खुद को संभाला और पास में टंगी कुछ पोशाकें पहनकर देखीं। उसने कुछ जूते भी पहनकर देखे। सब कुछ उसे ऐसे फिट हो रहा था मानो उसी के लिए बना हो। उसने एक-एक करके पोशाकें हाथ में लीं और उन्हें देखा। उसने अपनी उंगलियों से कपड़े को छुआ और उसकी खुशबू को महसूस किया। सैकड़ों खूबसूरत पोशाकें वहां कतारों में टंगी थीं। कुछ ही देर में उसकी आंखों में आंसू भर आए। वह खुद को रोने से रोक नहीं पाई। आंसू बहते चले गए। उन्हें रोकना नामुमकिन था। मृत महिला की पोशाक में लिपटी हुई, वह बिल्कुल स्थिर खड़ी रही, सिसक रही थी, अपने गले से आवाज निकलने से रोकने के लिए संघर्ष कर रही थी। थोड़ी देर बाद टोनी ताकितानी यह देखने आया कि वह कैसी है। तुम क्यों रो रही हो? उसने पूछा। मुझे नहीं पता, उसने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। मैंने पहले कभी इतनी खूबसूरत पोशाकें नहीं देखीं। मुझे लगता है कि इससे मेरा मन उदास हो गया है। मुझे माफ करना। उसने रूमाल से अपने आंसू पोंछे।
अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं चाहूंगा कि आप कल से ऑफिस में काम शुरू कर दें, टोनी ताकितानी ने व्यावसायिक लहजे में कहा। एक हफ्ते के लिए कपड़े और जूते चुनकर अपने साथ घर ले जाएं।
उस महिला ने छह दिन पहनने के लिए कपड़े चुनने में काफी समय लगाया। फिर उसने मैचिंग जूते चुने। उसने सारा सामान सूटकेस में पैक कर दिया। टोनी ताकितानी ने कहा, "एक कोट भी ले लो, ठंड नहीं लगनी चाहिए।" उसने एक गर्म दिखने वाला ग्रे रंग का कश्मीरी कोट चुना। वह इतना हल्का था कि मानो पंखों से बना हो। उसने अपने जीवन में कभी इतना हल्का कोट नहीं पहना था।
जब वह औरत चली गई, तो टोनी ताकितानी अपनी पत्नी के कपड़ों के कमरे में वापस गया, दरवाज़ा बंद किया और उसकी पोशाकों पर खाली निगाहों से नज़रें गड़ाए बैठा रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उन पोशाकों को देखकर वह औरत क्यों रोई थी। उसे वे पोशाकें ऐसी लग रही थीं मानो उसकी पत्नी की छोड़ी हुई परछाइयाँ हों। उसकी पत्नी की सात नंबर की पोशाकों की परछाइयाँ वहाँ लंबी कतारों में, परत दर परत लटकी हुई थीं, मानो किसी ने

मानव अस्तित्व में निहित अनंत संभावनाओं (या कम से कम सैद्धांतिक रूप से अनंत संभावनाओं) के नमूने इकट्ठा करके टांग दिए हों।
ये परछाइयाँ कभी उसकी पत्नी के शरीर से चिपकी रहती थीं, जिसने उन्हें जीवन की गर्म साँस दी थी और उन्हें गतिमान बनाया था। लेकिन अब, उसके सामने बस जीवन की जड़ों से कटी हुई, मुरझाई हुई परछाइयाँ ही लटकी थीं, जो धीरे-धीरे सूख रही थीं। अब वे क्या थीं, बस घिसे-पिटे पुराने कपड़े, जिनका कोई अर्थ नहीं था? उनके चटख रंग हवा में ऐसे नाच रहे थे जैसे फूलों से पराग उड़ रहा हो, उसकी आँखों, कानों और नाक में समा रहे थे। झालरें, बटन, कंधे के बैज, फीते, जेबें और बेल्ट कमरे की हवा को लालच से सोख रहे थे, उसे इतना पतला कर रहे थे कि उसे साँस लेना मुश्किल हो रहा था। ढेरों कपूर की गोलियों से ऐसी गंध आ रही थी मानो लाखों छोटे-छोटे पंखों वाले कीड़ों की खामोश आवाज़ हो। उसे अचानक एहसास हुआ कि अब उसे इन कपड़ों से नफरत है। दीवार के सहारे झुककर, उसने अपनी बाहें मोड़ लीं और आँखें बंद कर लीं। अकेलापन एक बार फिर उसके अंदर ऐसे समा गया जैसे अंधेरे का हल्का गर्म सूप। अब सब खत्म हो गया है, उसने खुद से कहा। मैं कुछ भी कर लूं, सब खत्म हो चुका है।
उसने महिला को फोन किया और नौकरी के बारे में भूल जाने को कहा। उसने माफी मांगते हुए कहा कि अब उसके लिए कोई काम नहीं है। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? महिला ने हैरान होकर पूछा। मुझे खेद है, लेकिन स्थिति बदल गई है, उसने कहा। आप अपने कपड़े और जूते घर ले जा सकती हैं। मैं आपको दे दूंगा, और सूटकेस भी। मैं बस इतना चाहता हूं कि आप इस बात को भूल जाएं, और कृपया इसके बारे में किसी को न बताएं। महिला को उसकी बात समझ नहीं आई, और जितना वह जवाब जानने की कोशिश करती, उतना ही व्यर्थ लगता। आखिरकार उसने कहा, "ठीक है," और फोन काट दिया।
कुछ मिनटों तक महिला को टोनी ताकितानी पर गुस्सा आया। लेकिन जल्द ही उसे लगा कि शायद सब कुछ अच्छे के लिए ही हुआ है। शुरू से ही सारा मामला अजीब था। उसे नौकरी छूटने का दुख था, लेकिन उसने सोचा कि वह किसी न किसी तरह गुजारा कर लेगी।
उसने टोनी ताकितानी के घर से लाई हुई पोशाकें खोलीं, उन्हें सीधा किया और अलमारी में टांग दिया। जूते उसने सामने वाले दरवाजे के पास वाले शू कैबिनेट में रख दिए। इन नई

पोशाकों के सामने उसके अपने कपड़े और जूते बेहद पुराने और खस्ताहाल लग रहे थे। उसे ऐसा लग रहा था मानो ये बिल्कुल अलग तरह की चीज़ हों, किसी दूसरी दुनिया की सामग्री से बने हों। उसने इंटरव्यू में पहनी हुई ब्लाउज और स्कर्ट उतारी, टांग दी और जींस और स्वेटशर्ट पहन ली। फिर वह फर्श पर बैठ गई और ठंडी बीयर पीने लगी। टोनी ताकितानी के घर में पोशाकों का जो ढेर उसने देखा था, उसे याद करके उसने एक गहरी सांस ली। कितनी खूबसूरत पोशाकें थीं, उसने सोचा। और वह "अलमारी": वह तो मेरे पूरे अपार्टमेंट से भी बड़ी थी। सोचो उन सारे कपड़ों को खरीदने में कितना समय और पैसा लगा होगा! लेकिन अब वह औरत मर चुकी है। और वह अपने पीछे साइज़ 7 की पोशाकों से भरा एक कमरा छोड़ गई है। मुझे आश्चर्य होता है कि मरने के बाद इतनी सारी खूबसूरत पोशाकें पीछे छोड़ना कैसा लगता होगा।

उस महिला की सहेलियाँ जानती थीं कि वह गरीब है, इसलिए जब भी वे मिलतीं, उसे हर बार एक नई पोशाक पहने देखकर वे हैरान रह जातीं—और हर पोशाक एक शानदार, महँगे ब्रांड की होती थी। वे उससे पूछतीं, "ऐसी पोशाक तुम्हें कहाँ से मिली?" वह सिर हिलाते हुए कहती, "मैंने वादा किया था कि मैं किसी को नहीं बताऊँगी। और वैसे भी, अगर मैंने तुम्हें बता भी दिया, तो तुम लोग यकीन नहीं करोगे।"



अंत में, टोनी ताकितानी ने अपनी पत्नी के छोड़े हुए सारे कपड़े एक पुराने कपड़ों के व्यापारी से ले जाने को कहा। व्यापारी ने उसे उसकी कीमत के बीसवें हिस्से से भी कम पैसे दिए, लेकिन उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह उन सभी कपड़ों को मुफ्त में भी जाने दे सकता था, बस कोई उन्हें ले जाए। ऐसी जगह जहाँ वह उन्हें फिर कभी न देख सके।

कमरा खाली हो जाने के बाद, टोनी ताकितानी ने उस कमरे को बहुत लंबे समय तक खाली छोड़ दिया।

कभी-कभार वह उस कमरे में जाता और एक-दो घंटे वहाँ कुछ खास न करते हुए, बस अपने मन को खाली छोड़ देता। वह ज़मीन पर बैठ जाता और खाली दीवारों को, अपनी मृत पत्नी की परछाइयों को घूरता रहता। लेकिन जैसे-जैसे महीने बीतते गए, कमरे में मौजूद चीज़ों को याद

करने की उसकी क्षमता कम होती गई। उनके रंग और गंध की यादें लगभग उसकी यादों से ओझल हो गईं। यहाँ तक कि जिन जीवंत भावनाओं को उसने कभी संजोया था, वे भी पीछे हट गईं, मानो उसकी स्मृति से दूर भाग रही हों। हवा में धुंध की तरह, उसकी यादें अपना रूप बदलती गईं, और हर बदलाव के साथ वे धुंधली होती गईं। हर याद अब परछाई की परछाई की परछाई बन गई थी। उसके लिए केवल अनुपस्थिति का एहसास ही बचा था। कभी-कभी वह अपनी पत्नी का चेहरा मुश्किल से ही याद कर पाता था। हालाँकि, उसे अक्सर वह महिला याद आती थी, एक बिल्कुल अजनबी, जो उसकी पत्नी द्वारा छोड़े गए कपड़ों को देखकर कमरे में आँसू बहा रही थी। उसे उसका साधारण चेहरा और उसके घिसे-पिटे चमड़े के जूते याद थे। इसके साथ ही, उसकी सिसकियाँ उसके मन में फिर से ताजा हो गईं। वह ऐसी बातें याद नहीं करना चाहता था, लेकिन उसे पता भी नहीं चला कि क्या हो रहा है। बहुत समय बीत जाने के बाद भी, जब वह उस महिला का नाम समेत कई बातें भूल चुका था, तब भी उसकी छवि अजीब तरह से अविस्मरणीय बनी रही।

अपनी पत्नी की मृत्यु के दो साल बाद, टोनी ताकितानी के पिता की लिवर कैंसर से मृत्यु हो गई। कैंसर से पीड़ित होने के बावजूद शोज़ाबुरो ताकितानी को ज़्यादा कष्ट नहीं हुआ और अस्पताल में उनका समय बहुत कम बीता। उनकी मृत्यु लगभग नींद में सो जाने जैसी हुई। इस मायने में उन्होंने अंत तक एक सुखद जीवन जिया। थोड़ी सी नकदी और कुछ शेयर प्रमाणपत्रों के अलावा, शोज़ाबुरो ताकितानी ने ऐसी कोई संपत्ति नहीं छोड़ी जिसे संपत्ति कहा जा सके। उनके पास केवल उनका वाद्य यंत्र और पुराने जैज़ रिकॉर्ड का एक विशाल संग्रह था। टोनी ताकितानी ने रिकॉर्ड को सामान ले जाने वाली कंपनी द्वारा दिए गए डिब्बों में ही रखा और उन्हें खाली कमरे के फर्श पर ढेर कर दिया। चूंकि रिकॉर्ड में फफूंद की गंध आ रही थी, इसलिए टोनी ताकितानी को हवा बदलने के लिए कमरे की खिड़कियां नियमित अंतराल पर खोलनी पड़ती थीं। इसके अलावा, उन्होंने उस कमरे में कभी कदम नहीं रखा।

एक साल इसी तरह बीत गया, लेकिन घर में रखे अभिलेखों का अंबार उन्हें दिन-ब-दिन परेशान करने लगा। अक्सर तो बस उनके वहां पड़े रहने के ख्याल से ही उनकी सांसें रुक जाती थीं। कभी-कभी वे आधी रात को जाग जाते और फिर सो नहीं पाते। उनकी यादें धुंधली

पड़ गई थीं, लेकिन वे अब भी वहीं थीं, जहां वे हमेशा से थीं, और यादों का सारा भार उन्हीं पर था।



उन्होंने एक पुराने रिकॉर्ड बेचने वाले डीलर को फोन किया और उनसे उस संग्रह के लिए बोली लगाने को कहा। चूंकि उसमें कई बहुमूल्य डिस्क थीं जो लंबे समय से अनुपलब्ध थीं, इसलिए उन्हें काफी अच्छी रकम मिली—इतनी कि एक छोटी कार खरीदी जा सकती थी। हालांकि, उनके लिए पैसा कोई मायने नहीं रखता था।

जब उनके घर से रिकॉर्डों का पहाड़ गायब हो गया, तो टोनी ताकितानी वास्तव में अकेले रह गए थे।

— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

शार्पी केक का उदय और पतन

आधी नींद में ही मैं सुबह का अखबार पढ़ रहा था कि तभी एक कोने में एक विज्ञापन पर मेरी नज़र पड़ी: “मशहूर शार्पी केक बनाने वाली कंपनी नए उत्पादों की तलाश में है। बड़ा सूचनात्मक सेमिनार।” मैंने शार्पी केक के बारे में पहले कभी नहीं सुना था; ज़ाहिर है, ये किसी तरह के केक ही होंगे। मिठाई के मामले में मैं थोड़ा नखरे वाला हूँ, और मेरे पास काफी समय था। मैंने सोचा कि जाकर देखूँ कि आखिर ये “बड़ा सूचनात्मक सेमिनार” किस बारे में है।

यह आयोजन एक होटल के बैंक्वेट हॉल में हुआ, और चाय और केक परोसे गए। केक, ज़ाहिर है, शार्पी ब्रांड के थे। मैंने एक केक चखा, लेकिन मुझे वह ज़्यादा पसंद नहीं आया। उसका स्वाद चिपचिपा और मीठा था, और ऊपरी परत बहुत सूखी थी। मुझे समझ नहीं आया कि आजकल के फैशनेबल लोग इस तरह की मिठाई का आनंद कैसे ले सकते हैं।

फिर भी, सूचनात्मक बैठक में उपस्थित सभी लोग या तो मेरी उम्र के थे या मुझसे छोटे थे। मुझे टिकट नंबर 952 दिया गया था, और मेरे बाद कम से कम सौ लोग आए, जिसका मतलब था कि इस बैठक में एक हजार से अधिक लोग मौजूद थे। वाकई बहुत प्रभावशाली।

मेरे बगल में लगभग बीस साल की एक लड़की बैठी थी, जिसने मोटे चश्मे पहन रखे थे। वह देखने में सुंदर तो नहीं थी, लेकिन उसका व्यक्तित्व अच्छा लग रहा था।

मैंने उससे पूछा, "क्या तुमने पहले कभी ये शार्पी जैसी चीज़ें खाई हैं?"

“बेशक,” उसने कहा। “वे मशहूर हैं।”

“हाँ, लेकिन वे ज़्यादा...” मैंने कहना शुरू ही किया था कि उसने मेरे पैर पर एक लात मार दी। हमारे आस-पास के लोग गुस्से से मेरी तरफ देखने लगे। माहौल बिगड़ गया, लेकिन मैंने विनी-द-पूह जैसी मासूमियत भरी शक्ल बनाकर खुद को संभाल लिया।

बाद में उस लड़की ने मुझसे फुसफुसाते हुए कहा, "क्या तुम पागल हो? ऐसी जगह आकर शार्पी की बुराई कर रहे हो? शार्पी क्रोज़ तुम्हें पकड़ सकते हैं। तुम कभी ज़िंदा घर नहीं लौट पाओगे।"

“शार्पी क्रोज़?” मैंने हैरानी से कहा। “ये क्या—”

“चुप रहो!” लड़की ने मुझे रोका। बैठक शुरू होने ही वाली थी।

शार्पी केक कंपनी के अध्यक्ष ने शार्पी के संक्षिप्त इतिहास से कार्यक्रम की शुरुआत की। यह उन संदिग्ध "तथ्यात्मक" कहानियों में से एक थी, जिनमें बताया गया था कि आठवीं शताब्दी में किसी ने कुछ सामग्रियों को मिलाकर पहली शार्पी बनाई थी। उन्होंने दावा किया कि 905 के कोकिंशु शाही संकलन में शार्पी पर एक कविता भी है। मैं इस पर ज़ोर से हंसने को तैयार था, लेकिन सब लोग इतनी ध्यान से सुन रहे थे कि मैंने खुद को रोक लिया। इसके अलावा, मुझे शार्पी कौवों की चिंता भी थी।

राष्ट्रपति का भाषण एक घंटे तक चला। यह बेहद उबाऊ था। उनका बस इतना कहना था कि शार्पी एक मिठाई है जिसकी एक लंबी परंपरा है, जिसे वे कुछ शब्दों में भी कह सकते थे।

इसके बाद प्रबंध निदेशक ने नए शार्पी केक उत्पादों की मांग के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि शार्पी एक महान राष्ट्रीय मिठाई है जिसका लंबा इतिहास है, लेकिन इस जैसे उत्कृष्ट उत्पाद को भी लगातार विकसित होने और हर नए युग के अनुरूप ढलने के लिए नए विचारों की आवश्यकता है। सुनने में यह बात अच्छी लग सकती है, लेकिन असल में उनका कहना था कि शार्पी का स्वाद अब पुराना हो गया है और बिक्री घट रही है, इसलिए उन्हें युवाओं से नए विचारों की आवश्यकता है। वे यही बात और भी स्पष्ट शब्दों में कह सकते थे।

बाहर निकलते समय मुझे प्रतियोगिता के नियमों की एक प्रति मिली। आपको शार्पी पेन से बनी कोई मिठाई बनानी थी और एक महीने बाद कंपनी को सौंपनी थी। इनाम राशि: दो मिलियन येन। अगर मेरे पास दो मिलियन येन होते तो मैं अपनी प्रेमिका से शादी कर लेता और एक नए अपार्टमेंट में रहने चला जाता। मैंने एक नया शार्पी केक बनाने का फैसला किया।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, मिठाइयों के मामले में मैं काफी नखरे वाली हो सकती हूँ। और मैं लगभग हर चीज़, लगभग हर शैली में खुद बना सकती हूँ: बीन्स का जैम, क्रीम फिलिंग, पाई क्रस्ट। मेरे लिए एक महीने में शार्पी केक का आधुनिक संस्करण तैयार करना आसान होगा। तय तारीख पर, मैंने दो दर्जन नए शार्पी केक बेक किए और उन्हें शार्पी केक कंपनी के रिसेप्शन डेस्क पर ले गई।

काउंटर पर बैठी लड़की ने कहा, "ये देखने में अच्छे लग रहे हैं।"

मैंने कहा, "वे अच्छे हैं।"



एक महीने बाद मुझे शार्पी कंपनी से फोन आया और उन्होंने मुझे अगले दिन अपने कार्यालय में आने के लिए कहा। मैं टाई पहनकर वहाँ गया और रिसेप्शन रूम में प्रबंध निदेशक ने मेरा स्वागत किया।

उन्होंने कहा, "आपने जो नया शार्पी केक प्रस्तुत किया था, उसे कर्मचारियों ने बहुत सराहा है। विशेषकर, युवा कर्मचारियों ने।"

मैंने कहा, "यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई।"

"दूसरी ओर, पुराने कर्मचारियों में से कुछ ऐसे भी हैं जो—मैं इसे कैसे कहूँ?—कहते हैं कि आपने जो बनाया है वह शार्पी केक नहीं है। हमारे बीच इस बात पर ज़बरदस्त बहस चल रही है।"

मैंने सोचा कि वह क्या कहना चाह रहा है, "मैं समझ गया।"

और इसलिए, निदेशक मंडल ने यह निर्णय लिया है कि यह फैसला उनके परम पावन शार्पी क्रोज़ पर छोड़ दिया जाए।

“शार्पी क्रोज़?” मैंने हैरानी से कहा। “शार्पी क्रोज़ क्या होते हैं?”

प्रबंध निदेशक ने मुझे हैरानी भरी नजरों से देखा। "क्या आपका मतलब यह है कि आपने शार्पी क्रोज़ के बारे में कुछ भी जाने बिना इस प्रतियोगिता में भाग लिया?"

मुझे खेद है। मैं एक तरह का संरक्षित जीवन जीती हूँ।

“यह तो बहुत बुरा है,” उसने कहा। “अगर आप शार्पी क्रोज़ के बारे में नहीं जानते, तो...” उसने खुद को रोक लिया। “खैर, छोड़ो। कृपया मेरे साथ आइए।”

मैं निदेशक के पीछे-पीछे कमरे से बाहर निकला, गलियारे से होते हुए लिफ्ट से छठी मंजिल पर गया, फिर एक और गलियारे से गुजरा, जिसके अंत में एक बड़ा लोहे का दरवाजा था। निदेशक ने एक घंटी बजाई, और एक हट्टा-कट्टा गार्ड प्रकट हुआ। प्रबंध निदेशक की पुष्टि होते ही उसने विशाल दरवाजा खोल दिया। सुरक्षा बहुत कड़ी थी।

“यहाँ पर 'शर्पी कौवे' रहते हैं,” निदेशक ने कहा। “ये पक्षियों का एक विशेष परिवार है। सदियों से ये जीवित रहने के लिए केवल शार्पी केक ही खाते आए हैं।”

और किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं थी। उस विशाल कमरे में सौ से अधिक कौवे थे, जो किसी गोदाम जैसा था, जिसकी छत पंद्रह फुट ऊंची थी और दीवारों से दीवारों तक लंबे-लंबे खंभे लगे थे। हर खंभे पर कतारों में शार्पी कौवे बैठे थे। वे आम कौवों से कहीं बड़े थे, लगभग तीन फुट लंबे। छोटे कौवे भी कम से कम दो फुट लंबे थे। मुझे एहसास हुआ कि उनकी आंखें नहीं थीं। जहां उनकी आंखें होनी चाहिए थीं, वहां सफेद चर्बी के थक्के थे। उनके शरीर इतने फूले हुए थे कि मानो फट जाएंगे।

जब कौवों ने हमें अंदर आते सुना, तो वे अपने पंख फड़फड़ाने लगे और जोर-जोर से चिल्लाने लगे। पहले तो मुझे वह एक बेतरतीब सी दहाड़ लगी, लेकिन जैसे-जैसे मेरे कान उससे अभ्यस्त होते गए, मुझे एहसास हुआ कि वे मानो "शार्पीज़! शार्पीज़!" चिल्ला रहे थे। वे सचमुच भयानक जीव थे।

निर्देशक ने अपने हाथों में पकड़े एक डिब्बे से शार्पी केक ज़मीन पर बिखेर दिए, जिसके जवाब में सौ से अधिक पक्षी उन पर टूट पड़े। शार्पी केक तक पहुँचने की होड़ में कौवे एक-दूसरे के पैरों और आँखों पर चोंच मारने लगे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उनकी आँखें चली गईं!

इसके बाद निर्देशक ने दूसरे डिब्बे से शार्पी केक जैसी दिखने वाली कोई चीज़ निकाली और उसे ज़मीन पर बिखेर दिया। उन्होंने मुझसे कहा, "यह देखो। यह वह रेसिपी है जिसे प्रतियोगिता से बाहर कर दिया गया था।"

पक्षी पहले की तरह ही झुंड बनाकर नीचे आए, लेकिन जैसे ही उन्हें एहसास हुआ कि केक असली शार्पी नहीं हैं, उन्होंने उन्हें थूक दिया और गुस्से में चीखने लगे:

शार्पी पेन!

शार्पी पेन!

शार्पी पेन!

उनकी चीखें छत से टकराकर गूंजती रहीं, यहाँ तक कि मेरे कान दुखने लगे।

“देखा? ये सिर्फ असली शार्पी ही खाएंगे,” निर्देशक ने मुस्कुराते हुए कहा। “ये नकली को हाथ भी नहीं लगाएंगे।”

शार्पी पेन!

शार्पी पेन!
शार्पी पेन!
अब, चलो इसे तुम्हारे नए शार्पी केक के साथ आजमाते हैं। अगर वे इसे खा लेते हैं, तो तुम जीत जाते हो। अगर नहीं, तो तुम हार जाते हो।
ओह-ओह! मुझे पहले से ही पता था कि ये सब गड़बड़ होने वाला है। उन्हें बेवकूफ पक्षियों के एक समूह को प्रतियोगिता का फैसला करने नहीं देना चाहिए था। मेरी आशंकाओं से बेखबर, निर्देशक ने मेरे "नए शार्पी पेन" ज़मीन पर बिखेर दिए। कौवे फिर टूट पड़े, और फिर तो जैसे हंगामा मच गया। कुछ पक्षियों ने बड़े चाव से मेरे शार्पी पेन खा लिए, लेकिन कुछ ने उन्हें थूक दिया और चिल्लाए, "शार्पी पेन! शार्पी पेन!" और कुछ अन्य, केक तक न पहुँच पाने के कारण, पागल हो गए और केक खा रहे पक्षियों के गले पर चोंच मारने लगे। चारों ओर खून ही खून हो गया। एक कौवे ने उस केक पर झपट्टा मारा जिसे दूसरे ने थूक दिया था, लेकिन एक और विशालकाय कौवे ने उस पर झपट्टा मारा और "शार्पी पेन!" चिल्लाते हुए पहले वाले का पेट फाड़ दिया। उसके बाद तो जैसे मानो सब कुछ तहस-नहस हो गया, खून से खून निकल रहा था, गुस्सा गुस्से को और भड़का रहा था। ये सब कुछ बेतुकी मिठाइयों के लिए हो रहा था, लेकिन पक्षियों के लिए केक ही सब कुछ थे। केक पर शार्पी पेन का इस्तेमाल हुआ था या नहीं, यह उनके लिए जीवन-मरण का सवाल था।
“अब देखो तुमने क्या कर दिया!” मैंने निर्देशक से कहा। “तुमने अचानक ही उनके सामने केक फेंक दिए। उत्तेजना बहुत तीव्र थी।”
फिर मैं अकेले ही कमरे से बाहर निकला, लिफ्ट से नीचे गया और शार्पी केक्स बिल्डिंग से निकल गया। मुझे दो मिलियन येन की इनामी राशि खोने का बहुत दुख था, लेकिन मैं अपनी बाकी की लंबी जिंदगी इन मनहूस कौवों के साथ गुज़ारना नहीं चाहता था।
अब से मैं वही खाना बनाऊँगी और खाऊँगी जो मैं खाना चाहती हूँ। मुझे उन कौवों की कोई परवाह नहीं, चाहे वे आपस में चोंच मार-मार कर मर जाएँ।
— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

हिम पुरुष

मेरे पति एक आइस मैन हैं।

मेरी उनसे पहली मुलाकात एक स्की रिसॉर्ट के होटल में हुई थी। आइस मैन से मिलने के लिए इससे ज़्यादा उपयुक्त जगह की कल्पना करना मुश्किल है। वह होटल की लॉबी में थे, जो युवाओं की भीड़ से भरी और शोरगुल वाली थी। वह चिमनी से जितना हो सके दूर एक कोने में चुपचाप एक किताब में डूबे बैठे थे। दोपहर होने वाली थी, लेकिन सुबह की साफ, ठंडी रोशनी मानो सिर्फ उन्हीं पर पड़ रही थी। "ये तो आइस मैन हैं," मेरी एक सहेली ने फुसफुसाते हुए कहा। उस समय मुझे आइस मैन के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, और मेरी सहेली भी मेरी मदद नहीं कर सकी। उसे बस इतना पता था कि वह आइस मैन नाम से जाने जाते हैं। "उन्हें ये नाम इसलिए दिया होगा क्योंकि वे बर्फ से बने हैं," उसने गंभीर चेहरे के साथ कहा। उनका चेहरा इतना गंभीर था मानो बात आइस मैन की नहीं बल्कि किसी भूत या संक्रामक रोग से पीड़ित व्यक्ति की हो रही हो।

बर्फ का आदमी जवान दिख रहा था, हालांकि उसके सख्त, तार जैसे बालों में बिखरे सफेद रेशे, मानो बची हुई बर्फ के टुकड़ों की तरह लग रहे थे, जिससे उसकी जवानी कुछ झलक रही थी। वह लंबा था, उसके गाल जमे हुए पत्थरों की तरह तराशे हुए थे, उसकी उंगलियां ऐसी बर्फ से ढकी थीं जो मानो कभी पिघलेगी ही नहीं। इसके अलावा, वह बिल्कुल सामान्य दिख रहा था। वह सुंदर तो नहीं था, हालांकि कुछ लोगों को वह काफी आकर्षक लग सकता था। उसमें कुछ ऐसा था जो सीधे दिल को छू लेता था। खासकर उसकी आंखें, और वह शांत, पारदर्शी नज़र जो सर्दियों की सुबह में बर्फ के टुकड़े की तरह चमक रही थी—एक अस्थाई शरीर में जीवन की एकमात्र झलक। मैं कुछ देर तक लॉबी के उस पार से बर्फ के आदमी को देखता रहा। वह अपनी किताब में डूबा हुआ था, एक पल भी हिला नहीं, न ही ऊपर देखा, मानो खुद को यकीन दिलाने की कोशिश कर रहा हो कि वह बिल्कुल अकेला है।

अगली दोपहर वह पहले की तरह उसी जगह पर अपनी किताब पढ़ रहा था। जब मैं दोपहर के भोजन के लिए डाइनिंग रूम में गया, और जब मैं शाम को अपने दोस्तों के साथ स्कीइंग से लौटा, तो वह हमेशा वहीं बैठा होता था, उसी कुर्सी पर, उसकी आँखों में वही भाव होता था जैसे वह पहले की तरह उसी किताब के पन्ने पलट रहा हो। और अगला दिन भी बिलकुल वैसा

ही था। सुबह से शाम तक वह अकेला बैठा चुपचाप पढ़ता रहा, मानो बाहर के जमे हुए सर्दियों के दृश्य का ही एक हिस्सा हो।

चौथे दिन दोपहर को, मैंने एक बहाना बनाया और सबके साथ स्कीइंग के लिए ढलान पर नहीं गया। इसके बजाय, मैं होटल में ही रुक गया और लॉबी में इधर-उधर घूमने लगा। सबके स्कीइंग करने के कारण, लॉबी किसी वीरान शहर जैसी लग रही थी। वहाँ की हवा चिपचिपी और गर्म थी, और एक अजीब सी उदास गंध से भरी हुई थी—लोगों के जूतों के तलवों पर चिपकी बर्फ की गंध, जो चिमनी के सामने धीरे-धीरे पिघल रही थी। मैंने खिड़कियों से बाहर देखा, अखबार के पन्ने पलटे। आखिरकार मैंने हिम्मत जुटाई, आइस मैन के पास गया और उससे बात की। मैं काफी शर्मीला हूँ और शायद ही कभी किसी अजनबी से बात शुरू करता हूँ, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं पाया। मुझे उससे बात करनी ही थी। यह होटल में मेरी आखिरी रात थी और अगर मैंने यह मौका गंवा दिया तो शायद मुझे दोबारा कभी ऐसा मौका न मिले।

मैंने सहजता से पूछा, "आप स्कीइंग नहीं कर रहे हैं?" बर्फ के आदमी ने धीरे से अपना सिर उठाया, मानो वह दूर बहती हवा को ध्यान से सुन रहा हो। उसने मुझे गौर से देखा और फिर चुपचाप सिर हिलाया। उसने कहा, "मैं स्कीइंग नहीं करता। मुझे बस पढ़ना और बर्फ को देखना अच्छा लगता है।" उसके शब्द हवा में तैरते हुए, किसी कॉमिक-बुक के बुलबुले की तरह लग रहे थे, हर शब्द मेरे सामने स्पष्ट था। उसने धीरे से अपनी उंगलियों से कुछ पाला पोंछा।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहूँ। मैं शर्म से लाल हो गई और वहीं जम गई। आइस मैन ने मेरी आँखों में देखा और हल्की सी मुस्कान दी। या शायद वह मुस्कुराई ही नहीं थी? क्या सच में मुस्कुराई थी? शायद मैं बस कल्पना कर रही थी। "क्या आप बैठना चाहेंगी?" उसने कहा। "मुझे पता है कि आप मेरे बारे में जानने को उत्सुक हैं, तो चलिए थोड़ी देर बात करते हैं। आप जानना चाहती हैं कि आइस मैन कैसा होता है, है ना?" वह हँसा। "कोई बात नहीं," उसने आगे कहा। "डरने की कोई बात नहीं। मुझसे बात करने से आपको सर्दी नहीं लग जाएगी।"

हम लॉबी के एक कोने में सोफे पर बैठे थे, बाहर गिरती बर्फ को देखते हुए झिझकते हुए बातें कर रहे थे। मैंने एक कप हॉट कोकोआ मंगवाया, लेकिन आइस मैन ने कुछ नहीं पिया। वह मेरी ही तरह शर्मीला था। ऊपर से, हमारे बीच बात करने के लिए कुछ खास था भी नहीं। पहले हमने मौसम के बारे में बात की, फिर होटल के बारे में। क्या तुम अकेले आए हो? मैंने उससे पूछा। हां, उसने जवाब दिया। क्या तुम्हें स्कीइंग पसंद है? उसने पूछा। मुझे खास पसंद नहीं, मैंने जवाब दिया। मेरी कुछ सहेलियां मुझे यहां खींच लाईं। मैं मुश्किल से स्कीइंग कर पाती हूं। मैं आइस मैन के बारे में और जानने के लिए बेताब थी। क्या वह सचमुच बर्फ का बना होता है? वह क्या खाता है? गर्मियों में कहां रहता है? क्या उसका परिवार है? इस तरह के सवाल। दुर्भाग्य से, आइस मैन ने अपने बारे में कुछ नहीं बताया, और मेरे मन में उठ रहे सवालों को पूछने की हिम्मत भी नहीं हुई। मुझे लगा कि शायद वह इन सब बातों के बारे में बात नहीं करना चाहता।
इसके बजाय, उन्होंने मेरे बारे में, मैं कौन हूँ, इसके बारे में बात की। यकीन करना मुश्किल है, लेकिन वे मेरे बारे में सब कुछ जानते थे। मेरे परिवार में कौन-कौन है, मेरी उम्र, मेरी रुचियाँ, मेरा स्वास्थ्य, मैं किस स्कूल में पढ़ता हूँ, मेरे दोस्त। वे सब कुछ जानते थे। यहाँ तक कि जिन बातों को मैं बहुत पहले भूल चुका था, उनके बारे में भी उन्हें सब कुछ पता था।
मुझे समझ नहीं आ रहा, मैं शर्म से लाल हो गई। मुझे ऐसा लगा जैसे सबके सामने मुझे नंगा कर दिया गया हो। आप मेरे बारे में इतना सब कैसे जानते हैं? मैंने पूछा। क्या आप मन की बात पढ़ लेते हैं?
नहीं, बर्फ के आदमी ने कहा, मैं मन नहीं पढ़ सकता। मुझे बस ये बातें पता हैं। जैसे मैं बर्फ के एक साफ टुकड़े में गहराई से देख रहा हूँ। जब मैं तुम्हें इस तरह देखता हूँ, तो मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ देख सकता हूँ।
क्या आप मेरा भविष्य देख सकते हैं? मैंने पूछा।
नहीं, भविष्य नहीं, उसने भावहीनता से जवाब दिया और धीरे-धीरे अपना सिर हिलाया। मुझे भविष्य में कोई दिलचस्पी नहीं है। भविष्य की मुझे कोई अवधारणा ही नहीं है। बर्फ में भविष्य नहीं होता, बस अतीत होता है, जो उसमें समाया हुआ होता है। मानो वे जीवित हों, दुनिया की हर चीज़ उसके अंदर समाई हुई है, स्पष्ट और अलग-अलग। बर्फ हर तरह की चीज़ों को इस

तरह संरक्षित कर सकती है—साफ़-सुथरा, स्पष्ट। यही बर्फ का सार है, यही उसकी भूमिका है।

मैंने जवाब दिया, "मुझे खुशी है," और मुस्कुरा दी। मुझे राहत मिली—मैं किसी भी कीमत पर अपने भविष्य के बारे में सुनना नहीं चाहती थी।



टोक्यो लौटने के बाद हम कुछ बार मिले, और आखिरकार हर सप्ताहांत मिलने जाने लगे। हम आम डेट्स पर नहीं जाते थे, न ही फिल्में देखने जाते थे, न ही कॉफी शॉप में समय बिताते थे। हम बाहर खाना खाने भी नहीं जाते थे। आइस मैन तो शायद ही कभी खाता था। इसके बजाय हम पार्क की बेंच पर साथ-साथ बैठकर बातें करते थे। हम हर तरह के विषयों पर चर्चा करते थे, लेकिन आइस मैन ने कभी अपने बारे में बात नहीं की। ऐसा क्यों? मैंने एक दिन पूछा। आप अपने बारे में कभी बात क्यों नहीं करते? मैं आपके बारे में और जानना चाहती हूँ—आप कहाँ पैदा हुए, आपके माता-पिता कैसे थे, आप आइस मैन कैसे बने। आइस मैन ने कुछ देर तक मुझे देखा, फिर धीरे से अपना सिर हिलाया। मुझे इन सवालों के जवाब नहीं पता, उसने शांत और दृढ़ता से जवाब दिया, अपनी कठोर सफेद साँस छोड़ते हुए। मेरा कोई अतीत नहीं है। मैं बाकी सब चीजों का अतीत जानता हूँ, और उसे सहेज कर रखता हूँ। लेकिन मेरा खुद का कोई अतीत नहीं है। मुझे नहीं पता कि मैं कहाँ पैदा हुआ था। मुझे नहीं पता कि मेरे माता-पिता कैसे दिखते थे, या मेरे माता-पिता थे भी या नहीं। मुझे नहीं पता कि मेरी उम्र कितनी है, या मेरी कोई उम्र है भी या नहीं।

आइस मैन उतना ही अलग-थलग और अकेला था जितना कि अंधेरे में तैरता हुआ एक हिमखंड।

मुझे उससे गहरा प्यार हो गया, और उसे भी मुझसे प्यार हो गया, मेरे वर्तमान स्वरूप से, मेरे अतीत या भविष्य से परे। और मुझे भी आइस मैन से उसके वर्तमान स्वरूप से प्यार हो गया, उसके अतीत या भविष्य से परे। यह एक अद्भुत अनुभव था। हमने शादी के बारे में बात करना शुरू कर दिया। मैं अभी बीस साल की हुई थी, और आइस मैन वह पहला व्यक्ति था जिससे मैंने सचमुच प्यार किया था। उस समय, उससे प्यार करने का असली मतलब मेरी

समझ से परे था। लेकिन यह बात तब भी सच होती, अगर मैं आइस मैन से प्यार न भी कर रही होती।

मेरी माँ और बड़ी बहन हमारी शादी के सख्त खिलाफ थीं। उनका तर्क था, "तुम शादी के लिए बहुत छोटी हो। तुम्हें उस आदमी के बारे में कुछ नहीं पता—यहाँ तक कि उसका जन्म कहाँ और कब हुआ था, यह भी नहीं। हम अपने रिश्तेदारों को ये सब कैसे समझाएँगे? और सुनो," उन्होंने आगे कहा, "वो बर्फीला आदमी है, तो अगर वो पिघल जाए तो क्या होगा? तुम्हें ये बात समझ नहीं आ रही, पर शादी करने पर कुछ जिम्मेदारियाँ भी आती हैं। भला एक बर्फीला आदमी पति के तौर पर अपने कर्तव्यों को कैसे निभा सकता है?"

लेकिन उनकी आशंकाएँ निराधार थीं। आइस मैन सचमुच बर्फ का नहीं बना था। वह बर्फ की तरह ठंडा था। इसलिए, चाहे कितनी भी गर्मी हो जाए, वह पिघलने वाला नहीं था। वह ठंडा ज़रूर था, लेकिन यह उस तरह की ठंड नहीं थी जिससे किसी दूसरे की शरीर की गर्मी छिन जाए।

तो हमारी शादी हो गई। किसी ने भी हमारी शादी का जश्न नहीं मनाया। न मेरे दोस्त, न रिश्तेदार, न मेरा परिवार—कोई भी हमारी शादी से खुश था। हमारी शादी की रस्म भी नहीं हुई। आइस मैन के पास पारिवारिक रजिस्टर नहीं था, इसलिए निजी समारोह भी संभव नहीं था। हम दोनों ने बस यह तय कर लिया कि हमारी शादी हो गई है। हमने एक छोटा सा केक खरीदा और उसे खाया, बस हम दोनों ने। यही हमारी रस्म थी। हमने एक छोटा सा अपार्टमेंट किराए पर लिया और आइस मैन ने एक रेफ्रिजरेटेड मीट वेयरहाउस में नौकरी कर ली। ठंड उसे कभी परेशान नहीं करती थी, और चाहे वह कितनी भी मेहनत करे, कभी थकता नहीं था। वह कभी ज्यादा खाता भी नहीं था। इसलिए उसका बॉस उसे बहुत पसंद करता था और उसे अपने बाकी कर्मचारियों से ज्यादा वेतन देता था। हम दोनों ने एक शांत जीवन बिताया, किसी और से परेशान हुए बिना, न ही किसी को परेशान करते हुए।

जब हम प्रेम करते थे, तो मैं हमेशा कहीं दूर स्थित एक एकांत, शांत बर्फ के टुकड़े की कल्पना करती थी। कठोर बर्फ, जितनी कठोर हो सकती है, उतनी कठोर, पूरी दुनिया में बर्फ का सबसे बड़ा टुकड़ा। वह कहीं दूर था, हालांकि बर्फ के आदमी को पता होना चाहिए कि वह बर्फ का टुकड़ा कहाँ है। उसने जो किया वह उस बर्फ की एक स्मृति को प्रकट करना था।

पहले कुछ बार जब हमने प्रेम किया, तो मैं उलझन में थी, लेकिन जल्द ही मुझे इसकी आदत हो गई। मुझे तब अच्छा लगने लगा जब उसने मुझे अपनी बाहों में लिया। हमेशा की तरह, उसने अपने बारे में एक शब्द भी नहीं कहा, यहाँ तक कि यह भी नहीं बताया कि वह बर्फ का आदमी क्यों बना, और मैंने उससे कभी नहीं पूछा। हम दोनों बस अंधेरे में एक-दूसरे को थामे रहते थे, उस विशाल बर्फ को साझा करते थे, जिसके भीतर दुनिया का अतीत, लाखों वर्षों का इतिहास, संरक्षित था।

हमारी शादीशुदा ज़िंदगी अच्छी चल रही थी। हम एक-दूसरे से प्यार करते थे और सब हमें अकेला छोड़ देते थे। शुरू में लोगों को 'आइस मैन' के साथ तालमेल बिठाने में थोड़ी मुश्किल हुई, लेकिन कुछ समय बाद वे उससे बात करने लगे। उन्होंने सोचा कि एक आइस मैन बाकी लोगों से ज़्यादा अलग नहीं होता। लेकिन अंदर ही अंदर मुझे पता था कि वे उसे स्वीकार नहीं करते थे, और मुझे भी इसलिए स्वीकार नहीं करते थे क्योंकि मैंने उससे शादी की थी। उन्होंने मान लिया था कि हम उनसे अलग हैं, और हमारे और उनके बीच की खाई कभी नहीं भरेगी।

हमने बच्चा पैदा करने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे, शायद इंसानों और बर्फ के आदमियों के बीच आनुवंशिक अंतर के कारण बच्चे पैदा करना मुश्किल था। बच्चा न होने से मुझे बहुत खाली समय मिला। मैं सुबह घर की साफ-सफाई कर लेती थी, लेकिन उसके बाद मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं होता था। मेरे पास बात करने या बाहर जाने के लिए कोई दोस्त नहीं थे, और पड़ोस में भी मैं किसी को नहीं जानती थी। मेरी माँ और बहन अभी भी एक बर्फ के आदमी से शादी करने को लेकर मुझसे नाराज़ थीं, और उन्होंने मुझसे संपर्क करना बंद कर दिया था। मैं परिवार की वो काली भेड़ थी जिससे उन्हें शर्म आती थी। फोन पर भी बात करने वाला कोई नहीं था। जब बर्फ का आदमी गोदाम में काम करता था, मैं घर पर अकेली रहती थी, पढ़ती या संगीत सुनती थी। मैं वैसे भी घर में रहना पसंद करती थी, और मुझे अकेले रहने में कोई खास दिक्कत नहीं थी। फिर भी, मैं जवान थी, और इस नीरस दिनचर्या को लंबे समय तक सहन नहीं कर सकती थी। मुझे बोरियत से ज़्यादा हर दिन की एकरसता परेशान करती थी। मुझे लगने लगा कि मैं उस दैनिक दिनचर्या में एक दोहराई जाने वाली परछाई से ज्यादा कुछ नहीं हूं।

तो, एक दिन मैंने अपने पति से कहा कि हम रोज़मर्रा की दिनचर्या से कुछ बदलाव लाने के लिए कहीं घूमने चलें। "घूमने चलें?" बर्फीले आदमी ने आँखें सिकोड़ते हुए पूछा। "तुम घूमने क्यों जाना चाहती हो? क्या तुम हम दोनों के साथ खुश नहीं हो?"

नहीं, बात वो नहीं है, मैंने जवाब दिया। मैं बिल्कुल खुश हूँ। हम दोनों के बीच अच्छे संबंध हैं। बस मुझे बोरियत हो रही है। मैं कहीं दूर जाना चाहती हूँ, ऐसी चीजें देखना चाहती हूँ जो मैंने पहले कभी नहीं देखी हों, कुछ नया अनुभव करना चाहती हूँ। क्या तुम समझ रहे हो मेरा मतलब? और वैसे भी, हम कभी हनीमून पर नहीं गए। हमारे पास काफी पैसे जमा हैं, और तुम्हारे पास छुट्टियों का भी काफी समय है। एक बार आराम से छुट्टी बिताना अच्छा रहेगा।

बर्फ के आदमी ने एक गहरी, लगभग जमा देने वाली आह भरी, जिसकी गूंज हवा में साफ सुनाई दी, फिर उसने अपनी लंबी, बर्फ से ढकी उंगलियों को अपनी गोद में मिलाया। उसने कहा, "अच्छा, अगर तुम सच में यात्रा पर जाना चाहती हो, तो मुझे कोई दिक्कत नहीं दिखती। मुझे नहीं लगता कि यात्रा करना कोई बहुत अच्छी बात है, लेकिन मैं तुम्हें खुश करने के लिए हर संभव कोशिश करूंगा, तुम जहां चाहो वहां चलो। मैंने गोदाम में खूब मेहनत की है और मुझे कुछ समय की छुट्टी मिलनी चाहिए। इसमें कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। लेकिन तुम कहां जाना चाहोगी?"

मैंने कहा, "दक्षिण ध्रुव कैसा रहेगा?" मैंने दक्षिण ध्रुव को इसलिए चुना क्योंकि मुझे यकीन था कि हिममानव को वहाँ जाने में दिलचस्पी होगी। और सच कहूँ तो, मैं हमेशा से वहाँ जाना चाहता था। अरोरा और पेंगुइन देखने के लिए। मेरे मन में एक शानदार तस्वीर बनी हुई थी - अरोरा के नीचे हुड वाली जैकेट पहने, पेंगुइन के साथ खेलते हुए।

बर्फ के उस आदमी ने बिना पलक झपकाए मेरी आँखों में गहराई से देखा। उसकी नज़रें मानो किसी नुकीली बर्फीली डंडी की तरह मेरे दिमाग में चुभ रही हों। वह कुछ देर चुप रहा, सोचता रहा, फिर अपनी आवाज़ में शरारत भरी चमक के साथ बोला, ठीक है। अगर तुम सच में दक्षिणी ध्रुव जाना चाहते हो तो चलो चलते हैं। क्या तुम वाकई वहीं जाना चाहते हो?

मेंने सिर हिलाया।

उन्होंने कहा, "मैं कुछ हफ्तों में लंबी छुट्टी ले सकता हूँ। इस बीच आप यात्रा की सारी तैयारी कर सकते हैं। क्या आपको इससे कोई आपत्ति नहीं है?"

मैं जवाब नहीं दे सका। उसकी बर्फीली निगाहों ने मेरे दिमाग को जमा दिया था और मैं सोच नहीं पा रहा था।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मुझे अपने पति से दक्षिणी ध्रुव की यात्रा का सुझाव देने पर पछतावा होने लगा। पता नहीं क्यों। ऐसा लगा जैसे जब से मैंने दक्षिणी ध्रुव का नाम लिया, वह बदल गए। उनकी आँखें पहले से कहीं ज़्यादा तीखी और बर्फीली हो गईं, उनकी साँसें ज़्यादा सफ़ेद हो गईं, और उनकी उंगलियाँ ज़्यादा से ज़्यादा बर्फ़ से ढकने लगीं। वह पहले से ज़्यादा शांत और ज़िद्दी हो गए। और उन्होंने खाना-पीना भी छोड़ दिया, जिससे मैं चिंतित हो गई। हमारी यात्रा से पाँच दिन पहले मैंने तय किया कि मुझे कुछ कहना ही होगा। मैंने उनसे कहा, चलो दक्षिणी ध्रुव नहीं चलते। वहाँ बहुत ठंड है, और शायद हमारे लिए अच्छा न हो। किसी आम जगह पर जाना बेहतर होगा—यूरोप या स्पेन या कहीं और। हम थोड़ी शराब पी सकते हैं, पाएला खा सकते हैं, एक-दो बुलफाइट देख सकते हैं। लेकिन मेरे पति ने मेरी बात अनसुनी कर दी। कुछ देर तक उनकी नज़रें कहीं खोई रहीं, फिर वह मेरी तरफ मुड़े और मेरी आँखों में गहराई से देखा। उनकी नज़रें इतनी गहरी थीं कि मुझे लगा जैसे मेरा शरीर वहीं गायब हो जाएगा। नहीं, मेरे पति, जो बर्फीले आदमी जैसे हैं, ने साफ-साफ कहा, स्पेन में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे माफ करना, लेकिन वहाँ बहुत गर्मी और धूल है। और खाना भी बहुत मसालेदार है। और मैंने पहले ही दक्षिणी ध्रुव के टिकट खरीद लिए हैं, और तुम्हारे लिए एक फर कोट और फर लगे जूते भी। हम इन्हें बेकार नहीं जाने दे सकते। हम अब पीछे नहीं हट सकते।

सच कहूँ तो, मैं बहुत डरी हुई थी। अगर हम दक्षिणी ध्रुव पर जाते, तो मुझे पूरा यकीन था कि हमारे साथ कुछ भयानक होने वाला है। मुझे रात-रात भर एक ही भयानक सपना आता था। मैं कहीं चल रही होती हूँ और अचानक एक गहरे गड्ढे में गिर जाती हूँ। कोई मुझे नहीं ढूंढता और मैं जम जाती हूँ। मैं बर्फ में जमी हुई, आसमान की ओर देखती रहती हूँ। मैं होश में होती हूँ, लेकिन अपनी एक उंगली भी नहीं हिला सकती। यह बहुत ही अजीब एहसास होता है। हर गुजरते पल के साथ मैं अतीत का हिस्सा बनती जा रही होती हूँ। मेरे लिए कोई भविष्य नहीं है, बस अतीत धीरे-धीरे इकट्ठा होता जा रहा है। सब लोग मुझे इस तरह मरते हुए देख रहे हैं। वे अतीत को देख रहे हैं, देख रहे हैं कि मैं कैसे धीरे-धीरे उनसे दूर होती जा रही हूँ।

फिर मैं जागती हूँ और देखती हूँ कि बर्फीला आदमी मेरे बगल में सो रहा है। सोते समय वह बिल्कुल शांत है, मानो कोई जम कर मर चुका हो। फिर भी, मैं उससे प्यार करती हूँ। मैं रोने लगती हूँ, मेरे आँसू उसके गालों को भिगो देते हैं। वह जागता है और मुझे गले लगा लेता है। मैं उसे बताती हूँ, "मैंने एक भयानक सपना देखा था।" अँधेरे में वह धीरे से अपना सिर हिलाता है। वह कहता है, "यह सिर्फ एक सपना था। सपने अतीत से आते हैं, भविष्य से नहीं। सपनों को आप पर हावी नहीं होना चाहिए - आपको उन्हें नियंत्रित करना चाहिए।"

मैं कहता हूं, आप सही हैं—लेकिन मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं है।

आखिरकार हमने दक्षिणी ध्रुव के लिए विमान से यात्रा करने का फैसला किया। मुझे अपनी यात्रा रद्द करने का कोई कारण नहीं सूझा। विमान के पायलट और एयर होस्टेस ने पूरी यात्रा के दौरान लगभग एक शब्द भी नहीं बोला। मैं उड़ान के दौरान नज़ारों का आनंद लेने की उम्मीद कर रही थी, लेकिन बादल इतने घने थे कि मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। थोड़ी देर में, खिड़कियाँ बर्फ की मोटी परत से ढक गईं। इस पूरे समय मेरे पति चुपचाप एक किताब पढ़ते रहे। मुझे यात्रा पर निकलने से पहले होने वाली सामान्य उत्तेजना और खुशी का कोई एहसास नहीं हुआ, बस इतना महसूस हुआ कि हम अपना लक्ष्य पूरा कर रहे हैं।

जैसे ही हम रैंप से नीचे उतरे और दक्षिणी ध्रुव पर पहला कदम रखा, मुझे अपने पति का पूरा शरीर कांपता हुआ महसूस हुआ। यह सब पलक झपकते ही, आधे पल में हो गया, और उनके चेहरे पर जरा भी भाव नहीं बदला, इसलिए किसी और ने ध्यान नहीं दिया। लेकिन मैंने इसे महसूस कर लिया। उनके अंदर कुछ ऐसा हुआ जिससे एक शांत लेकिन तीव्र झटका उन्हें लगा। मैंने उनके चेहरे को देखा। वह वहीं खड़े रहे, आसमान की ओर देखा, फिर अपने हाथों की ओर, और फिर एक गहरी सांस ली। उन्होंने मेरी ओर देखा और मुस्कुराए। तो तुम यहीं आना चाहती थी? उन्होंने पूछा। हाँ, मैंने जवाब दिया।

मुझे पता था कि दक्षिणी ध्रुव एक सुनसान जगह होगी, लेकिन यह मेरी कल्पना से भी कहीं ज़्यादा सुनसान निकली। वहाँ शायद ही कोई रहता था। बस एक छोटा सा, बेजान सा कस्बा था, और एक उतना ही बेजान सा होटल। दक्षिणी ध्रुव कोई खास पर्यटन स्थल नहीं है। वहाँ पेंगुइन तक नहीं थे, ऑरोरा तो दूर की बात है। कभी-कभी मैं राहगीरों को रोककर पूछता कि पेंगुइन कहाँ हैं, लेकिन वे बस अपना सिर हिला देते। वे मेरी बात समझ नहीं पाते थे, इसलिए

मैं उन्हें दिखाने के लिए कागज़ पर एक पेंगुइन का चित्र बना देता, लेकिन मुझे वही जवाब मिलता—सिर हिलाकर चुप रहना। मुझे बहुत अकेलापन महसूस हुआ। कस्बे से बाहर कदम रखते ही चारों ओर बर्फ ही बर्फ दिखाई देती थी। न पेड़, न फूल, न नदियाँ, न तालाब। बर्फ और कुछ नहीं—जमी हुई बंजर भूमि जहाँ तक नज़र जाती थी।

दूसरी ओर, मेरे पति, अपनी सफेद साँसों, ठंडी उंगलियों और बर्फीली आँखों में एक अलग ही उदासी लिए, बिना थके इधर-उधर घूमते रहे। जल्द ही उन्होंने भाषा सीख ली और स्थानीय लोगों से कठोर, ठंडे लहजे में बात करने लगे। वे घंटों बातें करते, उनके चेहरों पर गंभीर भाव होते, लेकिन मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आता था कि वे क्या बात कर रहे हैं। मेरे पति उस जगह से पूरी तरह मोहित हो गए थे। कुछ तो था जो उन्हें आकर्षित करता था। पहले तो मुझे बुरा लगा और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पीछे छूट गई हूँ, धोखा खा गई हूँ और मुझे छोड़ दिया गया है।

अंततः, इस शांत, बर्फीली दुनिया के बीच, मेरी सारी शक्ति धीरे-धीरे छिनती चली गई। यहाँ तक कि अंत में, अपनी स्थिति पर दुखी होने की शक्ति भी खो बैठी। मेरा भावनात्मक संतुलन बिगड़ गया था। मैंने दिशा, समय और अपनी पहचान का बोध खो दिया था। मुझे नहीं पता यह कब शुरू हुआ और कब समाप्त हुआ, लेकिन इससे पहले कि मुझे पता चलता, मैं उस बर्फीली दुनिया की अंतहीन सर्दी में अकेली और सुन्न होकर कैद हो गई थी। लगभग सारी संवेदना खो देने के बाद भी, मैं यह जानती थी: दक्षिणी ध्रुव पर रहने वाला मेरा पति वह पति नहीं था जिसे मैं पहले जानती थी। मैं यह नहीं कह सकती थी कि वह कितना बदल गया था, क्योंकि वह अब भी हमेशा विचारशील था, हमेशा मेरे लिए मीठे शब्द बोलता था। और मैं जानती थी कि वह जो कहता था, वह दिल से कहता था। लेकिन मैं यह भी जानती थी कि मेरे सामने खड़ा बर्फीला आदमी वह बर्फीला आदमी नहीं था जिससे मैं पहली बार स्की रिसॉर्ट में मिली थी। लेकिन मैं किससे शिकायत करती? दक्षिणी ध्रुव के सभी लोग उसे बहुत पसंद करते थे, और वे मेरी एक भी बात नहीं समझ पाते थे। सफेद सांसों और ठंडे चेहरों के साथ वे बातें करते, मजाक करते और अपनी उस विशिष्ट जोशीली भाषा में गाने गाते रहे। मैं अपने होटल के कमरे में बंद रहा, महीनों तक न छंटने वाले धूसर आसमान को देखता रहा, और दक्षिणी

ध्रुव की भाषा के जटिल व्याकरण को सीखने की कोशिश करता रहा, जिसे मैं जानता था कि मैं कभी नहीं सीख पाऊंगा।

हवाई अड्डे पर अब कोई विमान नहीं बचा था। हमें यहाँ लाने वाला विमान जब रवाना हुआ, उसके बाद कोई और विमान नहीं उतरा। तब तक रनवे बर्फ की मोटी चादर से ढक चुका था। ठीक मेरे दिल की तरह।

मेरे पति ने कहा, सर्दियाँ आ गई हैं। बहुत लंबी सर्दियाँ। न हवाई जहाज़ आएंगे, न जहाज़। सब कुछ जम गया है, उन्होंने कहा। अब हम बस वसंत का इंतज़ार कर सकते हैं।

दक्षिणी ध्रुव पर आने के तीन महीने बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं गर्भवती हूँ। और मुझे एक बात पक्की पता थी: कि जिस बच्चे को मैं जन्म देने वाली थी, वह एक नन्हा बर्फीला आदमी होगा। मेरा गर्भाशय जम चुका था, जैसे गर्भनाल के द्रव में बर्फ की एक पतली परत जम गई हो। मैं अपने पेट के अंदर तक उस ठंडक को महसूस कर सकती थी। और मुझे यह भी पता था: मेरे बच्चे की आँखें उसके पिता की तरह बर्फीली होंगी, उंगलियाँ भी उसी तरह बर्फ से ढकी होंगी। और मुझे एक और बात पता थी: हमारा यह छोटा परिवार फिर कभी दक्षिणी ध्रुव से बाहर कदम नहीं रखेगा। अनंत अतीत के भयानक बोझ ने हमें जकड़ लिया था और वह हमें छोड़ने को तैयार नहीं था। हम कभी भी उससे मुक्त नहीं हो पाएंगे।

मेरा दिल अब लगभग खाली हो चुका है। जो गर्माहट मेरे अंदर हुआ करती थी, वो कहीं दूर चली गई है। कभी-कभी तो मैं ये भी भूल जाती हूँ कि कभी वो गर्माहट हुआ करती थी। फिर भी मैं रो सकती हूँ। मैं बिल्कुल अकेली हूँ, दुनिया की सबसे ठंडी, सबसे अकेली जगह पर। जब मैं रोती हूँ, तो मेरे पति मेरे गालों को चूमते हैं, जिससे मेरे आँसू बर्फ़ जैसे जम जाते हैं। वो उन जमे हुए आँसुओं को निकालकर अपनी जीभ पर रखते हैं। कहते हैं, "तुम जानती हो कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ।" और मैं जानती हूँ कि ये सच है। बर्फ़ का आदमी मुझसे प्यार करता है। लेकिन हवा उनके जमे हुए शब्दों को और दूर अतीत में उड़ा ले जाती है। और मैं और रोती हूँ, दक्षिणी ध्रुव के दूर स्थित हमारे छोटे से जमे हुए घर में बर्फीले आँसू लगातार उमड़ते रहते हैं।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

केकड़े

वे उस छोटे से रेस्तरां के सामने बिल्कुल अचानक पहुँच गए। सिंगापुर में उनकी पहली रात की शाम थी और वे एक समुद्र तट के पास टहल रहे थे, तभी अचानक वे एक गली में मुड़ गए और संयोग से उस जगह के सामने से गुज़र गए। रेस्तरां एक मंज़िला इमारत थी जिसके चारों ओर कमर जितनी ऊँची ईंट की दीवार थी, साथ ही एक बगीचा था जिसमें छोटे ताड़ के पेड़ और पाँच लकड़ी की मेज़ें थीं। प्लास्टर से बनी मुख्य इमारत चमकीले गुलाबी रंग से रंगी हुई थी। हर मेज़ पर एक पुरानी छतरी खुली हुई थी। अभी सुबह का समय था और जगह लगभग सुनसान थी। बस दो छोटे बालों वाले बूढ़े आदमी, जो शायद चीनी थे, आमने-सामने बैठे बीयर पी रहे थे और चुपचाप तरह-तरह के नाश्ते खा रहे थे। उन्होंने एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं कहा। उनके पैरों के पास ज़मीन पर एक बड़ा काला कुत्ता थका हुआ लेटा था, उसकी आँखें आधी बंद थीं। रसोई की खिड़की से भाप की हल्की सी लकीर निकल रही थी और कुछ पकने की मनमोहक खुशबू आ रही थी। रसोइयों की खुशमिजाज़ आवाज़ें भी सुनाई दे रही थीं, साथ ही बर्तनों की खड़खड़ाहट भी। पेड़ों पर ताड़ के पत्ते हल्की हवा में कांपते हुए डूबते सूरज की रोशनी में अलग ही चमक रहे थे।

वह महिला रुक गई और आसपास के दृश्य को ध्यान से देखने लगी।

“क्या हम यहीं रात का खाना खा सकते हैं?” उसने पूछा।

युवक ने प्रवेश द्वार पर रेस्तरां का नाम पढ़ा और मेनू ढूंढने लगा। लेकिन बाहर कोई मेनू नहीं लगा था। उसने कुछ देर सोचा। "हम्म... पता नहीं। परदे के किसी अनजान देश में किसी ऐसी जगह खाना खाना कैसा रहेगा जिसके बारे में हमें पक्का पता न हो?"

“लेकिन मुझे रेस्टोरेंट के बारे में एक खास समझ है। मैं हमेशा अच्छे रेस्टोरेंट को पहचान लेता हूँ। और यह वाला तो वाकई बहुत बढ़िया है। मैं इसकी गारंटी देता हूँ। क्यों न हम इसे आजमाएँ?”

उस आदमी ने अपनी आँखें बंद कीं और गहरी साँस ली। उसे पता नहीं था कि यहाँ किस तरह का खाना बनता है, लेकिन उसे मानना पड़ा कि खुशबू बहुत लुभावनी थी। और रेस्टोरेंट में एक अलग ही आकर्षण था। "लेकिन क्या आपको लगता है कि यह साफ है?"

उसने उसका हाथ खींचते हुए कहा, “तुम बहुत संवेदनशील हो। चिंता मत करो। हम इतनी दूर तक हवाई यात्रा करके आए हैं, तो हमें थोड़ा साहसिक होना चाहिए। मैं हर दिन होटल के रेस्टोरेंट में खाना नहीं खाना चाहती। यह बहुत उबाऊ है। चलो, कुछ नया ट्राई करते हैं।”



अंदर जाते ही उन्हें पता चला कि यह जगह केकड़े के व्यंजनों के लिए मशहूर है। मेनू अंग्रेज़ी और चीनी भाषा में लिखा था। ज़्यादातर ग्राहक स्थानीय लोग थे और कीमतें काफ़ी वाजिब थीं। मेनू के अनुसार, सिंगापुर में दर्जनों किस्म के केकड़े पाए जाते हैं, और सौ से ज़्यादा तरह के केकड़े के व्यंजन मिलते हैं। उस आदमी और औरत ने सिंगापुर की बीयर मंगवाई और मेनू देखने के बाद, कुछ केकड़े के व्यंजन चुने और उन्हें आपस में बाँट लिया। परोसे गए व्यंजन काफ़ी मात्रा में थे, सभी सामग्रियाँ ताज़ी थीं और मसाले एकदम सही थे।

“यह वाकई बहुत अच्छा है,” उस व्यक्ति ने प्रभावित होकर कहा।

“देखा? मैंने तुमसे क्या कहा था? मैंने तुमसे कहा था कि मेरे पास सर्वश्रेष्ठ को खोजने की शक्ति है। अब क्या तुम मुझ पर विश्वास करते हो?”

“हां। मुझे कहना पड़ेगा कि मैं करता हूं,” युवक ने स्वीकार किया।

“इस तरह की शक्ति वाकई बहुत काम आती है,” महिला ने कहा। “आप जानते हैं, खाना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना लोग सोचते हैं। जीवन में एक ऐसा समय आता है जब आपको कुछ बहुत ही स्वादिष्ट खाने की तीव्र इच्छा होती है। और जब आप उस मोड़ पर खड़े होते हैं, तो आपका पूरा जीवन बदल सकता है, इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस रेस्टोरेंट में जाते हैं—अच्छे रेस्टोरेंट में या खराब रेस्टोरेंट में। यह ऐसा है जैसे—आप बाड़ के इस तरफ गिरते हैं या दूसरी तरफ।”

“दिलचस्प,” उसने कहा। “जिंदगी काफी डरावनी हो सकती है, है ना?”

“बिल्कुल सही,” उसने कहा और शरारती अंदाज़ में एक उंगली उठाई। “ज़िंदगी बहुत डरावनी चीज़ है। जितनी आप कल्पना भी नहीं कर सकते उससे कहीं ज़्यादा।”

युवक ने सिर हिलाया। "और हम संयोगवश बाड़ के अंदर की तरफ गिरे थे, है ना?"

"बिल्कुल।"

"यह अच्छा है," युवक ने भावहीनता से कहा। "क्या आपको केकड़ा पसंद है?"
हम्म, मुझे तो यह हमेशा से पसंद रहा है। आपको कैसा लगता है?
मुझे यह बहुत पसंद है। मुझे हर दिन केकड़ा खाने में कोई आपत्ति नहीं होगी।
"एक नया बिंदु जो हम दोनों में समान है," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
उस आदमी ने मुस्कुराया, और उन दोनों ने एक और टोस्ट के लिए अपने गिलास उठाए।
"हमें कल फिर आना होगा," उसने कहा। "दुनिया में ऐसी जगहें बहुत कम होंगी। मेरा मतलब है, खाना इतना स्वादिष्ट है—और कीमतें तो देखो।"



अगले तीन दिनों तक उन्होंने उसी छोटे से रेस्तरां में खाना खाया। सुबह वे समुद्र तट पर तैरने और धूप सेंकने जाते, फिर शहर में घूमते और स्थानीय हस्तशिल्प की दुकानों से स्मृति चिन्ह खरीदते। लगभग हर शाम एक ही समय पर वे गली के उस छोटे से रेस्तरां में जाते, तरह-तरह के केकड़े के व्यंजन चखते, फिर अपने होटल के कमरे में लौटकर कुछ देर प्रेम करते और फिर गहरी नींद में सो जाते। हर दिन स्वर्ग जैसा लगता था। महिला छब्बीस वर्ष की थी और एक निजी लड़कियों के जूनियर हाई स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाती थी। पुरुष अट्ठाईस वर्ष का था और एक बड़े बैंक में लेखा परीक्षक के रूप में काम करता था। यह लगभग एक चमत्कार ही था कि वे एक ही समय पर छुट्टी पर जा सके, और वे ऐसी जगह ढूंढना चाहते थे जहाँ कोई उन्हें परेशान न करे, जहाँ वे बस आनंद ले सकें। उन्होंने हर संभव प्रयास किया कि वे किसी भी ऐसे विषय पर बात न करें जिससे उनका माहौल और साथ बिताया गया उनका कीमती समय खराब हो जाए।
चौथे दिन—उनकी छुट्टियों के आखिरी दिन—उन्होंने हमेशा की तरह शाम को केकड़ा खाया। धातु के बर्तनों से केकड़े की टांगों से मांस निकालते हुए वे बातें कर रहे थे कि यहाँ होना, हर दिन समुद्र तट पर तैरना, रात को जी भर के केकड़ा खाना, टोक्यो की ज़िंदगी को कितना अवास्तविक और दूर का एहसास दिला रहा है। ज़्यादातर वे वर्तमान के बारे में ही बात कर रहे थे। बीच-बीच में खाने के दौरान सन्नाटा छा जाता था, हर कोई अपने-अपने विचारों में

खोया रहता था। लेकिन यह सन्नाटा अप्रिय नहीं था। ठंडी बीयर और गरमा गरम केकड़े ने उस सन्नाटे को बखूबी भर दिया।

वे रेस्टोरेंट से निकले और अपने होटल की ओर वापस चले गए, और हमेशा की तरह, उन्होंने अपने दिन का अंत प्रेम-प्रसंग से किया। शांत, लेकिन संतुष्टिदायक प्रेम-प्रसंग। दोनों ने स्नान किया और जल्द ही सो गए।

लेकिन थोड़ी देर बाद वह युवक बुरी तरह जाग उठा। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उसने कोई भारी बादल निगल लिया हो। वह जल्दी से बाथरूम की ओर भागा और टॉयलेट सीट पर लेटकर उसने अपने पेट का सारा खाना उगल दिया। उसका पेट सफेद केकड़े के मांस से भरा हुआ था। उसे लाइट जलाने का समय नहीं मिला था, लेकिन समुद्र के ऊपर तैरते चाँद की रोशनी में वह टॉयलेट में क्या था, यह देख सका। उसने गहरी साँस ली, आँखें बंद कीं और समय बीतने दिया। उसका दिमाग बिल्कुल खाली था और वह एक भी विचार नहीं बना पा रहा था। वह बस इंतजार कर सकता था। मतली की एक और लहर ने उसे जकड़ लिया और उसने फिर से अपने पेट में जो कुछ बचा था, उसे उगल दिया।

जब उसने आँखें खोलीं तो उसने देखा कि शौचालय के पानी में उसकी उल्टी का एक सफेद टुकड़ा तैर रहा है। बहुत ज़्यादा मात्रा में। मैंने कितना सारा केकड़ा खा लिया! उसने आधे आश्चर्य से सोचा। रोज़ इतना केकड़ा खाना—इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि मैं बीमार पड़ गया। चाहे जैसे भी देखा जाए, यह बहुत ज़्यादा केकड़ा था। चार दिनों में दो-तीन साल के बराबर केकड़ा।

जैसे ही उसने गौर से देखा, उसे शौचालय में तैरता हुआ टुकड़ा थोड़ा हिलता हुआ सा लगा। पहले तो उसे लगा कि शायद उसे भ्रम हो रहा है। हल्की चाँदनी की वजह से ऐसा लग रहा होगा। कभी-कभार कोई बादल चाँद को ढक लेता था, जिससे सब कुछ पल भर के लिए पहले से ज़्यादा अँधेरा हो जाता था। उस युवक ने अपनी आँखें बंद कीं, एक गहरी साँस ली और फिर आँखें खोलीं। यह कोई भ्रम नहीं था। मांस का टुकड़ा सचमुच हिल रहा था। झुर्रियों की तरह, मांस की सतह काँप रही थी। युवक खड़ा हुआ और बाथरूम की बत्ती जला दी। वह मांस के टुकड़े के पास झुका और देखा कि सतह पर अनगिनत कीड़े काँप रहे थे। केकड़े के मांस के रंग के ही छोटे-छोटे कीड़े, लाखों की संख्या में, मांस की सतह से चिपके हुए थे।

एक बार फिर उसने अपने पेट का सारा खाना उल्टी कर दिया। लेकिन कुछ भी नहीं बचा था, और उसका पेट सिकुड़कर मुट्ठी भर गांठ जैसा हो गया। कड़वा हरा पित्त निकला, मानो उसकी आंतों से निचोड़कर बाहर आ गया हो। इतने से संतुष्ट न होकर उसने माउथवॉश गटक लिया और उसे भी उल्टी कर दिया। उसने टॉयलेट का सारा कचरा बहा दिया, बार-बार फ्लश किया ताकि सब कुछ साफ हो जाए। फिर उसने सिंक में अपना चेहरा धोया, ताज़े सफेद तौलिए से अपने मुंह के चारों ओर अच्छी तरह रगड़ा, और अपने दांतों को अच्छी तरह से ब्रश किया। उसने अपने हाथ सिंक पर रखे और आईने में अपना चेहरा देखा। उसका चेहरा दुबला-पतला, झुर्रीदार लग रहा था, उसकी त्वचा मिट्टी के रंग की थी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सचमुच उसका चेहरा है। वह किसी थके-हारे बूढ़े आदमी जैसा दिख रहा था।

वह बाथरूम से बाहर निकला, दरवाजे से टेक लगाकर खड़ा हुआ और बेडरूम का जायजा लिया। उसकी प्रेमिका बिस्तर पर गहरी नींद में सो रही थी। उसका चेहरा तकिये में धंसा हुआ था, वह शांति से खर्राटे ले रही थी, मानो उसे कुछ भी पता न हो। उसके लंबे बाल एक नाजुक पंखे की तरह उसके गालों और कंधों को ढके हुए थे। उसकी पीठ पर दो छोटे तिल थे, जुड़वां तिलों की तरह कतार में लगे हुए। उसकी पीठ पर स्विमसूट की साफ लाइन दिख रही थी। सफेद चाँदनी की रोशनी धीरे-धीरे पर्दों से छनकर अंदर आ रही थी, साथ ही किनारे पर लहरों की एकरस आवाज भी सुनाई दे रही थी। बिस्तर के पास रखी अलार्म घड़ी के हरे अंक चमक रहे थे। कुछ भी नहीं बदला था। सिवाय इसके कि अब केकड़ा उसके अंदर था—उस शाम उन्होंने एक ही बर्तन में खाना खाया था। बस उसे इस बात का एहसास नहीं था।

वह युवक खिड़की के पास रखी बेंत की कुर्सी पर बैठ गया, आँखें बंद कर लीं और धीरे-धीरे नियमित रूप से साँस लेने लगा। ताज़ी हवा फेफड़ों में भर रहा था, बासी हवा बाहर निकाल रहा था। वह अपने शरीर में ज़्यादा से ज़्यादा हवा भरने की कोशिश कर रहा था। वह चाहता था कि उसके शरीर के सारे रोम छिद्र खुल जाएँ। किसी खाली कमरे में रखी पुरानी अलार्म घड़ी की तरह, उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

अपनी सोई हुई प्रेमिका को निहारते हुए, उसने उसके पेट में मौजूद अनगिनत छोटे-छोटे कीड़ों की कल्पना की। क्या उसे जगाकर इसके बारे में बताना चाहिए? क्या उन्हें कुछ करना

चाहिए? क्या करें, यह समझ न आने पर उसने कुछ देर सोचा और फिर कुछ न करने का फैसला किया। इससे कोई फायदा नहीं होगा। उसने कुछ भी महसूस नहीं किया था। और यही मुख्य समस्या थी।

दुनिया बेहाल सी लग रही थी। उसे सुनाई दे रहा था जैसे दुनिया इस नई राह पर लड़खड़ा रही हो। उसने सोचा, कुछ तो हुआ है और दुनिया बदल गई है। सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया है और कभी पहले जैसा नहीं होगा। सब कुछ बदल गया है और अब बस इसी नई दिशा में आगे बढ़ रहा है। कल मैं टोक्यो वापस जा रहा हूँ, उसने सोचा। उस ज़िंदगी में वापस जिसे मैं वहाँ छोड़कर आया था। ऊपर से तो कुछ नहीं बदला, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं अब कभी उसके साथ पहले जैसा तालमेल बिठा पाऊँगा। मैं उसके लिए वैसा महसूस कभी नहीं कर पाऊँगा जैसा कल तक करता था, उस नौजवान को पता था। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। मुझे नहीं लगता कि मैं कभी खुद से भी तालमेल बिठा पाऊँगा। ऐसा लग रहा है जैसे हम किसी ऊँची बाड़ से गिर पड़े हों, बाहर से। बिना दर्द के, बिना किसी आवाज़ के। और उसे पता भी नहीं चला।

वह युवक सुबह होने तक बेंत की कुर्सी पर चुपचाप बैठा रहा। रात में बीच-बीच में आंधी आती, बारिश की बूँदें खिड़की पर ऐसे टकरातीं मानो कोई सज़ा दे रही हों। बारिश के बादल छंट जाते और चाँद अपना चेहरा दिखाता। बार-बार। लेकिन वह औरत कभी नहीं जागी। यहाँ तक कि बिस्तर पर करवट भी नहीं बदली। उसका कंधा कुछ बार हल्का सा हिला, बस इतना ही। सबसे ज़्यादा तो वह सोना चाहता था, चैन से सोना चाहता था और जागकर देखना चाहता था कि सब कुछ सुलझ गया है, सब कुछ पहले जैसा ही है, हमेशा की तरह सुचारू रूप से चल रहा है। उस युवक की बस यही इच्छा थी कि वह गहरी नींद में सो जाए। लेकिन चाहे वह कितना भी प्रयास करे, नींद उससे दूर ही रही।

उस युवक को वह पहली रात याद आ गई, जब वे उस छोटी सी गली के रेस्तरां के पास से गुज़रे थे। दो बूढ़े चीनी आदमी चुपचाप अपना खाना खा रहे थे, उनके पैरों के पास एक काला कुत्ता आँखें बंद किए बैठा था, मेज़ों पर फीकी पड़ चुकी छतरियाँ थीं। उसने कैसे उसका हाथ खींचा था। सब कुछ सालों पहले की बात लग रही थी। लेकिन मुश्किल से तीन दिन ही बीते थे।

तीन दिन जिनमें, किसी अजीब शक्ति के कारण, वह उन डरावने, पीले-पीले बूढ़े आदमियों में से एक में बदल गया था। यह सब सिंगापुर के शांत, सुंदर समुद्रतटीय शहर में हुआ था।

उसने अपने हाथों को सामने लाया और उन्हें ध्यान से देखने लगा। उसने अपने हाथों के पिछले हिस्से को देखा, फिर हथेलियों को। यह बात किसी से छिपी नहीं थी कि उसके हाथ हल्के से कांप रहे थे।

"हम्म, मुझे तो हमेशा से केकड़ा बहुत पसंद है," उसने उसकी आवाज़ सुनी। "आपको कैसा लगता है?"

मुझे नहीं पता, उसने सोचा।

उसका हृदय किसी निराकार चीज़ से घिरा हुआ महसूस कर रहा था, एक गहरे, कोमल रहस्य से ग्रस्त। उसे अब ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उसका जीवन किस दिशा में जा रहा है और वहाँ उसका क्या इंतज़ार कर रहा होगा। लेकिन जैसे ही पूरब का आकाश धीरे-धीरे उजाला होने लगा, उसके मन में एक विचार आया: एक बात तो निश्चित है, उसने सोचा। मैं कहीं भी जाऊँ, मैं अब कभी केकड़ा नहीं खाऊँगा।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

जुगनू

बहुत समय पहले की बात है—असल में लगभग पंद्रह साल पहले—मैं टोक्यो में कॉलेज के छात्रों के लिए बने एक निजी छात्रावास में रहता था। तब मैं अठारह साल का था, कॉलेज में नया-नया दाखिला था, और शहर के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था। मैंने कभी अकेले रहना भी नहीं सीखा था, इसलिए मेरे माता-पिता स्वाभाविक रूप से चिंतित थे; मुझे छात्रावास में रखना ही सबसे अच्छा उपाय लगा। पैसे की भी बात थी, और छात्रावास सबसे सस्ता विकल्प लगा। मैं अपने खुद के अपार्टमेंट में रहने और खूब मौज-मस्ती करने का सपना देखता था, लेकिन क्या कर सकते हैं? मेरे माता-पिता कॉलेज का सारा खर्च उठा रहे थे—शुल्क और फीस, मासिक भत्ता—बस यही बात थी।

यह छात्रावास बंक्यो वार्ड में एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित एक विशाल भूखंड पर बना था और यहाँ से नज़ारा बेहद खूबसूरत था। पूरा परिसर एक ऊँची कंक्रीट की दीवार से घिरा हुआ था और मुख्य द्वार के ठीक अंदर एक विशाल ज़ेलकोवा का पेड़ खड़ा था। लगभग 150 साल पुराना, शायद उससे भी ज़्यादा। जब आप उसके आधार पर खड़े होकर ऊपर देखते, तो उसकी विशाल, घनी पत्तियों वाली शाखाएँ आसमान को ढक लेती थीं। कंक्रीट का फुटपाथ पेड़ के चारों ओर घूमकर सीधे आँगन के पार जाता था। आँगन के दोनों ओर तीन-तीन मंज़िला कंक्रीट की दो छात्रावास इमारतें अगल-बगल खड़ी थीं। विशाल इमारतें। खुली खिड़कियों से किसी के ट्रांजिस्टर रेडियो पर किसी डीजे की आवाज़ हमेशा गूंजती रहती थी। कमरे के पर्दे एक ही रंग के थे, क्रीम रंग धूप में सबसे कम फीका पड़ता है।

दो मंजिला मुख्य इमारत फुटपाथ के सामने थी। पहली मंजिल पर भोजन कक्ष और सार्वजनिक स्नानघर था, दूसरी मंजिल पर सभागार, अतिथि कक्ष और बैठक कक्ष थे। मुख्य इमारत के बगल में एक तीसरी छात्रावास इमारत थी, जो भी तीन मंजिला थी। आंगन विशाल था, और लॉन पर लगे स्प्रिंकलर धूप में चमक रहे थे। इन सबके अलावा, मुख्य इमारत के पीछे फुटबॉल और रग्बी के लिए एक खेल का मैदान और छह टेनिस कोर्ट थे। भला इससे ज़्यादा और क्या चाहिए?

छात्रावास की एकमात्र समस्या (हालांकि हर कोई इसे समस्या नहीं मानता था) यह थी कि इसे कौन चला रहा था—एक रहस्यमय संस्था जिसका नेतृत्व एक कट्टरपंथी दक्षिणपंथी कर रहा

था। छात्रावास द्वारा प्रकाशित पर्चे को देखकर यह स्पष्ट हो गया। छात्रावास की स्थापना "शिक्षा के बुनियादी लक्ष्यों को प्राप्त करने और देश की सेवा के लिए होनहार प्रतिभाओं को विकसित करने" की भावना पर आधारित थी। और इस विचारधारा से सहमत कई धनी व्यापारियों ने जाहिर तौर पर छात्रावास के वित्तपोषण में मदद की थी। कम से कम आधिकारिक कहानी तो यही थी। सतह के नीचे क्या था, यह वहाँ की कई चीजों की तरह, किसी के भी अनुमान से परे था। अफवाह थी कि यह पूरी जगह कर चोरी या किसी प्रकार की भूमि धोखाधड़ी योजना का अड्डा थी। हालांकि इससे छात्रावास के रोजमर्रा के जीवन पर कोई खास फर्क नहीं पड़ा। व्यावहारिक स्तर पर, मुझे लगता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि इसे कौन चला रहा था—दक्षिणपंथी, वामपंथी, पाखंडी, बदमाश। जो भी हो। असली कहानी जो भी हो, 1967 के वसंत से 1968 के पतझड़ तक, मैंने इस छात्रावास को अपना घर माना।



छात्रावास में हर दिन की शुरुआत एक गंभीर ध्वजारोहण समारोह से होती थी। ध्वजारोहण का मंच आंगन के बीचोंबीच था, इसलिए छात्रावास की खिड़कियों से सब कुछ दिखाई देता था। बेशक, राष्ट्रगान भी बजाया जाता था। ठीक वैसे ही जैसे खेल समाचार और प्रदर्शन एक साथ चलते हैं, एक के बिना दूसरा अधूरा है।

झंडा फहराने का काम पूर्वी छात्रावास के मुखिया ने किया, उसी छात्रावास में जहाँ मैं रहता था। वह लगभग पचास साल का था और देखने में काफी सख्त मिजाज का था। उसके बाल घने और थोड़े सफेद थे, और धूप से झुलसी गर्दन पर एक लंबा निशान था। अफवाह थी कि वह नाकानो सैन्य अकादमी का स्नातक था। उसके बगल में एक छात्र था जो उसका सहायक था। वह लड़का एक रहस्य ही था। उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और वह हमेशा स्कूल की वर्दी पहनता था। किसी को नहीं पता था कि उसका नाम क्या है या वह किस कमरे में रहता है। मैंने उसे कभी भोजन कक्ष या सार्वजनिक स्नानघर में नहीं देखा था। मुझे तो यह भी यकीन नहीं था कि वह छात्र है। लेकिन चूंकि वह वर्दी पहनता था, तो वह और क्या हो सकता था? अकादमी के मुखिया के विपरीत, वह कद में छोटा, मोटा और पीला सा दिखता था। हर सुबह छह बजे वे दोनों उगते सूरज का झंडा झंडे के खंभे पर फहराते थे।

मुझे नहीं पता मैंने कितनी बार यह छोटा सा दृश्य देखा। सुबह छह बजे की घंटी बजती और वे आंगन में होते, वर्दीधारी लड़का एक हल्का लकड़ी का बक्सा लिए होता और अकादमी का आदमी एक पोर्टेबल सोनी टेप रिकॉर्डर लिए होता। अकादमी का आदमी टेप रिकॉर्डर को चबूतरे के नीचे रखता और वर्दीधारी लड़के ने बक्सा खोला। अंदर करीने से तह किया हुआ एक जापानी झंडा था। वर्दीधारी लड़के ने उसे बॉस को सौंप दिया, जिसने उसे रस्सी से बांध दिया। वर्दीधारी लड़के ने टेप रिकॉर्डर चालू कर दिया।

"तेरा शांतिपूर्ण शासन दीर्घायु हो..." और झंडा ध्वजदंड पर लहरा गया।

जब वे उस हिस्से पर पहुँचे जहाँ "जब तक ये छोटे पत्थर..." लिखा था, तब तक झंडा खंभे पर आधा चढ़ चुका था, और राष्ट्रगान के अंत तक पहुँचते-पहुँचते वह सबसे ऊपर पहुँच गया था। दोनों एकदम सावधान मुद्रा में खड़े हो गए और झंडे को निहारने लगे। धूप वाले दिनों में जब हल्की हवा चलती थी, तो यह नज़ारा बेहद खूबसूरत होता था।

शाम की रस्म सुबह की रस्म जैसी ही थी, बस उल्टी दिशा में हुई। झंडा धीरे से खंभे से नीचे उतारा गया और लकड़ी के बक्से में रख दिया गया। झंडा रात में नहीं लहराता।

मुझे समझ नहीं आता कि रात में झंडा क्यों उतारना पड़ता है। आखिर रात में भी देश तो चलता है, है ना? और बहुत से लोग काम में व्यस्त रहते हैं। ये ठीक नहीं लगता कि उन लोगों को भी वही झंडा अपने ऊपर लहराने का हक नहीं है। शायद ये बेवजह की चिंता है—बस ऐसी ही बात है जिस पर मुझ जैसे इंसान को चिंता हो सकती है।

छात्रावास में प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्र एक कमरे में दो-दो रहते थे, जबकि तृतीय और चतुर्थ वर्ष के छात्र अकेले रहते थे। जिस तरह के दो लोगों के कमरे में मैं रहता था, वह तंग और संकरा था। दरवाजे से सबसे दूर वाली दीवार पर एल्यूमीनियम फ्रेम वाली एक खिड़की थी। फर्नीचर सादा था, लेकिन मज़बूती से बना हुआ था—दो डेस्क और कुर्सियाँ, एक बंक बेड, दो लॉकर और अंतर्निर्मित अलमारियाँ। अधिकांश कमरों में अलमारियाँ आम चीज़ों से भरी हुई थीं: ट्रांजिस्टर रेडियो, ब्लो-ड्रायर, इलेक्ट्रिक कॉफी पॉट, इंस्टेंट कॉफी के जार, चीनी, इंस्टेंट नूडल्स पकाने के बर्तन, कप और प्लेटें। प्लास्टर की दीवारों पर प्लेबॉय की तस्वीरें चिपकी हुई थीं, और डेस्क पर स्कूल की पाठ्यपुस्तकें, साथ ही कुछ लोकप्रिय उपन्यास भी रखे हुए थे।

वहाँ सिर्फ़ पुरुष रहते थे, इसलिए कमरे बेहद गंदे थे। कूड़ेदानों के तले में सड़ी हुई संतरे की छालें जमी थीं, और ऐशट्रे के रूप में इस्तेमाल होने वाले खाली टिन के डिब्बों में सिगरेट के टुकड़ों की चार इंच मोटी परतें थीं। कपों पर कॉफ़ी के अवशेष चिपके थे, इंस्टेंट नूडल्स के पैकेटों के सेलोफ़ेन रैपर और खाली बीयर के डिब्बे फर्श पर बिखरे पड़े थे। जब भी हवा चलती, फर्श से धूल का गुबार उठता। कमरों में बहुत बदबू आती थी, क्योंकि सभी लोग अपने गंदे कपड़े बिस्तर के नीचे ठूंस देते थे। और बिस्तर की चादरें तो हवा में सुखाते भी नहीं थे, इसलिए उनमें पसीने और दुर्गंध की बदबू आती रहती थी।

लेकिन मेरा कमरा एकदम साफ-सुथरा था। फर्श पर धूल का एक कण भी नहीं था, हर तरफ चमकती हुई ऐशट्रे ही ऐशट्रे थीं। बिस्तर की चादरें हफ्ते में एक बार हवा से साफ की जाती थीं, पेंसिलें पेंसिल होल्डर में करीने से लगी रहती थीं। किसी पिन-अप फोटो की जगह, हमारे कमरे में एम्स्टर्डम की नहरों की तस्वीर लगी थी। क्यों? इसका जवाब आसान था—मेरा रूममेट सफाई का दीवाना था। मुझे तो कुछ करना ही नहीं पड़ता था क्योंकि वो सब कुछ करता था—कपड़े भी, यहाँ तक कि मेरे कपड़े भी, आप सोच सकते हैं। मान लीजिए मैंने अभी-अभी एक बियर खत्म की; जैसे ही मैं खाली बोतल मेज पर रखता, वो उसे झट से कूड़ेदान में फेंक देता।

मेरा रूममेट भूगोल का छात्र था।

“मैं नक्शों के बारे में पढ़ रहा हूँ,” उसने मुझे बताया।

“तो आपको नक्शों में दिलचस्पी है, है ना?” मैंने पूछा।

“बिल्कुल सही। मैं नेशनल ज्योग्राफी इंस्टीट्यूट में नौकरी पाना चाहता हूं और एम-मैप बनाना चाहता हूं।”

मैंने सोचा, सबकी अपनी-अपनी पसंद होती है। तब तक मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि किस तरह के लोग नक्शे बनाना चाहते हैं—और आखिर क्यों। लेकिन आपको मानना पड़ेगा कि भूगोल संस्थान में काम करने की इच्छा रखने वाले किसी व्यक्ति का "नक्शा" शब्द बोलते ही हकलाना थोड़ा अजीब था। वह कभी-कभी हकलाता था, कभी-कभी बिल्कुल नहीं। लेकिन जब भी "नक्शा" शब्द आता, हकलाना शुरू हो जाता था।

“तुम्हारा मुख्य विषय क्या है?” उसने मुझसे पूछा।

मैंने जवाब दिया, "ड्रामा।"

“नाटक? मतलब आप नाटक मंचित करते हैं?”

“नहीं, मैं नाटकों में अभिनय नहीं करता। मैं स्क्रिप्ट का अध्ययन करता हूँ। रेसीन, इओनेस्को, शेक्सपियर, ऐसे ही महान लेखक।”

मैंने शेक्सपियर के बारे में तो सुना है, लेकिन बाकी लोगों के बारे में नहीं, उन्होंने कहा। असल में, मुझे खुद भी उनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। मैं तो बस पाठ्यक्रम के विवरण को दोहरा रहा था।

“खैर, आपको इस तरह की चीजें पसंद हैं, है ना?” उसने पूछा।

"विशेष रूप से नही।"

इससे वह बुरी तरह घबरा गया। जब वह व्याकुल हुआ तो वह पहले से भी ज्यादा हकलाने लगा। मुझे लगा जैसे मैंने कोई बहुत बड़ी गलती कर दी हो।

मैंने उसे शांत करने की कोशिश करते हुए जल्दी से समझाया, “मुझे कोई भी विषय चलेगा। भारतीय दर्शन, प्राच्य इतिहास, कुछ भी। मैंने बस नाटक चुना है। बस इतना ही।”

“मुझे समझ नहीं आ रहा,” उसने नाराज़गी जताते हुए कहा। “म-म-मेरे मामले में, मुझे नक़्शे पसंद हैं, इसलिए मैं उन्हें बनाना सीख रहा हूँ। इसीलिए मैं कॉलेज जाने के लिए टोक्यो तक आया और मेरे माता-पिता ने सारा खर्च उठाया। लेकिन आप... मुझे समझ नहीं आ रहा...”

उसकी व्याख्या मेरी व्याख्या से ज़्यादा तर्कसंगत थी। मैंने सोचा, कोशिश करने का कोई फ़ायदा नहीं, और मैंने अपनी बात समझाने की कोशिश छोड़ दी। हमने पर्ची निकालकर तय किया कि किसे ऊपर और किसे नीचे वाली चारपाई मिलेगी। मुझे ऊपर वाली मिली।

वह लंबा था, उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं। वह हमेशा सफेद कमीज और काली पतलून पहनता था। स्कूल जाते समय वह हमेशा स्कूल यूनिफॉर्म और काले जूते पहनता था, साथ में एक काला ब्रीफकेस भी रखता था। देखने में वह एकदम दक्षिणपंथी छात्र लगता था, और हॉस्टल के बाकी लड़के भी उसे ऐसा ही मानते थे। असल में, उसे राजनीति में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। उसे कपड़े चुनना भी झंझट लगता था। उसकी दिलचस्पी सिर्फ़ समुद्र तट में हुए बदलावों, नई बनी सुरंगों जैसी चीज़ों में ही होती थी। एक बार

इन विषयों पर बोलना शुरू कर दे तो हकलाते हुए एक-दो घंटे तक बोलता रहता था, जब तक कि आप या तो दया की भीख न माँगने लगें या सो न जाएँ।

हर सुबह वह ठीक छह बजे उठ जाता था, राष्ट्रगान उसकी अलार्म घड़ी होती थी। तो शायद ध्वजारोहण समारोह पूरी तरह व्यर्थ नहीं गया। उसने कपड़े पहने और नहाने चला गया, जिसमें उसे बहुत ज़्यादा समय लगा। कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता था कि कहीं वह अपने-अपने दांत निकालकर उन्हें अलग-अलग तो नहीं साफ कर रहा था। कमरे में वापस आकर उसने अपना तौलिया सीधा किया, उसे हैंगर पर टांगा और अपना टूथब्रश और साबुन वापस शेल्फ पर रख दिया। फिर वह रेडियो चालू करता और सुबह के व्यायाम कार्यक्रम के साथ व्यायाम करना शुरू कर देता।

मैं रात में देर तक जागने वाली और गहरी नींद सोने वाली थी, इसलिए जब वह उछलना शुरू करता तो मैं आमतौर पर गहरी नींद में होती थी। जब वह उछल-कूद करने लगता, तो मैं बिस्तर से कूदकर उठ जाती। हर बार जब वह उछलता—और यकीन मानिए, वह बहुत ऊँचा उछलता था—मेरा सिर तकिए से तीन इंच ऊपर उछल जाता था। ज़रा सोचिए, उस उछल-कूद में सो पाना कितना मुश्किल होता था!

"मुझे बहुत खेद है," मैंने इस बात के चौथे दिन कहा, "लेकिन क्या आप अपनी कसरत छत पर या कहीं और कर सकते हैं? इससे मुझे ताजगी मिलती है।"

“मैं ऐसा नहीं कर सकता,” उसने जवाब दिया। “अगर मैं वहाँ ऐसा करूँगा, तो तीसरी मंज़िल पर रहने वाले लोग शिकायत करेंगे। यह पहली मंज़िल है, इसलिए हमारे नीचे कोई नहीं है।”

"अच्छा, तो क्यों न इसे आंगन में किया जाए?"

“बिल्कुल नहीं। मेरे पास ट्रांजिस्टर रेडियो नहीं है, इसलिए मैं संगीत नहीं सुन पाऊँगा। आप मुझसे यह उम्मीद नहीं कर सकते कि मैं बिना संगीत के व्यायाम करूँ।”

उसका रेडियो ऐसा था जिसे प्लग में लगाना पड़ता था। मैं उसे अपना ट्रांजिस्टर रेडियो दे सकता था, लेकिन उस पर सिर्फ एफएम स्टेशन ही आते थे।

“अच्छा, कम से कम आप संगीत की आवाज़ कम कर दें और उछलना बंद कर दें? पूरा कमरा हिल रहा है। मैं शिकायत नहीं करना चाहता, लेकिन...”

“कूदना?” वह हैरान लग रहा था। “कूदने का क्या मतलब है?”

"तुम्हें पता है, वो हिस्सा जिसमें तुम ऊपर-नीचे उछलते हो।"
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
मुझे सिरदर्द महसूस होने लगा था। चलो ठीक है, जो मन करे करो, मैंने सोचा। लेकिन एक बार जब मैंने यह बात कह दी तो पीछे हटना मुश्किल था। इसलिए मैंने एनएचके रेडियो के व्यायाम कार्यक्रम की धुन गाना शुरू कर दिया और संगीत की ताल पर उछलने-कूदने लगी।
“देखो? यह हिस्सा। क्या यह तुम्हारी दिनचर्या का हिस्सा नहीं है?”
“अह—हाँ। शायद ऐसा ही है। मैंने ध्यान नहीं दिया था।”
“तो—,” मैंने कहा, “क्या आप उस हिस्से को छोड़ सकते हैं? बाकी मैं बर्दाश्त कर सकता हूँ।”
“माफ़ कीजिए,” उन्होंने सुझाव को खारिज करते हुए कहा। “मैं एक भी हिस्सा नहीं छोड़ सकता। मैं दस साल से यही कर रहा हूँ। एक बार शुरू कर देता हूँ तो बिना सोचे-समझे करता रहता हूँ। अगर मैं एक भी हिस्सा छोड़ दूँ तो मैं इनमें से कुछ भी नहीं कर पाऊँगा।”
"तो फिर इस पूरे मामले को ही क्यों न रोक दिया जाए?"
"तुम खुद को क्या समझते हो, जो इस तरह मुझ पर हुकुम चला रहे हो?"
“अरे! मैं तुम्हें हुकुम नहीं दे रही। मैं बस आठ बजे तक सोना चाहती हूँ। अगर आठ बजे तक सोना मुमकिन नहीं है, तो भी मैं आम लोगों की तरह ही उठना चाहती हूँ। तुम मुझे ऐसा महसूस करा रहे हो जैसे मैं किसी पाई खाने की प्रतियोगिता के बीच में जाग रही हूँ। समझ रहे हो ना?”
“हां, मैं समझ गया,” उसने कहा।
तो आपको क्या लगता है कि हमें इसके बारे में क्या करना चाहिए?
“अरे, मुझे समझ आ गया! क्यों न हम उठें और साथ में व्यायाम करें?”
मैंने हार मान ली और वापस सो गया। उसके बाद उसने अपनी सुबह की दिनचर्या जारी रखी, एक भी दिन नहीं छोड़ा।



जब मैंने उसे अपने रूममेट की सुबह की कसरत के बारे में बताया तो वह हंस पड़ी। मेरा इरादा मज़ाक करने का नहीं था, लेकिन मैं खुद भी हंस पड़ा। उसकी हंसी बस एक पल के लिए ही रही और मुझे एहसास हुआ कि उसे मुस्कुराते हुए देखे हुए काफी समय हो गया था।
मई के महीने में रविवार की दोपहर थी। हम योत्सुया स्टेशन पर ट्रेन से उतरे थे और इचिगाया की ओर रेल की पटरियों के किनारे-किनारे चल रहे थे। दोपहर के आसपास बारिश रुक गई थी और दक्षिण से आती ठंडी हवा ने आसमान में लटके बादलों को उड़ा दिया था। चेरी के पेड़ों के पत्ते आसमान में चमक रहे थे और हवा में लहराते हुए दमक रहे थे। धूप में गर्मी की शुरुआत जैसी महक थी। रास्ते में मिले ज़्यादातर लोगों ने अपने कोट और स्वेटर उतारकर कंधों पर डाल रखे थे। टेनिस कोर्ट पर एक युवक, जिसने सिर्फ़ शॉर्ट्स पहन रखे थे, अपना रैकेट इधर-उधर घुमा रहा था। दोपहर की धूप में रैकेट का धातु का फ्रेम चमक रहा था। बेंच पर बैठी दो ननें ही सर्दियों के कपड़ों में लिपटी हुई थीं। उन्हें देखकर मुझे लगा कि शायद गर्मी अभी आने ही वाली नहीं है।
पंद्रह मिनट चलने के बाद ही मेरी पीठ से पसीना बहने लगा। मैंने अपनी मोटी सूती कमीज़ उतार दी और सिर्फ़ टी-शर्ट में रह गया। उसने अपनी हल्के भूरे रंग की स्वेटशर्ट की आस्तीनें कोहनियों से ऊपर चढ़ा लीं। स्वेटशर्ट पुरानी थी, अनगिनत बार धोने से फीकी पड़ गई थी। यह जानी-पहचानी लग रही थी, जैसे मैंने इसे कहीं देखा हो, बहुत समय पहले।
“क्या किसी के साथ रहना मजेदार है?” उसने पूछा।
कहना मुश्किल है। मुझे वहां गए अभी ज्यादा समय नहीं हुआ है।
वह पानी के फव्वारे के सामने रुकी, एक घूंट पानी पिया और अपनी पैंट की जेब से रुमाल निकालकर मुंह पोंछा। उसने अपने टेनिस जूतों के फीते दोबारा बांधे।
"मुझे आश्चर्य है कि क्या यह मुझ पर जंचेगा," उसने सोचा।
"तुम्हारा मतलब छात्रावास में रहने से है?"
“हां,” उसने कहा।
मुझे नहीं पता। यह आपकी कल्पना से कहीं अधिक झंझट भरा है। बहुत सारे नियम हैं। रेडियो अभ्यासों की तो बात ही छोड़िए।

"शायद हाँ," उसने कहा और कुछ देर सोच में डूबी रही। फिर उसने सीधे मेरी आँखों में देखा। उसकी आँखें असामान्य रूप से निर्मल थीं। मैंने पहले कभी ध्यान नहीं दिया था। उन्हें देखकर मुझे एक अजीब, पारदर्शी एहसास हुआ, मानो मैं आकाश को निहार रहा हूँ।

"पर कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझे ऐसा करना चाहिए। मतलब...," उसने मेरी आँखों में देखते हुए कहा। उसने अपने होंठ दबाए और नज़रें नीचे कर लीं। "मुझे नहीं पता। छोड़ो भी।" बातचीत समाप्त हुई। वह फिर से चलने लगी।

मैंने उसे छह महीने से नहीं देखा था। वह इतनी दुबली हो गई थी कि मैं उसे पहचान ही नहीं पाया। उसके गोल-मटोल गाल और गर्दन दोनों पतले हो गए थे। ऐसा नहीं था कि वह मुझे हड्डी-कुचैली लग रही थी। वह पहले से भी ज़्यादा खूबसूरत लग रही थी। मैं उसे यह बताना चाहता था, लेकिन समझ नहीं आ रहा था कि कैसे बताऊँ। इसलिए मैंने कोशिश करना छोड़ दिया।

हम योत्सुया किसी खास वजह से नहीं आए थे। बस संयोग से हमारी मुलाकात चोउ लाइन की ट्रेन में हो गई। हम दोनों का कोई तय प्लान नहीं था। उसने कहा, चलो उतर चलते हैं, और हमने वैसा ही किया। अकेले रह जाने पर हमारे पास बात करने के लिए कुछ खास नहीं था। मुझे नहीं पता उसने ट्रेन से उतरने का सुझाव क्यों दिया। शुरू से ही हमारे पास बात करने के लिए कोई खास विषय नहीं थे।

स्टेशन पर उतरने के बाद वह बिना कुछ कहे चली गई। मैं उसके पीछे-पीछे चलने लगा, पूरी कोशिश कर रहा था कि उसके साथ चल सकूँ। हमारे बीच हमेशा एक गज का फासला रहता था, और मैं बस चलता रहा, उसकी पीठ को देखता रहा। कभी-कभी वह कुछ कहने के लिए पीछे मुड़ती, और मैं किसी तरह जवाब दे देता, हालाँकि ज़्यादातर समय मुझे समझ नहीं आता था कि क्या कहूँ। मैं उसकी सारी बातें नहीं सुन पाता था, लेकिन इससे उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। वह बस अपनी बात कहती, फिर मुड़कर चुपचाप आगे बढ़ जाती।

हम इदाबाशी से दाहिने मुड़े, महल की खाई के पास पहुँचे, फिर जिम्बोचो चौराहे को पार किया, ओचानोमिज़ू की ढलान पर चढ़े और होंगो को पार किया। फिर हम रेल की पटरियों के साथ-साथ कोमागोमे तक गए। काफी लंबी पैदल यात्रा थी। जब हम कोमागोमे पहुँचे तब तक अंधेरा होने लगा था।

“हम कहाँ हैं?” उसने अचानक पूछा।
मैंने कहा, "कोमागोमे, हमने एक बड़ा घेरा बनाया था।"
हम यहाँ कैसे पहुँच गए?
“आप हमें यहाँ लाए। मैंने बस फॉलो द लीडर गेम खेला।”
हम स्टेशन के पास एक सोबा नूडल की दुकान पर रुके और कुछ खाया। खाने के शुरू से अंत तक हम दोनों में से किसी ने एक शब्द भी नहीं बोला। मैं पैदल यात्रा से बहुत थक गया था और ऐसा लग रहा था जैसे मैं अभी गिर पड़ूँगा। वह बस वहीं बैठी रही, सोच में डूबी हुई।
नूडल्स खत्म होने पर मैंने उसकी तरफ मुड़कर कहा, "तुम वाकई बहुत फिट हो।"
“हैरान हो गए? मैंने जूनियर हाई में क्रॉस-कंट्री दौड़ में हिस्सा लिया था। और मेरे पिताजी को पहाड़ों में ट्रेकिंग करना पसंद था, इसलिए मैं बचपन से ही हर रविवार को ट्रेकिंग के लिए जाया करती थी। आज भी मेरे पैर काफी मजबूत हैं।”
"मैं कभी भी अंदाजा नहीं लगा सकता था।"
वह हंसी।
मैंने कहा, "मैं तुम्हें घर छोड़ दूंगा।"
कोई बात नहीं। मैं खुद वापस आ सकता हूँ। आप परेशान न हों।
मैंने कहा, "मुझे बिल्कुल भी कोई आपत्ति नहीं है।"
"कोई बात नहीं। सच में। मुझे अकेले घर जाने की आदत हो गई है।"
सच कहूँ तो, मुझे थोड़ी राहत मिली जब उसने ऐसा कहा। उसके अपार्टमेंट तक ट्रेन से एक घंटे से ज़्यादा का समय लगता था, और हम दोनों का पूरे समय बगल-बगल बैठे रहना, एक-दूसरे से मुश्किल से एक शब्द भी बोलना, एक लंबा सफर होता। इसलिए आखिर में वह अकेले ही वापस चली गई। मुझे बुरा लगा, इसलिए मैंने खाने का बिल चुका दिया।
जब हम एक-दूसरे को अलविदा कह रहे थे, तभी वह मेरी ओर मुड़ी और बोली, "उह—मैं सोच रही हूँ, अगर मैं ज़्यादा न पूछूँ तो—क्या मैं आपसे फिर मिल सकती हूँ? मुझे पता है कि मेरे पूछने का कोई खास कारण नहीं है..."
मैंने थोड़ा आश्चर्यचकित होते हुए कहा, "किसी विशेष कारण की कोई आवश्यकता नहीं है।"
वह थोड़ा शरमा गई। शायद उसे मेरी हैरानी का एहसास हो गया था।

“मैं इसे ठीक से समझा नहीं सकती,” उसने कहा। उसने अपनी स्वेटशर्ट की आस्तीनें कोहनी तक मोड़ीं, फिर उन्हें नीचे कर लिया। बिजली की रोशनी से उसकी बाहों पर मौजूद बारीक बाल सुनहरे रंग में नहा रहे थे। “कारण सही शब्द नहीं है। मुझे कोई और शब्द इस्तेमाल करना चाहिए था।”

उसने अपनी दोनों कोहनियों को मेज पर टिकाया और आंखें बंद कर लीं, मानो सही शब्दों की तलाश कर रही हो। लेकिन शब्द नहीं सूझे।

मैंने कहा, "मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है।"

“पता नहीं... आजकल मैं अपने मन की बात कह ही नहीं पाती,” उसने कहा। “बस कह ही नहीं पाती। हर बार जब मैं कुछ कहने की कोशिश करती हूँ, तो बात अधूरी रह जाती है। या तो मैं अपने मतलब का उल्टा ही कह देती हूँ। जितना ज़्यादा मैं सही करने की कोशिश करती हूँ, उतना ही उलझती जाती है। कभी-कभी तो मुझे याद ही नहीं रहता कि मैं शुरू में कहना क्या चाह रही थी। ऐसा लगता है जैसे मेरा शरीर दो हिस्सों में बँट गया है और मेरा एक हिस्सा दूसरे हिस्से का पीछा करते हुए एक बड़े खंभे के चारों ओर चक्कर लगा रहा है। हम दोनों उसके चारों ओर गोल-गोल दौड़ रहे हैं। दूसरे हिस्से के पास सही शब्द तो हैं, लेकिन मैं उसे कभी पकड़ नहीं पाती।”

उसने अपने हाथ मेज पर रखे और मेरी आंखों में देखने लगी।

क्या आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कहना चाह रहा हूँ?

मैंने कहा, "हर किसी को कभी-कभी ऐसा महसूस होता है। आप अपनी भावनाओं को उस तरह से व्यक्त नहीं कर पाते जिस तरह से आप चाहते हैं, और इससे आपको गुस्सा आता है।"

जाहिर है, वह यह सुनना नहीं चाहती थी।

"नहीं, मेरा मतलब वो नहीं है," उसने कहा, लेकिन वहीं रुक गई।

मैंने कहा, "मुझे आपसे दोबारा मिलने में कोई आपत्ति नहीं है। मेरे पास बहुत खाली समय है, और सारा दिन लेटे रहने की बजाय टहलना कहीं ज्यादा सेहतमंद रहेगा।"

हम स्टेशन पर एक-दूसरे से अलग हो गए। मैंने अलविदा कहा, उसने भी अलविदा कहा।



मेरी उससे पहली मुलाकात हाई स्कूल के दूसरे साल की वसंत ऋतु में हुई थी। हम दोनों एक ही उम्र के थे और वह एक जाने-माने ईसाई स्कूल में पढ़ रही थी। मेरे एक सबसे अच्छे दोस्त, जो संयोग से उसका बॉयफ्रेंड भी था, ने हम दोनों का परिचय कराया। वे बचपन से एक-दूसरे को जानते थे और उनके घर एक-दूसरे के घर से कुछ ही दूरी पर थे।

बचपन से एक-दूसरे को जानने वाले कई जोड़ों की तरह, उन्हें अकेले रहने की कोई खास इच्छा नहीं थी। वे अक्सर एक-दूसरे के घर जाते और उनके परिवार के साथ मिलकर खाना खाते थे। हम कई बार डबल डेट पर गए, लेकिन लड़कियों के साथ मेरी तमन्ना कभी पूरी नहीं हुई, इसलिए हम अक्सर तीन लोग ही होते थे। और मुझे इससे कोई दिक्कत नहीं थी। हम तीनों की अपनी-अपनी भूमिका थी। मैं मेहमान की, वह मेज़बान की, और वह उनकी प्यारी सहायक और नायिका की।

मेरा दोस्त एक बेहतरीन मेज़बान था। कभी-कभी वह थोड़ा रूखा लगता था, लेकिन असल में वह एक दयालु इंसान था जो सबके साथ निष्पक्ष व्यवहार करता था। वह हम दोनों को—उसे और मुझे—एक ही पुराने चुटकुले बार-बार सुनाकर परेशान करता रहता था। अगर हममें से कोई चुप हो जाता, तो वह बातचीत फिर से शुरू कर देता, मानो हमें बोलने के लिए प्रेरित कर रहा हो। वह तुरंत हमारी मनोदशा को भांप लेता था और सही शब्द अपने आप निकल आते थे। और उसकी एक और खूबी थी: वह दुनिया के सबसे उबाऊ इंसान को भी दिलचस्प बना देता था। जब भी मैं उससे बात करता, मुझे ऐसा ही महसूस होता था—जैसे मेरी नीरस ज़िंदगी एक बड़ा रोमांच हो।

जैसे ही वह कमरे से बाहर निकला, हम दोनों एकदम चुप हो गए। हम दोनों में ज़रा भी समानता नहीं थी और हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या बात करें। हम बस वहीं बैठे रहे, ऐशट्रे से खेलते रहे, पानी पीते रहे और बेसब्री से उसके लौटने का इंतज़ार करते रहे। जैसे ही वह वापस आया, बातचीत वहीं से शुरू हो गई जहाँ रुकी थी।

उसके अंतिम संस्कार के तीन महीने बाद, मेरी उससे सिर्फ एक बार मुलाकात हुई। हमें कुछ बात करनी थी, इसलिए हम एक कॉफी शॉप में मिले। लेकिन जैसे ही बात खत्म हुई, हमारे पास कहने को कुछ नहीं था। मैंने दो-तीन बार कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन बातचीत

अचानक रुक गई। वह परेशान लग रही थी, जैसे मुझसे नाराज़ हो, लेकिन मुझे समझ नहीं आया कि क्यों। हमने अलविदा कहा।



शायद वह इसलिए नाराज़ थी क्योंकि उसे आखिरी बार ज़िंदा देखने वाला मैं था, वह नहीं। मुझे पता है मुझे यह नहीं कहना चाहिए, पर मैं क्या करूँ। काश मैं उसकी जगह होता, पर कुछ नहीं किया जा सकता। एक बार कुछ हो जाए तो फिर कुछ नहीं होता—आप कभी भी चीज़ों को पहले जैसा नहीं कर सकते।

मई की उस दोपहर, स्कूल के बाद—स्कूल की छुट्टी नहीं हुई थी, लेकिन हम स्कूल से बंक मार चुके थे—मैं और वो एक पूल हॉल में रुके और चार गेम खेले। पहला गेम मैंने जीता, और आखिरी तीन गेम उसने जीते। जैसा कि हमने तय किया था, हारने वाले ने गेम का बिल चुकाया।

उस रात उनकी मौत उनके गैराज में हुई। उन्होंने अपनी N360 कार के एग्जॉस्ट पाइप में एक रबर की नली फंसाई, अंदर गए, खिड़कियों को टेप से बंद किया और इंजन स्टार्ट कर दिया। मुझे नहीं पता कि उन्हें मरने में कितना समय लगा। जब उनके माता-पिता एक बीमार दोस्त से मिलकर लौटे, तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। कार का रेडियो चालू था और वाइपर के नीचे पेट्रोल पंप की एक रसीद फंसी हुई थी।

उसने अपने इरादों के बारे में कोई सुसाइड नोट या सुराग नहीं छोड़ा। मैं उसे आखिरी बार ज़िंदा देखने वाला व्यक्ति था, इसलिए पुलिस ने मुझे पूछताछ के लिए बुलाया। मैंने उन्हें बताया कि उसका व्यवहार सामान्य ही था। हमेशा की तरह ही लग रहा था। जो लोग आत्महत्या करने वाले होते हैं, वे आमतौर पर लगातार तीन पूल गेम नहीं जीतते, है ना? पुलिस को हम दोनों पर थोड़ा शक था। उनका इशारा था कि जो छात्र हाई स्कूल की क्लास छोड़कर पूल हॉल में समय बिताने जाता है, वही आत्महत्या भी कर सकता है। अखबार में उसकी मौत पर एक छोटा सा लेख छपा और बस। उसके माता-पिता ने कार बेच दी, और कुछ दिनों तक स्कूल में उसकी डेस्क पर सफेद फूल रखे रहे।

जब मैंने हाई स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और टोक्यो गई, तो मुझे बस एक ही बात महसूस हुई जो मुझे करनी थी: बहुत ज्यादा न सोचना। मैंने खुद को सब कुछ भुलाने के लिए दृढ़ संकल्पित किया—हरे रंग के मखमल से ढके पूल टेबल, उसकी लाल कार, मेज पर रखे सफेद फूल, श्मशान की ऊंची चिमनी से उठता धुआं, पुलिस पूछताछ कक्ष में रखा मोटा पेपरवेट। सब कुछ। पहले तो ऐसा लगा कि मैं भूल सकती हूँ, लेकिन कुछ मेरे अंदर रह गया। हवा की तरह, और मैं उसे पकड़ नहीं पा रही थी। हालांकि, समय बीतने के साथ, हवा ने खुद को एक सरल, स्पष्ट रूप में ढाल लिया। शब्दों में। और वे शब्द ये थे:

मृत्यु जीवन का विपरीत नहीं, बल्कि उसका एक हिस्सा है।

इसे ज़ोर से बोलकर सुनाएँ तो यह मामूली लगता है। बिलकुल सामान्य ज्ञान की बात। लेकिन उस समय ये शब्द मुझे महसूस नहीं हुए; ये मेरे शरीर में हवा भरने जैसा था। मृत्यु मेरे आस-पास हर चीज़ में समाई हुई थी—पेपरवेट के अंदर, पूल टेबल पर रखी चारों गेंदों के अंदर। जैसे-जैसे हम जीते हैं, हम अपने फेफड़ों में मृत्यु की साँस लेते हैं, जैसे धूल के बारीक कण।

तब तक मैं यही सोचता था कि मृत्यु एक अलग दुनिया में, एक स्वतंत्र अस्तित्व रखती है। बेशक, मुझे पता था कि मृत्यु अपरिहार्य है। लेकिन आप इसे उलट भी सकते हैं और कह सकते हैं कि जब तक वह दिन नहीं आ जाता, मृत्यु का हमसे कोई लेना-देना नहीं है। एक तरफ जीवन है, और दूसरी तरफ मृत्यु। इससे अधिक तार्किक और क्या हो सकता है?

लेकिन मेरे दोस्त की मौत के बाद, मैं मौत को इतने भोलेपन से नहीं देख सकता था। मौत जीवन का विपरीत नहीं है। मौत तो मेरे अंदर पहले से ही मौजूद है। मैं इस विचार को अपने मन से निकाल नहीं सका। मई की उस शाम को जिस मौत ने मेरे सत्रह वर्षीय दोस्त को छीन लिया, उसने मुझे भी अपनी गिरफ्त में ले लिया।

इतना तो मुझे समझ आ गया था, लेकिन मैं इसके बारे में ज्यादा सोचना नहीं चाहती थी। और यह आसान काम नहीं था। मैं अभी सिर्फ अठारह साल की थी, इतनी छोटी कि मेरे लिए कोई सुरक्षित, तटस्थ स्थिति खोजना मुश्किल था।



उसके बाद मैं उससे महीने में एक या दो बार मिलता था। शायद इसे डेटिंग ही कह सकते हैं। इससे बेहतर शब्द मुझे सूझ नहीं रहा।
वह टोक्यो के बाहरी इलाके में स्थित एक महिला महाविद्यालय में पढ़ रही थी, जो छोटा तो था लेकिन उसकी प्रतिष्ठा काफी अच्छी थी। उसका अपार्टमेंट महाविद्यालय से मात्र दस मिनट की पैदल दूरी पर था। महाविद्यालय जाने वाली सड़क के किनारे एक सुंदर जलाशय था, जिसके आसपास हम कभी-कभी टहलने जाते थे। ऐसा लगता था कि उसके कोई दोस्त नहीं थे। पहले की तरह ही वह काफी शांत स्वभाव की थी। हमारे बीच ज्यादा बातचीत करने को नहीं था, इसलिए मैंने भी ज्यादा कुछ नहीं कहा। हम बस एक-दूसरे को देखते रहे और चलते रहे।
ऐसा नहीं था कि हम कहीं नहीं पहुँच रहे थे। गर्मी की छुट्टियों के अंत में, बड़े ही स्वाभाविक ढंग से, वह मेरे आगे नहीं, बल्कि मेरे बगल में चलने लगी। हम लगातार साथ-साथ चलते रहे—ढलानों पर चढ़ते-उतरते, पुलों पर से गुज़रते, गलियों को पार करते। हम कहीं खास नहीं जा रहे थे, कोई खास योजना नहीं थी। थोड़ी देर चलते, किसी कॉफी शॉप पर एक कप कॉफी पीते और फिर चल पड़ते। जैसे प्रोजेक्टर में स्लाइड बदलती हैं, वैसे ही मौसम बदलते रहे। पतझड़ का मौसम आया, और मेरे छात्रावास का आंगन गिरे हुए ज़ेलकोवा के पत्तों से ढक गया। स्वेटर पहनते ही मुझे नए मौसम की खुशबू महसूस हुई। मैं बाहर गया और अपने लिए एक जोड़ी नए स्वेड के जूते खरीदे।
शरद ऋतु के अंत में जब हवा बर्फीली हो गई, वह मेरे करीब आने लगी और मेरी बांह से सटने लगी। मेरे मोटे कोट के आर-पार मैं उसकी सांस महसूस कर सकता था। बस इतना ही। अपने हाथों को कोट की जेबों में डाले, मैं चलता रहा। हमारे जूतों में रबर के तलवे थे, हमारे कदमों की आवाज बिल्कुल नहीं थी। केवल कुचले हुए सिकोमोर के पत्तों पर चलने पर ही आवाज आती थी। उसे मेरी बांह नहीं, बल्कि किसी और की बांह चाहिए थी। मेरी गर्माहट नहीं, बल्कि किसी और की गर्माहट। कम से कम उस समय तो मुझे ऐसा ही लगा।



हॉस्टल के लड़के हमेशा मुझे चिढ़ाते थे जब भी वो फोन करती थी या जब मैं रविवार की सुबह उससे मिलने जाता था। उन्हें लगता था कि मैंने कोई गर्लफ्रेंड बना ली है। मैं उन्हें समझा नहीं सकता था, और समझाने का कोई कारण भी नहीं था, इसलिए मैंने सब कुछ वैसे ही रहने दिया। जब भी मैं किसी डेट से लौटता, कोई न कोई मुझसे ज़रूर पूछता कि क्या मेरी गर्लफ्रेंड बन गई। मेरा हमेशा का जवाब होता था, "कोई शिकायत नहीं।"

इस तरह मेरा अठारहवाँ साल बीत गया। सूरज उगता और डूबता, झंडा फहराता और उतरता। और रविवार को मैं अपने मरे हुए दोस्त की प्रेमिका के साथ डेट पर जाता था। मैंने खुद से पूछा, "आखिर मैं ये सब कर क्या रहा हूँ?" और आगे क्या होगा? मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था। स्कूल में मैं क्लाउडेल, रेसीन और आइज़ेंस्टीन के नाटक पढ़ता था। मुझे उनकी शैली पसंद थी, बस इतना ही। स्कूल या हॉस्टल में मेरे बहुत कम दोस्त बने। मैं हमेशा पढ़ता रहता था, इसलिए लोग सोचते थे कि मैं लेखक बनना चाहता हूँ। लेकिन मैं नहीं चाहता था। मैं कुछ भी नहीं बनना चाहता था।

मैंने कई बार उसे इन भावनाओं के बारे में बताने की कोशिश की। आखिर उसे तो समझ ही आना चाहिए था। लेकिन मैं कभी भी अपने दिल की बात नहीं समझा पाई। बिल्कुल वैसा ही जैसा उसने कहा था—हर बार जब मैंने सही शब्द ढूंढने की कोशिश की, तो वे मेरे हाथ से फिसल गए और धुंधली गहराइयों में डूब गए।

शनिवार की शाम को मैं छात्रावास की लॉबी में, जहाँ फ़ोन रखे थे, उसके फ़ोन का इंतज़ार करता था। कभी-कभी वह लगातार तीन हफ़्तों तक फ़ोन नहीं करती थी, तो कभी लगातार दो हफ़्तों तक। इसलिए मैं लॉबी में एक कुर्सी पर बैठा इंतज़ार करता रहता था। शनिवार की शाम को ज़्यादातर छात्र बाहर चले जाते थे, और छात्रावास में सन्नाटा छा जाता था। शांत वातावरण में प्रकाश के कणों को निहारते हुए, मैं अपनी भावनाओं को समझने की कोशिश करता रहता था। हर कोई किसी न किसी से कुछ न कुछ उम्मीद रखता है। इतना तो मुझे पक्का पता था। लेकिन आगे क्या होगा, मुझे इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। मेरे सामने हवा की एक धुंधली दीवार उठ खड़ी हुई, मानो मेरी पहुँच से थोड़ी दूर हो।



सर्दियों के दौरान मैंने शिंजुकु में एक छोटी सी रिकॉर्ड की दुकान में अंशकालिक नौकरी की। क्रिसमस पर मैंने उसे हेनरी मैनसिनी का एक रिकॉर्ड दिया, जिसमें उसका पसंदीदा गाना "डियर हार्ट" था। मैंने उसे क्रिसमस ट्री के डिज़ाइन वाले कागज़ में लपेटा और एक गुलाबी रिबन लगाया। उसने मुझे अपने बुने हुए ऊनी दस्ताने दिए। अंगूठे वाला हिस्सा थोड़ा छोटा था, लेकिन फिर भी वे गर्म थे।

वह नए साल के लिए घर नहीं गई, और हम दोनों ने नए साल का डिनर उसके अपार्टमेंट में किया।

उस सर्दी के मौसम में बहुत कुछ हुआ।

जनवरी के अंत में, मेरा रूममेट लगभग 104 डिग्री बुखार के कारण दो दिनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा। इस वजह से मुझे उसके साथ अपनी डेट कैंसिल करनी पड़ी। मैं उसे अकेला छोड़कर बाहर नहीं जा सकता था; उसकी आवाज़ से लग रहा था कि वह किसी भी पल मर जाएगा। और उसकी देखभाल कौन करता? मैंने कुछ बर्फ खरीदी, उसे प्लास्टिक बैग में लपेटकर आइस पैक बनाया, ठंडे गीले तौलिए से उसका पसीना पोंछा और हर घंटे उसका तापमान लिया। उसका बुखार पूरे एक दिन तक कम नहीं हुआ। लेकिन दूसरे दिन, वह ऐसे बिस्तर से उछल पड़ा जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसका तापमान सामान्य हो गया था।

उन्होंने कहा, "यह अजीब है। मुझे जीवन में पहले कभी बुखार नहीं हुआ।"

“वाह, इस बार तो तुमने कमाल कर दिया,” मैंने उससे कहा। मैंने उसे कॉन्सर्ट के वो दो मुफ्त टिकट दिखाए जो बेकार चले गए थे।

उन्होंने कहा, "कम से कम वे स्वतंत्र तो थे।"

फरवरी में खूब बर्फबारी हुई।

फरवरी के अंत में, छात्रावास में एक बड़े लड़के से मेरी किसी छोटी सी बात पर लड़ाई हो गई और मैंने उसे घूंसा मार दिया। वह गिर गया और उसका सिर कंक्रीट की दीवार से टकरा गया। सौभाग्य से वह ठीक था, लेकिन मुझे छात्रावास प्रमुख के सामने बुलाया गया और चेतावनी दी गई। उसके बाद से, छात्रावास का जीवन पूरी तरह बदल गया।

मैं उन्नीस साल का हो गया और आखिरकार द्वितीय वर्ष में दाखिला ले लिया। हालाँकि, मैं कुछ विषयों में फेल हो गया। मुझे कुछ विषयों में बी ग्रेड मिला, बाकी में सी और डी ग्रेड। उसे भी

द्वितीय वर्ष में पदोन्नत कर दिया गया, लेकिन उसका रिकॉर्ड कहीं बेहतर था—उसने सभी कक्षाओं में उत्तीर्ण हो गई। चारों मौसम आए और चले गए।



जून में वो बीस साल की हो गई। मुझे उसकी बीस साल की उम्र की कल्पना करना मुश्किल लग रहा था। हम हमेशा यही सोचते थे कि हमारे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि हम अठारह और उन्नीस के बीच आते-जाते रहें। अठारह के बाद उन्नीस, उन्नीस के बाद अठारह—यह तो हम समझ सकते थे। लेकिन अब वो बीस साल की हो गई थी। और अगली सर्दी में मैं भी बीस साल का हो जाऊंगा। बस हमारा मरा हुआ दोस्त हमेशा के लिए सत्रह साल का ही रहेगा।

उसके जन्मदिन पर बारिश हुई। मैंने शिंजुकु से एक केक खरीदा और ट्रेन से उसके घर गया। ट्रेन खचाखच भरी थी और बुरी तरह से हिल रही थी; जब तक मैं उसके अपार्टमेंट पहुँचा, केक बिल्कुल सड़ चुका था। लेकिन फिर भी हमने हिम्मत नहीं हारी और उस पर बीस मोमबत्तियाँ लगाकर जला दीं। हमने पर्दे बंद कर दिए और लाइटें बंद कर दीं, और अचानक हमारे सामने एक असली जन्मदिन की पार्टी का माहौल बन गया। उसने शराब की एक बोतल खोली और हमने उसे टूटे हुए केक के साथ पिया और थोड़ा सा नाश्ता भी किया।

“मुझे नहीं पता, लेकिन बीस साल का होना कुछ बेवकूफी भरा लगता है,” उसने कहा। खाना खाने के बाद हमने बर्तन हटाए और फर्श पर बैठकर बची हुई शराब पी। मैंने एक गिलास खत्म किया, जबकि उसने दो गिलास ले लिए।

उस रात उसने जिस तरह से बात की, वैसी उसने पहले कभी नहीं की थी। उसने मुझे अपने बचपन, अपने स्कूल, अपने परिवार के बारे में लंबी-लंबी कहानियाँ सुनाईं। बेहद उलझी हुई कहानियाँ जो 'अ' से शुरू होतीं, फिर 'अ' की बात आती, फिर 'अ' की, और इस तरह चलती ही रहतीं। उनका कोई अंत नहीं था। पहले तो मैंने उसे यह दिखाने के लिए हर तरह की आवाज़ें निकालीं कि मैं उसकी बातें समझ रहा हूँ, लेकिन जल्द ही हार मान ली। मैंने एक रिकॉर्ड चलाया और जब वह खत्म हुआ, तो मैंने सुई उठाकर दूसरा लगा दिया। सारे रिकॉर्ड खत्म करने के बाद, मैंने पहला वाला रिकॉर्ड वापस लगा दिया। बाहर अभी भी ज़ोरदार

बारिश हो रही थी। समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था क्योंकि उसका एकालाप बिना रुके चलता रहा।
मुझे पहले तो इसकी चिंता नहीं हुई, लेकिन कुछ देर बाद अचानक मुझे एहसास हुआ कि रात के ग्यारह बज चुके हैं और वह चार घंटे से लगातार बोल रही है। अगर मैं जल्दी नहीं उठा तो घर जाने वाली आखिरी ट्रेन छूट जाएगी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। क्या उसे तब तक बोलने दूं जब तक वह थक न जाए? या बीच में टोककर उसे चुप करा दूं? बहुत सोचने-विचारने के बाद, मैंने टोकने का फैसला किया। चार घंटे तो काफी होने चाहिए, आप यही सोचेंगे।
"अच्छा, मुझे अब जाना चाहिए," मैंने आखिरकार कहा। "माफ़ करना, मैं इतनी देर तक रुका रहा। फिर जल्द ही मिलेंगे, ठीक है?"
मुझे यकीन नहीं था कि मेरी बात उस तक पहुँची या नहीं। थोड़ी देर के लिए वह चुप रही, लेकिन जल्द ही फिर से वही बड़बड़ाहट शुरू हो गई। मैंने हार मान ली और एक सिगरेट जला ली। इस हालत में तो लगता है मुझे प्लान बी अपनाना ही बेहतर होगा। बाकी जो होगा देखा जाएगा।
कुछ ही देर में, वह रुक गई। अचानक मुझे एहसास हुआ कि उसकी बात खत्म हो गई है। ऐसा नहीं था कि वह बोलना नहीं चाहती थी: उसके पास शब्दों का भंडार ही सूख गया था। शब्द हवा में लटके रह गए। उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी नहीं निकला। कुछ खो गया था। उसके होंठ हल्के से खुले हुए थे, उसने अस्पष्ट भाव से मेरी आँखों में देखा। मानो वह किसी धुंधली झिल्ली के पार कुछ समझने की कोशिश कर रही हो। मुझे अपराधबोध होने लगा।
मैंने धीरे-धीरे, हर शब्द को तौलते हुए कहा, "मेरा इरादा आपको परेशान करने का नहीं था। लेकिन देर हो रही है, इसलिए मैंने सोचा कि मुझे अब जाना चाहिए..."
एक पल से भी कम समय में उसकी आँखों से आँसू उसके गालों से बहकर रिकॉर्ड जैकेट पर गिर पड़े। पहली बूँद गिरने के बाद, मानो आँसू का सैलाब उमड़ पड़ा। उसने अपने हाथ ज़मीन पर रखे और आगे झुक गई, इतना रो रही थी मानो उल्टी कर रही हो। मैंने धीरे से अपना हाथ बढ़ाया और उसके कंधे को छुआ; वह हल्का सा काँपा। लगभग बिना सोचे-

समझे, मैंने उसे अपने पास खींच लिया। अपना सिर मेरी छाती में दबाकर, वह चुपचाप सिसक रही थी, उसकी गर्म साँसों और आँसुओं से मेरी कमीज़ भीग गई थी। उसकी दस उंगलियाँ, कुछ ढूँढ़ती हुई, मेरी पीठ पर घूम रही थीं। उसे अपनी बाईं बांह में थामे हुए, मैंने अपने दाहिने हाथ से उसके कोमल बालों को सहलाया। काफी देर तक मैं इसी मुद्रा में उसके रोने के रुकने का इंतज़ार करता रहा। लेकिन वह नहीं रुकी।



उस रात हम साथ सोए। शायद यही उस परिस्थिति का सबसे अच्छा जवाब था, शायद नहीं। मुझे नहीं पता कि मुझे और क्या करना चाहिए था।

मैंने बहुत दिनों से किसी लड़की के साथ संबंध नहीं बनाया था। यह उसका किसी पुरुष के साथ पहला अनुभव था। बेवकूफी में मैंने उससे पूछ लिया कि उसने उसके साथ संबंध क्यों नहीं बनाया। जवाब देने के बजाय, वह मुझसे दूर हट गई, दूसरी तरफ मुँह करके बाहर बारिश को देखने लगी। मैं छत को घूरता रहा और सिगरेट पीता रहा।



सुबह बारिश रुक गई थी। वह अब भी मुझसे मुंह फेरकर सो रही थी। या शायद वह हर समय जाग रही थी, मैं कह नहीं सकता। एक बार फिर वह उसी खामोशी में डूबी हुई थी, जैसी एक साल पहले थी। मैंने कुछ देर तक उसकी पीली पीठ को देखा, फिर हार मानकर बिस्तर से उठ गया।

रिकॉर्ड के कवर फर्श पर बिखरे पड़े थे; मेज पर आधा टूटा-फूटा केक रखा था। ऐसा लग रहा था मानो समय थम गया हो। उसकी डेस्क पर एक शब्दकोश और फ्रांसीसी क्रियाओं के रूपों का एक चार्ट था। डेस्क के सामने वाली दीवार पर एक कैलेंडर चिपका हुआ था, बिलकुल सफेद कैलेंडर जिस पर किसी भी तरह का कोई निशान या लिखावट नहीं थी।

मैंने बिस्तर के बगल में ज़मीन पर गिरे हुए कपड़े उठाए। मेरी कमीज़ का अगला हिस्सा अभी भी उसके आँसुओं से ठंडा और गीला था। मैंने अपना चेहरा उस पर लगाया और उसके बालों की खुशबू को महसूस किया।
मैंने उसकी मेज पर रखे मेमो पैड से एक पन्ना फाड़ा और उस पर एक नोट छोड़ दिया। मैंने लिखा, "जल्द ही मुझे फोन करना।" मैं दरवाजा बंद करके कमरे से बाहर निकल गया।



एक हफ़्ता बीत गया, कोई फ़ोन नहीं आया। उसने फ़ोन नहीं उठाया, इसलिए मैंने उसे एक लंबा पत्र लिखा। मैंने अपनी भावनाओं को पूरी ईमानदारी से बताने की कोशिश की। मैंने लिखा, "बहुत कुछ चल रहा है जिसके बारे में मुझे कुछ पता नहीं है; मैं सब कुछ समझने की पूरी कोशिश करूँगा, लेकिन तुम्हें समझना होगा कि इन चीज़ों में समय लगता है। मुझे नहीं पता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ—बस इतना पता है कि मैं चीज़ों के बारे में ज़्यादा गहराई से सोचने में समय बर्बाद नहीं करना चाहता। दुनिया इसके लिए बहुत अनिश्चित है। अगर तुम मुझे विचारों में उलझा दोगे, तो मैं लोगों को वो काम करने पर मजबूर कर दूँगा जो उन्हें नापसंद हैं। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं तुमसे दोबारा मिलना चाहता हूँ, लेकिन मुझे नहीं पता कि ऐसा करना सही होगा या नहीं..."
मैंने इसी तरह का पत्र लिखा था।



मुझे जुलाई की शुरुआत में जवाब मिला। एक छोटा सा पत्र।



फिलहाल मैंने कॉलेज से एक साल का ब्रेक लेने का फैसला किया है। मैं इसे फिलहाल कह रही हूँ, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं वापस जाऊँगी। छुट्टी लेना तो बस एक औपचारिकता है। कल मैं अपने अपार्टमेंट से निकल जाऊँगी। मुझे पता है कि यह आपको अचानक लगेगा,

लेकिन मैं इस बारे में काफी समय से सोच रही थी। मैं आपसे सलाह लेना चाहती थी, कई बार लगभग ले ही लिया था, लेकिन किसी कारणवश नहीं ले पाई। शायद मुझे इस बारे में बात करने से डर लग रहा था।

जो कुछ भी हुआ है, उसके बारे में चिंता मत करो। चाहे कुछ हुआ हो या न हुआ हो, अंत में हम यहीं पहुँचेंगे। मुझे पता है इससे तुम्हें दुख हो सकता है, और अगर ऐसा है तो मुझे खेद है। मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि मैं नहीं चाहता कि तुम मेरी वजह से खुद को या किसी और को दोष दो। यह वास्तव में एक ऐसी बात है जिसे मुझे अकेले ही संभालना होगा। पिछले एक साल से मैं इसे टालता रहा हूँ, और मुझे पता है कि मेरी वजह से तुम्हें तकलीफ हुई है। शायद अब वह सब बीत चुका है।

क्योटो के पास पहाड़ों में एक अच्छा सैनिटोरियम है, और मैंने वहाँ कुछ समय के लिए रहने का फैसला किया है। यह अस्पताल से ज़्यादा एक ऐसी जगह है जहाँ आप अपनी मर्ज़ी से कुछ भी कर सकते हैं। मैं आपको कभी फिर लिखूँगी और इसके बारे में और बताऊँगी। अभी तो मुझे शब्द ही नहीं सूझ रहे। यह दसवीं बार है जब मैंने यह पत्र दोबारा लिखा है। पिछले एक साल में मेरे साथ रहने के लिए मैं आपकी कितनी आभारी हूँ, यह बताने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। कृपया मेरी बात पर विश्वास करें। मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सकती। आपने मुझे जो रिकॉर्ड दिया है, उसे मैं हमेशा संजोकर रखूँगी।

किसी दिन, इस अनिश्चित दुनिया में कहीं, अगर हम फिर से मिलते हैं तो मुझे उम्मीद है कि मैं आपको अभी की तुलना में बहुत कुछ बता पाऊंगा।

अलविदा।



मैंने उसका पत्र कम से कम दो सौ बार पढ़ा होगा, और हर बार मुझे एक भयानक उदासी ने जकड़ लिया। ठीक वैसी ही बेचैनी भरी उदासी जो मुझे तब महसूस होती थी जब वह मेरी आँखों में गहराई से देखती थी। मैं उस भावना को दूर नहीं कर पा रहा था। यह हवा की तरह थी, आकारहीन और भारहीन, और मैं इसे अपने चारों ओर लपेट नहीं पा रहा था। दृश्य धीरे-

धीरे मेरे सामने से गुजर रहे थे। लोग बोल रहे थे, लेकिन उनके शब्द मेरे कानों तक नहीं पहुँच रहे थे।

शनिवार की रातें मैं अब भी छात्रावास की लॉबी में उसी कुर्सी पर बैठा रहता था। मुझे पता था कि कोई फ़ोन नहीं आएगा, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि और क्या करूँ। मैं टीवी चालू करता और बेसबॉल देखने का नाटक करता। और अपने और टीवी के बीच की उस अनिश्चित जगह को घूरता रहता। मैंने उस जगह को दो हिस्सों में बाँटा, और फिर दो हिस्सों में। मैं ऐसा बार-बार करता रहा, जब तक कि वह जगह इतनी छोटी नहीं हो गई कि मेरी हथेली में समा जाए।

दस बजे मैंने टीवी बंद किया, अपने कमरे में वापस गया और सो गया।



उस महीने के आखिर में मेरे रूममेट ने मुझे इंस्टेंट कॉफी के जार में एक जुगनू दिया। जार के अंदर घास की कुछ पत्तियां और थोड़ा सा पानी था। उसने ढक्कन में कुछ छोटे-छोटे हवा के छेद कर रखे थे। बाहर अभी भी उजाला था, इसलिए जुगनू समुद्र तट पर मिलने वाले किसी काले कीड़े जैसा दिख रहा था। मैंने जार में झाँका और वाकई, वह एक जुगनू ही था। जुगनू कांच के जार की फिसलन भरी सतह पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन हर बार फिसलकर नीचे गिर जाता था। मैंने बहुत समय से किसी जुगनू को इतने करीब से नहीं देखा था।

“मुझे यह आंगन में मिला,” मेरे रूममेट ने मुझे बताया। “पास के एक होटल ने प्रचार के लिए बहुत सारे जुगनू छोड़े थे, और यह शायद यहीं आ गया होगा।” बात करते-करते वह कपड़े और नोटबुक एक छोटे से सूटकेस में भर रहा था। गर्मियों की छुट्टियां शुरू हुए कई हफ्ते बीत चुके थे। मैं घर वापस नहीं जाना चाहता था, और उसे कुछ फील्डवर्क के लिए बाहर जाना पड़ा था, इसलिए हॉस्टल में हम दोनों ही लगभग अकेले बचे थे। फील्डवर्क खत्म होने के बाद, वह घर जाने के लिए तैयार था।

उन्होंने आगे कहा, "क्यों न तुम इसे किसी लड़की को दे दो? लड़कियों को ये चीजें पसंद आती हैं।"

"धन्यवाद, अच्छा विचार है," मैंने कहा।



सूर्यास्त के बाद छात्रावास में सन्नाटा छा गया। झंडा गायब हो चुका था और कैंटीन की खिड़कियों में बत्तियाँ जल उठीं। अब बस कुछ ही छात्र बचे थे, इसलिए आधी बत्तियाँ ही जल रही थीं। दाईं ओर की बत्तियाँ बंद थीं, बाईं ओर की बत्तियाँ जल रही थीं। रात के खाने की हल्की सी खुशबू आ रही थी। क्रीम स्टू की महक।

मैंने जुगनू वाला इंस्टेंट कॉफी का जार लिया और छत पर चला गया। वह जगह सुनसान थी। किसी की भूली हुई एक सफेद कमीज कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर टंगी थी, जो शाम की हवा में किसी उतारी हुई चमड़ी की तरह लहरा रही थी। मैं छत के कोने में लगी जंग लगी धातु की सीढ़ी से पानी के टावर के ऊपर चढ़ गया। बेलनाकार पानी का टैंक दिन भर की गर्मी सोखने के कारण अभी भी गर्म था। मैं तंग जगह में बैठ गया, रेलिंग से टेक लगाकर, और अपने सामने चाँद को देखने लगा, जो पूर्णिमा से बस एक-दो दिन दूर था। दाईं ओर मुझे शिंजुकु की सड़कें दिखाई दे रही थीं, बाईं ओर इकेबुकुरो। कारों की हेडलाइट्स शहर के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक बहती हुई एक चमकदार रोशनी की धारा की तरह लग रही थीं। सड़कों पर छाए बादल की तरह, शहर विभिन्न ध्वनियों का मिश्रण था, एक धीमी, हल्की गुनगुनाहट।

जार के तल में जुगनू हल्की रोशनी बिखेर रहा था। लेकिन उसकी रोशनी बहुत कमज़ोर थी, रंग भी फीका था। मुझे याद था कि जुगनू की रोशनी तेज़ और चमकदार होती है जो गर्मियों के अंधेरे को चीर देती है। मुझे लगा कि शायद यह जुगनू कमज़ोर हो रहा है, शायद मर रहा है। जार को मुंह से पकड़कर मैंने उसे दो-तीन बार हिलाकर देखा। जुगनू एक पल के लिए उड़ा और कांच से टकराया। लेकिन उसकी रोशनी अब भी मंद थी।

शायद समस्या रोशनी में नहीं, बल्कि मेरी याददाश्त में थी। शायद जुगनुओं की रोशनी उतनी तेज नहीं होती। क्या मैं बस कल्पना कर रहा था? या शायद, जब मैं बच्चा था, तब मेरे चारों ओर का अंधेरा और भी गहरा था। मुझे याद नहीं आ रहा था। मुझे यह भी याद नहीं आ रहा था कि मैंने आखिरी बार जुगनू कब देखा था।

मुझे रात में बहते पानी की आवाज़ याद थी। एक पुराना ईंटों का नाला, जिसका हैंडल घुमाकर खोला या बंद किया जा सकता था। एक संकरी धारा, जिसकी सतह पर पेड़-पौधे फैले हुए थे। चारों ओर घना अंधेरा था, और सैकड़ों जुगनू शांत पानी के ऊपर उड़ रहे थे। धारा के ऊपर पीले रंग की हल्की रोशनी चमक रही थी, और पानी में भी उसकी चमक दिखाई दे रही थी।

यह कब हुआ था? और कहाँ हुआ था?

मुझे अनुमान नहीं था।

सब कुछ गड़बड़ और उलझन भरा था।

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और खुद को शांत करने के लिए कुछ गहरी साँसें लीं। अगर मैं आँखें कसकर बंद रखता, तो किसी भी क्षण मेरा शरीर गर्मी के अँधेरे में समा जाता। अंधेरा होने के बाद यह पहली बार था जब मैं पानी के टावर पर चढ़ा था। हवा की आवाज़ पहले से कहीं ज़्यादा साफ़ सुनाई दे रही थी। हवा तेज़ नहीं बह रही थी, फिर भी अजीब तरह से मेरे पास से गुज़रते हुए एक स्पष्ट निशान छोड़ रही थी। धीरे-धीरे, रात ने धरती को अपनी चपेट में ले लिया। शहर की बत्तियाँ चाहे जितनी तेज़ चमक रही हों, लेकिन धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, रात की जीत हो रही थी।

मैंने जार का ढक्कन खोला, जुगनू को बाहर निकाला और उसे पानी के टावर के उस किनारे पर रख दिया जो एक-दो इंच बाहर निकला हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो जुगनू को समझ ही नहीं आ रहा था कि वह कहाँ है। एक बोल्ट के चारों ओर लड़खड़ाते हुए चक्कर लगाने के बाद, उसने ढीले पेंट के एक ढेर पर अपना एक पैर फैला दिया। उसने दाईं ओर जाने की कोशिश की, लेकिन रास्ता बंद देखकर वह बाईं ओर लौट गई। वह धीरे-धीरे बोल्ट के ऊपर चढ़ गई और कुछ देर तक वहाँ बेसुध पड़ी रही, मानो मरी हुई हो।

रेलिंग से टेक लगाकर मैं जुगनू को निहार रहा था। काफी देर तक हम दोनों बिना हिले-डुले वहीं बैठे रहे। बस हवा, धारा की तरह, हमारे पास से गुज़रती रही। अंधेरे में ज़ेलकोवा के अनगिनत पत्ते सरसराते हुए आपस में रगड़ खा रहे थे।



मैंने बहुत लंबे समय तक इंतजार किया।



काफी देर बाद, जुगनू ने उड़ान भरी। मानो कुछ याद आने पर, उसने अचानक अपने पंख फैलाए और अगले ही पल रेलिंग के ऊपर से उड़कर घने अंधेरे में गायब हो गया। शायद बीता हुआ समय वापस पाने की कोशिश में, उसने पानी के टावर के बगल में तेज़ी से एक चाप बनाया। वह एक पल के लिए रुका, बस इतनी देर के लिए कि उसकी रोशनी की लकीर धुंधली हो जाए, फिर पूरब की ओर उड़ गया।

जुगनू के गायब हो जाने के बहुत समय बाद भी, उसकी रोशनी के निशान मेरे भीतर रह गए। मेरी बंद आँखों के पीछे घने अंधेरे में, वह धुंधली रोशनी, किसी भटकती आत्मा की तरह, घूमती रही।

मैंने बार-बार उस अँधेरे की ओर हाथ बढ़ाया। लेकिन मेरी उंगलियों को कुछ भी महसूस नहीं हुआ। वह हल्की सी चमक हमेशा मेरी पहुँच से बाहर ही रही।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

संयोग यात्री

आपको यह समझना चाहिए कि यहाँ "मैं" से तात्पर्य मुझसे है, हारुकी मुराकामी, कहानी के लेखक से। यह कहानी अधिकतर तीसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से लिखी गई है, लेकिन शुरुआत में कथावाचक का भी उल्लेख मिलता है। ठीक वैसे ही जैसे पुराने ज़माने के नाटकों में कथावाचक पर्दे के सामने खड़ा होकर प्रस्तावना सुनाता है और फिर चला जाता है। आपके धैर्य के लिए धन्यवाद, और मैं वादा करता हूँ कि आपको ज़्यादा देर तक नहीं रोकूँगा।

मैं यहाँ इसलिए आया हूँ क्योंकि मुझे लगा कि मेरे साथ घटी कुछ तथाकथित अजीब घटनाओं को सीधे-सीधे बताना सबसे अच्छा रहेगा। दरअसल, इस तरह की घटनाएँ अक्सर होती रहती हैं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण हैं और उन्होंने मेरे जीवन को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है। अन्य घटनाएँ महत्वहीन हैं जिनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है।

जब भी मैं इन घटनाओं का ज़िक्र किसी समूह चर्चा में करता हूँ, तो मुझे कोई खास प्रतिक्रिया नहीं मिलती। ज़्यादातर लोग बस कुछ गोलमोल टिप्पणी कर देते हैं, और बात आगे नहीं बढ़ती। इससे न तो बातचीत शुरू होती है, न ही किसी को अपने साथ घटी ऐसी ही कोई घटना बताने की प्रेरणा मिलती है। मेरा उठाया हुआ विषय मानो किसी अनजान रेत के टीले में बहता हुआ पानी हो। कुछ देर तक कोई कुछ नहीं कहता, फिर अचानक कोई न कोई विषय बदल देता है।

पहले तो मुझे लगा कि मैं कहानी गलत तरीके से बता रही हूँ, इसलिए एक बार मैंने उसे निबंध के रूप में लिखने की कोशिश की। मैंने सोचा कि शायद लोग इसे गंभीरता से लेंगे। लेकिन किसी को भी मेरी लिखी बात पर यकीन नहीं हुआ। "तुमने तो सब मनगढ़ंत कहानी बना दी है, है ना?" न जाने कितनी बार मैंने यह सुना है। चूंकि मैं उपन्यासकार हूँ, लोग मान लेते हैं कि मैं जो कुछ भी कहती या लिखती हूँ, उसमें कुछ न कुछ कल्पना जरूर होती है। यह सच है कि मेरी कहानियों में कल्पना का अंश काफी होता है, लेकिन जब मैं उपन्यास नहीं लिख रही होती, तो मैं बेमतलब की कहानियां गढ़ने में समय बर्बाद नहीं करती।

कहानी की भूमिका के तौर पर, मैं अपने कुछ विचित्र अनुभवों को संक्षेप में बताना चाहूंगा। मैं मामूली और महत्वहीन अनुभवों तक ही सीमित रहूंगा। अगर मैं जीवन बदल देने वाले अनुभवों के बारे में बताने लगूं, तो मेरी आवंटित अधिकांश जगह भर जाएगी।



1993 से 1995 तक मैं कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स में रहा। मैं एक कॉलेज में एक तरह का रेजीडेंट राइटर था और 'द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल' नामक उपन्यास पर काम कर रहा था। हार्वर्ड स्क्वायर में रेगट्टाबार जैज़ क्लब नाम का एक जैज़ क्लब था जहाँ बहुत सारे लाइव परफॉर्मेंस होते थे। यह एक आरामदायक, शांत और सुकून भरा स्थान था। वहाँ प्रसिद्ध जैज़ संगीतकार प्रस्तुति देते थे और प्रवेश शुल्क भी उचित था।

एक शाम पियानोवादक टॉमी फ्लैनगन अपने तिकड़ी समूह के साथ आए। मेरी पत्नी को कुछ काम था, इसलिए मैं अकेला ही गया। टॉमी फ्लैनगन मेरे पसंदीदा जैज़ पियानोवादकों में से एक हैं। वे आमतौर पर संगतकार के रूप में आते हैं; उनकी प्रस्तुतियाँ हमेशा मधुर, गहरी और अद्‌भुत रूप से स्थिर होती हैं। उनके एकल वादन शानदार होते हैं। इसलिए, मैं उत्सुकता से मंच के पास एक मेज पर बैठ गया और कैलिफ़ोर्निया मर्लोट का एक गिलास पिया। सच कहूँ तो, उनकी प्रस्तुति थोड़ी निराशाजनक रही। शायद उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। या फिर उनके लिए लय में आने में अभी समय था। उनकी प्रस्तुति बुरी नहीं थी, बस उसमें वह अतिरिक्त तत्व गायब था जो हमें दूसरी दुनिया में ले जाता है। उसमें वह विशेष जादुई चमक नहीं थी, शायद आप ऐसा कह सकते हैं। टॉमी फ्लैनगन इससे बेहतर कर सकते हैं, मैंने सुनते हुए सोचा—बस देखते रहिए जब वे लय में आ जाएँगे।

लेकिन समय बीतने से हालात नहीं सुधरे। जैसे-जैसे उनका सेट खत्म होने वाला था, मुझे घबराहट होने लगी, मैं दुआ कर रहा था कि कहीं यह ऐसे ही खत्म न हो जाए। मैं उनकी परफॉर्मेंस को याद रखने के लिए कुछ तो चाहता था। अगर सब कुछ ऐसे ही खत्म हो गया, तो मैं अपने साथ बस धुंधली यादें ही लेकर घर लौटूँगा। या शायद कोई यादें ही न हों। और हो सकता है कि मुझे टॉमी फ्लैनगन को फिर कभी लाइव परफॉर्म करते देखने का मौका ही न मिले। (दरअसल, मुझे कभी मिला ही नहीं।) अचानक मेरे मन में एक ख्याल आया: अगर मुझे

अभी उनसे दो गाने रिक्वेस्ट करने का मौका दिया जाए तो मैं कौन से गाने चुनूँगा? मैंने कुछ देर सोचा और फिर "बार्बाडोस" और "स्टार-क्रॉस्ड लवर्स" को चुना।

पहला गीत चार्ली पार्कर का है, दूसरा ड्यूक एलिंगटन का। मैं यह जानकारी उन लोगों के लिए दे रहा हूँ जिन्हें जैज़ संगीत में ज़्यादा रुचि नहीं है, लेकिन ये दोनों ही गीत ज़्यादा लोकप्रिय नहीं हैं और न ही इनका ज़्यादा प्रदर्शन होता है। आप कभी-कभार "बारबाडोस" सुन सकते हैं, हालाँकि यह चार्ली पार्कर के कम प्रसिद्ध गीतों में से एक है, और मुझे यकीन है कि ज़्यादातर लोगों ने "स्टार-क्रॉस्ड लवर्स" कभी नहीं सुना होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि ये आम तौर पर चुने जाने वाले गीत नहीं थे।

इन दो असंभावित रचनाओं को चुनने के मेरे अपने कारण थे—खासकर इसलिए कि टॉमी फ्लैनगन ने इन दोनों की यादगार रिकॉर्डिंग की थी। "बार्बाडोस" 1957 के एल्बम डायल जेजे 5 में आया था, जिसमें वे जे. जे. जॉनसन क्विंटेट के पियानोवादक थे, जबकि "स्टार-क्रॉस्ड लवर्स" उन्होंने 1968 के एल्बम एनकाउंटर! में पेप्पर एडम्स और ज़ूट सिम्स के साथ रिकॉर्ड किया था। अपने लंबे करियर में टॉमी फ्लैनगन ने विभिन्न समूहों में सहायक संगीतकार के रूप में अनगिनत रचनाएँ बजाईं और रिकॉर्ड कीं, लेकिन इन दो विशेष रचनाओं में उनके संक्षिप्त लेकिन सटीक सोलो ही मुझे हमेशा से पसंद आए हैं। इसीलिए मैं सोच रहा था कि काश वे अभी ये दोनों धुनें बजा दें तो कितना अच्छा होगा। मैं उन्हें ध्यान से देख रहा था, कल्पना कर रहा था कि वे मेरी मेज पर आकर पूछेंगे, "अरे, मेरी नज़र आप पर है। क्या आपकी कोई धुन है? आप मुझे उन दो धुनों के नाम क्यों नहीं बता देते जिन्हें आप चाहते हैं कि मैं बजाऊँ?" बेशक, उन्हें यह बात हर समय पता थी कि ऐसा होने की संभावना बिल्कुल भी नहीं थी।

और फिर, बिना एक शब्द कहे, और मेरी तरफ देखे बिना ही, टॉमी फ्लैनगन ने अपने सेट के आखिरी दो गाने बजाना शुरू कर दिया—ठीक वही गाने जिनके बारे में मैं सोच रहा था। उन्होंने "स्टार-क्रॉस्ड लवर्स" नामक गाथागीत से शुरुआत की, फिर "बारबाडोस" के तेज़-तर्रार संस्करण पर चले गए। मैं वहाँ हाथ में वाइन का गिलास लिए, अवाक बैठा रहा। जैज़ के प्रशंसक समझ सकते हैं कि लाखों जैज़ गानों में से इन दो गानों को चुनने की उनकी संभावना

बहुत कम थी। और साथ ही—और यही मुख्य बात है—दोनों गानों पर उनका प्रदर्शन अद्भुत था।



दूसरी घटना भी लगभग उसी समय घटी, और उसका संबंध भी जैज़ से था। एक दोपहर मैं बर्कली स्कूल ऑफ़ म्यूज़िक के पास एक पुरानी रिकॉर्ड की दुकान में रिकॉर्ड्स देख रहा था। पुरानी एलपी रिकॉर्ड्स की अलमारियों में छानबीन करना, मेरे लिए, जीवन को सार्थक बनाने वाले कुछ चुनिंदा कामों में से एक है। उस दिन मुझे पेप्पर एडम्स के एल्बम '10 टू 4 एट द फाइव स्पॉट' की एक पुरानी कॉपी मिली, जिसका नाम 'रिवरसाइड' था। यह पेप्पर एडम्स क्विंटेट की लाइव रिकॉर्डिंग थी, जिसमें डोनाल्ड बर्ड ट्रम्पेट बजा रहे थे, और इसे न्यूयॉर्क के फाइव स्पॉट जैज़ क्लब में रिकॉर्ड किया गया था। '10 टू 4' का मतलब था सुबह चार बजे से दस मिनट पहले, यानी उन्होंने इतना ज़बरदस्त प्रदर्शन किया कि वे सुबह तक बजाते रहे। एल्बम की यह कॉपी पहली छपाई थी, एकदम नई जैसी, और केवल सात-आठ डॉलर में मिल रही थी। मेरे पास इस रिकॉर्ड का जापानी संस्करण था और मैंने इसे इतना सुना था कि यह पूरी तरह से खरोंच गया था। इतनी अच्छी हालत में और इतनी कम कीमत पर ओरिजिनल रिकॉर्डिंग मिलना, थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर कहूँ तो, किसी चमत्कार से कम नहीं था। रिकॉर्ड खरीदते समय मैं बहुत खुश था, और जैसे ही मैं दुकान से बाहर निकल रहा था, एक युवक मेरे पास से गुजरा और पूछा, "अरे, क्या आपके पास समय है?" मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और तुरंत जवाब दिया, "हाँ, चार बजने में दस मिनट बाकी हैं।"

यह कहने के बाद मैंने संयोग को देखा और चौंक गया। आखिर चल क्या रहा है? मैंने सोचा। क्या जैज़ का देवता बोस्टन के ऊपर आकाश में मंडरा रहा था, मुझे आँख मार रहा था और मुस्कुरा रहा था और कह रहा था, "वाह, तुम्हें यह पसंद आया?"



इनमें से कोई भी घटना कोई खास नहीं थी। ऐसा नहीं था कि मेरी जिंदगी ने कोई नई दिशा पकड़ ली हो। मैं बस इन अजीब संयोगों से हैरान था—कि ऐसी चीजें सचमुच होती हैं।

मुझे गलत मत समझिए—मैं तंत्र-मंत्र में विश्वास करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ। भविष्यवाणियों में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। किसी ज्योतिषी से हाथ की रेखाएँ पढ़वाने की झंझट में पड़ने के बजाय, मुझे लगता है कि अपनी समस्या का हल खुद ढूंढने की कोशिश करना ज़्यादा बेहतर है। ऐसा नहीं है कि मैं बहुत बुद्धिमान हूँ, बस मुझे लगता है कि यह समाधान खोजने का एक तेज़ तरीका है। मुझे अलौकिक शक्तियों में भी कोई विश्वास नहीं है। पुनर्जन्म, आत्मा, पूर्वाभास, टेलीपैथी, कयामत—इन सब में मेरी कोई रुचि नहीं है। मैं यह नहीं कह रहा कि मैं इनमें से किसी में विश्वास नहीं करता। अगर ये सच में मौजूद हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। बस व्यक्तिगत रूप से मुझे इनमें कोई दिलचस्पी नहीं है। फिर भी, कई अजीबोगरीब और अप्रत्याशित घटनाओं ने मेरे नीरस जीवन को रंगीन बना दिया है।

जो कहानी मैं आपको बताने जा रहा हूँ, वो मेरे एक दोस्त ने मुझे सुनाई थी। एक बार मैंने उसे अपने साथ हुई दो घटनाओं के बारे में बताया, और उसके बाद वो कुछ देर तक गंभीर चेहरे के साथ बैठा रहा और आखिर में बोला, "जानते हो, मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। एक ऐसी घटना जो संयोगवश मुझे वहाँ ले गई। यह पूरी तरह से अजीब तो नहीं था, लेकिन मैं इसे ठीक से समझा भी नहीं सकता। खैर, संयोगों की एक श्रृंखला मुझे ऐसी जगह ले गई जहाँ मैंने कभी होने की उम्मीद नहीं की थी।"

मैंने लोगों की पहचान की सुरक्षा के लिए कुछ तथ्यों को बदल दिया है, लेकिन इसके अलावा कहानी बिल्कुल वैसी ही है जैसी उसने बताई थी।



मेरा दोस्त पियानो ट्यूनर का काम करता है। वह टोक्यो के पश्चिमी हिस्से में, तामा नदी के पास रहता है। उसकी उम्र इकतालीस साल है और वह समलैंगिक है। वह अपने समलैंगिक होने की बात छुपाता नहीं है। उसका एक प्रेमी है जो उससे तीन साल छोटा है। उसका प्रेमी रियल एस्टेट में काम करता है और अपनी नौकरी की वजह से खुलकर समलैंगिक नहीं हो सकता, इसलिए वे अलग रहते हैं। मेरा दोस्त भले ही एक मामूली पियानो ट्यूनर हो, लेकिन

उसने संगीत महाविद्यालय के पियानो विभाग से स्नातक की उपाधि प्राप्त की है और वह खुद एक बेहतरीन पियानोवादक है। उसकी विशेषज्ञता आधुनिक फ्रांसीसी संगीतकारों - डेबुसी, रावेल और एरिक सैटी - की रचनाओं में है और वह उन्हें गहरी भावपूर्णता के साथ बजाता है। लेकिन फ्रांसिस पौलेंक उसका सबसे पसंदीदा संगीतकार है।

"पौलेंक समलैंगिक थे," उन्होंने एक दिन मुझसे कहा। "और उन्होंने इसे कभी छिपाने की कोशिश नहीं की। उन दिनों में ऐसा करना बहुत मुश्किल था। उन्होंने एक बार कहा था: 'अगर आप मुझसे मेरा समलैंगिक होना छीन लें तो मेरा संगीत कभी अस्तित्व में ही नहीं आता।' मैं उनकी बात को पूरी तरह समझता हूँ। उन्हें अपनी समलैंगिकता के प्रति उतना ही सच्चा होना था जितना कि अपने संगीत के प्रति। यही संगीत है, और यही जीवन है।"

मुझे भी पौलेंक का संगीत हमेशा से पसंद रहा है। जब मेरा दोस्त मेरा पुराना पियानो ठीक करने आता है, तो काम खत्म होने के बाद मैं कभी-कभी उससे पौलेंक की कुछ छोटी-छोटी रचनाएँ बजाने को कहता हूँ। जैसे "फ्रेंच सूट", "पास्टोरल" वगैरह।

संगीत कॉलेज में दाखिला लेने के बाद उसे एहसास हुआ कि वह समलैंगिक है। इससे पहले उसने कभी इस संभावना पर विचार भी नहीं किया था। वह सुंदर था, अच्छे संस्कारों से पला-बढ़ा था, शांत स्वभाव का था और हाई स्कूल की लड़कियों में लोकप्रिय था। उसकी कोई स्थायी प्रेमिका नहीं थी, लेकिन वह डेट पर ज़रूर जाता था। उसे किसी लड़की के साथ घूमना, उसके बालों को करीब से निहारना, उसकी गर्दन की खुशबू महसूस करना और उसका कोमल हाथ अपने हाथ में थामना बहुत अच्छा लगता था। लेकिन उसने कभी यौन संबंध नहीं बनाए थे। किसी लड़की के साथ कई डेट्स के बाद उसे लगने लगता था कि वह लड़की चाहती है कि वह पहल करे और कुछ करे, लेकिन वह कभी अगला कदम नहीं उठा पाता था। उसे कभी अंदर से कोई प्रेरणा नहीं मिलती थी। उसके आसपास के सभी लड़के अपनी-अपनी यौन इच्छाओं से जूझ रहे थे, कुछ उनसे लड़ रहे थे, कुछ आगे बढ़कर अपनी इच्छाओं को पूरा कर रहे थे, लेकिन उसे कभी वैसी इच्छाएं महसूस नहीं हुईं। शायद मैं देर से परिपक्व हो रहा हूँ, उसने सोचा। या शायद मुझे अभी तक सही लड़की नहीं मिली है।

कॉलेज में, वह पर्कशन विभाग में अपने ही बैच की एक लड़की के साथ डेटिंग करने लगा। उन्हें बातें करना अच्छा लगता था, और जब भी वे साथ होते, उन्हें एक-दूसरे के करीब महसूस

होता था। मिलने के कुछ ही समय बाद, उन्होंने उसके कमरे में शारीरिक संबंध बनाए। उसी ने उसे उकसाया था। उन्होंने कुछ ड्रिंक्स पी रखी थीं। शारीरिक संबंध सहजता से हो गया, हालांकि यह उतना रोमांचक और संतोषजनक नहीं था जितना सब कहते थे। वास्तव में, उसे यह क्रिया अभद्र, यहाँ तक कि घिनौनी भी लगी। और जब लड़की कामुक हो जाती थी तो उससे आने वाली हल्की गंध उसे अरुचिकर लगती थी। उसे बस उससे बातें करना, साथ में संगीत बजाना, साथ में खाना खाना ज़्यादा पसंद था। समय बीतने के साथ, उसके साथ शारीरिक संबंध बनाना उसके लिए बोझ बन गया।

फिर भी, उसे लगता था कि उसे सेक्स से कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन एक दिन... नहीं, मुझे लगता है कि मैं इस हिस्से को छोड़ देता हूँ। इसमें बहुत समय लगेगा, और यह उस कहानी से जुड़ा भी नहीं है जो मैं बताना चाहता हूँ। बस इतना कहूँगा कि कुछ ऐसा हुआ और उसे पता चला कि वह साफ़ तौर पर समलैंगिक है। वह कोई बहाना नहीं बनाना चाहता था, इसलिए उसने खुलकर उसे बता दिया। एक हफ्ते के अंदर यह खबर उसके सभी दोस्तों में फैल गई। उसने कुछ दोस्तों को खो दिया, और उसके और उसके माता-पिता के बीच रिश्ते भी बिगड़ गए, लेकिन अंत में यह अच्छा ही हुआ कि सब कुछ सामने आ गया। वह उस तरह का इंसान नहीं था जो अपनी असलियत छिपा सकता था।

लेकिन सबसे ज़्यादा दुख इस बात का हुआ कि इसका असर उसके परिवार में सबसे करीबी, दो साल बड़ी उसकी बहन के साथ उसके रिश्ते पर पड़ा। जब उसके मंगेतर के परिवार को उसके समलैंगिक होने के बारे में पता चला, तो ऐसा लगा कि शादी टूट सकती है। हालांकि वे लड़के के माता-पिता को मनाने में कामयाब रहे और आखिरकार शादी हो गई, लेकिन इस सबने उसकी बहन को लगभग मानसिक रूप से तोड़ दिया और वह अपने भाई पर बहुत गुस्सा हुई। उसने चिल्लाते हुए कहा, "तुमने मेरी ज़िंदगी के इस समय में ही हंगामा क्यों मचाना चाहा?" उसके भाई ने स्वाभाविक रूप से अपना बचाव किया, लेकिन इसके बाद उनके बीच दूरियां बढ़ गईं और उसने उसकी शादी में भी शिरकत नहीं की।

वह अकेले रहते हुए समलैंगिक के रूप में अपने जीवन का भरपूर आनंद लेते थे। समलैंगिकों से शारीरिक घृणा रखने वालों को छोड़कर, अधिकांश लोग उन्हें पसंद करते थे—आखिरकार, वे हमेशा सलीके से कपड़े पहनते थे, दयालु और विनम्र थे, उनका हास्यबोध

अच्छा था और उनकी मुस्कान मनमोहक थी। वे अपने काम में कुशल थे, इसलिए उनके पास ग्राहकों की एक लंबी सूची और एक स्थिर आय थी। कई प्रसिद्ध पियानोवादक अपने वाद्य यंत्रों को उनसे ही ट्यून करवाना पसंद करते थे। उन्होंने एक विश्वविद्यालय के पास दो कमरों का अपार्टमेंट खरीदा था और उसका लगभग पूरा ऋण चुका दिया था। उनके पास एक महंगा स्टीरियो सिस्टम था, वे एक कुशल ऑर्गेनिक शेफ थे और सप्ताह में पांच दिन जिम जाकर खुद को फिट रखते थे। कई पुरुषों के साथ संबंध बनाने के बाद, उनकी मुलाकात अपने वर्तमान साथी से हुई और लगभग एक दशक से उनके साथ उनका एक स्थिर यौन संबंध था।

मंगलवार को वह अपनी हरी रंग की, मैनुअल गियर वाली होंडा कन्वर्टिबल स्पोर्ट्स कार में तामा नदी पार करके कानागावा प्रांत के एक आउटलेट मॉल में जाता था। मॉल में सभी बड़े-बड़े स्टोर थे—गैप, टॉयज आर अस, बॉडी शॉप। सप्ताहांत में मॉल खचाखच भरा रहता था और पार्किंग की जगह मुश्किल से मिलती थी, लेकिन सप्ताह के दिनों में सुबह के समय मॉल लगभग खाली रहता था। वह मॉल में स्थित एक बड़े बुकस्टोर में जाता, अपनी पसंद की कोई किताब खरीदता, फिर कुछ घंटे किसी कैफे में बैठकर कॉफी पीते हुए और पढ़ते हुए बिताता। इस तरह वह अपने मंगलवार का दिन गुजारता था।

"यह मॉल तो बहुत ही भद्दा है," उसने मुझसे कहा, "लेकिन वह कैफ़े अपवाद है—एक बहुत ही आरामदायक छोटी सी जगह। मैं बस यूँ ही वहाँ पहुँच गया। वहाँ कोई संगीत नहीं बजता, धूम्रपान वर्जित है, और कुर्सियाँ पढ़ने के लिए एकदम सही हैं। न ज़्यादा सख्त, न ज़्यादा नरम। और वहाँ कभी कोई नहीं होता। मुझे नहीं लगता कि मंगलवार की सुबह आपको कोई कैफ़े की तरफ़ जाते हुए दिखेगा। अगर कोई जाता भी है, तो शायद पास के स्टारबक्स में चला जाएगा।"

तो मंगलवार की सुबह वह दस बजे से एक बजे तक उस कैफे में किताब पढ़ते हुए खोया रहता है। एक बजे वह पास के एक रेस्टोरेंट में जाता है, टूना सलाद और पेरिएर का लंच करता है, फिर कसरत करने के लिए जिम जाता है। यही उसका आम मंगलवार होता है।



उस मंगलवार की सुबह, हमेशा की तरह, वह लगभग खाली कैफे में पढ़ रहा था। चार्ल्स डिकेंस की 'ब्लीक हाउस'। उसने इसे कई साल पहले पढ़ा था, और जब उसे किताबों की अलमारी पर यह किताब दिखी तो उसने इसे फिर से पढ़ने का फैसला किया। उसे अच्छी तरह याद था कि यह एक दिलचस्प किताब थी, हालांकि उसे इसकी कहानी बिल्कुल याद नहीं थी। डिकेंस हमेशा से उसके पसंदीदा लेखकों में से एक रहे थे। डिकेंस को पढ़ने से दुनिया मिट जाती थी। पहले पन्ने से ही वह कहानी में पूरी तरह डूब जाता था।

एक घंटे तक लगातार पढ़ने के बाद, उसे थकान महसूस होने लगी। उसने अपनी किताब बंद की, उसे मेज पर रखा, वेट्रेस को दोबारा भरने का इशारा किया और कैफे के बाहर बने शौचालय में चला गया। जब वह अपनी सीट पर लौटा, तो बगल वाली मेज पर बैठी एक महिला, जो पढ़ रही थी, ने उससे बात की।

"माफ़ कीजिए, लेकिन क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकती हूँ?" उसने कहा।

उसकी ओर देखते हुए उसके चेहरे पर एक अस्पष्ट सी मुस्कान आ गई। वह लगभग उसी उम्र की थी। "बेशक," उसने जवाब दिया।

"मुझे पता है कि इस तरह बोलना मेरी जल्दबाजी है, लेकिन एक बात है जिसके बारे में मैं सोच रही हूँ," उसने थोड़ा शर्माते हुए कहा।

“कोई बात नहीं। मुझे कोई जल्दी नहीं है, आप आगे बढ़ सकते हैं।”

"क्या आप जो किताब पढ़ रहे हैं वह संयोगवश डिकेंस की है?"

“हाँ,” उसने किताब उठाते हुए और उसे दिखाते हुए कहा। “ब्लीक हाउस।”

“मुझे भी ऐसा ही लगा,” उसने राहत भरी आवाज़ में कहा। “मैंने कवर पर एक नज़र डाली और सोचा कि शायद यह वही किताब हो।”

"क्या आप भी ब्लीक हाउस के प्रशंसक हैं?"

“हाँ, मैं पढ़ रही हूँ। मेरा मतलब है, मैं भी वही किताब पढ़ रही थी। बिल्कुल आपके बगल में, बस संयोग से।” उसने किताब पर लिपटा सादा कागज़ हटाया, जैसा कि किताबों की दुकानों में होता है, और उसे किताब का कवर दिखाया।

यह वाकई एक चौंकाने वाला संयोग था। ज़रा सोचिए—एक आम दिन की सुबह, एक सुनसान शॉपिंग मॉल के एक वीरान कैफे में, दो लोग इत्तेफ़ाक से एक-दूसरे के बगल में बैठे एक ही

किताब पढ़ रहे थे। और यह कोई विश्व प्रसिद्ध किताब नहीं थी, बल्कि चार्ल्स डिकेंस की रचना थी। और वह भी उनकी कोई जानी-मानी रचना नहीं थी। इस अजीब और आश्चर्यजनक संयोग ने दोनों को हैरान कर दिया, लेकिन इसने उन्हें पहली मुलाकात की झिझक को दूर करने में भी मदद की।

वह महिला मॉल से कुछ ही दूरी पर स्थित एक नई आवासीय कॉलोनी में रहती थी। उसने पाँच दिन पहले उसी किताबों की दुकान से 'ब्लीक हाउस' खरीदी थी, और जब वह पहली बार इस कैफे में चाय का ऑर्डर देने बैठी और किताब खोली, तो उसे पता ही नहीं चला कि वह पढ़ना बंद कर ही नहीं पा रही है। देखते ही देखते दो घंटे बीत गए। कॉलेज के दिनों के बाद से वह पढ़ने में इतनी मग्न कभी नहीं हुई थी।

वह कद में छोटी थी और मोटी तो नहीं थी, लेकिन शरीर के कुछ खास हिस्सों पर उसका वज़न थोड़ा बढ़ने लगा था। उसकी छाती सुडौल थी और चेहरा आकर्षक था। उसके कपड़े सलीकेदार थे और थोड़े महंगे लग रहे थे। दोनों ने कुछ देर बातें कीं। वह महिला एक बुक क्लब की सदस्य थी और उस महीने उनकी पसंदीदा किताब 'ब्लीक हाउस' थी। क्लब की एक महिला डिकेंस की बहुत बड़ी प्रशंसक थी और उसने ही अगली बार पढ़ने के लिए उस उपन्यास का सुझाव दिया था। कैफे में बैठी महिला के दो बच्चे थे (दो बेटियां, एक तीसरी कक्षा में और एक पहली कक्षा में) और आमतौर पर उसे पढ़ने का समय निकालना मुश्किल होता था। हालांकि कभी-कभी वह इस तरह घर से बाहर निकलकर थोड़ा समय निकाल लेती थी। वह रोज़ाना जिन लोगों से मिलती थी, उनमें से ज़्यादातर उसके बच्चों के सहपाठियों की माताएं थीं और उनकी बातचीत टीवी सीरियल और बच्चों के शिक्षकों के बारे में गपशप तक ही सीमित रहती थी, इसलिए उसने एक स्थानीय बुक क्लब में शामिल हो गई थी। उनके पति खुद भी काफी पढ़ने वाले व्यक्ति हुआ करते थे, हालांकि अब काम में इतने व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें कभी-कभार कुछ व्यावसायिक पुस्तकों पर सरसरी नजर डालने का समय भी मुश्किल से मिल पाता है।

उसने अपने बारे में थोड़ा-बहुत बताया। कि वह पियानो ट्यूनर का काम करता है, तामा नदी के उस पार रहता है और अविवाहित है। उसे यह छोटा सा कैफे इतना पसंद था कि वह हर हफ्ते सिर्फ बैठने और पढ़ने के लिए इतनी दूर गाड़ी चलाकर यहाँ आता था। उसने अपने

समलैंगिक होने का ज़िक्र नहीं किया। उसने जानबूझकर इसे छिपाया नहीं था, लेकिन यह ऐसी बात नहीं थी जो आप हर किसी को बता दें।
उन्होंने मॉल के एक रेस्टोरेंट में साथ में दोपहर का भोजन किया। वह महिला बहुत ही खुले दिल और ईमानदार स्वभाव की थी। सहज होने पर वह खूब हँसी—एक स्वाभाविक, शांत हँसी। बिना कुछ कहे ही वह समझ गया कि उसने अब तक कैसा जीवन जिया होगा। वह सेतागाया के एक संपन्न परिवार की लाड़ली बेटी थी, एक अच्छे कॉलेज में पढ़ती थी जहाँ उसे अच्छे अंक मिलते थे और वह लोकप्रिय थी (शायद लड़कों की तुलना में अन्य लड़कियों में ज़्यादा), उसने अपने से तीन साल बड़े, अच्छी तनख्वाह वाले व्यक्ति से शादी की थी और उसकी दो बेटियाँ थीं। लड़कियाँ निजी स्कूल में पढ़ती थीं। उसके बारह साल का वैवाहिक जीवन पूरी तरह सुखमय तो नहीं था, लेकिन उसे कोई खास शिकायत नहीं थी। दोनों ने हल्का भोजन किया और हाल ही में पढ़ी किताबों और पसंद के संगीत के बारे में बातें कीं। उन्होंने लगभग एक घंटे तक बातें कीं।
“मुझे इसमें मज़ा आया,” महिला ने काम खत्म होने के बाद कहा और उसका चेहरा लाल हो गया। “मेरे पास कोई ऐसा नहीं है जिससे मैं सच में बात कर सकूँ।”
उन्होंने कहा, "मुझे भी बहुत अच्छा लगा।" और यह सच था।



अगले मंगलवार को, जब वह कैफ़े में बैठकर पढ़ रहे थे, तो वह फिर से वहाँ आ गईं। दोनों ने मुस्कुराते हुए एक-दूसरे का अभिवादन किया और अलग-अलग मेज़ों पर बैठ गए, दोनों चुपचाप 'ब्लीक हाउस' की अपनी-अपनी प्रतियाँ पढ़ने में मग्न थे। दोपहर से ठीक पहले वह उनकी मेज़ पर आईं और उनसे बात की, और पिछले सप्ताह की तरह वे दोपहर का भोजन करने चले गए। उन्होंने कहा, "मुझे पास में ही एक छोटा सा प्यारा सा फ़्रेंच रेस्टोरेंट पता है, और मैं सोच रही थी कि क्या आप वहाँ जाना चाहेंगे? मॉल में कोई अच्छा रेस्टोरेंट नहीं है।"
उन्होंने सहमति जताते हुए कहा, "ठीक है, चलो चलते हैं।" वे उनकी नीली, ऑटोमैटिक प्यूजो 306 कार में रेस्टोरेंट गए, और उन्होंने वॉटरक्रेस सलाद और ग्रिल्ड सी बास, एक गिलास व्हाइट वाइन का आनंद लिया। और खाते समय डिकेंस के उपन्यास पर चर्चा की।

दोपहर के भोजन के बाद, जब वे मॉल वापस जा रहे थे, तो उसने एक पार्किंग में गाड़ी रोकी और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसने कहा कि वह उसके साथ किसी शांत और सुखद जगह पर जाना चाहती है। वह यह देखकर थोड़ा हैरान था कि चीजें इतनी जल्दी कैसे आगे बढ़ गईं।

“शादी के बाद मैंने ऐसा कभी नहीं किया। एक बार भी नहीं,” उसने समझाया। “लेकिन पिछले एक हफ्ते से मैं सिर्फ तुम्हारे बारे में ही सोच रही हूँ। मैं वादा करती हूँ कि मैं तुमसे कोई माँग नहीं करूँगी, न ही तुम्हें कोई परेशानी दूँगी। हाँ, अगर तुम्हें मैं आकर्षक न लगूँ तो...”

उसने धीरे से उसका हाथ दबाया और शांत भाव से सब कुछ समझाया। उसने कहा, "अगर मैं एक आम आदमी होता, तो मुझे यकीन है कि मैं तुम्हारे साथ किसी शांत और सुंदर जगह पर जाना पसंद करता। तुम एक आकर्षक महिला हो और मुझे पता है कि तुम्हारे साथ ऐसा समय बिताना कितना अच्छा होता। लेकिन बात यह है कि मैं समलैंगिक हूँ। इसलिए मैं महिलाओं के साथ यौन संबंध नहीं बना सकता। कुछ समलैंगिक पुरुष ऐसा कर सकते हैं, लेकिन मैं नहीं। मुझे उम्मीद है कि तुम समझोगी। मैं तुम्हारा दोस्त तो बन सकता हूँ, लेकिन तुम्हारा प्रेमी नहीं।"

उसे उसकी बात पूरी तरह समझने में काफी समय लगा (वह पहला समलैंगिक व्यक्ति था जिससे वह मिली थी), और जब आखिरकार उसे बात समझ में आई, तो वह रोने लगी। पियानो ट्यूनर के कंधे पर अपना चेहरा टिकाकर वह काफी देर तक रोती रही। उसके लिए यह एक बड़ा सदमा रहा होगा। बेचारी औरत, उसने सोचा, फिर उसने उसे बाहों में भर लिया और उसके बालों को सहलाया।

अंत में उसने कहा, "मुझे माफ कर दो। मैंने तुम्हें उस बारे में बोलने पर मजबूर कर दिया जिसके बारे में तुम बात नहीं करना चाहते थे।"

कोई बात नहीं। मैं अपनी असलियत छिपाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मुझे समझ जाना चाहिए था कि हम किस ओर जा रहे थे ताकि कोई गलतफहमी न होती। मुझे अफसोस है कि मैंने ही आपको बुरा महसूस कराया।

उसकी लंबी, पतली उंगलियाँ काफी देर तक उसके बालों को धीरे-धीरे सहलाती रहीं, और धीरे-धीरे इससे उसे शांति मिली। उसने देखा कि उसके दाहिने कान के निचले हिस्से पर एक

तिल था। उस तिल ने उसे बचपन की एक याद दिला दी। उसकी बड़ी बहन के भी लगभग उसी आकार का, उसी जगह पर तिल था। जब वह छोटा था, तो वह खेलते-खेलते अपनी बहन के सोते समय उसके तिल को रगड़ता था, मानो उसे मिटाने की कोशिश कर रहा हो। उसकी बहन गुस्से में जाग जाती थी।

“जब से मैं तुमसे मिली हूँ, मैं हर दिन उत्साहित रहती हूँ,” उसने कहा। “मुझे लंबे समय से ऐसा महसूस नहीं हुआ था। यह बहुत अच्छा था—मुझे फिर से एक किशोरी जैसा महसूस हुआ। इसलिए मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं ब्यूटी सैलून गई, जल्दी से डाइट शुरू की, कुछ इटैलियन लॉन्जरी खरीदी…”

"लगता है मैंने तुम्हारे पैसे बर्बाद करवा दिए," वह हँसते हुए बोला।

"लेकिन मुझे लगता है कि मुझे अभी इसकी जरूरत थी।"

“किस चीज की जरूरत थी?”

मुझे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कुछ तो करना ही था।

"क्या सेक्सी इटैलियन लॉन्जरी खरीदकर?"

वह शर्म से लाल हो गई। “यह कामुक नहीं था। बिलकुल भी नहीं। बस बहुत सुंदर था।”

वह मुस्कुराया और उसकी आँखों में देखा। उसने इशारा किया कि वह सिर्फ मजाक कर रहा था, जिससे तनाव कम हो गया। उसने भी मुस्कुराकर जवाब दिया, और कुछ पल के लिए वे एक-दूसरे की आँखों में गहराई से देखते रहे।

उसने अपना रुमाल निकाला और उसके आंसू पोंछे। वह उठ बैठी और सन विज़र मिरर में खुद को देखते हुए अपना मेकअप ठीक किया।

“परसों मुझे शहर के एक अस्पताल में स्तन कैंसर की दूसरी जांच के लिए जाना है।” वह मॉल की पार्किंग में गाड़ी खड़ी करके ब्रेक लगा चुकी थी। “मेरे सालाना एक्स-रे में उन्हें एक संदिग्ध धब्बा दिखा और उन्होंने मुझे कुछ और जांच के लिए आने को कहा। अगर वाकई कैंसर निकला तो मुझे तुरंत ऑपरेशन करवाना पड़ सकता है। शायद इसीलिए मैंने आज ऐसा बर्ताव किया। मेरा मतलब है…”

वह कुछ देर तक चुप रही, फिर उसने अपना सिर जोर से हिलाया।

मुझे खुद भी यह समझ नहीं आता।

पियानो ट्यूनर ने कुछ देर तक उसकी चुप्पी को महसूस किया। ध्यान से सुनते हुए, मानो भीतर छिपी किसी मंद ध्वनि को सुनने की कोशिश कर रहा हो।
उन्होंने कहा, "लगभग हर मंगलवार सुबह मैं यहीं होता हूँ। यहीं बैठकर पढ़ता रहता हूँ। मैं आपकी मदद के लिए कुछ खास नहीं कर सकता, लेकिन अगर आपको किसी से बात करनी हो तो मैं यहाँ हूँ। बशर्ते आपको मुझ जैसे किसी व्यक्ति से बात करने में कोई आपत्ति न हो।"
मैंने इस बारे में किसी को नहीं बताया है। यहां तक कि अपने पति को भी नहीं।
उसने अपना हाथ उसके हाथ के ऊपर, पार्किंग ब्रेक के ऊपर रख दिया।
“मुझे डर लग रहा है,” उसने कहा। “कभी-कभी इतना डर लगता है कि मैं सोच भी नहीं पाती।”
उनके बगल में एक नीली मिनीवैन आकर रुकी, और उसमें से एक असंतुष्ट अधेड़ उम्र का जोड़ा निकला। वे किसी बेमतलब की बात पर बहस कर रहे थे। उनके जाने के बाद सन्नाटा छा गया। उसकी आँखें बंद थीं।
उन्होंने कहा, "मैं किसी को सलाह देने की स्थिति में नहीं हूं, लेकिन जब मुझे समझ नहीं आता कि क्या करना है, तो मैं हमेशा एक नियम का पालन करता हूं।"
“एक नियम?”
“अगर आपको किसी आकार वाली चीज़ और बिना आकार वाली चीज़ में से किसी एक को चुनना हो, तो बिना आकार वाली चीज़ को चुनें। यही मेरा नियम है। जब भी मैं किसी मुश्किल में फंसता हूँ, मैं इसी नियम का पालन करता हूँ, और हमेशा समाधान निकल आता है। भले ही उस समय कितनी भी कठिनाई क्यों न हो।”
"क्या आपने वह नियम खुद बनाया है?"
“मैंने किया,” उसने प्यूजो के ओडोमीटर को देखते हुए जवाब दिया। “अपने खुद के अनुभव से।”
"अगर आपको किसी ऐसी चीज के बीच चुनाव करना हो जिसका आकार हो और किसी ऐसी चीज के बीच जिसका आकार न हो, तो बिना आकार वाली चीज को चुनें," उसने दोहराया।
"यह सही है।"

उसने इस पर विचार किया। "लेकिन अगर मुझे अभी ऐसा करना पड़े तो मुझे नहीं पता कि मैं अंतर बता पाऊंगी या नहीं। किस चीज का आकार है और किसका नहीं।"

"शायद नहीं, लेकिन मुझे यकीन है कि आगे चलकर आपको इस तरह का चुनाव करना ही पड़ेगा।"

"आप यह कैसे जानते हैं?"

उसने चुपचाप सिर हिलाया। "मुझ जैसे अनुभवी समलैंगिक व्यक्ति के पास कई तरह की विशेष शक्तियां होती हैं।"

वह हंस पड़ी। "धन्यवाद।"

इसके बाद काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। लेकिन यह पहले की तरह गहरा और घुटन भरा नहीं था।

“अलविदा,” महिला ने कहा। “मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहती हूँ। आपसे मिलकर और बात करके मुझे बहुत खुशी हुई। अब मुझे चीजों का सामना करने की थोड़ी ज़्यादा हिम्मत महसूस हो रही है।”

वह मुस्कुराया और उसने उसका हाथ मिलाया। "अपना ख्याल रखना।"

वह वहीं खड़ा रहा और उसकी नीली प्यूजो कार को जाते हुए देखता रहा। उसने आखिरी बार कार के रियरव्यू मिरर की ओर हाथ हिलाया और फिर धीरे-धीरे वापस उस जगह की ओर चल पड़ा जहाँ उसकी होंडा कार खड़ी थी।



अगले मंगलवार को बारिश हो रही थी और वह महिला कैफे में नहीं आई। वह चुपचाप एक बजे तक पढ़ता रहा और फिर चला गया।

उस दिन पियानो ट्यूनर ने जिम न जाने का फैसला किया। उसका व्यायाम करने का मन ही नहीं था। इसके बजाय वह दोपहर का भोजन किए बिना सीधे घर चला गया और अपने सोफे पर लेटकर आर्थर रुबिनस्टीन द्वारा बजाए जा रहे चोपिन के गीतों को सुनने लगा। आँखें बंद करके भी वह उस महिला का चेहरा, उसके बालों का स्पर्श महसूस कर सकता था। उसके कान के निचले हिस्से पर मौजूद तिल की आकृति उसे स्पष्ट रूप से याद आ गई। कुछ देर

बाद उसका चेहरा और प्यूजो कार उसके दिमाग से धुंधली पड़ गईं, लेकिन वह तिल बना रहा। चाहे वह आँखें खुली रखे या बंद, वह छोटा सा काला बिंदु एक भूले हुए समय की तरह बना रहा।

दोपहर करीब ढाई बजे उसने अपनी बहन को फोन करने का फैसला किया। काफी समय से उनकी बात नहीं हुई थी। कितना समय, उसने सोचा। दस साल? वे एक-दूसरे से इतने अलग हो गए थे। एक कारण यह था कि जब उसकी सगाई टूट गई थी, तब दोनों गुस्से में आकर कुछ ऐसी बातें कह बैठे थे जो उन्हें नहीं कहनी चाहिए थीं। दूसरा कारण यह था कि उसे उसका पति पसंद नहीं था। वह घमंडी और बदतमीज़ था, और पियानो ट्यूनर के यौन रुझान को किसी संक्रामक बीमारी की तरह मानता था। जब तक बहुत ज़रूरी न हो, पियानो ट्यूनर उस आदमी के सौ गज के दायरे में भी नहीं आना चाहता था।

फोन उठाने से पहले वह कई बार हिचकिचाया, लेकिन आखिरकार उसने नंबर डायल कर दिया। फोन दस से ज़्यादा बार बजा और वह हार मानने ही वाला था—असल में थोड़ी राहत महसूस करते हुए—तभी उसकी बहन ने फोन उठाया। उसकी जानी-पहचानी आवाज़। जब उसे पता चला कि वह वही है, तो दूसरी तरफ एक पल के लिए गहरी खामोशी छा गई।

"तुम मुझे क्यों फोन कर रहे हो?" उसने सपाट स्वर में कहा।

“मुझे नहीं पता,” उसने स्वीकार किया। “मैंने सोचा कि बेहतर होगा कि मैं आपको फोन कर लूँ। मुझे आपकी चिंता हो रही थी।”

एक बार फिर सन्नाटा छा गया। लंबा सन्नाटा। शायद वह अब भी मुझसे नाराज़ है, उसने सोचा।

मैंने फोन करने का कोई खास कारण नहीं था। मैं बस यह जानना चाहता था कि सब ठीक है या नहीं।

“एक मिनट रुकिए,” उसकी बहन ने कहा। वह समझ गया था कि वह रो रही थी। “मुझे माफ़ करना, लेकिन क्या आप मुझे एक पल दे सकते हैं?”

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। उसने रिसीवर को पूरे समय कान से लगाए रखा। उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, न ही कुछ महसूस हो रहा था। "क्या आप अभी व्यस्त हैं?" उसने आखिरकार पूछा।

“नहीं, मैं खाली हूँ,” उसने जवाब दिया।
क्या मैं आपसे मिलने आ सकता हूँ?
“ज़रूर। मैं आपको स्टेशन से ले आऊंगा।”
एक घंटे बाद उसने अपनी बहन को रेलवे स्टेशन से लिया और उसे अपने अपार्टमेंट में ले आया। दस साल बाद वे एक-दूसरे से मिले थे, और उन्हें मानना पड़ा कि वे दोनों बूढ़े हो गए थे। वे एक-दूसरे के लिए आईने की तरह थे, जिनमें उनके अंदर आए बदलावों का प्रतिबिंब दिख रहा था। उसकी बहन अब भी दुबली-पतली और स्टाइलिश थी, और अपनी असली उम्र से पाँच साल छोटी दिखती थी। फिर भी, उसके पिचके गालों में एक ऐसी कठोरता थी जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी, और उसकी प्रभावशाली गहरी आँखों की चमक फीकी पड़ गई थी। वह खुद भी अपनी उम्र से छोटा दिखता था, हालाँकि उसके बाल कम होने की बात छुपाना मुश्किल था। कार में वे झिझकते हुए आम बातों पर चर्चा करते रहे: काम, उसके बच्चे, आपसी दोस्तों की खबरें, माता-पिता के स्वास्थ्य की स्थिति।
अपने अपार्टमेंट के अंदर जाकर वह रसोई में पानी उबालने चला गया।
"क्या आप अभी भी पियानो बजाते हैं?" उसने उसके लिविंग रूम में रखे पियानो को देखते हुए पूछा।
“सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए। और वो भी सिर्फ आसान रचनाएँ। अब मैं कठिन रचनाओं को हल नहीं कर पाता।”
उसकी बहन ने पियानो का ढक्कन खोला और अपनी उंगलियाँ पीली पड़ चुकी, खूब इस्तेमाल की हुई चाबियों पर रखीं। "मुझे पूरा यकीन था कि तुम एक दिन मशहूर कॉन्सर्ट पियानोवादक बनोगे।"
कॉफी पीसते हुए उन्होंने कहा, “संगीत की दुनिया वो जगह है जहाँ बाल प्रतिभाएं दम तोड़ देती हैं। पेशेवर पियानोवादक बनने का सपना छोड़ना मेरे लिए बहुत बड़ी निराशा थी। ऐसा लगा जैसे अब तक मैंने जो कुछ भी किया था, सब व्यर्थ हो गया। मैं बस गायब हो जाना चाहता था। लेकिन पता चला कि मेरे कान मेरे हाथों से कहीं बेहतर हैं। मुझसे ज़्यादा प्रतिभाशाली लोग बहुत हैं, लेकिन किसी के पास मेरे जैसा अच्छा कान नहीं है। कॉलेज शुरू करने के कुछ

ही समय बाद मुझे यह एहसास हो गया। और एक बेहतरीन पियानो ट्यूनर बनना एक साधारण पियानोवादक बनने से कहीं बेहतर है।”

उसने फ्रिज से क्रीम का एक डिब्बा निकाला और उसे एक मिट्टी के जग में डाल दिया।

“यह अजीब बात है, लेकिन पियानो ट्यूनिंग में मेजर करने के बाद मुझे पियानो बजाने में बहुत आनंद आने लगा। बचपन से ही मैं पियानो का खूब अभ्यास करती थी। खुद को बेहतर होते देखना अच्छा लगता था, लेकिन मुझे कभी भी बजाने में मजा नहीं आया। पियानो बजाना बस कुछ समस्याओं को सुलझाने का एक तरीका था। उंगलियों की गलतियों से बचने की कोशिश करना या उंगलियों को आपस में उलझने देना—यह सब सिर्फ दूसरों को प्रभावित करने के लिए था। पियानोवादक बनने का विचार छोड़ने के बाद ही मुझे समझ आया कि पियानो बजाना कितना आनंददायक हो सकता है। और संगीत वास्तव में कितना अद्भुत है। ऐसा लगा जैसे मेरे कंधों से बोझ उतर गया हो, एक ऐसा बोझ जिसका मुझे एहसास ही नहीं था कि मैं ढो रही थी, जब तक कि मैंने उसे उतार नहीं दिया।”

"तुमने मुझे इसके बारे में कभी नहीं बताया।"

“मैंने नहीं किया?”

उसकी बहन ने सिर हिलाया।

“जब मुझे एहसास हुआ कि मैं समलैंगिक हूँ, तब भी ऐसा ही हुआ,” उन्होंने आगे कहा। “जिन मुद्दों को मैं कभी समझ नहीं पाया था, वे अचानक सुलझ गए। उसके बाद ज़िंदगी बहुत आसान हो गई, जैसे बादल छंट गए हों और मुझे आखिरकार सब कुछ दिखाई देने लगा हो। जब मैंने पियानोवादक बनना छोड़ दिया और समलैंगिक होने की बात सार्वजनिक रूप से बताई, तो मुझे यकीन है कि इससे बहुत से लोग नाराज़ हुए होंगे। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप समझें कि यही एकमात्र तरीका था जिससे मैं अपने असली स्वरूप में लौट सका। अपने असली रूप में।”

उसने अपनी बहन के सामने एक कॉफी का कप रखा, फिर अपना मग उठाया और सोफे पर उसके बगल में बैठ गया।

“शायद मुझे आपको बेहतर ढंग से समझने की और कोशिश करनी चाहिए थी,” उसकी बहन ने कहा। “लेकिन उन कदमों को उठाने से पहले आपको हमें सब कुछ समझा देना चाहिए

था। हमें बताना चाहिए था कि आपके मन में क्या चल रहा है, हमें अपने विचारों से अवगत कराना चाहिए था और—”
“मैं बातें समझाना नहीं चाहता था,” उसने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा। “मैं चाहता था कि लोग मुझे बिना शब्दों में बताए ही समझ जाएं। खासकर तुम।”
वह कुछ नहीं बोली।
“उस समय मैं दूसरों की भावनाओं के बारे में सोच ही नहीं सकता था। मेरे पास इसके बारे में सोचने का कोई अधिकार ही नहीं था।”
उस दौर को याद करते हुए उनकी आवाज़ थोड़ी कांप उठी। उन्हें रोने का मन कर रहा था, लेकिन उन्होंने किसी तरह खुद को संभाला और बात जारी रखी।
“उस समय मेरी ज़िंदगी पूरी तरह बदल गई, पल भर में। बस किसी तरह खुद को संभाले रखना और गिरने से बचाना ही मेरा एकमात्र सहारा था। मैं बहुत डरी हुई थी, बहुत सहमी हुई थी। उस समय मैं किसी को कुछ समझा नहीं पा रही थी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं धरती से गायब हो जाऊंगी। मैं बस चाहती थी कि तुम मुझे समझो। और मुझे थाम लो। बिना किसी तर्क या स्पष्टीकरण के। लेकिन कोई भी कभी नहीं—”
उसकी बहन ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। वह चुपचाप रो रही थी और उसके कंधे कांप रहे थे। उसने धीरे से अपना हाथ उसके कंधे पर रखा।
“मुझे खेद है,” उसने कहा।
“कोई बात नहीं,” उसने जवाब दिया। उसने अपनी कॉफ़ी में थोड़ी सी मलाई डाली, उसे मिलाया और धीरे से एक घूंट लिया, खुद को शांत करने की कोशिश करते हुए। “इसके बारे में रोने की ज़रूरत नहीं है। इसमें मेरी भी गलती थी।”
उसने अपना चेहरा ऊपर उठाकर सीधे उसकी ओर देखते हुए कहा, "मुझे बताओ, आज ही के दिन तुमने मुझे क्यों फोन किया?"
"आज?"
"आपने दस साल से फोन नहीं किया, और मैं बस यह जानना चाहता था कि आपने आज ही क्यों फोन किया?"

उन्होंने कहा, “कुछ हुआ था, और उसकी वजह से मुझे तुम्हारी याद आ गई। मैं बस यह जानना चाहता था कि तुम कैसी हो। मैं तुम्हारी आवाज़ सुनना चाहता था। बस इतना ही।”

“आपको किसी ने कुछ नहीं बताया?”

उसकी आवाज़ में कुछ अलग सा था, और वह घबरा गया। "नहीं, मुझे किसी से कोई खबर नहीं मिली। क्या कुछ हुआ है?"

उसकी बहन कुछ देर चुप रही, अपने विचारों को समेटने की कोशिश करती रही। वह धैर्यपूर्वक उसके स्पष्टीकरण का इंतजार करता रहा।

उन्होंने कहा, "मैं कल अस्पताल जा रही हूँ।"

“अस्पताल?”

“कल मेरा स्तन कैंसर का ऑपरेशन है। वे मेरा दाहिना स्तन निकालेंगे। पूरा का पूरा। हालांकि, कोई नहीं जानता कि इससे कैंसर फैलना बंद होगा या नहीं। जब तक वे इसे निकाल नहीं देते, तब तक उन्हें पता नहीं चलेगा।”

कुछ देर तक वह कुछ बोल नहीं सका। उसका हाथ अभी भी उसके कंधे पर था, और वह कमरे में इधर-उधर की चीजों को अर्थहीन निगाहों से देखता रहा। घड़ी, एक सजावटी वस्तु, कैलेंडर, स्टीरियो का रिमोट कंट्रोल। एक परिचित कमरे में परिचित वस्तुएँ, लेकिन किसी तरह वह एक वस्तु और दूसरी वस्तु के बीच की दूरी को समझ नहीं पा रहा था।

“काफी समय तक मैं सोचती रही कि क्या मुझे तुमसे संपर्क करना चाहिए,” उसकी बहन ने कहा। “आखिरकार मुझे लगा कि मुझे नहीं करना चाहिए, इसलिए मैंने कभी कुछ नहीं कहा। लेकिन मैं तुमसे मिलने के लिए बहुत बेताब थी। मुझे लगा कि कम से कम एक बार तो खुलकर बात करनी चाहिए। कुछ बातें थीं जिनके लिए मुझे माफी मांगनी थी। लेकिन... मैं तुम्हें इस हालत में नहीं देखना चाहती थी। क्या तुम समझ रहे हो मैं क्या कह रही हूँ?”

“हां,” उसके भाई ने कहा।

“अगर हमारी मुलाकात होनी ही थी, तो मैं चाहती थी कि यह खुशनुमा माहौल में हो, जहाँ मैं चीजों के बारे में अधिक आशावादी हो सकूँ। इसलिए मैंने आपसे संपर्क न करने का फैसला किया। लेकिन ठीक उसी समय जब मैंने अपना मन बना लिया था, आपने मुझे फोन किया—”

बिना कुछ कहे, उसने दोनों बाहों से उसे गले लगा लिया और अपने करीब खींच लिया। उसे अपनी छाती पर उसके स्तनों का स्पर्श महसूस हो रहा था। उसकी बहन ने अपना चेहरा उसके कंधे पर टिका दिया और रोने लगी। भाई-बहन काफी देर तक उसी मुद्रा में रहे।

आखिरकार उसने बोलना शुरू किया, “आपने कहा था कि कुछ हुआ था और आपको मेरी याद आई। क्या हुआ था? अगर आपको बताने में कोई आपत्ति न हो तो।”

“मुझे नहीं पता इसे कैसे कहूँ। समझाना मुश्किल है। बस यूँ ही हो गया। कई संयोगों का सिलसिला। एक के बाद एक संयोग और फिर मैं—”

उसने अपना सिर हिलाया। दूरी का एहसास अभी भी ठीक नहीं था। आभूषण और रिमोट कंट्रोल के बीच कई प्रकाश वर्ष की दूरी थी।

उन्होंने कहा, "मैं इसे समझा नहीं सकता।"

“कोई बात नहीं,” उसने कहा। “लेकिन मुझे खुशी है कि ऐसा हुआ। बहुत खुशी है।”

उसने उसके दाहिने कान के निचले हिस्से को छुआ और तिल को हल्के से सहलाया। फिर, मानो किसी विशेष स्थान पर बिना शब्दों के फुसफुसाहट भेज रहा हो, वह आगे झुका और उसे चूम लिया।



मेरी बहन का दाहिना स्तन ऑपरेशन में निकाल दिया गया था, लेकिन सौभाग्य से कैंसर फैला नहीं था और हल्के कीमोथेरेपी से उसका इलाज हो गया। उसके बाल भी नहीं झड़े। अब वह बिल्कुल ठीक है। मैं लगभग हर दिन उसे अस्पताल में देखने जाता था। किसी महिला के लिए इस तरह स्तन खोना कितना दर्दनाक होता होगा। उसके घर आने के बाद, मैं उनसे अक्सर मिलने जाने लगा। मैं अपने भतीजे और भतीजी के बहुत करीब हो गया हूँ। मैं अपनी भतीजी को पियानो भी सिखा रहा हूँ। अपनी बड़ाई तो नहीं कर रहा, लेकिन उसमें बहुत संभावनाएं हैं। और मेरे जीजाजी उतने बुरे नहीं हैं जितना मैंने सोचा था, अब जब मैं उन्हें जान गया हूँ। हाँ, वह अभी भी थोड़े घमंडी और अशिष्ट हैं, लेकिन वह मेहनती हैं और मेरी बहन के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। और आखिरकार उन्हें यह बात समझ आ गई है कि समलैंगिक होना कोई संक्रामक बीमारी नहीं है जो मैं उनके बच्चों को दे दूँगा। एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण कदम।

वह हँसा। “अपनी बहन के साथ फिर से मिल जाने से मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं जीवन में आगे बढ़ गया हूँ। अब मैं पहले से कहीं ज़्यादा खुलकर अपनी ज़िंदगी जी सकता हूँ... यह एक ऐसी बात थी जिसका मुझे सामना करना ही था। मुझे लगता है कि मेरे मन में हमेशा से यही उम्मीद थी कि मेरी बहन और मैं सुलह कर लें और एक बार फिर एक-दूसरे को गले लगा सकें।”

"लेकिन ऐसा करने से पहले कुछ तो होना ही था?" मैंने पूछा।

“बिल्कुल सही,” उसने कहा और कई बार सिर हिलाया। “यही तो मुख्य बात है। और जानते हो, उस समय मेरे मन में यह विचार आया: शायद संयोग ही सब कुछ है। इस तरह के संयोग हमारे चारों ओर, हर समय होते रहते हैं, लेकिन उनमें से ज़्यादातर हमारा ध्यान आकर्षित नहीं करते और हम उन्हें यूँ ही नज़रअंदाज़ कर देते हैं। यह दिन के उजाले में आतिशबाजी की तरह है। आपको हल्की सी आवाज़ सुनाई दे सकती है, लेकिन आसमान की ओर देखने पर भी आपको कुछ दिखाई नहीं देता। लेकिन अगर हम सच में किसी चीज़ के सच होने की उम्मीद कर रहे हैं, तो वह दिखाई देने लगती है, जैसे कोई संदेश सतह पर उभर रहा हो। तब हम उसे स्पष्ट रूप से समझ पाते हैं, उसका अर्थ जान पाते हैं। और उसे अपने सामने देखकर हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं और सोचते हैं कि इस तरह की अजीबोगरीब चीज़ें कैसे हो सकती हैं। जबकि इसमें कुछ भी अजीब नहीं है। मैं बस यही सोचता रहता हूँ। तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या यह ज़बरदस्ती है?”

मैंने उसकी कही बातों पर गौर किया। मैंने जैसे-तैसे जवाब दिया, "हो सकता है तुम सही हो। लेकिन मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि मामला इतनी आसानी से सुलझ जाएगा।"

मैंने कहा, "मैं किसी सरल चीज़ में विश्वास करना पसंद करूंगा, जैसे कि जैज़ के भगवान में।"

वह हँसा। “मुझे यह अच्छा लगा। अगर समलैंगिकों का भी कोई भगवान होता तो अच्छा होता।”



मुझे नहीं पता कि उस छोटी कद की महिला का क्या हुआ, जिससे वह किताबों की दुकान के कैफे में मिला था। मैंने आधे साल से ज़्यादा समय से अपने पियानो की ट्यूनिंग नहीं करवाई है, और उससे बात करने का मौका भी नहीं मिला। लेकिन मुझे लगता है कि वह मंगलवार को

अब भी तामा नदी पार करके उस कैफे में जाता होगा। कौन जाने—शायद वह उससे फिर मिल गया हो। लेकिन मुझे कुछ भी पता नहीं चला है, जिसका मतलब है कि कहानी यहीं खत्म होती है।

चाहे वो जैज़ का देवता हो, समलैंगिकों का देवता हो, या किसी और तरह का देवता हो, मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि कहीं न कहीं, चुपचाप, मानो ये सब संयोग ही हो, ऊपर कोई उस औरत की रक्षा कर रहा होगा। मैं ये दिल से दुआ करता हूँ। एक बहुत ही सरल उम्मीद।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

हानालेई खाड़ी

साची ने अपने उन्नीस वर्षीय बेटे को हनालेई खाड़ी में सर्फिंग करते समय एक विशाल शार्क के हमले में खो दिया। सही मायने में, शार्क ने उसे नहीं मारा था। किनारे से काफी दूर अकेले में, जब उस जानवर ने उसका दाहिना पैर फाड़ दिया, तो वह घबरा गया और डूब गया। इसलिए, डूबना ही आधिकारिक तौर पर मृत्यु का कारण बताया गया। शार्क ने उसके सर्फ़बोर्ड को भी लगभग दो हिस्सों में फाड़ दिया था। शार्क को इंसानी मांस पसंद नहीं होता। अक्सर उनका पहला हमला नाकाम रहता है और वे तैरकर दूर चले जाते हैं। यही कारण है कि ऐसे कई मामले हैं जिनमें व्यक्ति अपना एक पैर या हाथ खो देता है लेकिन अगर वह घबराता नहीं है तो बच जाता है। हालांकि, साची के बेटे को एक तरह का कार्डियक अरेस्ट हुआ, उसने भारी मात्रा में समुद्री पानी निगल लिया और डूब गया।

होनोलूलू स्थित जापानी दूतावास से सूचना मिलते ही साची सदमे से ज़मीन पर गिर पड़ी। उसका दिमाग सुन्न हो गया और वह कुछ सोच नहीं पा रही थी। वह बस दीवार पर एक धब्बे को घूरती रही। यह कब तक चलता रहा, उसे इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। लेकिन आखिरकार उसे होश आया और उसने एक एयरलाइन का नंबर ढूंढकर हवाई के लिए उड़ान का आरक्षण कराया। दूतावास के कर्मचारी ने उससे जल्द से जल्द आने का आग्रह किया था ताकि पीड़ित की पहचान की जा सके। अभी भी कुछ संभावना थी कि वह उसका बेटा न हो।

छुट्टियों के मौसम के कारण, उस दिन और अगले दिन की सभी फ्लाइटों में सीटें बुक हो चुकी थीं। उसने जिन भी एयरलाइनों को फोन किया, सबने यही कहा, लेकिन जब उसने अपनी स्थिति बताई, तो यूनाइटेड एयरलाइंस की रिजर्वेशन एजेंट ने कहा, "आप जितनी जल्दी हो सके एयरपोर्ट पहुँच जाइए। हम आपके लिए सीट का इंतजाम कर देंगे।" उसने कुछ सामान एक छोटे बैग में पैक किया और नरिता एयरपोर्ट चली गई, जहाँ वहाँ की इंचार्ज महिला ने उसे बिजनेस क्लास का टिकट दे दिया। उसने कहा, "आज हमारे पास बस यही टिकट है, लेकिन हम आपसे सिर्फ इकोनॉमी क्लास का किराया लेंगे। यह आपके लिए बहुत मुश्किल होगा। हिम्मत रखिए।" साची ने इतनी मदद के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

जब साची होनोलूलू हवाई अड्डे पर पहुँची, तो उसे एहसास हुआ कि वह इतनी परेशान थी कि जापानी दूतावास को अपने आगमन का समय बताना भूल गई थी। दूतावास के एक कर्मचारी को उसके साथ कौआई जाना था। उसने देर से व्यवस्था करने की उलझनों से बचने के लिए अकेले ही कौआई जाने का फैसला किया। उसे लगा कि वहाँ पहुँचने पर सब ठीक हो जाएगा। कौआई के लिहुए हवाई अड्डे पर उसकी दूसरी उड़ान दोपहर से पहले ही पहुँच गई थी। उसने एविस काउंटर से एक कार किराए पर ली और सीधे पास के पुलिस स्टेशन चली गई। वहाँ उसने पुलिस को बताया कि उसे खबर मिली थी कि हनाले खाड़ी में उसके बेटे को शार्क ने मार डाला है, जिसके बाद वह टोक्यो से आई है। चश्मा पहने एक अधेड़ उम्र के पुलिस अधिकारी ने उसे मुर्दाघर ले गया, जो किसी ठंडे गोदाम जैसा था, और उसे उसके बेटे का शव दिखाया, जिसका एक पैर कटा हुआ था। दाहिने घुटने के ठीक ऊपर का सारा हिस्सा गायब था, और ठूंठ से एक भयानक सफेद हड्डी निकली हुई थी। यह उसका बेटा था—इसमें अब कोई संदेह नहीं रह सकता था। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था; वह हमेशा की तरह गहरी नींद में सोता हुआ दिख रहा था। उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि वह मर चुका है। किसी ने उसके चेहरे को इस तरह बिगाड़ा होगा। ऐसा लग रहा था मानो अगर उसके कंधे को ज़ोर से हिलाया जाए, तो वह हमेशा की तरह सुबह उठकर शिकायत करने लगेगा।

दूसरे कमरे में, साची ने एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करके प्रमाणित किया कि शव उसके बेटे का है। पुलिसकर्मी ने उससे पूछा कि वह शव का क्या करेगी। उसने कहा, "मुझे नहीं पता। लोग आमतौर पर क्या करते हैं?" पुलिसकर्मी ने बताया कि वे अक्सर शव का अंतिम संस्कार करके राख घर ले जाते हैं। वह शव को जापान भी ले जा सकती थी, लेकिन इसके लिए कुछ जटिल व्यवस्थाएँ करनी पड़तीं और यह बहुत महंगा पड़ता। एक और विकल्प यह था कि वह अपने बेटे को कौआई में दफना दे।

“कृपया उसका अंतिम संस्कार कर दीजिए,” उसने कहा। “मैं उसकी राख टोक्यो ले जाऊंगी।” आखिरकार, उसका बेटा मर चुका था। उसे वापस जीवित करने की कोई उम्मीद नहीं थी। चाहे वह राख हो, हड्डियां हों या शव, इससे क्या फर्क पड़ता था? उसने अंतिम संस्कार की अनुमति देने वाले दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए और आवश्यक शुल्क का भुगतान किया।

“मेरे पास सिर्फ अमेरिकन एक्सप्रेस का खाता है,” उसने कहा।

“कोई बात नहीं,” अधिकारी ने कहा।

साची ने सोचा, "मैं यहाँ अपने बेटे के अंतिम संस्कार के लिए अमेरिकन एक्सप्रेस कार्ड से शुल्क चुका रही हूँ।" यह सब उसे अवास्तविक लग रहा था, ठीक वैसे ही जैसे उसके बेटे की शार्क के हमले में मौत हो गई हो। पुलिसकर्मी ने उसे बताया कि अंतिम संस्कार कल सुबह होगा।

“आपकी अंग्रेजी बहुत अच्छी है,” अधिकारी ने दस्तावेजों को व्यवस्थित करते हुए कहा। वह साकाता नाम का एक जापानी अमेरिकी था।

"जब मैं छोटी थी तब कुछ समय के लिए अमेरिका में रही थी," साची ने कहा।

“इसमें कोई हैरानी की बात नहीं,” अधिकारी ने कहा। फिर उसने साची को उसके बेटे का सामान दिया: कपड़े, पासपोर्ट, वापसी टिकट, बटुआ, वॉकमैन, पत्रिकाएँ, धूप का चश्मा, शेविंग किट। ये सब एक छोटे से बोस्टन बैग में समा गए। साची को इन मामूली सामानों की सूची वाली रसीद पर हस्ताक्षर करने पड़े।

“क्या आपके कोई और बच्चे हैं?” अधिकारी ने पूछा।

“नहीं, वह मेरा इकलौता बच्चा था,” साची ने जवाब दिया।

“क्या आपके पति यात्रा पर नहीं आ सके?”

मेरे पति का निधन बहुत समय पहले हो गया था।

पुलिसकर्मी ने गहरी सांस ली। “यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। अगर हम आपकी किसी भी तरह से मदद कर सकें तो कृपया हमें बताएं।”

"अगर आप मुझे बता सकें कि मेरे बेटे की मृत्यु कहाँ हुई और वह कहाँ ठहर रहा था, तो मुझे बहुत खुशी होगी। मुझे लगता है कि मुझे होटल का बिल चुकाना होगा। और मुझे होनोलूलू में जापानी दूतावास से भी संपर्क करना है। क्या मैं आपका फ़ोन इस्तेमाल कर सकता हूँ?"

वह उसके लिए एक नक्शा लाया और एक मार्कर पेन से उन जगहों को चिह्नित किया जहाँ उसका बेटा सर्फिंग कर रहा था और उस होटल का पता बताया जहाँ वह ठहरा हुआ था। उस रात वह लिहुए के एक छोटे से होटल में रुकी, जिसकी सिफारिश उस पुलिसकर्मी ने की थी।

जब साची पुलिस स्टेशन से निकल रही थी, तो अधेड़ उम्र के पुलिस अधिकारी सकाता ने उससे कहा, “मुझे आपसे एक निजी अनुरोध करना है। कौआई में प्रकृति कभी-कभार किसी की जान ले लेती है। आप देख रही हैं कि यह द्वीप कितना सुंदर है, लेकिन कभी-कभी यह कितना खतरनाक और जानलेवा भी हो सकता है। हम यहाँ इसी खतरे के साथ जीते हैं। आपके बेटे के लिए मुझे बहुत दुख है। मैं आपके प्रति बहुत सहानुभूति रखता हूँ। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप इस घटना के कारण हमारे द्वीप से नफरत नहीं करेंगी। आपके साथ जो कुछ भी हुआ है, उसके बाद शायद आपको यह बात स्वार्थपूर्ण लगे, लेकिन मैं यह बात दिल से कह रहा हूँ।”

साची ने उसे सिर हिलाकर सहमति दी।

“आप जानती हैं, महोदया, मेरे भाई की 1944 में युद्ध में मृत्यु हो गई थी। बेल्जियम में, जर्मन सीमा के पास। वह 442 वीं रेजिमेंटल कॉम्बैट टीम के सदस्य थे, जिसमें सभी जापानी-अमेरिकी स्वयंसेवक शामिल थे। वे नाज़ियों से घिरे टेक्सास बटालियन को बचाने के लिए वहाँ गए थे, तभी उन पर सीधा हमला हुआ और वह मारे गए। उनके शरीर पर केवल उनके टैग और बर्फ में बिखरे मांस के कुछ टुकड़े ही बचे थे। मेरी माँ उनसे बहुत प्यार करती थीं, लोग कहते हैं कि उसके बाद वह बिल्कुल बदल गई थीं। मैं तब बहुत छोटा बच्चा था, इसलिए मैंने अपनी माँ को केवल उस बदलाव के बाद ही देखा है। इसके बारे में सोचना भी बहुत दर्दनाक है।”

अधिकारी सकाता ने अपना सिर हिलाया और आगे बोले:

“चाहे इसमें कोई भी ‘महान उद्देश्य’ शामिल हो, युद्ध में दोनों पक्षों के क्रोध और घृणा के कारण लोग मरते हैं। लेकिन प्रकृति का कोई ‘पक्ष’ नहीं होता। मैं जानता हूँ कि यह आपके लिए एक दर्दनाक अनुभव है, लेकिन इसे इस तरह समझने की कोशिश करें: आपका पुत्र प्रकृति के चक्र में लौट गया; इसका किसी भी ‘उद्देश्य’ या क्रोध या घृणा से कोई लेना-देना नहीं था।”



साची ने अगले दिन शवदाह करवाया और राख को एक छोटे से एल्युमिनियम के कलश में रखकर द्वीप के उत्तरी तट पर स्थित हनाले खाड़ी की ओर चली गईं। लिहुए पुलिस स्टेशन से वहाँ तक पहुँचने में उन्हें एक घंटे से थोड़ा अधिक समय लगा। द्वीप के लगभग सभी पेड़ कुछ साल पहले आए एक भयंकर तूफान से विकृत हो गए थे। साची ने कई लकड़ी के घरों के अवशेष देखे जिनकी छतें उड़ गई थीं। यहाँ तक कि कुछ पहाड़ों पर भी तूफान के कारण आकार बदलने के निशान दिखाई दे रहे थे। इस वातावरण में प्रकृति कितनी कठोर हो सकती है!

वह हनालेई के शांत छोटे कस्बे से गुज़रते हुए उस सर्फिंग क्षेत्र की ओर बढ़ी जहाँ उसके बेटे पर शार्क ने हमला किया था। पास ही एक पार्किंग में गाड़ी खड़ी करके वह बीच पर बैठ गई और कुछ सर्फ़रों को लहरों पर सर्फ़िंग करते देखने लगी—कुल मिलाकर शायद पाँच ही लोग थे। वे अपने सर्फ़बोर्ड पकड़े हुए किनारे से दूर पानी में तैरते रहते, जब तक कि कोई तेज़ लहर नहीं आ जाती। फिर वे लहर को पकड़ते, धक्का देते और अपने बोर्ड पर सवार होकर लगभग किनारे तक पहुँच जाते। जैसे ही लहरों का बल कम होता, वे अपना संतुलन खो बैठते और पानी में गिर जाते। फिर वे अपने बोर्ड उठाते और आती हुई लहरों के नीचे से फिसलते हुए पैडल मारते हुए वापस खुले समुद्र में चले जाते, जहाँ यह सब फिर से शुरू हो जाता। साची को उनकी बातें समझ में नहीं आ रही थीं। क्या उन्हें शार्क से डर नहीं लगता था? या उन्होंने यह नहीं सुना था कि कुछ दिन पहले इसी जगह पर एक शार्क ने उसके बेटे को मार डाला था?

साची लगभग एक घंटे तक वहीं बैठी रही, खाली निगाहों से इस दृश्य को देखती रही। उसका मन किसी एक बात पर टिक नहीं पा रहा था। अतीत का बोझ मानो गायब हो चुका था, और भविष्य कहीं दूर धुंध में खोया हुआ था। अब उसका किसी भी काल से कोई संबंध नहीं था। वह लगातार बदलते वर्तमान में बैठी थी, उसकी आँखें यंत्रवत रूप से लहरों और सर्फ़रों के बार-बार दोहराए जाने वाले दृश्य को निहार रही थीं। एक क्षण उसके मन में यह विचार आया: मुझे अब सबसे ज़्यादा ज़रूरत समय की है।

फिर साची उस होटल में गई जहाँ उसका बेटा ठहरा हुआ था, एक जर्जर सा छोटा सा होटल जिसका बगीचा अस्त-व्यस्त था। वहाँ दो बिना कमीज़ पहने, लंबे बालों वाले गोरे आदमी कैनवास की कुर्सियों पर बैठे बीयर पी रहे थे। उनके पैरों के पास झाड़ियों में रोलिंग रॉक की

कई खाली हरी बोतलें पड़ी थीं। उनमें से एक के बाल सुनहरे थे, दूसरे के काले। बाकी, उनके चेहरे और शरीर एक जैसे थे और दोनों हाथों पर एक जैसे रंगीन टैटू बने हुए थे। हवा में गांजे की हल्की सी गंध थी, साथ ही कुत्ते की गंदगी की भी हल्की सी बदबू थी। जैसे ही वह पास आई, दोनों आदमियों ने उसे शक की निगाहों से देखा।

उन्होंने कहा, “मेरा बेटा यहीं रुका हुआ था। तीन दिन पहले एक शार्क ने उसे मार डाला।”

दोनों आदमियों ने एक-दूसरे की ओर देखा। "तुम्हारा मतलब ताकाशी से है?"

“Yes,” Sachi said. “Takashi.”

“वह बहुत ही शानदार इंसान था,” गोरे बालों वाले व्यक्ति ने कहा। “यह बहुत दुख की बात है।”

काले बालों वाले उस आदमी ने धीमी आवाज़ में समझाया, “उस सुबह, खाड़ी में बहुत सारे कछुए थे। शार्क कछुओं की तलाश में आती हैं। लेकिन, आप जानते हैं, वे आमतौर पर सर्फ़रों को अकेला छोड़ देते हैं। हम उनके साथ अच्छे से रहते हैं। लेकिन, मुझे नहीं पता, मुझे लगता है कि वहाँ हर तरह की शार्क होती हैं...”

साची ने कहा कि वह ताकाशी के होटल का बिल चुकाने आई थी। उसे लगा कि उसके कमरे का कुछ बकाया है।

सुनहरे बालों वाले आदमी ने भौंहें चढ़ाते हुए अपनी बोतल हवा में लहराई। "नहीं, महोदया, आप समझ नहीं रही हैं। इस होटल में सिर्फ़ सर्फर ही ठहरते हैं, और उनके पास पैसे नहीं होते। यहाँ ठहरने के लिए आपको अग्रिम भुगतान करना होगा। हमारा कोई बकाया नहीं है।"

फिर काले बालों वाले आदमी ने कहा, “सुनो, महोदया, क्या आप ताकाशी का सर्फ़बोर्ड अपने साथ ले जाना चाहती हैं? उस कमीने शार्क ने इसे दो टुकड़ों में फाड़ दिया, लगभग टुकड़े-टुकड़े कर दिया। यह एक पुराना डिक ब्रेवर है। पुलिस इसे नहीं ले गई। मुझे लगता है, यह कहीं वहीं है...”

साची ने अपना सिर हिलाया। वह बोर्ड देखना नहीं चाहती थी।

"यह वाकई बहुत बुरा है," गोरे बालों वाले व्यक्ति ने फिर से कहा, मानो यही एक और अभिव्यक्ति थी जो उसके दिमाग में आ रही थी।

“वो तो कमाल का बंदा था,” काले बालों वाले लड़के ने कहा। “सच में बढ़िया। सर्फिंग में भी माहिर था। याद आया, पिछली रात तो वो हमारे साथ टकीला पी रहा था। वाह!”

साची हनालेई में एक सप्ताह तक रुकी। उसने सबसे अच्छी दिखने वाली कॉटेज किराए पर ली और अपना सादा खाना खुद बनाया। किसी भी तरह, जापान लौटने से पहले उसे अपनी पुरानी तरोताज़ा स्थिति में लौटना था। उसने एक विनाइल कुर्सी, धूप का चश्मा, टोपी और सनस्क्रीन खरीदी और हर दिन समुद्र तट पर बैठकर सर्फ़रों को देखती रही। दिन में कई बार ज़ोरदार बारिश होती थी, मानो आसमान से पानी का एक बड़ा कटोरा उंडेल दिया गया हो। कौआई के उत्तरी तट पर शरद ऋतु का मौसम अस्थिर था। जब तेज़ बारिश शुरू होती, तो वह अपनी कार में बैठकर बारिश देखती रहती। और जब बारिश रुक जाती, तो वह फिर से समुद्र तट पर जाकर समुद्र को देखती रहती।

साची हर साल इसी मौसम में हनालेई आने लगीं। वह अपने बेटे की बरसी से कुछ दिन पहले पहुँचतीं और तीन हफ़्ते तक समुद्र तट पर विनाइल की कुर्सी पर बैठकर सर्फ़रों को देखती रहतीं। वह हर दिन बस यही करतीं। यह सिलसिला दस साल तक चलता रहा। वह उसी कॉटेज में रुकतीं, उसी रेस्टोरेंट में खाना खातीं और किताब पढ़तीं। जैसे-जैसे उनकी यात्राएँ नियमित होती गईं, उन्हें कुछ ऐसे लोग मिल गए जिनसे वह निजी बातें कर सकती थीं। छोटे से कस्बे के कई निवासी उन्हें देखते ही पहचान लेते थे। वह उस जापानी माँ के रूप में मशहूर हो गईं, जिसके बेटे को पास ही एक शार्क ने मार डाला था।

एक दिन, लिहुए हवाई अड्डे से लौटते समय, जहाँ वह अपनी खराब किराये की कार बदलवाने गई थी, साची ने कापाआ कस्बे में दो युवा जापानी लिफ्ट मांगने वालों को देखा। वे ओनो फैमिली रेस्टोरेंट के बाहर अपने कंधों पर खेल के सामान से भरे बड़े-बड़े बैग लटकाए खड़े थे, और वाहन की ओर मुंह करके अंगूठा फैलाए खड़े थे, लेकिन उनमें आत्मविश्वास की कोई झलक नहीं दिख रही थी। एक लंबा और दुबला-पतला था, दूसरा छोटा और गठीला। दोनों के कंधे तक लंबे, जंग लगे लाल रंग के बाल थे और उन्होंने फीकी टी-शर्ट, ढीले शॉर्ट्स और सैंडल पहन रखे थे। साची उन्हें अनदेखा करके आगे बढ़ गई, लेकिन जल्द ही उसका मन बदल गया और वह वापस मुड़ गई।

अपनी खिड़की खोलते हुए उसने उनसे जापानी भाषा में पूछा, "आप कितनी दूर जा रहे हैं?"

“अरे वाह, तुम जापानी बोल सकते हो!” लंबे कद वाले ने कहा।

“हाँ, बिल्कुल, मैं जापानी हूँ। आप कितनी दूर जा रहे हैं?”

“हानाले नाम की एक जगह है,” लंबे कद वाले ने कहा।

"क्या आपको लिफ्ट चाहिए? मैं भी वहीं वापस जा रहा हूँ।"

“बहुत बढ़िया! बिल्कुल यही तो हम उम्मीद कर रहे थे!” हट्टे-कट्टे आदमी ने कहा।

उन्होंने अपने बैग कार की डिक्की में रखे और साची की नियॉन कार की पिछली सीट पर चढ़ने लगे।

“ज़रा एक मिनट रुकिए,” उसने कहा। “मैं आप दोनों को पीछे नहीं बिठाने वाली। आख़िरकार, यह कोई टैक्सी नहीं है। आप में से एक आगे बैठिए। यह शिष्टाचार की बात है।”

उन्होंने तय किया कि लंबा वाला आगे बैठेगा, और वह झिझकते हुए साची के बगल में बैठ गया, अपनी लंबी टांगों को उपलब्ध जगह में जबरदस्ती घुसाते हुए। "यह किस तरह की कार है?" उसने पूछा।

“यह एक डॉज नियॉन है। एक क्रिसलर कार,” साची ने जवाब दिया।

"हम्म, तो अमेरिका में भी ये तंग छोटी कारें होती हैं, है ना? मेरी बहन की कोरोला में शायद इससे ज्यादा जगह होगी।"

"खैर, ऐसा तो नहीं है कि सभी अमेरिकी बड़ी-बड़ी कैडिलैक कारों में घूमते हैं।"

"हां, लेकिन यह तो बहुत छोटा है।"

"अगर आपको यह पसंद नहीं है तो आप यहीं से निकल सकते हैं," साची ने कहा।

“अरे वाह, मेरा मतलब ऐसा नहीं था!” उसने कहा। “मैं बस यह देखकर थोड़ा हैरान हो गया कि यह कितनी छोटी है, बस इतना ही। मुझे लगा था कि सभी अमेरिकी कारें बड़ी होती हैं।”

“तो फिर तुम हनालेई किसलिए जा रही हो?” साची ने गाड़ी चलाते हुए पूछा।

"खैर, एक बात तो ये है कि मुझे सर्फिंग करना पसंद है।"

“तुम्हारे बोर्ड कहाँ हैं?”

“हम उन्हें वहाँ पहुँचा देंगे,” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा।

“हाँ, इन्हें जापान से यहाँ तक लाना बहुत झंझट का काम है। और हमने सुना है कि वहाँ पुराने वाले सस्ते में मिल जाते हैं,” लंबे कद वाले ने आगे कहा।

“आप कैसी हैं, महोदया? क्या आप भी यहाँ छुट्टी मनाने आई हैं?”

"अहां।"

"अकेला?"

“अकेले,” साची ने हल्के से कहा।

"मुझे नहीं लगता कि आप उन दिग्गज सर्फरों में से एक हैं?"

“पागल मत बनो!” साची ने कहा। “वैसे, क्या तुम्हारे पास हनालेई में रहने की कोई जगह है?”

“नहीं, हमें लगा कि वहाँ पहुँचने के बाद सब ठीक हो जाएगा,” लंबे वाले ने कहा।

“हाँ, हमने सोचा कि अगर ज़रूरत पड़ी तो हम समुद्र तट पर सो सकते हैं,” मोटे-ताज़े आदमी ने कहा। “वैसे भी, हमारे पास ज़्यादा पैसे नहीं हैं।”

साची ने सिर हिलाया। “साल के इस समय उत्तरी तट पर रात में बहुत ठंड हो जाती है—इतनी ठंड कि घर के अंदर स्वेटर पहनना पड़ता है। बाहर सोओगे तो बीमार पड़ जाओगे।”

“क्या हवाई में हमेशा गर्मी का मौसम नहीं रहता?” लंबे कद वाले व्यक्ति ने पूछा।

"हवाई उत्तरी गोलार्ध में स्थित है, आप जानते हैं। यहाँ चार मौसम होते हैं। गर्मियाँ गर्म होती हैं और सर्दियाँ ठंडी हो सकती हैं।"

“इसलिए बेहतर होगा कि हम अपने सिर पर छत का इंतजाम कर लें,” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा।

“मान लीजिए, महोदया, क्या आप हमें रहने के लिए जगह ढूंढने में मदद कर सकती हैं?” लंबे कद वाले व्यक्ति ने पूछा। “हमारी अंग्रेजी तो बिलकुल भी नहीं आती।”

“हाँ,” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा। “हमने सुना है कि हवाई में कहीं भी जापानी भाषा का इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन अब तक तो यह बिल्कुल भी काम नहीं आया है।”

“बिल्कुल नहीं!” साची ने झुंझलाते हुए कहा। “जापानी भाषा से काम चल सकता है तो सिर्फ़ ओआहू में, और वो भी वाइकीकी के एक हिस्से में। वहाँ लुई विट्टन और शनेल नंबर 5 जैसे बैग चाहने वाले ढेरों जापानी पर्यटक आते हैं, इसलिए वे जापानी बोलने वाले क्लर्क रखते हैं। हयात और शेरेटन में भी यही हाल है। लेकिन होटलों के बाहर, सिर्फ़ अंग्रेज़ी ही चलती है। आख़िरकार, ये अमेरिका है। तुम इतनी दूर कौआई तक बिना ये जाने कैसे आ गए?”

मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था। मेरी माँ ने कहा कि हवाई में हर कोई जापानी बोलता है।

साची कराह उठी।
“खैर, हम शहर के सबसे सस्ते होटल में ठहर सकते हैं,” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा। “जैसा कि मैंने कहा, हमारे पास पैसे नहीं हैं।”
साची ने उन्हें आगाह करते हुए कहा, "नए आने वाले लोग हानालेई के सबसे सस्ते होटल में नहीं रुकना चाहते। यह खतरनाक हो सकता है।"
“कैसा लगा?” लंबे लड़के ने पूछा।
“मुख्यतः ड्रग्स,” साची ने जवाब दिया। “उनमें से कुछ सर्फर बदमाश हैं। मारिजुआना शायद ठीक हो, लेकिन आइस से सावधान रहें।”
“‘बर्फ’? वो क्या होता है?”
“मैंने इसके बारे में कभी नहीं सुना,” लंबे लड़के ने कहा।
“तुम दोनों को कुछ नहीं पता, है ना? तुम उन लोगों के लिए एकदम सही शिकार बनोगे। आइस एक खतरनाक नशा है, और हवाई में यह हर जगह मिलता है। मुझे ठीक से पता नहीं, लेकिन यह किसी तरह का क्रिस्टलीकृत उत्तेजक पदार्थ है। यह सस्ता है, इस्तेमाल करना आसान है, और इससे अच्छा महसूस होता है, लेकिन एक बार इसकी लत लग जाए तो समझो मर ही गए।”
"डरावना," लंबे वाले ने कहा।
“तुम्हारा मतलब है कि मारिजुआना का सेवन करना ठीक है?” मोटे-ताज़े व्यक्ति ने पूछा।
मुझे नहीं पता कि यह ठीक है या नहीं, लेकिन कम से कम इससे आपकी जान तो नहीं जाएगी। तंबाकू की तरह नहीं। इससे आपके दिमाग पर थोड़ा असर पड़ सकता है, लेकिन आपको फर्क पता नहीं चलेगा।
“अरे, ये तो बहुत कठोर है!” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा।
लंबे कद वाले व्यक्ति ने साची से पूछा, "क्या तुम उन बूढ़े लोगों में से एक हो?"
"तुम्हारा मतलब है..."
"हां, बेबी बूम पीढ़ी का एक सदस्य।"
“मैं किसी भी पीढ़ी का ‘सदस्य’ नहीं हूँ। मैं बस मैं हूँ। कृपया मुझे किसी भी समूह में शामिल करने की कोशिश न करें।”

“बस यही तो! तुम तो बूढ़े हो!” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा। “तुम हर बात को तुरंत गंभीरता से ले लेते हो। बिलकुल मेरी माँ की तरह।”
“और मुझे अपनी प्यारी ‘माँ’ के साथ मत जोड़ो,” साची ने कहा। “खैर, तुम्हारी भलाई के लिए, बेहतर होगा कि तुम हनालेई में किसी अच्छी जगह पर रहो। यहाँ कुछ भी हो सकता है... कभी-कभी तो हत्या भी हो जाती है।”
"यह बिल्कुल वैसा शांतिपूर्ण स्वर्ग नहीं है जैसा इसे होना चाहिए," उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा।
“नहीं,” साची ने सहमति जताते हुए कहा। “एल्विस का युग तो बहुत पहले ही बीत चुका है।”
लंबे लड़के ने कहा, "मुझे ठीक से नहीं पता कि यह सब क्या है, लेकिन मुझे पता है कि एल्विस कॉस्टेलो पहले से ही एक बूढ़ा आदमी है।"
इसके बाद साची कुछ देर तक बिना बात किए गाड़ी चलाती रही।
साची ने अपने कॉटेज के मैनेजर से बात की, जिसने लड़कों के लिए एक कमरा ढूंढ दिया। साची के परिचय से उन्हें कम साप्ताहिक किराया मिल गया, लेकिन फिर भी यह उनके बजट से अधिक था।
“बिल्कुल नहीं,” लंबे कद वाले ने कहा। “हमारे पास इतना पैसा नहीं है।”
“हाँ, लगभग कुछ भी नहीं,” मोटे-ताज़े व्यक्ति ने कहा।
"आपातकालीन स्थिति के लिए आपके पास कुछ न कुछ जरूर होना चाहिए," साची ने जोर देकर कहा।
लंबे लड़के ने अपने कान की लोब खुजाते हुए कहा, "वैसे, मेरे पास डाइनर्स क्लब का फैमिली कार्ड तो है, लेकिन मेरे पिताजी ने साफ मना कर दिया है कि इसे किसी बहुत ही जरूरी आपात स्थिति के अलावा इस्तेमाल न करूं। उन्हें डर है कि एक बार शुरू कर दिया तो फिर रुकूंगा ही नहीं। अगर मैंने आपात स्थिति के अलावा किसी और चीज के लिए इसका इस्तेमाल किया, तो जापान वापस जाकर मेरी खूब क्लास लगेगी।"
“बेवकूफी मत करो,” साची ने कहा। “यह एक आपातकालीन स्थिति है। अगर तुम ज़िंदा रहना चाहते हो, तो अभी अपना कार्ड निकालो। तुम यही नहीं चाहोगे कि पुलिस तुम्हें जेल में डाल दे

और कोई बड़ा हवाईयन आदमी तुम्हें रात भर के लिए अपनी प्रेमिका बना ले। बेशक, अगर तुम्हें ऐसी चीज़ें पसंद हैं तो बात अलग है, लेकिन इससे बहुत तकलीफ़ होगी।"

लंबे लड़के ने अपने बटुए से कार्ड निकाला और मैनेजर को दे दिया। साची ने एक दुकान का नाम पूछा जहाँ से वे सस्ते में इस्तेमाल किए हुए सर्फ़बोर्ड खरीद सकें। मैनेजर ने उसे बताया और साथ ही कहा, "और जब आप यहाँ से जाएँगी, तो वे आपसे वापस खरीद लेंगे।" लड़के अपने बैग कमरे में छोड़कर दुकान की ओर दौड़ पड़े।

अगली सुबह साची हमेशा की तरह समुद्र तट पर बैठी समुद्र को देख रही थी, तभी दो जापानी लड़के आए और सर्फिंग करने लगे। ज़मीन पर उनकी बेबसी के विपरीत, सर्फिंग में उनका कौशल ज़बरदस्त था। वे एक तेज़ लहर देखते, फुर्ती से उस पर चढ़ जाते और बड़ी कुशलता और आत्मविश्वास के साथ अपने बोर्ड को किनारे की ओर ले जाते। वे बिना रुके घंटों तक यही करते रहे। लहरों पर सवार होकर वे सचमुच जीवंत लग रहे थे: उनकी आँखें चमक रही थीं, वे आत्मविश्वास से भरे हुए थे। कल की झिझक का कोई नामोनिशान नहीं था। घर पर, वे शायद अपना पूरा दिन पानी में ही बिताते होंगे, कभी पढ़ाई नहीं करते होंगे—ठीक उसी तरह जैसे उसका मृत बेटा करता था।



साची ने हाई स्कूल में पियानो बजाना शुरू किया था—एक पियानोवादक के लिए यह देर से शुरुआत थी। उसने इससे पहले कभी पियानो को छुआ भी नहीं था। वह कक्षाओं के बाद संगीत कक्ष में रखे पियानो पर यूं ही बजाने लगी और देखते ही देखते उसने खुद ही पियानो बजाना सीख लिया। पता चला कि उसमें सुर की अपार क्षमता थी और उसकी संगीत की समझ असाधारण थी। वह एक धुन को सुनते ही उसे कीबोर्ड पर पैटर्न में बदल देती थी। वह धुन के लिए सही कॉर्ड्स ढूंढ लेती थी। बिना किसी से सीखे ही उसने अपनी उंगलियों को सुचारू रूप से चलाना सीख लिया था। स्पष्ट रूप से पियानो के लिए उसमें जन्मजात प्रतिभा थी।

एक दिन युवा संगीत शिक्षक ने उसे बजाते हुए सुना, उन्हें उसका संगीत पसंद आया और उन्होंने उसकी कुछ बुनियादी उंगलियों की गलतियों को सुधारने में मदद की। उन्होंने कहा,

"तुम इसे इस तरह बजा सकती हो, लेकिन अगर तुम इसे इस तरह बजाओगी तो गति बढ़ जाएगी," और उन्होंने उसे करके दिखाया। उसने तुरंत समझ लिया। जैज़ संगीत के बड़े प्रशंसक, इस शिक्षक ने स्कूल के बाद उसे जैज़ सिद्धांत की बारीकियां सिखाईं: कॉर्ड बनाना और प्रोग्रेशन, पेडल का उपयोग, इम्प्रोवाइज़ेशन की अवधारणा। उसने सब कुछ बड़े चाव से सीखा। उन्होंने उसे रेड गारलैंड, बिल इवांस, विंटन केली के रिकॉर्ड दिए। वह उन्हें बार-बार सुनती रही जब तक कि वह उनकी हूबहू नकल नहीं कर लेती। एक बार जब उसे इसकी आदत हो गई, तो ऐसी नकल करना उसके लिए आसान हो गया। वह बिना कुछ लिखे ही संगीत की ध्वनि और प्रवाह को सीधे अपनी उंगलियों से दोहरा सकती थी। शिक्षक ने उससे कहा, "तुम्हारे पास वाकई प्रतिभा है। अगर तुम मेहनत करोगी, तो तुम पेशेवर बन सकती हो।"

लेकिन साची को उसकी बात पर यकीन नहीं था। वह सिर्फ नकल कर सकती थी, खुद का संगीत नहीं बना सकती थी। जब उसे बिना तैयारी के कुछ बजाने को कहा जाता, तो उसे समझ नहीं आता था कि क्या बजाए। वह शुरुआत में तो बिना तैयारी के बजाती, लेकिन अंत में किसी और के मूल सोलो की नकल कर बैठती। संगीत पढ़ना भी उसकी एक और बड़ी चुनौती थी। सामने रखे विस्तृत नोटेशन को देखकर उसे सांस लेना भी मुश्किल हो जाता था। उसके लिए सुनी हुई बात को सीधे कीबोर्ड पर उतारना कहीं ज्यादा आसान था। नहीं, उसने सोचा: वह कभी पेशेवर संगीतकार नहीं बन सकती।

हाई स्कूल के बाद उसने खाना पकाने की पढ़ाई करने का फैसला किया। ऐसा नहीं था कि उसे इस विषय में कोई विशेष रुचि थी, लेकिन उसके पिता का एक रेस्तरां था, और चूंकि उसके पास करने के लिए कुछ और खास नहीं था, इसलिए उसने सोचा कि वह उनके बाद इस व्यवसाय को आगे बढ़ाएगी। वह एक पेशेवर खाना पकाने के स्कूल में दाखिला लेने के लिए शिकागो गई। शिकागो अपने बेहतरीन खान-पान के लिए मशहूर शहर नहीं था, लेकिन परिवार के कुछ रिश्तेदार वहां रहते थे जो उसकी पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए तैयार हो गए। खाना पकाने के स्कूल में एक सहपाठी ने उसे शहर के बीचोंबीच एक छोटे से पियानो बार से परिचित कराया, और जल्द ही वह वहाँ पियानो बजाने लगी। पहले तो उसने इसे कुछ खर्च चलाने के लिए अंशकालिक काम समझा। घर से मिलने वाले थोड़े से पैसों से जैसे-तैसे गुजारा

होता था, उसे अतिरिक्त पैसों की बहुत खुशी थी। बार के मालिक को उसका किसी भी धुन को बजाने का हुनर बहुत पसंद आया। एक बार कोई गाना सुन लेती, तो उसे कभी नहीं भूलती थी, और यहाँ तक कि अगर कोई उसे पहले कभी न सुना हो, तो वह उसे तुरंत बजा सकती थी। वह दिखने में सुंदर तो नहीं थी, लेकिन उसके चेहरे के हाव-भाव आकर्षक थे, और उसकी मौजूदगी से बार में लोगों की संख्या बढ़ने लगी। उसे मिलने वाली टिप भी बढ़ती गई। आखिरकार उसने स्कूल जाना छोड़ दिया। पियानो के सामने बैठना, खून से लथपथ सूअर के मांस को साफ करने, पत्थर जैसे सख्त पनीर को कद्दूकस करने या भारी कड़ाही से मैल साफ करने से कहीं ज्यादा आसान और मजेदार था।

और इसलिए, जब उसके बेटे ने अपना सारा समय सर्फिंग में बिताने के लिए लगभग हाई स्कूल छोड़ दिया, तो साची ने इसे स्वीकार कर लिया। मैंने भी जवानी में ऐसा ही किया था। मैं उसे दोष नहीं दे सकती। शायद यह उसके खून में है।

वह डेढ़ साल तक बार में काम करती रही। उसकी अंग्रेज़ी सुधर गई, उसने अच्छी-खासी बचत कर ली और उसे एक प्रेमी मिल गया—एक आकर्षक अफ्रीकी-अमेरिकी, जो अभिनेता बनने की ख्वाहिश रखता था। (बाद में साची ने उसे 'डाई हार्ड 2' में एक सहायक भूमिका में देखा।) लेकिन एक दिन, छाती पर बैज लगाए एक आव्रजन अधिकारी बार में आ गया। ज़ाहिर है, उसने कुछ ज़्यादा ही हंगामा मचा दिया था। अधिकारी ने उसका पासपोर्ट माँगा और उसे अवैध रूप से काम करने के आरोप में मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया। कुछ दिनों बाद, वह खुद को नरिता जाने वाले एक विशाल विमान में पाई—जिसका टिकट उसे अपनी बचत से खरीदना पड़ा। इस तरह साची का अमेरिका में जीवन समाप्त हो गया।

टोक्यो लौटकर साची ने अपने जीवन के लिए उपलब्ध संभावनाओं के बारे में सोचा, लेकिन पियानो बजाना ही एकमात्र ऐसा तरीका था जिससे वह अपना जीवन यापन कर सकती थी। लिखित संगीत में उसकी अक्षमता के कारण उसके अवसर सीमित थे, लेकिन कुछ स्थान ऐसे थे जहाँ उसकी सहजता से पियानो बजाने की प्रतिभा की सराहना की जाती थी—होटल लाउंज, नाइट क्लब और पियानो बार। वह उस स्थान के माहौल, ग्राहकों के प्रकार या आने वाले अनुरोधों के अनुसार किसी भी शैली में पियानो बजा सकती थी। वह सचमुच एक "संगीत की गिरगिट" हो सकती थी, लेकिन उसे जीविका कमाने में कभी कोई परेशानी नहीं हुई।

साची ने चौबीस साल की उम्र में शादी की और दो साल बाद एक बेटे को जन्म दिया। उसका पति जैज़ गिटारिस्ट था और साची से एक साल छोटा था। उसकी आमदनी न के बराबर थी। वह नशे का आदी था और महिलाओं के साथ अय्याशी करता था। वह ज़्यादातर समय घर से बाहर ही रहता था और जब घर आता था तो अक्सर हिंसक हो जाता था। सभी इस शादी के खिलाफ थे और बाद में सभी ने साची को उससे तलाक लेने के लिए कहा। हालांकि साची का पति थोड़ा अपरिष्कृत था, लेकिन उसमें एक अनोखी प्रतिभा थी और जैज़ की दुनिया में वह एक उभरते सितारे के रूप में ध्यान आकर्षित कर रहा था। शायद यही बात साची को उसकी ओर आकर्षित करती थी। लेकिन यह शादी सिर्फ पाँच साल चली। एक रात उसे किसी दूसरी महिला के कमरे में दिल का दौरा पड़ा और अस्पताल ले जाते समय उसकी नग्न अवस्था में ही मौत हो गई। संभवतः यह ड्रग्स के ओवरडोज के कारण हुआ था।
अपने पति की मृत्यु के कुछ समय बाद ही, साची ने रोप्पोंगी के पॉश इलाके में अपना एक छोटा सा पियानो बार खोल लिया। उसके पास कुछ बचत थी और उसने अपने पति के जीवन बीमा का गुप्त रूप से भुगतान भी ले लिया। उसने बैंक से ऋण भी ले लिया। इसमें साची की मदद यह रही कि जिस बार में वह पियानो बजाती थी, वहाँ का एक नियमित ग्राहक एक शाखा का प्रमुख था। उसने बार में एक पुराना ग्रैंड पियानो लगवाया और उसी के आकार का काउंटर बनवाया। व्यवसाय चलाने के लिए, उसने एक कुशल बारटेंडर-मैनेजर को, जिसे उसने दूसरे बार से काम पर रखा था, अच्छी तनख्वाह दी। वह हर रात पियानो बजाती, ग्राहकों की फरमाइशें पूरी करती और उनके गाने में उनका साथ देती। पियानो पर टिप के लिए एक मछली का कटोरा रखा हुआ था। आस-पास के जैज़ क्लबों में प्रस्तुति देने वाले संगीतकार कभी-कभी आकर एक-दो धुनें बजाते थे। जल्द ही बार के नियमित ग्राहक बन गए और व्यवसाय साची की उम्मीद से कहीं बेहतर चल रहा था। वह समय पर अपना ऋण चुकाने में सक्षम रही। अपने वैवाहिक जीवन से ऊब चुकी साची ने दोबारा शादी नहीं की, लेकिन उसके कभी-कभार पुरुष मित्र होते रहे। उनमें से अधिकतर विवाहित थे, जिससे उसके लिए सब कुछ आसान हो गया। समय बीतने के साथ, उसका बेटा बड़ा हुआ, सर्फर बन गया और उसने घोषणा की कि वह कौआई में हनालेई जाएगा। उसे यह विचार पसंद नहीं आया, लेकिन उससे बहस करते-करते वह थक गई थी और अनिच्छा से उसका किराया चुका दिया। लंबी

बहस करना उसकी खासियत नहीं थी। और इस तरह, जब वह एक अच्छी लहर का इंतजार कर रहा था, तभी कछुओं का पीछा करते हुए खाड़ी में घुस आई एक शार्क ने उसके बेटे पर हमला कर दिया और उन्नीस साल की उसकी छोटी सी जिंदगी का अंत हो गया।

अपने बेटे की मृत्यु के बाद साची ने पहले से भी अधिक मेहनत की। पहले साल वह लगातार पियानो बजाती रही, लगभग बिना रुके। और जब पतझड़ का मौसम समाप्त होने वाला था, तो उसने तीन सप्ताह का अवकाश लिया, यूनाइटेड एयरलाइंस में बिजनेस क्लास का टिकट खरीदा और कौआई चली गई। उसकी अनुपस्थिति में एक अन्य पियानोवादक ने उसकी जगह ली।



साची कभी-कभी हनालेई में भी पियानो बजाती थी। एक रेस्टोरेंट में एक छोटा ग्रैंड पियानो था, जिसे सप्ताहांत में लगभग पचास साल का एक दुबला-पतला पियानोवादक बजाता था। वह ज़्यादातर "बाली हाई" और "ब्लू हवाई" जैसी सरल धुनें बजाता था। पियानोवादक के तौर पर वह कोई खास नहीं था, लेकिन उसकी गर्मजोशी भरी शख्सियत उसके वादन में झलकती थी। साची की उससे दोस्ती हो गई और वह कभी-कभी उसकी जगह पियानो बजाने लगती थी। वह यह सब शौक के लिए करती थी, इसलिए ज़ाहिर है कि रेस्टोरेंट उसे कुछ पैसे नहीं देता था, लेकिन मालिक उसे शराब और पास्ता खिलाता था। पियानो की चाबियों को छूना उसे अच्छा लगता था: इससे उसका मन खुल जाता था। यह प्रतिभा या इस गतिविधि के किसी काम आने का सवाल नहीं था। साची सोचती थी कि जब उसका बेटा लहरों पर सवारी करता होगा, तो उसे भी ऐसा ही महसूस होता होगा।

सच कहूँ तो, साची को अपने बेटे से कभी कोई लगाव नहीं था। बेशक वह उससे प्यार करती थी—वह उसके लिए दुनिया का सबसे अहम इंसान था—लेकिन एक इंसान के तौर पर, उसे उससे लगाव होने में दिक्कत होती थी, और इस बात को समझने में उसे बहुत समय लगा। अगर वे खून के रिश्ते से जुड़े न होते, तो शायद उसका उससे कोई वास्ता ही न होता। वह स्वार्थी था, कभी किसी चीज़ पर ध्यान नहीं लगा पाता था, कभी किसी काम को पूरा नहीं कर पाता था। वह उससे कभी किसी गंभीर विषय पर बात नहीं कर पाती थी; वह तुरंत कोई न

कोई बहाना बनाकर बात टाल देता था। वह पढ़ाई बहुत कम करता था, जिसकी वजह से उसके नंबर बहुत खराब आते थे। वह बस सर्फिंग में थोड़ी-बहुत मेहनत करता था, और पता नहीं कब तक करता रहता। मासूम चेहरे वाला लड़का, उसकी गर्लफ्रेंड्स की कमी नहीं थी, लेकिन किसी लड़की के साथ मजे करने के बाद, वह उसे पुराने खिलौने की तरह फेंक देता था। शायद मैंने ही उसे बिगाड़ दिया, साची ने सोचा। शायद मैंने ही उसे ज़रूरत से ज़्यादा पैसे दे दिए। शायद मुझे उसके साथ सख्ती बरतनी चाहिए थी। लेकिन उसे यह बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि वह उसके साथ सख्ती से पेश आने के लिए क्या कर सकती थी। काम में वह बहुत व्यस्त रहती थी और लड़कों के बारे में उसे कुछ भी पता नहीं था—न उनकी मानसिकता के बारे में और न ही उनके शरीर के बारे में।



एक शाम साची रेस्टोरेंट में खेल रहा था, तभी दो युवा सर्फर खाना खाने आए। हनालेई पहुंचे हुए उन्हें छह दिन हो चुके थे। वे पूरी तरह से टैन हो चुके थे और अब पहले से ज़्यादा तगड़े भी लग रहे थे।

“अरे, तुम पियानो बजाते हो!” मोटे-ताज़े व्यक्ति ने हैरानी से कहा।

"और तुम भी अच्छे हो—एकदम पेशेवर," लंबे कद वाले ने बीच में कहा।

उन्होंने कहा, "मैं इसे मनोरंजन के लिए करती हूं।"

"क्या आप बीज़ के कोई गाने जानते हैं?"

“मुझे जापानी पॉप नहीं चाहिए, धन्यवाद!” साची ने कहा। “लेकिन एक मिनट रुको, मुझे लगा था कि तुम लोग कंगाल हो। क्या तुम लोग ऐसी जगह पर खाना खाने का खर्च उठा सकते हो?”

“जी हां, मुझे मेरा डाइनर्स कार्ड मिल गया!” लंबे कद वाले व्यक्ति ने घोषणा की।

"हां, आपात स्थितियों के लिए..."

“ओह, मुझे चिंता नहीं है। मेरे पिताजी सही थे। एक बार इस्तेमाल करो और आदत बन जाती है।”

“सच है, तो अब तुम आराम कर सकते हो,” साची ने कहा।

“हम सोच रहे थे कि आपको रात का खाना खिलाएँ,” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा। “आपका शुक्रिया अदा करने के लिए। आपने हमारी बहुत मदद की। और हम परसों घर जा रहे हैं।”
“हाँ,” लंबे वाले ने कहा। “अभी कैसा रहेगा? हम वाइन भी ऑर्डर कर सकते हैं। हमारी तरफ से!”
“मैंने अपना खाना खा लिया है,” साची ने लाल वाइन का गिलास उठाते हुए कहा। “और यह मेरी तरफ से मुफ्त था। फिर भी, मैं आपका धन्यवाद स्वीकार करती हूँ। आपकी भावना की सराहना करती हूँ।”
तभी एक लंबा-चौड़ा गोरा आदमी उनकी मेज के पास आया और हाथ में व्हिस्की का गिलास लिए साची के पास खड़ा हो गया। उसकी उम्र लगभग चालीस थी और उसके बाल छोटे थे। उसकी भुजाएँ पतले टेलीफोन के खंभों जैसी थीं, और एक भुजा पर "USMC" अक्षरों के ऊपर एक बड़ा ड्रैगन का टैटू बना हुआ था। टैटू के फीके पड़ते रंग से लग रहा था कि इसे कुछ साल पहले बनवाया गया था।
“अरे, छोटी बच्ची, मुझे तुम्हारा पियानो बजाना पसंद है,” उसने कहा।
साची ने उसकी ओर देखा और कहा, "धन्यवाद।"
“क्या आप जापानी हैं?”
"यकीन है।"
“मैं एक बार जापान गया था। बहुत समय पहले। इवाकुनी में दो साल तैनात रहा था। बहुत समय पहले।”
“अच्छा, तुम्हें क्या पता? मैं एक बार दो साल के लिए शिकागो में था। बहुत समय पहले। इससे तो हम बराबर हो गए।”
उस आदमी ने एक पल के लिए इस बारे में सोचा, फिर उसे लगा कि वह मजाक कर रही है, और वह मुस्कुराया।
“मेरे लिए कुछ बजाओ। कुछ जोशीला सा। तुम्हें बॉबी डारिन का गाना ‘बियॉन्ड द सी’ याद है? मैं उसे गाना चाहता हूँ।”
“मैं यहाँ काम नहीं करती,” उसने कहा। “और अभी मैं इन दो लड़कों से बात कर रही हूँ। देखो, वो दुबला-पतला, कम बालों वाला आदमी पियानो पर बैठा है? वही यहाँ का

पियानोवादक है। शायद तुम्हें अपनी धुन उससे कहनी चाहिए। और उसे टिप देना मत भूलना।"

उस आदमी ने सिर हिलाया। "वह सनकी आदमी बेतुकी और बेतुकी धुनें ही बजा सकता है। मैं तुम्हें कुछ जोशीला बजाते हुए सुनना चाहता हूँ। इसके लिए तुम्हें दस डॉलर मिलेंगे।"

मैं पांच सौ रुपये के लिए भी ऐसा नहीं करूंगा।

"तो बात कुछ ऐसी है, है ना?" उस आदमी ने कहा।

"हां, बात यही है," साची ने कहा।

"तो फिर मुझे एक बात बताओ, प्लीज़? तुम जापानी लोग अपने देश की रक्षा के लिए लड़ने को तैयार क्यों नहीं हो? हमें तुम्हारी सुरक्षा के लिए इवाकुनी तक क्यों जाना पड़ता है?"

और इसी वजह से मुझे चुपचाप खेलना चाहिए?

"ठीक है," उस आदमी ने कहा। उसने मेज के उस पार बैठे दोनों लड़कों की ओर देखा। "और तुम दोनों को देखो—जापानी सर्फर आवारा। हवाई तक इतनी दूर आए हो—किसलिए? इराक में, हम—"

साची ने बीच में टोकते हुए कहा, "मुझे आपसे एक सवाल पूछना है। एक ऐसी बात जिसके बारे में मैं तब से सोच रही हूँ जब से आप यहाँ आए हैं।"

"ज़रूर। पूछिए।"

अपनी गर्दन घुमाते हुए साची ने सीधे उस आदमी की ओर देखा। उसने कहा, "मैं हमेशा से यही सोचती रही हूँ कि कोई आप जैसा कैसे हो सकता है। क्या आप जन्म से ही ऐसे हैं, या फिर आपके साथ कोई भयानक घटना घटी है जिससे आप ऐसे बन गए हैं? आपको क्या लगता है, इनमें से कौन सा कारण है?"

उस आदमी ने एक पल सोचा और फिर अपना व्हिस्की का गिलास मेज पर पटक दिया। "देखो, मैडम—"

रेस्तरां के मालिक ने उस आदमी की तेज़ आवाज़ सुनी और दौड़कर वहाँ पहुँचा। वह कद में छोटा था, लेकिन उसने पूर्व सैनिक का मोटा हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ ले गया। वे दोनों दोस्त थे, और पूर्व सैनिक ने जाते समय एक-दो ताने मारने के अलावा कोई विरोध नहीं किया।

कुछ देर बाद मालिक वापस आया और साची से माफी मांगी। “वह वैसे तो बुरा आदमी नहीं है, लेकिन शराब उसे बदल देती है। चिंता मत करो, मैं उसे सुधार दूंगा। तब तक, मैं तुम्हें कुछ खिला देता हूँ। इस सब को भूल जाओ।”

“कोई बात नहीं,” साची ने कहा। “मुझे इस तरह की चीजों की आदत है।”

उस हट्टे-कट्टे लड़के ने साची से पूछा, "वो आदमी क्या कह रहा था?"

“हाँ, मुझे कुछ भी समझ नहीं आया,” लंबे लड़के ने आगे कहा, “सिवाय ‘जाप’ के।”

“अच्छा ही हुआ,” साची ने कहा। “कोई बात नहीं। आप लोगों ने हनालेई में अच्छा समय बिताया? लगता है खूब सर्फिंग की होगी।”

“शानदार!” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा।

“बस लाजवाब,” लंबे कद वाले ने कहा। “इसने मेरी जिंदगी बदल दी। सचमुच।”

“यह बहुत बढ़िया है,” साची ने कहा। “जब तक आप सक्षम हैं, जीवन का भरपूर आनंद लें। आखिरकार, आपको इसका हिसाब चुकाना ही पड़ेगा।”

“कोई बात नहीं,” लंबे लड़के ने कहा। “मेरे पास मेरा कार्ड है।”

“यही तरीका है,” साची ने सिर हिलाते हुए कहा। “आराम से और सहजता से।”

तब उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा, "अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ।"

"किस बारे में?"

मैं बस यह जानना चाह रहा था कि क्या आपने कभी एक पैर वाले जापानी सर्फर को देखा है?

“एक पैर वाला जापानी सर्फर?” साची ने आँखें सिकोड़कर सीधे उसकी ओर देखा। “नहीं, मैंने कभी नहीं किया।”

“हमने उसे दो बार देखा। वह समुद्र तट पर खड़ा हमें घूर रहा था। उसके पास एक लाल डिक ब्रेवर सर्फ़बोर्ड था, और उसका पैर यहाँ से नीचे गायब था।” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने अपने घुटने से कुछ इंच ऊपर उंगली से एक लकीर खींची। “ऐसा लग रहा था जैसे उसे काट दिया गया हो। जब हम पानी से बाहर आए तो वह जा चुका था। एकदम गायब हो गया। हम उससे बात करना चाहते थे, इसलिए हमने उसे ढूंढने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह कहीं नहीं मिला। मुझे लगता है कि वह हमारी ही उम्र का रहा होगा।”

“कौन सा पैर गायब था? दायाँ या बायाँ?” साची ने पूछा।

उस हट्टे-कट्टे लड़के ने एक पल सोचा और फिर बोला, "मुझे पूरा यकीन है कि यह सही वाला था। है ना?"

“हाँ, बिल्कुल। सही वाला,” लंबे लड़के ने कहा।

“हम्म,” साची ने कहा और शराब का एक घूंट पीकर अपना मुंह गीला किया। उसे अपने दिल की तेज़ धड़कन सुनाई दे रही थी। “तुम्हें यकीन है कि वह जापानी था? जापानी-अमेरिकी नहीं?”

“बिल्कुल नहीं,” लंबे लड़के ने कहा। “फर्क तो तुरंत पता चल जाता है। नहीं, ये आदमी जापान का सर्फर था। बिल्कुल हमारी तरह।”

साची ने अपने निचले होंठ को कसकर दबाया और कुछ पल तक उन्हें देखती रही। फिर, रूखी आवाज़ में उसने कहा, "अजीब बात है। यह इतना छोटा शहर है कि चाहकर भी आप ऐसे किसी व्यक्ति को देखे बिना नहीं रह सकते: एक पैर वाला जापानी सर्फर।"

“हाँ,” उस हट्टे-कट्टे लड़के ने कहा। “मुझे पता है यह अजीब है। ऐसा आदमी वहाँ बिल्कुल अलग दिखेगा। लेकिन वह वहाँ था, मुझे पूरा यकीन है। हम दोनों ने उसे देखा था।”

लंबे लड़के ने साची की तरफ देखकर कहा, “तुम हमेशा वहीं बीच पर बैठी रहती हो, है ना? वह एक पैर पर खड़ा था, जहाँ तुम हमेशा बैठती हो, उससे थोड़ी दूर। और वह सीधे हमारी तरफ देख रहा था, मानो किसी पेड़ के तने से टिका हो। वह पिकनिक टेबल के दूसरी तरफ लोहे के पेड़ों के झुंड के नीचे था।”

साची ने चुपचाप अपनी शराब का एक घूंट लिया।

उस हट्टे-कट्टे लड़के ने आगे कहा, "मुझे आश्चर्य होता है कि वह एक पैर से अपने सर्फ़बोर्ड पर कैसे खड़ा हो पाता है? दो पैरों से भी खड़ा होना मुश्किल होता है।"

उसके बाद हर दिन, सुबह से शाम तक, साची हनालेई के लंबे समुद्र तट पर इधर-उधर चक्कर लगाती रही, लेकिन उसे कभी भी एक पैर वाले सर्फर का कोई अता-पता नहीं चला। उसने स्थानीय सर्फ़रों से पूछा, "क्या आपने कभी किसी एक पैर वाले जापानी सर्फ़र को देखा है?" लेकिन सभी ने उसे अजीब नज़रों से देखा और सिर हिला दिया। एक पैर वाला जापानी

सर्फ़र? मैंने ऐसा कभी नहीं देखा। अगर देखा होता, तो मुझे ज़रूर याद रहता। वह सबसे अलग दिखता। लेकिन एक पैर से सर्फ़िंग कौन कर सकता है?

जापान लौटने से एक रात पहले, साची ने अपना सामान पैक किया और बिस्तर पर लेट गई। छिपकलियों की आवाज़ लहरों की आवाज़ के साथ मिल रही थी। थोड़ी देर बाद, उसे एहसास हुआ कि उसका तकिया गीला है: वह रो रही थी। मैं उसे क्यों नहीं देख पा रही? उसने सोचा। वह उन दो सर्फ़रों को क्यों दिखाई दिया—जिनका उसके लिए कोई महत्व नहीं था—और मुझे क्यों नहीं? यह कितना अन्याय है! उसके मन में मुर्दाघर में पड़े अपने बेटे के शव की छवि कौंध गई। काश, वह उसका कंधा तब तक हिलाती जब तक वह जाग न जाता, और उस पर चिल्लाती—मुझे बताओ क्यों! तुमने ऐसा कैसे किया?

साची ने अपना चेहरा अपने गीले तकिए में काफी देर तक दबाए रखा, सिसकियों को दबाते हुए। क्या मैं उससे मिलने के योग्य ही नहीं हूँ? उसने खुद से पूछा, लेकिन उसे अपने ही सवाल का जवाब नहीं पता था। वह इतना तो जानती थी कि चाहे वह कुछ भी करे, उसे इस द्वीप को स्वीकार करना ही होगा। जैसा कि उस मृदुभाषी जापानी-अमेरिकी पुलिस अधिकारी ने उसे बताया था, उसे इस द्वीप की हर चीज़ को वैसे ही स्वीकार करना होगा जैसी वह है। चाहे वह सही हो या गलत, योग्य हो या अयोग्य, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगली सुबह साची एक स्वस्थ अधेड़ उम्र की महिला के रूप में उठी। उसने अपना सूटकेस अपनी डॉज कार की पिछली सीट पर रखा और हनाले खाड़ी से निकल गई।



जापान लौटने के लगभग आठ महीने बाद टोक्यो में उसकी मुलाकात उस हट्टे-कट्टे लड़के से हुई। बारिश से बचने के लिए वह रोप्पोंगी मेट्रो स्टेशन के पास एक स्टारबक्स में कॉफी पी रही थी। वह पास की ही एक मेज पर बैठा था। उसने करीने से कपड़े पहने थे, एक इस्त्री की हुई राल्फ लॉरेन शर्ट और नई चिनो पैंट, और उसके साथ एक छोटी कद की, मनमोहक चेहरे वाली लड़की थी।

"क्या संयोग है!" वह मुस्कुराते हुए उसकी मेज की ओर बढ़ते हुए बोला।

“कैसी हो?” उसने पूछा। “देखो तुम्हारे बाल कितने छोटे हो गए हैं!”

“मैं कॉलेज से स्नातक होने ही वाला हूँ,” उन्होंने कहा।
मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा! आपको?
“हम्म। कम से कम इतना तो मेरे बस में है,” उसने कहा और उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।
"क्या आपने सर्फिंग करना छोड़ दिया है?"
"मैं कभी-कभार सप्ताहांत में थोड़ा-बहुत काम करता हूँ, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं: अभी भर्ती का मौसम चल रहा है।"
"बीनपोल कैसा रहेगा?"
“अरे वाह, उसकी तो मौज है। उसे नौकरी ढूंढने की कोई चिंता नहीं। उसके पिता की अकासाका में एक बड़ी वेस्टर्न पेस्ट्री की दुकान है, और उनका कहना है कि अगर वह कारोबार संभाल लेता है तो वे उसे बीएमडब्ल्यू कार खरीद देंगे। वह कितना भाग्यशाली है!”
साची ने बाहर की ओर देखा। हल्की बारिश के कारण सड़कें काली हो गई थीं। यातायात ठप्प था और एक अधीर टैक्सी चालक लगातार हॉर्न बजा रहा था।
“क्या वह तुम्हारी प्रेमिका है?” साची ने पूछा।
“हम्म...शायद। मैं इस पर काम कर रहा हूँ,” उसने अपना सिर खुजाते हुए कहा।
“वो प्यारी तो है। तुम्हारे लिए कुछ ज़्यादा ही प्यारी है। शायद तुम्हें वो नहीं देगी जो तुम चाहते हो।”
उसकी निगाहें छत की ओर उठीं। "वाह! मुझे लगता है कि तुम अब भी वही कहते हो जो तुम सोचते हो। वैसे तुम सही हो। क्या मेरे लिए कोई अच्छी सलाह है? मतलब, कुछ कर दिखाने के लिए..."
किसी लड़की से अच्छे से पेश आने के सिर्फ तीन ही तरीके हैं: पहला, चुपचाप उसकी बातें सुनो; दूसरा, उसे बताओ कि तुम्हें उसका पहनावा पसंद आया; और तीसरा, उसे बढ़िया खाना खिलाओ। आसान है ना? अगर ये सब करने के बाद भी मनचाहा नतीजा न मिले, तो बेहतर है कि कोशिश करना छोड़ दो।
“अच्छा लगा: सरल और व्यावहारिक। क्या मैं इसे अपनी नोटबुक में लिख लूँ?”
“बिल्कुल नहीं। लेकिन आपका मतलब है कि आपको इतना कुछ याद नहीं रहता?”

“नहीं, मैं तो मुर्गी की तरह हूँ: तीन कदम चलते ही मेरा दिमाग खाली हो जाता है। इसलिए मैं सब कुछ लिख लेता हूँ। मैंने सुना है कि आइंस्टीन भी ऐसा ही करते थे।”
"ओह, बिल्कुल, आइंस्टीन।"
उन्होंने कहा, "मुझे भूलने की आदत से कोई आपत्ति नहीं है। असल में, मुझे चीजें भूलना पसंद नहीं है।"
“जैसा चाहो वैसा करो,” साची ने कहा।
स्टॉकी ने अपनी नोटबुक निकाली और उसने जो कुछ कहा था उसे लिख लिया।
“आप हमेशा मुझे अच्छी सलाह देते हैं। एक बार फिर धन्यवाद।”
मुझे उम्मीद है कि यह काम करेगा।
“मैं पूरी कोशिश करूंगा,” उसने कहा और अपनी मेज पर वापस जाने के लिए खड़ा हो गया। कुछ देर सोचने के बाद उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। “तुम भी,” उसने कहा। “पूरी कोशिश करो।”
साची ने उसका हाथ पकड़ा। उसने कहा, "मुझे खुशी है कि हनाले खाड़ी में शार्क ने तुम्हें नहीं खाया।"
"क्या सच में वहां शार्क हैं?"
“हम्म,” उसने कहा। “सच में।”



साची हर रात पियानो के कीबोर्ड पर बैठती है, उसकी उंगलियां लगभग अपने आप चलने लगती हैं, और वह किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचती। उसके मन में बस पियानो की धुनें गूंजती रहती हैं—एक दरवाजे से आती हैं और दूसरे दरवाजे से निकल जाती हैं। जब वह पियानो नहीं बजा रही होती, तो वह शरद ऋतु के अंत में हनालेई में बिताए तीन हफ्तों के बारे में सोचती है। वह आती लहरों की आवाज़ और लोहे के पेड़ों की सरसराहट के बारे में सोचती है। व्यापारिक हवाओं से बहते बादलों के बारे में, आसमान में उड़ते अल्बाट्रॉस पक्षियों के बारे में, जिनके विशाल पंख फैले हुए हैं। और वह सोचती है कि वहाँ उसका क्या इंतज़ार कर रहा होगा। अब उसके पास सोचने के लिए बस यही है। हनालेई खाड़ी।

— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

मुझे यह कहाँ मिलने की संभावना है

"तीन साल पहले मेरे पति के पिता को एक ट्राम ने कुचल दिया था और उनकी मौत हो गई थी," महिला ने कहा और थोड़ी देर रुक गई।

मैंने एक शब्द भी नहीं कहा, बस उसकी आँखों में सीधे देखा और दो बार सिर हिलाया। इस मौन के दौरान, मैंने पेन ट्रे में रखी लगभग आधा दर्जन पेंसिलों पर नज़र डाली, यह देखने के लिए कि वे कितनी नुकीली हैं। जैसे कोई गोल्फर सावधानी से सही क्लब चुनता है, वैसे ही मैंने भी सोच-विचार किया कि कौन सी पेंसिल इस्तेमाल करूं, और अंत में एक ऐसी पेंसिल चुनी जो न तो बहुत नुकीली थी, न ही बहुत घिसी हुई, बल्कि एकदम सही थी।

"यह सब थोड़ा शर्मनाक है," महिला ने कहा।

मैंने अपनी राय अपने तक ही सीमित रखते हुए, अपने सामने एक मेमो पैड रखा और उस पर तारीख और महिला का नाम लिखकर पेंसिल की क्षमता का परीक्षण किया।

उन्होंने आगे कहा, "टोक्यो में अब ज्यादा ट्राम नहीं बची हैं।"

“अब लगभग हर जगह बसों का इस्तेमाल होने लगा है। जो कुछ बसें बची हैं, वो एक तरह से बीते समय की निशानी हैं। और उन्हीं में से एक बस में मेरे ससुर की जान गई थी।” उन्होंने एक गहरी आह भरी। “यह तीन साल पहले, अक्टूबर की पहली रात की बात है। उस रात बहुत तेज बारिश हो रही थी।”

मैंने उसकी कहानी की बुनियादी बातें लिख लीं। ससुर जी, तीन साल पहले, रेलगाड़ी, तेज़ बारिश, 1 अक्टूबर, रात। मैं लिखते समय बहुत सावधानी बरतता हूँ, इसलिए यह सब लिखने में थोड़ा समय लग गया।

“उस समय मेरे ससुर पूरी तरह से नशे में थे। अन्यथा, जाहिर है कि वे बरसात की रात में रेलगाड़ी की पटरियों पर सो नहीं जाते।”

वह फिर चुप हो गई, होंठ बंद कर लिए, उसकी आँखें स्थिर रूप से मेरी ओर देख रही थीं। शायद वह चाहती थी कि मैं उसकी बात से सहमत हो जाऊं।

मैंने कहा, "वह काफी नशे में रहा होगा।"

वह इतना नशे में था कि बेहोश हो गया।

"क्या आपके ससुर अक्सर इतनी शराब पीते थे?"

"आपका मतलब यह है कि क्या वह अक्सर इतनी ज्यादा शराब पीता था कि बेहोश हो जाता था?"
मेंने सिर हिलाया।
“वह कभी-कभार शराब पी लेता था,” उसने स्वीकार किया। “लेकिन हर समय नहीं, और कभी इतना भी नहीं कि वह रेलगाड़ी की पटरियों पर सो जाए।”
मैंने सोचा, किसी रेलगाड़ी की पटरी पर सो जाने के लिए कितना ज़्यादा नशा होना चाहिए? क्या मुख्य मुद्दा शराब की मात्रा थी? या फिर ज़्यादा ज़रूरी यह था कि आखिर वह नशे में क्यों धुत हो रहा था?
मैंने पूछा, "आपका मतलब यह है कि वह कभी-कभी शराब पी लेता था, लेकिन आमतौर पर इतना नहीं कि गिर पड़े?"
“मैं तो यही सोचती हूँ,” उसने जवाब दिया।
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो क्या मैं आपकी उम्र पूछ सकता हूँ?"
आप जानना चाहते हैं कि मेरी उम्र कितनी है?
"अगर आप जवाब नहीं देना चाहते तो आपको जवाब देने की जरूरत नहीं है।"
उस महिला ने अपनी तर्जनी उंगली से अपनी नाक के ऊपरी हिस्से को रगड़ा। उसकी नाक बेहद खूबसूरत और एकदम सीधी थी। मेरा अनुमान था कि उसने हाल ही में प्लास्टिक सर्जरी करवाई होगी। मैं एक ऐसी महिला के साथ डेट पर जाता था जिसकी यही आदत थी। उसने भी नाक की सर्जरी करवाई थी, और जब भी वह किसी बात पर सोचती, अपनी तर्जनी उंगली से नाक के ऊपरी हिस्से को रगड़ती थी। मानो वह यह सुनिश्चित कर रही हो कि उसकी नई नाक अभी भी सही सलामत है। अब सामने बैठी उस महिला को देखकर मुझे कुछ-कुछ जानी-पहचानी सी अनुभूति हुई। और फिर अचानक मुझे मुख मैथुन की धुंधली यादें ताजा हो गईं।
“मैं अपनी उम्र छिपाने की कोशिश नहीं कर रही हूँ,” महिला ने कहा। “मैं पैंतीस साल की हूँ।”
और जब आपके ससुर की मृत्यु हुई तब उनकी उम्र कितनी थी?
“अड़सठ।”
“उसने क्या किया? मेरा मतलब है, उसने अपना काम किया।”

वह एक पुजारी थे।

"क्या पुजारी से आपका तात्पर्य बौद्ध पुजारी से है?"

“जी हां। एक बौद्ध भिक्षु। जोडो संप्रदाय के। वे तोशिमा वार्ड में एक मंदिर के प्रमुख थे।”

मैंने कहा, "यह तो वाकई बहुत बड़ा झटका रहा होगा।"

"क्या मेरे ससुर को एक ट्राम ने कुचल दिया था?"

"हाँ।"

“बेशक यह एक झटका था। खासकर मेरे पति के लिए,” महिला ने कहा।

मैंने अपने मेमोपैड पर कुछ और बातें लिख लीं। पुजारी, जोडो संप्रदाय, 68।

वह महिला मेरे सोफे के एक कोने पर बैठी थी। मैं अपनी डेस्क के पीछे अपनी घूमने वाली कुर्सी पर बैठा था। हमारे बीच दो गज की दूरी थी। उसने एक आकर्षक ऋषि हरे रंग का सूट पहना हुआ था। उसके पैर बेहद खूबसूरत थे, और उसकी स्टॉकिंग्स उसके काले ऊँची एड़ी वाले जूतों से मेल खा रही थीं। उसकी ऊँची एड़ी वाली हील्स किसी घातक हथियार जैसी लग रही थीं।

मैंने कहा, "तो आप मुझसे जो पूछने आई हैं, वह आपके पति के दिवंगत पिता से संबंधित है?"

“नहीं। यह उनके बारे में नहीं है,” उसने कहा। उसने अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए दो-तीन बार अपना सिर हल्के से हिलाया। “यह मेरे पति के बारे में है।”

क्या वह पुजारी भी है?

नहीं, वह मेरिल लिंच में काम करता है।

“निवेश फर्म?”

“हाँ, बिल्कुल,” उसने थोड़ी झुंझलाहट के साथ जवाब दिया। उसके लहजे से लग रहा था कि मेरिल लिंच जैसा और कौन है? “वह तो एक स्टॉकब्रोकर है।”

मैंने अपनी पेंसिल की नोक को यह देखने के लिए जांचा कि वह कितनी घिस गई है, फिर उसके आगे बोलने का इंतजार किया।

"मेरे पति इकलौते बेटे हैं, और उन्हें बौद्ध धर्म से ज्यादा शेयर बाजार में दिलचस्पी थी, इसलिए वे मंदिर के मुख्य पुजारी के रूप में अपने पिता के उत्तराधिकारी नहीं बन सके।"

ये सब बिल्कुल तर्कसंगत लगता है, है ना? उसकी आँखों ने कहा, लेकिन चूंकि बौद्ध धर्म या शेयर बाजार के बारे में मेरी कोई राय नहीं थी, इसलिए मैंने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, मैंने एक तटस्थ भाव अपनाया जिससे यह पता चलता था कि मैं हर बात को ध्यान से सुन रहा हूँ।

"मेरे ससुर के देहांत के बाद, मेरी सास शिनागावा में हमारे कॉन्डो में एक अपार्टमेंट में रहने आ गईं। उसी इमारत में एक अलग फ्लैट। मैं और मेरे पति छब्बीसवीं मंजिल पर रहते हैं, और वह चौबीसवीं मंजिल पर। वह अकेली रहती हैं। वह अपने पति के साथ मंदिर में रहती थीं, लेकिन जब दूसरे पुजारी ने कार्यभार संभाला तो उन्हें वहां से जाना पड़ा। उनकी उम्र तिरसठ वर्ष है। और मेरे पति, मैं आपको बता दूं, चालीस वर्ष के हैं। अगर उन्हें कुछ नहीं हुआ है, तो अगले महीने वह इकतालीस वर्ष के हो जाएंगे।"

मैंने सारी बातें नोट कर लीं। सास, 24 वीं मंजिल, 63 वर्ष। पति, 40 वर्ष, मेरिल लिंच, 26 वीं मंजिल, शिनागावा। महिला ने धैर्यपूर्वक मेरे काम खत्म होने का इंतजार किया।

"मेरे ससुर की मृत्यु के बाद, मेरी सास को पैनिक अटैक आने लगे। बारिश के मौसम में ये और भी बढ़ जाते हैं, शायद इसलिए क्योंकि उनके पति की मृत्यु बारिश वाली रात में हुई थी। मुझे लगता है कि यह एक आम बात है।"

मेंने सिर हिलाया।

"जब लक्षण गंभीर होते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे उसके दिमाग का कोई पेंच ढीला हो गया हो। वह हमें फोन करती है और मेरे पति दो मंजिल नीचे उसके घर जाकर उसकी देखभाल करते हैं। वह उसे शांत करने की कोशिश करते हैं, उसे यकीन दिलाते हैं कि सब ठीक हो जाएगा। अगर मेरे पति घर पर नहीं होते, तो मैं जाती हूँ।"

वह मेरी प्रतिक्रिया का इंतजार करते हुए थोड़ी देर रुकी। मैं चुप रहा।

"मेरी सास बुरी इंसान नहीं हैं। उनके प्रति मेरे मन में कोई नकारात्मक भावना नहीं है। बस वो थोड़ी घबराई हुई रहती हैं और हमेशा दूसरों पर बहुत ज्यादा निर्भर रहती हैं। क्या आप स्थिति को समझ पा रही हैं?"

मैंने कहा, "मुझे ऐसा लगता है।"

उसने अपने पैर मोड़कर बैठ गई और मेरे पैड पर कुछ नया लिखने का इंतजार करने लगी। लेकिन मैंने कुछ नहीं लिखा।
“उसने हमें एक रविवार की सुबह दस बजे फोन किया था। दो रविवार पहले—दस दिन पहले।”
मैंने अपने डेस्क पर रखे कैलेंडर पर एक नज़र डाली। "रविवार, 3 सितंबर?"
“हाँ, तीसरी घटना। मेरी सास ने उस सुबह दस बजे फोन किया था,” महिला ने कहा। उसने आँखें बंद कर लीं, मानो उसे कुछ याद आ रहा हो। अगर हम किसी हिचकॉक फिल्म में होते, तो इस बिंदु पर स्क्रीन हिलने लगती और हम फ्लैशबैक में चले जाते। लेकिन यह कोई फिल्म नहीं थी, और कोई फ्लैशबैक नहीं था। उसने आँखें खोलीं और आगे बोली, “मेरे पति ने फोन उठाया। उन्होंने गोल्फ खेलने की योजना बनाई थी, लेकिन सुबह से ही तेज बारिश हो रही थी, इसलिए उन्होंने योजना रद्द कर दी। काश बारिश न होती, तो यह सब कभी न होता। मुझे पता है कि मैं बस अपने फैसले पर संदेह कर रही हूँ।”
3 सितंबर, गोल्फ, बारिश, रद्द, सास का फोन। मैंने सब कुछ लिख लिया।
“मेरी सास ने कहा कि उन्हें सांस लेने में तकलीफ हो रही है। उन्हें चक्कर आ रहे थे और वे खड़ी नहीं हो पा रही थीं। इसलिए मेरे पति तैयार हुए और बिना दाढ़ी बनाए ही उनके कमरे में चले गए। उन्होंने मुझसे कहा कि ज्यादा देर नहीं लगेगी और नाश्ता तैयार करने को कहा।”
मैंने पूछा, "उसने क्या पहना था?"
उसने अपनी नाक को हल्के से फिर से रगड़ा। “चिनो पैंट और आधी बाजू की पोलो शर्ट। उसकी शर्ट गहरे भूरे रंग की थी। पैंट क्रीम रंग की थी। दोनों चीजें हमने जे.क्रू कैटलॉग से खरीदी थीं। मेरे पति को कम दिखाई देता है और वे हमेशा चश्मा पहनते हैं। मेटल फ्रेम वाले अरमानी के जूते। उनके जूते ग्रे रंग के न्यू बैलेंस के थे। उन्होंने मोजे नहीं पहने थे।”
मैंने सभी विवरण लिख लिए।
क्या आप उसकी लंबाई और वजन जानना चाहते हैं?
मैंने कहा, "इससे मदद मिलेगी।"

“उनकी लंबाई पांच फुट आठ इंच है और वजन लगभग एक पाउंड अट्ठावन है। हमारी शादी से पहले उनका वजन लगभग एक पाउंड पैंतीस था, लेकिन अब उनका वजन थोड़ा बढ़ गया है।”

मैंने यह जानकारी लिख ली। मैंने अपनी पेंसिल की नोक जाँची और उसे दूसरी पेंसिल से बदल दिया। मैंने कुछ देर नई पेंसिल को हाथ में पकड़े रखा, ताकि मुझे उसका एहसास हो सके।

“क्या आपको कोई आपत्ति है अगर मैं बोलना जारी रखूँ?” उसने पूछा।

“बिल्कुल नहीं,” मैंने कहा।

उसने अपने पैर खोले और फिर से बांध लिए। “मैं पैनकेक बनाने की तैयारी कर रही थी तभी उसकी माँ का फोन आया। मैं रविवार की सुबह हमेशा पैनकेक बनाती हूँ। अगर मेरे पति रविवार को गोल्फ नहीं खेलते हैं, तो वे खूब पैनकेक खाते हैं। उन्हें पैनकेक बहुत पसंद हैं, साथ में कुरकुरा बेकन भी।”

मैंने सोचा, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि उस आदमी का वजन बीस पाउंड बढ़ गया।

“पच्चीस मिनट बाद मेरे पति ने मुझे फोन किया। उन्होंने बताया कि उनकी माँ सो गई हैं और वे ऊपर आ रहे हैं। उन्होंने कहा, ‘मुझे बहुत भूख लगी है। नाश्ता तैयार कर दो ताकि मैं पहुँचते ही खा सकूँ।’ तो मैंने फ्राइंग पैन गरम किया और पैनकेक और बेकन पकाना शुरू कर दिया। मैंने मेपल सिरप भी गरम कर लिया। पैनकेक बनाना मुश्किल नहीं है—बस समय का ध्यान रखना होता है और सब कुछ सही क्रम में करना होता है। मैं इंतज़ार करती रही, लेकिन वे घर नहीं आए। उनकी प्लेट में रखे पैनकेक ठंडे होते जा रहे थे। मैंने अपनी सास को फोन किया और पूछा कि क्या मेरे पति अभी भी घर पर हैं। उन्होंने कहा कि वे बहुत पहले ही चले गए थे।”

उसने अपनी स्कर्ट पर, घुटने के ठीक ऊपर, अटके हुए एक काल्पनिक, आध्यात्मिक रुई के टुकड़े को झाड़ दिया।

“मेरे पति गायब हो गए। वो हवा में ओझल हो गए। और तब से मैंने उनसे कोई संपर्क नहीं किया है। वो चौबीसवीं और छब्बीसवीं मंजिल के बीच कहीं गायब हो गए।”

“क्या आपने पुलिस से संपर्क किया?”

"बिल्कुल मैंने किया," उसने झुंझलाहट में अपने होंठों को थोड़ा सिकोड़ते हुए कहा। “जब वो एक बजे तक नहीं लौटे, तो मैंने पुलिस को फोन किया। लेकिन उन्होंने उन्हें ढूंढने में कोई खास कोशिश नहीं की। स्थानीय पुलिस स्टेशन से एक पुलिसकर्मी आया, लेकिन जब उसने देखा कि किसी हिंसक अपराध का कोई सबूत नहीं है, तो उसने कोई ध्यान नहीं दिया। उसने कहा, ‘अगर वो दो दिन में वापस नहीं आते, तो थाने जाकर गुमशुदा व्यक्ति की रिपोर्ट दर्ज करा देना।’ पुलिस को लगता है कि मेरे पति अचानक कहीं चले गए, मानो वो अपनी जिंदगी से तंग आ गए हों और बस निकल गए हों। लेकिन ये तो बेतुकी बात है। ज़रा सोचिए। मेरे पति अपनी मां के घर बिल्कुल खाली हाथ गए—न बटुआ, न ड्राइविंग लाइसेंस, न क्रेडिट कार्ड, न घड़ी। भगवान के लिए, उन्होंने दाढ़ी भी नहीं बनाई थी। और उन्होंने अभी-अभी मुझे फोन करके पैनकेक बनाने को कहा था। घर से भाग रहा कोई व्यक्ति भला फोन करके पैनकेक बनाने को तो नहीं कहेगा, है ना?”

“आप बिलकुल सही कह रही हैं,” मैंने सहमति जताते हुए कहा। “लेकिन, बताइए, जब आपके पति चौबीसवीं मंजिल पर गए थे, तो क्या उन्होंने सीढ़ियों का इस्तेमाल किया था?”

“वह कभी लिफ्ट का इस्तेमाल नहीं करता। उसे लिफ्ट से नफरत है। उसका कहना है कि वह ऐसी तंग जगह में बंद रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता।”

फिर भी, आपने एक ऊंची इमारत की छब्बीसवीं मंजिल पर रहना क्यों चुना?

“हमने किया। लेकिन वह हमेशा सीढ़ियों का इस्तेमाल करता है। उसे कोई आपत्ति नहीं लगती—वह कहता है कि यह अच्छी कसरत है और वजन कम रखने में मदद करती है। बेशक, इसमें समय लगता है।”

मैंने अपने पैड पर पैनकेक, बीस पाउंड, सीढ़ियाँ, लिफ्ट नोट कर लिए।

“तो स्थिति यह है,” उसने कहा। “क्या आप यह केस लेंगे?”

इसके बारे में सोचने की कोई ज़रूरत नहीं थी। यह बिल्कुल वैसा ही मामला था जिसकी मुझे उम्मीद थी। मैंने बस औपचारिकतावश अपना शेड्यूल चेक किया और कुछ कामों में फेरबदल करने का नाटक किया। अगर आप तुरंत किसी मामले को लेने के लिए सहमत हो जाते हैं, तो क्लाइंट को किसी छिपे हुए मकसद का शक हो सकता है।

“सौभाग्य से मैं आज दोपहर तक खाली हूँ,” मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डालते हुए कहा। ग्यारह बजकर पैंतीस मिनट हो रहे थे। “अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो क्या आप मुझे अभी अपने भवन में ले जा सकती हैं? मैं वह आखिरी जगह देखना चाहती हूँ जहाँ आपने अपने पति को देखा था।”

“मुझे खुशी होगी,” महिला ने कहा। उसने थोड़ा भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, “क्या इसका मतलब है कि आप यह केस ले रही हैं?”

“हाँ,” मैंने उत्तर दिया।

लेकिन हमने अभी तक फीस के बारे में बात नहीं की है।

मुझे पैसों की कोई जरूरत नहीं है।

"मुझे माफ़ करना?" उसने मेरी ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए कहा।

मैंने मुस्कुराते हुए समझाया, "मैं इसके लिए कुछ भी शुल्क नहीं लेता।"

लेकिन क्या यह आपका काम नहीं है?

“नहीं, ऐसा नहीं है। यह मेरा पेशा नहीं है। मैं सिर्फ एक स्वयंसेवक हूं, इसलिए मुझे वेतन नहीं मिलता।”

"एक स्वयंसेवी?"

"सही।"

फिर भी, आपको खर्चों के लिए कुछ पैसे चाहिए होंगे...

“किसी खर्च की जरूरत नहीं है। मैं पूरी तरह से स्वयंसेवक हूं, इसलिए मैं किसी भी प्रकार का भुगतान स्वीकार नहीं कर सकता।”

वह महिला अब भी असमंजस में दिख रही थी।

“सौभाग्य से, मेरे पास आय का एक और स्रोत है जिससे मेरा गुजारा चल जाता है,” मैंने समझाया। “मैं यह काम पैसे के लिए नहीं कर रहा हूँ। मुझे बस लापता लोगों को ढूंढने में बहुत दिलचस्पी है। या यूँ कहें कि, जो लोग किसी खास तरीके से लापता हुए हैं। मैं इसके बारे में विस्तार से नहीं बताऊंगा—इससे मामला और पेचीदा हो जाएगा। लेकिन मैं इस तरह के कामों में काफी माहिर हूँ।”

"मुझे बताओ, क्या इसके पीछे किसी प्रकार का धर्म या न्यू एज विचारधारा है?" उसने पूछा।

“दोनों में से कोई नहीं। मेरा किसी भी धर्म या न्यू एज समूह से कोई संबंध नहीं है।”

उस महिला ने अपने जूतों की ओर देखा, शायद यह सोच रही थी कि अगर हालात वाकई अजीब हो गए तो उसे मेरे खिलाफ स्टिलेटो हील्स का इस्तेमाल करना पड़ सकता है।

“मेरे पति हमेशा मुझसे कहते थे कि मुफ्त में मिलने वाली किसी भी चीज पर भरोसा मत करो,” महिला ने कहा। “मुझे पता है कि ऐसा कहना असभ्य लग सकता है, लेकिन उनका कहना था कि उसमें हमेशा कोई न कोई चाल होती है।”

मैंने कहा, “ज़्यादातर मामलों में मैं उससे सहमत हूँ। आज के इस पूंजीवादी दौर में, मुफ़्त में मिलने वाली किसी भी चीज़ पर भरोसा करना मुश्किल है। फिर भी, मुझे उम्मीद है कि आप मुझ पर भरोसा करेंगे। अगर हमें कुछ हासिल करना है, तो आपको करना ही होगा।”

उसने अपना लुई विटन पर्स उठाया, उसे बड़े सलीके से खोला और उसमें से एक मोटा सीलबंद लिफाफा निकाला। मैं यह तो नहीं बता सकती थी कि अंदर कितने पैसे थे, लेकिन देखने में काफी पैसे लग रहे थे।

“मैं खर्चों के लिए कुछ पैसे लाई हूँ,” उसने कहा।

मैंने सिर हिलाया। “मैं किसी भी प्रकार का शुल्क, उपहार या भुगतान स्वीकार नहीं करता। यही नियम है। अगर मैं कोई शुल्क या उपहार स्वीकार करूँ, तो मेरे द्वारा किए जा रहे कार्य अर्थहीन हो जाएँगे। अगर आपके पास अतिरिक्त धन है और शुल्क न देने में आपको असहजता महसूस होती है, तो मेरा सुझाव है कि आप किसी दान संस्था को दान करें—जैसे कि ह्यूमेन सोसाइटी, फंड फॉर ट्रैफिक विक्टिम्स ऑरफन्स, या जो भी संस्था आपको पसंद हो। अगर ऐसा करने से आपको अच्छा महसूस होता है।”

महिला ने भौंहें चढ़ाईं, गहरी सांस ली और लिफाफा वापस अपने पर्स में रख लिया। उसने अपने पर्स को, जो पहले से ही मोटा और खुश लग रहा था, वहीं वापस रख दिया। उसने अपनी नाक फिर से रगड़ी और मेरी तरफ देखा, बिल्कुल एक शिकारी कुत्ते की तरह जो आगे बढ़कर छड़ी लाने के लिए तैयार हो।

"जिन कार्यों में आप शामिल होंगे," उसने कुछ रूखे लहजे में कहा।

मैंने सिर हिलाया और अपनी घिसी हुई पेंसिल को ट्रे में वापस रख दिया।



ऊँची एड़ी के जूते पहनी महिला मुझे अपनी इमारत तक ले गई। उसने अपने अपार्टमेंट (नंबर 2609) और अपनी सास के अपार्टमेंट (नंबर 2417) का दरवाज़ा दिखाया। एक चौड़ी सीढ़ी दोनों मंजिलों को जोड़ती थी, और मैंने देखा कि उनके बीच आराम से टहलते हुए भी पाँच मिनट से ज़्यादा समय नहीं लगेगा।

“मेरे पति द्वारा इस कॉन्डो को खरीदने का एक कारण यह था कि इसकी सीढ़ियाँ चौड़ी और अच्छी रोशनी वाली हैं,” उन्होंने कहा। “अधिकांश ऊंची इमारतों में सीढ़ियों पर कंजूसी की जाती है। चौड़ी सीढ़ियाँ बहुत अधिक जगह घेरती हैं, और इसके अलावा, अधिकांश निवासी लिफ्ट को पसंद करते हैं। कॉन्डो बनाने वाले अपना पैसा ऐसी जगहों पर खर्च करना पसंद करते हैं जो ध्यान आकर्षित करती हैं—जैसे पुस्तकालय, संगमरमर की लॉबी। लेकिन मेरे पति का मानना था कि सीढ़ियाँ सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं—इमारत की रीढ़ की हड्डी, वे ऐसा कहना पसंद करते थे।”

मुझे मानना पड़ेगा, वह सीढ़ी वाकई यादगार थी। पच्चीसवीं और छब्बीसवीं मंजिल के बीच की लैंडिंग पर, एक बड़ी खिड़की के बगल में, एक सोफा, दीवार के बराबर का एक दर्पण, एक स्टैंडिंग ऐशट्रे और एक गमले में लगा पौधा था। खिड़की से चमकीला आसमान और कुछ बादल दिखाई देते थे। खिड़की सील बंद थी और उसे खोला नहीं जा सकता था।

मैंने पूछा, "क्या हर मंजिल पर ऐसी जगह है?"

“नहीं। हर पांचवीं मंजिल पर एक छोटा सा लाउंज है, हर मंजिल पर नहीं,” उसने कहा। “क्या आप हमारा अपार्टमेंट और मेरी सास का अपार्टमेंट देखना चाहेंगे?”

अभी नहीं।

“मेरे पति के लापता होने के बाद से मेरी सास की हालत बहुत खराब हो गई है,” उन्होंने कहा। उन्होंने अपना हाथ हिलाया। “जैसा कि आप समझ सकते हैं, यह उनके लिए बहुत बड़ा सदमा था।”

“बिल्कुल,” मैंने सहमति जताई। “मुझे नहीं लगता कि मुझे उसे परेशान करना पड़ेगा।”

“मैं इसकी बहुत सराहना करती हूँ। और मैं चाहूँगी कि आप यह बात पड़ोसियों से भी छुपा कर रखें। मैंने किसी को नहीं बताया है कि मेरे पति गायब हो गए हैं।”

“समझ गया,” मैंने कहा। “क्या आप खुद भी आमतौर पर इन सीढ़ियों का इस्तेमाल करते हैं?”

“नहीं,” उसने अपनी भौंहें थोड़ी ऊपर उठाते हुए कहा, मानो उसकी बेवजह आलोचना की गई हो। “आम तौर पर मैं लिफ्ट का इस्तेमाल करती हूँ। जब मैं और मेरे पति बाहर जाते हैं, तो वो पहले निकलते हैं और फिर मैं लिफ्ट से आती हूँ और हम लॉबी में मिलते हैं। और जब हम घर आते हैं, तो मैं अकेले लिफ्ट से आती हूँ और वो पैदल आते हैं। ऊँची एड़ी के जूते पहनकर इन सारी सीढ़ियों पर चढ़ना खतरनाक होगा, और इससे शरीर पर भी ज़ोर पड़ता है।”
मुझे ऐसा ही लगता है।
मैं खुद ही मामले की छानबीन करना चाहता था, इसलिए मैंने उससे कहा कि वह बिल्डिंग के सुपरवाइज़र से बात करे। मैंने उसे हिदायत दी, “उसे बताओ कि चौबीसवीं और छब्बीसवीं मंज़िल के बीच घूम रहा आदमी बीमा से जुड़ी जाँच कर रहा है। अगर किसी को लगा कि मैं चोर हूँ और रेकी कर रहा हूँ और उसने पुलिस को बुला लिया, तो मैं मुश्किल में पड़ जाऊँगा। वैसे भी, मेरे यहाँ घूमने का कोई ठोस कारण नहीं है।”
“मैं उसे बता दूंगी,” महिला ने कहा। वह सीढ़ियों से ऊपर चली गई। उसकी एड़ियों की आवाज़ किसी अशुभ संदेश को ठोकने के लिए कीलों की ठोकने जैसी गूंजी, फिर धीरे-धीरे खामोशी में बदल गई। मैं अकेला रह गया।
सबसे पहले मैंने छब्बीसवीं मंजिल से चौबीसवीं मंजिल तक और वापस आने के लिए तीन बार सीढ़ियाँ चढ़ीं। पहली बार मैं सामान्य गति से चला, अगली दो बार बहुत धीरे-धीरे, अपने आस-पास की हर चीज़ को ध्यान से देखते हुए। मैंने इतना ध्यान केंद्रित किया कि कोई भी छोटी से छोटी बात भी छूट न जाए। मैंने इतनी एकाग्रता से काम लिया कि पलकें भी नहीं झपकाईं। हर घटना अपने निशान छोड़ जाती है, और मेरा काम उन्हें खोजना था। समस्या यह थी कि सीढ़ियों की पूरी तरह से सफाई की गई थी। वहाँ कूड़े का एक टुकड़ा भी नहीं था। एक भी दाग या खरोंच नहीं, ऐशट्रे में सिगरेट के टुकड़े भी नहीं। कुछ भी नहीं।
बिना रुके सीढ़ियों से ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरने से मैं थक गया था, इसलिए सोफे पर एक मिनट आराम करने के लिए बैठ गया। सोफा विनाइल का बना था और उसे उच्च गुणवत्ता का तो नहीं कह सकते थे। लेकिन इमारत प्रबंधन की दूरदर्शिता की तारीफ करनी होगी कि उन्होंने वहाँ सोफा लगाया, जहाँ शायद ही कभी कोई उसका इस्तेमाल करता। सोफे के सामने दर्पण था। उसकी सतह एकदम साफ थी और खिड़की से आने वाली रोशनी के लिए

वह बिल्कुल सही कोण पर लगा था। मैं कुछ देर वहाँ बैठा रहा और अपनी परछाई को देखता रहा। शायद उस रविवार को उस महिला का पति, जो एक स्टॉकब्रोकर था, भी यहाँ आकर आराम कर रहा होगा और अपनी परछाई को देख रहा होगा। अपने बिना दाढ़ी वाले चेहरे को।

मैंने दाढ़ी तो बना ली थी, लेकिन मेरे बाल थोड़े लंबे हो गए थे। कानों के पीछे के बाल ऐसे घुंघराले हो गए थे जैसे किसी लंबे बालों वाले शिकारी कुत्ते के हों जो अभी-अभी नदी पार करके आया हो। मैंने मन ही मन नाई के पास जाने का मन बना लिया। मैंने देखा कि मेरी पतलून का रंग मेरे जूतों से मेल नहीं खा रहा था। मुझे अपने कपड़ों से मेल खाने वाले मोजे भी नहीं मिल रहे थे। अगर मैं आखिरकार कपड़े धो लूं तो किसी को अजीब नहीं लगेगा। वैसे, बाकी सब ठीक था—मैं वही पुराना इंसान था। एक पैंतालीस साल का कुंवारा आदमी जिसे न तो शेयर बाजार से कोई मतलब था और न ही बौद्ध धर्म से।

सोचें तो सही, पॉल गौगुइन भी एक स्टॉकब्रोकर थे। लेकिन वे अपना पूरा जीवन चित्रकला को समर्पित करना चाहते थे, इसलिए एक दिन वे अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर ताहिती चले गए। ज़रा रुकिए... मैंने एक मिनट सोचा। नहीं, गौगुइन अपना बटुआ पीछे नहीं छोड़ सकते थे, और अगर उस समय अमेरिकन एक्सप्रेस कार्ड होते तो मुझे यकीन है कि वे एक ज़रूर साथ ले जाते। आखिर वे ताहिती जा रहे थे। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे गायब होने से पहले अपनी पत्नी से कहें, "हे, जान, मैं एक मिनट में वापस आता हूँ - ध्यान रखना कि पैनकेक तैयार हों।" अगर आप गायब होने की योजना बना रहे हैं, तो आपको इसे योजनाबद्ध तरीके से करना होगा।

मैं सोफे से उठा और सीढ़ियों पर चढ़ते हुए ताज़ा बने पैनकेक के ख्याल में खो गया। मैंने पूरी एकाग्रता से उस दृश्य की कल्पना करने की कोशिश की: आप एक चालीस वर्षीय स्टॉकब्रोकर हैं, रविवार की सुबह है, बाहर तेज़ बारिश हो रही है, और आप घर जा रहे हैं जहाँ गरमागरम पैनकेक का ढेर आपका इंतज़ार कर रहा है। जितना ज़्यादा मैं इसके बारे में सोचता, मेरी भूख उतनी ही बढ़ती जाती। सुबह से मैंने सिर्फ़ एक छोटा सा सेब खाया था।

शायद मुझे डेनीज़ जाकर कुछ पैनकेक खाने चाहिए, मैंने सोचा। यहाँ आते समय मैंने डेनीज़ का साइनबोर्ड देखा था। शायद पैदल चलकर भी जाया जा सकता था। ऐसा नहीं है कि डेनीज़

के पैनकेक बहुत अच्छे होते हैं—मक्खन और सिरप मेरे हिसाब से नहीं थे—लेकिन ठीक थे। सच कहूँ तो, मुझे पैनकेक बहुत पसंद हैं। मेरे मुँह में पानी आने लगा। लेकिन मैंने अपना सिर हिलाया और कुछ देर के लिए पैनकेक के ख्यालों को दिमाग से निकालने की कोशिश की। मैंने भ्रम के सारे बादल हटा दिए। पैनकेक बाद के लिए छोड़ दो, मैंने खुद को समझाया। अभी काम बाकी है।

मैंने मन ही मन कहा, "मुझे उससे पूछना चाहिए था कि उसके पति को कोई शौक है या नहीं। शायद उसे पेंटिंग में रुचि हो।"

लेकिन यह बात समझ में नहीं आती थी—जो व्यक्ति चित्रकला में इतना मग्न हो कि अपने परिवार को भी छोड़ दे, वह हर रविवार को गोल्फ खेलने वाला तो नहीं हो सकता। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि गौगिन, वान गॉग या पिकासो गोल्फ के जूते पहने, दसवें ग्रीन पर घुटने टेककर, पुट को समझने की कोशिश कर रहे हों? मैं तो नहीं कर सकता।

मैं सोफे पर फिर से बैठ गया और अपनी घड़ी देखी। एक बजकर बत्तीस मिनट हो रहे थे। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने दिमाग के एक कोने पर ध्यान केंद्रित किया। मेरा दिमाग बिल्कुल खाली था, मैंने खुद को समय के रेत के हवाले कर दिया और उसे जहाँ चाहे ले जाने दिया। फिर मैंने अपनी आँखें खोलीं और अपनी घड़ी देखी। एक बजकर सत्तावन मिनट हो रहे थे। पच्चीस मिनट कहीं गायब हो गए। बुरा नहीं, मैंने खुद से कहा। समय बिताने का एक बेकार तरीका। बिल्कुल भी बुरा नहीं।

मैंने दोबारा आईने में देखा और खुद को हमेशा की तरह पाया। मैंने अपना दाहिना हाथ उठाया, और मेरी परछाई ने अपना बायां हाथ उठाया। मैंने अपना बायां हाथ उठाया, और उसने अपना दाहिना हाथ उठाया। मैंने अपना दाहिना हाथ नीचे करने का नाटक किया, फिर झट से बायां हाथ नीचे कर दिया; मेरी परछाई ने अपना बायां हाथ नीचे करने का नाटक किया, फिर झट से दाहिना हाथ नीचे कर दिया। बिल्कुल सही तरीके से। मैं सोफे से उठा और पच्चीस सीढ़ियाँ उतरकर लॉबी तक गया।



मैं लगभग ग्यारह बजे हर दिन सीढ़ियों पर जाया करता था। बिल्डिंग सुपरवाइज़र से मेरी अच्छी दोस्ती हो गई (मैंने उसे जो चॉकलेट के डिब्बे दिए थे, उससे भी दोस्ती में कुछ कमी नहीं आई), और मुझे बिल्डिंग में कहीं भी घूमने की छूट मिल गई। कुल मिलाकर, मैंने चौबीसवीं और छब्बीसवीं मंजिल के बीच लगभग दो सौ चक्कर लगाए। जब मैं थक जाता, तो सोफे पर आराम करता, खिड़की से आसमान को देखता, और आईने में अपना चेहरा देखता। मैं नाई के पास जाकर बाल कटवा चुका था, अपने सारे कपड़े धो चुका था, और अब मैं ऐसे ट्राउजर और मोजे पहन सकता था जो आपस में मेल खाते थे, जिससे मेरे बारे में पीठ पीछे कानाफूसी होने की संभावना काफी कम हो गई थी।

मैंने लाख कोशिश की, लेकिन मुझे एक भी सुराग नहीं मिला, पर मैंने हिम्मत नहीं हारी। अहम सुराग ढूंढना किसी असहयोगी जानवर को प्रशिक्षित करने जैसा था। इसके लिए धैर्य और एकाग्रता की ज़रूरत होती है। साथ ही, अंतर्ज्ञान भी ज़रूरी है।

जब मैं हर रोज अपार्टमेंट बिल्डिंग जाता था, तो मुझे पता चलता था कि सीढ़ियों का इस्तेमाल दूसरे लोग भी करते थे। मुझे फर्श पर कैंडी के रैपर, ऐशट्रे में मार्लबोरो सिगरेट का टुकड़ा और फेंका हुआ अखबार मिलता था।

एक रविवार दोपहर, मैंने एक आदमी को सीढ़ियों पर दौड़ते हुए देखा। तीस साल का एक छोटा कद का आदमी, गंभीर चेहरे वाला, हरे रंग के जॉगिंग सूट और एसिक्स रनिंग शूज़ पहने हुए था। उसने एक बड़ी कैसियो घड़ी पहनी हुई थी।

मैंने कहा, "नमस्ते। क्या आपके पास एक मिनट का समय है?"

“ज़रूर,” उस आदमी ने कहा और अपनी घड़ी का बटन दबाया। उसने गहरी साँसें लीं। उसकी नाइकी की टी-शर्ट सीने पर पसीने से भीगी हुई थी।

मैंने पूछा, "क्या तुम हमेशा इन सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे दौड़ते रहते हो?"

“हाँ, मैं जाता हूँ। बत्तीसवीं मंजिल तक। लेकिन नीचे आने के लिए मैं लिफ्ट का इस्तेमाल करता हूँ। सीढ़ियों से दौड़कर नीचे आना खतरनाक है।”

"क्या आप यह हर दिन करते हैं?"

नहीं, काम की वजह से मैं बहुत व्यस्त रहता हूँ। मैं सप्ताहांत में कुछ चक्कर लगाता हूँ। अगर मुझे काम से जल्दी छुट्टी मिल जाती है, तो मैं कभी-कभी सप्ताह के दौरान दौड़ लगाता हूँ।

“क्या आप इसी इमारत में रहते हैं?”
“ज़रूर,” धावक ने कहा। “सत्रहवीं मंज़िल पर।”
"मैं सोच रहा था कि क्या आप श्री कुरुमिज़ावा को जानते हैं, जो छब्बीसवीं मंजिल पर रहते हैं?"
"मिस्टर कुरुमिज़ावा?"
“वह एक स्टॉकब्रोकर है, धातु के फ्रेम वाले अरमानी चश्मे पहनता है, और हमेशा सीढ़ियों का इस्तेमाल करता है। लंबाई पांच फीट आठ इंच, उम्र चालीस साल।”
धावक ने कुछ देर सोचा। “हाँ, मैं उस आदमी को जानता हूँ। मैंने उससे एक बार बात की थी। दौड़ते समय कभी-कभी सीढ़ियों पर उससे मुलाकात हो जाती है। मैंने उसे सोफे पर बैठे देखा है। वह उन लोगों में से एक है जो लिफ्ट से नफरत करते हैं इसलिए सीढ़ियों का इस्तेमाल करते हैं, है ना?”
“हाँ, वही आदमी,” मैंने जवाब दिया। “उसके अलावा, क्या और भी बहुत से लोग हैं जो हर दिन सीढ़ियों का इस्तेमाल करते हैं?”
“हाँ, हैं,” उन्होंने कहा। “शायद उतने ज़्यादा नहीं, लेकिन कुछ तो नियमित आने वाले हैं। ऐसे लोग जिन्हें लिफ्ट का इस्तेमाल करना पसंद नहीं है। और मैंने दो और लोगों को देखा है जो मेरी तरह सीढ़ियों से दौड़ते हुए ऊपर जाते हैं। यहाँ आसपास कोई अच्छा जॉगिंग कोर्स नहीं है, इसलिए हम सीढ़ियों का इस्तेमाल करते हैं। कुछ लोग व्यायाम के लिए भी सीढ़ियों से ऊपर जाते हैं। मुझे लगता है कि ज़्यादातर अपार्टमेंट इमारतों की तुलना में यहाँ की सीढ़ियों का इस्तेमाल ज़्यादा लोग करते हैं—ये बहुत अच्छी रोशनी वाली, विशाल और साफ़-सुथरी हैं।”
क्या आपको इनमें से किसी का नाम पता है?
“मुझे अफसोस है कि मैं उन्हें नहीं जानता,” धावक ने कहा। “मैं बस उनके चेहरे जानता हूँ। जब हम एक-दूसरे के पास से गुजरते हैं तो नमस्ते करते हैं, लेकिन मैं उनके नाम नहीं जानता। यह बहुत बड़ी इमारत है।”
“ठीक है। अच्छा, आपके समय के लिए धन्यवाद,” मैंने कहा। “आपको इतनी देर तक रोकने के लिए क्षमा करें। और जॉगिंग के लिए शुभकामनाएँ।”

उस व्यक्ति ने अपनी स्टॉपवॉच का बटन दबाया और फिर से दौड़ना शुरू कर दिया।



मंगलवार को जब मैं सोफे पर बैठा था, तभी एक बूढ़ा आदमी सीढ़ियों से नीचे आया। मेरी राय में, वह लगभग सत्तर के आसपास का था, उसके बाल सफ़ेद थे और उसने चश्मा पहना हुआ था। उसने सैंडल, ग्रे रंग की पैंट और लंबी बाजू की कमीज़ पहनी हुई थी। उसके कपड़े एकदम साफ़ और इस्त्री किए हुए थे। वह लंबा था और उसका शरीर सुडौल था। मुझे वह हाल ही में सेवानिवृत्त हुए किसी प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य जैसा लगा।

“हैलो,” उसने कहा।

मैंने जवाब दिया, "हैलो।"

"क्या आपको कोई आपत्ति है अगर मैं यहां सिगरेट पी लूं?"

“बिल्कुल नहीं,” मैंने कहा। “आप बेझिझक आगे बढ़ सकते हैं।”

बूढ़ा आदमी मेरे बगल में बैठ गया और अपनी पतलून की जेब से सेवन स्टार्स सिगरेट का एक पैकेट निकाला। उसने माचिस जलाई, सिगरेट को हवा में उछाला, फिर माचिस बुझाकर उसे ऐशट्रे में रख दिया।

“मैं छब्बीसवीं मंजिल पर रहता हूँ,” उसने धीरे-धीरे धुआँ छोड़ते हुए कहा। “अपने बेटे और उसकी पत्नी के साथ। वे कहते हैं कि यहाँ बहुत धुआँ रहता है, इसलिए जब भी मुझे सिगरेट पीने का मन होता है, मैं यहीं आ जाता हूँ। क्या आप सिगरेट पीते हैं?”

मैंने उससे कहा, "मैंने बारह साल पहले नौकरी छोड़ दी थी।"

“मुझे भी छोड़ देना चाहिए,” बूढ़े आदमी ने कहा। “मैं दिन में बस दो-तीन सिगरेट पीता हूँ, इसलिए यह ज़्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए। लेकिन, आप जानते हैं, सिगरेट खरीदने के लिए दुकान जाना, यहाँ आकर सिगरेट पीना—इससे समय आसानी से कट जाता है। इससे मैं थोड़ा हिल-डुल पाता हूँ और ज़्यादा सोचने से भी बच जाता हूँ।”

मैंने कहा, "आप अपनी सेहत के लिए सिगरेट पीते रहते हैं, यही आप कह रहे हैं।"

“बिल्कुल सही,” बूढ़े आदमी ने गंभीर भाव से कहा।

“आपने कहा कि आप छब्बीसवीं मंजिल पर रहते हैं?”

"हाँ।"
"क्या आप 2609 में रहने वाले श्री कुरुमिज़ावा को जानते हैं?"
“हाँ, मैं जानता हूँ। वह चश्मा पहनता है और मुझे लगता है कि वह सैलोमन ब्रदर्स में काम करता है?”
मैंने उसे सुधारते हुए कहा, "मर्ल लिंच।"
“जी हां—मेरिल लिंच,” बूढ़े आदमी ने कहा। “मैंने उनसे यहां बात की है। वे कभी-कभी इस सोफे का इस्तेमाल करते हैं।”
वह यहाँ क्या करता है?
मुझे सच में नहीं पता। वह बस यहाँ बैठा रहता है, खाली जगह को घूरता रहता है। मुझे नहीं लगता कि वह सिगरेट पीता है।
"ऐसा लग रहा है जैसे वह किसी बात पर सोच रहा हो?"
“मुझे यकीन नहीं है कि मैं खाली जगह को घूरने और सोचने के बीच फर्क बता पाऊँगा। हम आमतौर पर हर समय सोचते रहते हैं, है ना? ऐसा नहीं है कि हम सोचने के लिए जीते हैं, लेकिन इसका उल्टा भी सच नहीं है—कि हम जीने के लिए सोचते हैं। मेरा मानना है, डेसकार्टेस के विपरीत, कि हम कभी-कभी अस्तित्वहीन होने के लिए सोचते हैं। खाली जगह को घूरने का शायद अनजाने में उल्टा असर हो सकता है। खैर, यह एक मुश्किल सवाल है।”
बूढ़े आदमी ने सिगरेट का एक लंबा कश लिया।
मैंने पूछा, "क्या श्री कुरुमिज़ावा ने कभी काम या घर पर किसी समस्या का जिक्र किया था?"
बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया और सिगरेट को ऐशट्रे में गिरा दिया। “जैसा कि आप जानते ही होंगे, पानी हमेशा बहने के लिए सबसे छोटा रास्ता चुनता है। हालांकि, कभी-कभी सबसे छोटा रास्ता खुद पानी ही बना लेता है। इंसानी सोच भी कुछ इसी तरह की होती है। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है। लेकिन मैंने आपके सवाल का जवाब नहीं दिया। श्री कुरुमिज़ावा और मैंने कभी भी इतनी गहरी बातों पर चर्चा नहीं की। हम बस बातें करते रहे—मौसम के बारे में, अपार्टमेंट एसोसिएशन के नियमों के बारे में, ऐसी ही कुछ बातों के बारे में।”
“मैं समझता हूँ। आपका समय लेने के लिए क्षमा करें,” मैंने कहा।

“कभी-कभी हमें शब्दों की ज़रूरत नहीं होती,” बूढ़े आदमी ने ऐसे कहा जैसे उसने मेरी बात सुनी ही न हो। “बल्कि, शब्दों को हमारी ज़रूरत होती है। अगर हम न रहें, तो शब्द अपना पूरा महत्व खो देंगे। क्या आपको ऐसा नहीं लगता? वे ऐसे शब्द बनकर रह जाएंगे जो कभी बोले ही नहीं जाते, और जो शब्द बोले ही नहीं जाते, वे शब्द नहीं रह जाते।”

“बिल्कुल सही,” मैंने कहा। “यह एक तरह से ज़ेन कोआन जैसा है।”

“हाँ, बिल्कुल,” बूढ़े आदमी ने सिर हिलाते हुए कहा और अपने अपार्टमेंट में वापस जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। “अपना ख्याल रखना,” उसने कहा।

मैंने जवाब दिया, "अलविदा।"



अगले शुक्रवार की दोपहर दो बजे के बाद, जब मैं पच्चीसवीं और छब्बीसवीं मंजिल के बीच वाले गलियारे की ओर जा रहा था, तो मैंने एक छोटी बच्ची को सोफे पर बैठे हुए, आईने में खुद को निहारते हुए गाना गाते हुए देखा। वह प्राथमिक विद्यालय में दाखिला लेने लायक उम्र की लग रही थी। उसने गुलाबी टी-शर्ट और डेनिम शॉर्ट्स पहने हुए थे, उसकी पीठ पर हरे रंग का बैग था और उसकी गोद में एक टोपी थी।

मैंने कहा, "नमस्ते।"

“हाय,” उसने कहा और गाना बंद कर दिया।

मैं उसके बगल में सोफे पर बैठना चाहता था, लेकिन अगर कोई वहां से गुजरता और हमें देख लेता तो उसे लग सकता था कि कुछ अजीब हो रहा है, इसलिए मैंने खिड़की की चौखट पर झुककर, हम दोनों के बीच दूरी बनाए रखी।

मैंने पूछा, "क्या स्कूल खत्म हो गया?"

"मैं स्कूल के बारे में बात नहीं करना चाहती," उसने स्पष्ट शब्दों में कहा।

“ठीक है, तो फिर हम नहीं करेंगे,” मैंने कहा। “क्या आप इसी इमारत में रहते हैं?”

“हां,” उसने कहा। “सत्ताईसवीं मंजिल पर।”

"आप पूरा रास्ता पैदल तो नहीं चढ़ते, है ना?"

“लिफ्ट में बदबू आ रही है,” लड़की ने कहा। “लिफ्ट में बदबू आ रही है, इसलिए मैं 27 वीं मंजिल तक पैदल जा रही हूँ।” उसने शीशे में खुद को देखा और सिर हिलाकर सहमति जताई। “हमेशा नहीं, लेकिन कभी-कभी।”

क्या तुम थकते नहीं हो?

उसने कोई जवाब नहीं दिया। “जानती हो? सीढ़ियों में लगे सभी दर्पणों में से, यह वाला सबसे अच्छा प्रतिबिंब दिखाता है। यह हमारे अपार्टमेंट के दर्पणों जैसा बिल्कुल नहीं है।”

आपका क्या मतलब है?

“आप खुद ही देख लीजिए,” छोटी बच्ची ने कहा।

मैंने एक कदम आगे बढ़ाया, आईने के सामने खड़ी हुई और कुछ देर तक अपनी परछाई को देखती रही। और वाकई, आईने में दिख रही मेरी छवि उससे बिल्कुल अलग थी जिसे मैं देखने की आदी थी। आईने में दिख रही मैं पहले से ज़्यादा गोल-मटोल और खुश लग रही थी। मानो मैंने अभी-अभी गरमागरम पैनकेक का ढेर चट कर दिया हो।

“क्या आपके पास कुत्ता है?” छोटी बच्ची ने पूछा।

“नहीं, मेरे पास नहीं हैं। मेरे पास कुछ उष्णकटिबंधीय मछलियाँ हैं।”

“हम्म,” उसने कहा। उष्णकटिबंधीय मछलियों में उसकी रुचि न के बराबर प्रतीत होती थी।

मैंने पूछा, "क्या आपको कुत्ते पसंद हैं?"

उसने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि एक अलग सवाल पूछा। "क्या आपके कोई बच्चे हैं?"

“नहीं, मैं नहीं करता,” मैंने उत्तर दिया।

उसने मुझे शक की निगाहों से देखा। "माँ कहती हैं कि जिन पुरुषों के बच्चे नहीं होते उनसे कभी बात मत करो। माँ कहती हैं कि हो सकता है वे अजीब हों।"

मैंने कहा, "ज़रूरी नहीं, हालांकि मैं तुम्हारी माँ की इस बात से सहमत हूँ कि तुम्हें अनजान पुरुषों से बात करते समय सावधान रहना चाहिए।"

लेकिन मुझे नहीं लगता कि तुम अजीब हो।

मुझे भी नहीं पता।

"तुम मुझे अपना लिंग तो नहीं दिखाने वाले हो ना?"

"नहीं।"

"और आप छोटी बच्चियों की अंडरपैंटें इकट्ठा नहीं करते?"

"बिलकुल नहीं।"

"क्या आप कुछ एकत्रित करते हैं?'

मुझे इस बारे में सोचना पड़ा। मैं आधुनिक कविता के प्रथम संस्करणों का संग्रह तो करता हूँ, लेकिन यहाँ उस बात का ज़िक्र करने से कोई फायदा नहीं होगा। "नहीं, मैं तो कुछ भी संग्रह नहीं करता। आपका क्या ख्याल है?"

लड़की ने कुछ देर सोचा और दो-तीन बार सिर हिलाया। "मैं भी कुछ इकट्ठा नहीं करती।"

हम कुछ पल के लिए चुप रहे।

"अरे, मिस्टर डोनट में आपको कौन सा डोनट सबसे ज्यादा पसंद है?"

मैंने तुरंत कहा, "पुराने जमाने का।"

“मुझे वो वाला नहीं पता,” लड़की ने कहा। “तुम्हें पता है मुझे कौन से पसंद हैं? मुझे फुल मून और बनी व्हिप पसंद हैं।”

मैंने इनके बारे में कभी नहीं सुना।

“ये वो मिठाइयाँ हैं जिनमें फल या मीठी फलियों का पेस्ट भरा होता है। ये बहुत बढ़िया होती हैं। लेकिन माँ कहती हैं कि अगर हर समय मिठाई खाते रहोगे तो मंदबुद्धि हो जाओगे, इसलिए वो मेरे लिए ज़्यादा मिठाइयाँ नहीं खरीदतीं।”

मैंने कहा, "ये तो स्वादिष्ट लग रहे हैं।"

“तुम यहाँ क्या कर रहे हो? मैंने तुम्हें कल देखा था,” लड़की ने कहा।

मैं कुछ ढूंढ रहा हूँ।

"यह क्या है?"

मैंने स्वीकार किया, "मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है। मुझे लगता है कि यह एक दरवाजे जैसा होगा।"

“एक दरवाजा?” छोटी बच्ची ने दोहराया। “किस तरह का दरवाजा? दरवाजे तो हर आकार और रंग के होते हैं।”

मैंने इस बारे में सोचा। किस तरह का आकार और रंग होगा? अब याद आया, मैंने कभी दरवाजों के आकार और रंग के बारे में सोचा ही नहीं था। "मुझे नहीं पता। मुझे आश्चर्य है कि इसका आकार और रंग क्या हो सकता है। शायद यह दरवाजा ही न हो।"

"तुम्हारा मतलब है कि शायद यह कोई छाता या ऐसी ही कोई चीज है?"

“एक छाता?” मैंने कहा। “हम्म। मुझे लगता है कि यह छाता ही हो सकता है।”

लेकिन छतरियां और दरवाजे अलग-अलग आकार और माप के होते हैं, और उनका काम भी अलग-अलग होता है।

“बिल्कुल सही। लेकिन मुझे यकीन है कि मैं इसे देखते ही पहचान लूंगा। जैसे, ‘अरे! यही तो है!’ चाहे वह छाता हो, दरवाजा हो या फिर डोनट ही क्यों न हो।”

“हम्म,” छोटी बच्ची ने कहा। “क्या आप बहुत देर से ढूंढ रहे हैं?”

“बहुत लंबे समय से। तुम्हारे जन्म से भी पहले से।”

“क्या सच में?” छोटी बच्ची ने अपनी हथेली को कुछ देर तक घूरते हुए कहा। “मैं इसे ढूंढने में आपकी मदद करूं?”

मैंने कहा, "मुझे यह बहुत अच्छा लगेगा।"

"तो मुझे कुछ ढूंढना चाहिए, मुझे नहीं पता कि वह क्या है लेकिन शायद वह दरवाजा हो, छाता हो, डोनट हो या हाथी हो?"

“बिल्कुल सही,” मैंने कहा। “लेकिन जब आप इसे देखेंगे तो आपको पता चल जाएगा कि यही वह चीज है।”

“मज़ेदार लग रहा है,” उसने कहा। “लेकिन मुझे अब घर जाना होगा। मेरी बैले की क्लास है।”

मैंने कहा, "फिर मिलेंगे। मुझसे बात करने के लिए धन्यवाद।"

"मुझे फिर से उस डोनट का नाम बताओ जो तुम्हें पसंद है?"

“पुराने जमाने का।”

माथे पर शिकन लिए लड़की बार-बार "पुराने ज़माने का" शब्द दोहराती रही। फिर वह खड़ी हुई और गाते हुए सीढ़ियों से ऊपर चली गई। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं, एक बार फिर खुद को उस प्रवाह में बहने दिया, समय को व्यर्थ ही बीतने दिया।



एक शनिवार की सुबह मुझे मेरे क्लाइंट का फोन आया।
“मेरे पति मिल गए हैं,” उन्होंने अभिवादन किए बिना कहना शुरू किया। “कल दोपहर करीब 12 बजे पुलिस ने मुझसे संपर्क किया। उन्होंने उन्हें सेंडाई स्टेशन के वेटिंग रूम में एक बेंच पर सोते हुए पाया। उनके पास न तो पैसे थे और न ही कोई पहचान पत्र, लेकिन थोड़ी देर बाद उन्हें अपना नाम, पता और फोन नंबर याद आ गया। मैं तुरंत सेंडाई के लिए रवाना हो गई। ये मेरे पति ही हैं।”
मैंने उससे पूछा, "लेकिन वह सेंडाई में क्यों होगा?"
“उसे बिलकुल भी पता नहीं कि वह वहाँ कैसे पहुँचा। वह सेंडाई स्टेशन पर एक बेंच पर जागा, जहाँ एक रेलवे कर्मचारी उसका कंधा हिला रहा था। बिना पैसे के वह सेंडाई तक कैसे पहुँचा, पिछले बीस दिनों में उसने कैसे खाया—उसे कुछ भी याद नहीं है।”
“उसने क्या पहना था?”
“उसने वही कपड़े पहने हुए थे जो उसने हमारे अपार्टमेंट से निकलते समय पहने थे। उसकी दाढ़ी थी और उसका वजन बीस पाउंड से भी ज्यादा कम हो गया था। उसने अपना चश्मा भी कहीं खो दिया था। मैं अभी सेंडाई के एक अस्पताल से फोन कर रही हूँ। वहाँ कुछ जाँचें हो रही हैं। कैट स्कैन, एक्स-रे, न्यूरोलॉजिकल जाँचें। लेकिन उसका दिमाग पूरी तरह से ठीक लग रहा है, और शारीरिक रूप से भी उसमें कोई खराबी नहीं है। लेकिन उसकी याददाश्त चली गई है। उसे अपनी माँ के घर से निकलकर सीढ़ियाँ चढ़ना याद है, लेकिन उसके बाद कुछ नहीं। खैर, हम कल टोक्यो वापस आ सकेंगे।”
"ये तो अच्छी खबर है।"
"उसे ढूंढने के लिए आपने जो भी प्रयास किए हैं, उसके लिए मैं वास्तव में आपका आभारी हूं। लेकिन अब जब मामला इस तरह सामने आ गया है, तो मुझे आगे जांच जारी रखने के लिए आपकी आवश्यकता नहीं है।"
मैंने कहा, "मुझे नहीं लगता।"
"यह सब कुछ बहुत ही अजीब और समझ से परे रहा है, लेकिन कम से कम मेरे पति सुरक्षित और स्वस्थ वापस आ गए हैं, और यही सबसे महत्वपूर्ण है।"
“बिल्कुल,” मैंने कहा। “यही तो महत्वपूर्ण है।”

"क्या अब आप वाकई में इस बात को लेकर आश्वस्त हैं कि आप अपनी सेवाओं के बदले कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे?"

“जैसा कि मैंने आपसे पहली मुलाकात में कहा था, मैं किसी भी प्रकार का भुगतान स्वीकार नहीं कर सकता। इसलिए कृपया इस बारे में चिंता न करें। हालांकि, मैं आपकी भावना की सराहना करता हूं।”

खामोशी। एक ताजगी भरी खामोशी, जिससे यह आभास हुआ कि हम आपसी समझ पर पहुँच गए हैं। मैंने भी इस खामोशी को संजोने में अपनी भूमिका निभाई और शांति का आनंद लिया।

"तो अपना ख्याल रखना," महिला ने अंत में कहा और फोन काट दिया, उसकी आवाज में सहानुभूति का भाव झलक रहा था।

मैंने फ़ोन नीचे रख दिया। कुछ देर मैं वहीं बैठा रहा, एक नई पेंसिल को धीरे-धीरे घुमाता रहा, और अपने सामने रखे खाली मेमोपैड को देखता रहा। वह सफ़ेद पैड मुझे धुली हुई चादर की याद दिला रहा था, जो अभी-अभी कपड़े धोने के बाद वापस आई थी। उस चादर को देखकर मुझे एक कैलिको बिल्ली की याद आई जो उस पर आराम से झपकी ले रही थी। धुली हुई चादर पर झपकी लेती बिल्ली की उस छवि ने मुझे सुकून दिया। मैंने अपनी याददाश्त खंगालना शुरू किया और उस महिला द्वारा कही गई सभी महत्वपूर्ण बातों को एक-एक करके अपने मेमोपैड पर ध्यान से लिख लिया: सेंडाई स्टेशन, शुक्रवार दोपहर के आसपास, टेलीफ़ोन, बीस पाउंड वज़न कम होना, वही कपड़े, चश्मा खो जाना, बीस दिन बीत जाने की याद।

बीते बीस दिनों की याद।

मैंने पेंसिल को मेज पर रख दिया, कुर्सी पर पीछे झुक गया और छत को घूरने लगा। छत की पट्टियों पर जगह-जगह कुछ अनियमित धब्बे थे, और अगर मैं ध्यान से देखता तो वह किसी खगोलीय मानचित्र जैसा दिखता था। मैं उस काल्पनिक तारों भरी रात को निहारता रहा और सोचने लगा कि शायद मुझे अपनी सेहत के लिए फिर से सिगरेट पीना शुरू कर देना चाहिए। मेरे दिमाग में सीढ़ियों पर उस महिला की ऊँची एड़ी के जूतों की आवाज़ गूँज रही थी।

“श्री कुरुमिज़ावा,” मैंने छत के एक कोने की ओर देखते हुए ज़ोर से कहा। “वास्तविक दुनिया में आपका स्वागत है। आपकी खूबसूरत त्रिकोणीय दुनिया के तीन पहलुओं में आपका स्वागत है—आपकी घबराहट के दौरे से ग्रस्त माँ, आपकी पत्नी, अपनी ऊँची एड़ी के जूतों के साथ, और पुराने ज़माने के मेरिल लिंच।”

मुझे लगता है कि मेरी खोज जारी रहेगी—कहीं न कहीं। किसी ऐसी चीज़ की खोज जो शायद दरवाजे जैसी हो। या शायद छाते जैसी, या डोनट जैसी। या हाथी जैसी। एक ऐसी खोज, जिसकी मुझे उम्मीद है, मुझे वहाँ ले जाएगी जहाँ मुझे वह मिलने की संभावना है।

— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

गुर्दे के आकार का वह पथरी जो हर दिन हिलता है

जब जुनपेई सोलह वर्ष का था, तब उसके पिता ने ये बातें कहीं। सच है, वे पिता-पुत्र थे; उनकी रगों में एक ही खून बहता था। लेकिन वे इतने करीब नहीं थे कि एक-दूसरे से अपने दिल की बात कह सकें, और जुनपेई के पिता का उसे जीवन के बारे में ऐसे विचार बताना बहुत ही दुर्लभ था जिन्हें (शायद) दार्शनिक कहा जा सके। इसलिए उस दिन की बातचीत उसे लंबे समय तक एक जीवंत स्मृति बनकर याद रही, जबकि वह उस बातचीत के पीछे का कारण भूल चुका था।

“जीवन में एक पुरुष जिन महिलाओं से मिलता है, उनमें से केवल तीन ही उसके लिए वास्तविक मायने रखती हैं। न ज़्यादा, न कम,” उसके पिता ने कहा—या यूँ कहें कि उन्होंने घोषणा कर दी। उन्होंने शांत भाव से, लेकिन पूरे विश्वास के साथ कहा, मानो वे यह बता रहे हों कि पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर घूमने में एक वर्ष लगता है। जुन्पेई चुपचाप सुनता रहा, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उसके पिता की घोषणा इतनी अप्रत्याशित थी; वह उस क्षण कुछ कह नहीं पा रहा था।

“भविष्य में तुम्हारा कई महिलाओं से संबंध बनेगा,” उसके पिता ने आगे कहा, “लेकिन अगर कोई महिला तुम्हारे लिए सही नहीं है, तो तुम अपना समय बर्बाद करोगे। मैं चाहता हूं कि तुम यह बात याद रखो।”

बाद में, जुन्पेई के छोटे से मन में कई सवाल उठे: क्या मेरे पिता अपनी तीनों पत्नियों से मिल चुके हैं? क्या मेरी माँ उनमें से एक हैं? और अगर हाँ, तो बाकी दो का क्या हुआ? लेकिन वह अपने पिता से ये सवाल नहीं पूछ सका। जैसा कि पहले बताया गया है, दोनों के बीच इतने घनिष्ठ संबंध नहीं थे कि वे एक-दूसरे से खुलकर दिल की बात कर सकें।

जुनपेई अठारह साल की उम्र में घर छोड़कर टोक्यो के कॉलेज में पढ़ने चला गया और कई महिलाओं के साथ उसके संबंध रहे, जिनमें से एक उसके लिए "वास्तविक रूप से महत्वपूर्ण" थी। उस समय उसे इस बात का पूरा यकीन था और आज भी उतना ही यकीन है। लेकिन इससे पहले कि वह अपनी भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाता (स्वभाव से, उसे चीजों को ठोस रूप देने में दूसरों से अधिक समय लगता था), उस महिला ने उसके सबसे अच्छे दोस्त से शादी कर ली और तब से वह माँ बन चुकी है। इसलिए, फिलहाल उसे जुनपेई के

जीवन में मौजूद संभावनाओं की सूची से हटाना पड़ा। उसे अपना दिल कठोर करना पड़ा और उसे अपने मन से निकालना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप उसके जीवन में "वास्तविक रूप से महत्वपूर्ण" हो सकने वाली महिलाओं की संख्या - अगर वह अपने पिता के सिद्धांत को अक्षरशः स्वीकार करता - घटकर दो रह गई।

उसके बाद जब भी जुन्पेई किसी नई महिला से मिलता, वह खुद से पूछता, क्या यह ऐसी महिला है जिसका मेरे लिए कोई वास्तविक महत्व है? और यह सवाल उसे दुविधा में डाल देता। क्योंकि वह उम्मीद करता रहता (आखिर कौन नहीं करता?) कि उसे कोई ऐसी महिला मिलेगी जिसका उसके लिए कोई वास्तविक महत्व होगा, लेकिन साथ ही साथ वह अपने बचे हुए कुछ अवसरों को भी बर्बाद करने से डरता था। अपनी पहली ही मुलाकात में किसी महत्वपूर्ण साथी से जुड़ने में असफल रहने के बाद, जुन्पेई ने सही समय पर और सही तरीके से प्रेम को प्रकट करने की अपनी क्षमता—जो कि अत्यंत महत्वपूर्ण क्षमता है—पर से विश्वास खो दिया था। शायद मैं उस तरह का इंसान हूँ जो जीवन की सभी व्यर्थ चीजों को तो हासिल कर लेता है, लेकिन वास्तव में महत्वपूर्ण चीजों को हाथ से फिसलने देता है। जब भी यह विचार उसके मन में आता—जो अक्सर होता था—उसका दिल एक ऐसी जगह डूब जाता जहाँ प्रकाश और गर्माहट का अभाव होता था।

और इसलिए, जब वह किसी नई महिला के साथ कुछ महीने बिता लेता, और अगर उसे उसके चरित्र या व्यवहार में कोई ऐसी बात नज़र आने लगती, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, जो उसे नापसंद हो या उसे चुभती, तो उसके दिल के किसी कोने में उसे राहत का एहसास होता। नतीजतन, एक के बाद एक महिलाओं के साथ फीके, अनिश्चित रिश्ते बनाए रखना उसकी जीवनशैली का हिस्सा बन गया। वह किसी महिला के साथ तब तक रहता, मानो स्थिति का जायज़ा ले रहा हो, जब तक कि किसी समय वह रिश्ता अपने आप खत्म न हो जाए। ब्रेकअप में कभी कोई मनमुटाव या झगड़ा नहीं होता था, क्योंकि वह कभी ऐसी महिलाओं के साथ नहीं जुड़ता था जिनसे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो। देखते ही देखते, उसे सुविधाजनक साथी चुनने की एक खास समझ विकसित हो गई थी।

जुन्पेई खुद भी इस बात को लेकर अनिश्चित था कि यह शक्ति उसके जन्मजात स्वभाव से उपजी है या उसके परिवेश के प्रभाव से। यदि परिवेश का प्रभाव था, तो यह उसके पिता के

श्राप का परिणाम हो सकता था। कॉलेज से स्नातक होने के समय के आसपास, उसका अपने पिता से ज़बरदस्त झगड़ा हुआ और उसने उनसे सारे संपर्क तोड़ दिए, लेकिन उसके पिता का "तीन महिलाओं" वाला सिद्धांत, जिसका आधार कभी पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हुआ, उसके जीवन में एक तरह का जुनून बनकर घर कर गया। एक समय तो उसने मज़ाक में समलैंगिक बनने का भी विचार किया: शायद तब वह इस मूर्खतापूर्ण उलटी गिनती से मुक्त हो सके। लेकिन चाहे अच्छा हो या बुरा, जुन्पेई की यौन रुचि केवल महिलाओं में ही थी।

जुनपेई की मुलाकात जिस अगली महिला से हुई, उसे जल्द ही पता चला कि वह उससे उम्र में बड़ी थी। छत्तीस साल की। जुनपेई इकत्तीस साल का था। उसका एक परिचित टोक्यो के मध्य से बाहर जाने वाली एक गली में एक छोटा सा फ्रेंच रेस्टोरेंट खोल रहा था, और जुनपेई को पार्टी में आमंत्रित किया गया था। उसने गहरे नीले रेशम की पेरी एलिस शर्ट और उसी रंग का समर स्पोर्ट कोट पहना था। उसने पार्टी में एक करीबी दोस्त से मिलने की योजना बनाई थी, लेकिन दोस्त ने आखिरी समय में आने से मना कर दिया, जिससे जुनपेई को समय बिताने का मौका मिल गया। वह बार में अकेले बैठकर बॉरडॉक्स वाइन का एक बड़ा गिलास पी रहा था। जब वह जाने के लिए तैयार हुआ और मालिक को अलविदा कहने के लिए भीड़ में नज़रें गड़ाने लगा, तभी एक लंबी महिला उसके पास आई, जिसके हाथ में किसी तरह का बैंगनी रंग का कॉकटेल था। उसे देखते ही जुनपेई के मन में पहला विचार आया, "वाह, कितनी खूबसूरत महिला है!"

“वहाँ किसी ने मुझे बताया कि आप एक लेखक हैं। क्या यह सच है?” उसने बार पर कोहनी टिकाते हुए पूछा।

“मुझे लगता है, एक तरह से,” जुन्पेई ने जवाब दिया।

"एक तरह से लेखक।"

जुन्पेई ने सिर हिलाया।

आपने कितनी किताबें प्रकाशित की हैं?

“लघु कथाओं के दो संग्रह और एक पुस्तक जिसका मैंने अनुवाद किया। इनमें से किसी की भी ज्यादा बिक्री नहीं हुई।”

उसने उसे सिर से पैर तक सरसरी तौर पर देखा और स्पष्ट संतुष्टि के साथ मुस्कुराई।

खैर, फिर भी, आप पहले सच्चे लेखक हैं जिनसे मैं मिला हूँ।

“यह थोड़ा निराशाजनक हो सकता है,” जुन्पेई ने कहा। “लेखकों के पास देने के लिए कोई खास प्रतिभा नहीं होती। एक पियानोवादक आपको धुन सुना सकता है। एक चित्रकार आपके लिए रेखाचित्र बना सकता है। एक जादूगर एक-दो करतब दिखा सकता है। एक लेखक के पास करने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं होता।”

"ओह, मुझे नहीं पता, शायद मैं बस आपकी कलात्मक आभा का आनंद ले सकूँ या कुछ और।"

“कलात्मक आभा?” जुन्पेई ने कहा।

“एक विशेष आभा, जो आम लोगों में नहीं पाई जाती?”

"मैं हर सुबह शेविंग करते समय शीशे में अपना चेहरा देखता हूं, लेकिन मैंने पहले कभी ऐसी कोई बात नोटिस नहीं की।"

उसने गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए पूछा, "आप किस प्रकार की कहानियाँ लिखते हैं?"

"लोग मुझसे यह सवाल अक्सर पूछते हैं, लेकिन मेरी कहानियों को 'प्रकार' के रूप में बताना मुश्किल है। वे किसी विशेष शैली में फिट नहीं बैठतीं।"

उसने अपनी कॉकटेल ग्लास के किनारे पर उंगली फेरते हुए कहा, "मुझे लगता है कि इसका मतलब है कि आप साहित्यिक कथा लिखते हैं?"

"मुझे लगता है कि ऐसा ही है। लेकिन आप इसे ऐसे कह रहे हैं जैसे आप 'चेन लेटर्स' कहते हैं।"

वह फिर मुस्कुराई। "क्या मैंने आपका नाम सुना?"

क्या आप साहित्यिक पत्रिकाएँ पढ़ते हैं?

उसने अपना सिर हल्के से, लेकिन तेज़ी से हिलाया।

“तो शायद आपने मुझे नहीं देखा होगा। मैं इतना मशहूर नहीं हूँ।”

"क्या आपको कभी अकुतागावा पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया है?"

"पांच साल में दो बार।"

लेकिन आप जीते नहीं?

जुन्पेई मुस्कुराई लेकिन कुछ नहीं बोली। बिना उसकी अनुमति लिए, वह उसके बगल वाले बार स्टूल पर बैठ गई और अपने कॉकटेल का बचा हुआ घूंट पीने लगी।

“अरे, क्या फर्क है?” उसने कहा। “ये पुरस्कार तो बस उद्योग जगत का एक हथकंडा हैं।”

"अगर मुझे यह बात किसी ऐसे व्यक्ति से सुनने को मिले जिसने वास्तव में पुरस्कार जीता हो, तो मुझे और अधिक यकीन होगा।"

उसने उसे अपना नाम बताया: किरी।

“कितना अजीब है,” उन्होंने कहा। “ऐसा लगता है जैसे किसी सामूहिक प्रार्थना में ‘काइरी’ का नाम लिया गया हो।”

जुन्पेई को लगा कि वह उससे एक इंच या उससे भी ज़्यादा लंबी होगी। उसके बाल छोटे थे, रंग गहरा सांवला था और सिर का आकार बहुत सुंदर था। उसने हल्के हरे रंग की लिनेन की जैकेट और घुटनों तक लंबी, फैली हुई स्कर्ट पहनी थी। जैकेट की आस्तीनें कोहनी तक मोड़ी हुई थीं। जैकेट के नीचे उसने एक साधारण सूती ब्लाउज़ पहना था, जिसके कॉलर पर एक छोटा सा फ़िरोज़ी ब्रोच लगा था। उसके स्तन न ज़्यादा उभरे हुए थे और न ज़्यादा छोटे। वह बड़े सलीके से कपड़े पहनती थी, और हालाँकि उसमें बनावटीपन नहीं था, फिर भी उसका पूरा पहनावा उसके व्यक्तित्व की झलक दिखाता था। उसके होंठ भरे हुए थे, और वाक्यों के अंत में वे फैलते या सिकुड़ते थे। इससे उसके पूरे व्यक्तित्व में एक अजीब सी जीवंतता और ताजगी आ जाती थी। जब भी वह किसी बात पर सोचती, उसके चौड़े माथे पर तीन समानांतर लकीरें बन जातीं, और सोचते-सोचते वे गायब हो जातीं।

जुन्पेई को एहसास हुआ कि वह उसकी ओर आकर्षित हो रहा है। उसके बारे में कुछ अवर्णनीय लेकिन लगातार बना रहने वाला आकर्षण उसे उत्तेजित कर रहा था, उसके दिल में एड्रेनालाईन का प्रवाह बढ़ा रहा था, जिससे उसका दिल छोटी-छोटी आवाज़ों के रूप में गुप्त संकेत भेजने लगा। अचानक उसे एहसास हुआ कि उसका गला सूख रहा है, इसलिए जुन्पेई ने पास से गुजर रहे वेटर से एक पेरिएर (एक प्रकार का पेय) मंगवाया और हमेशा की तरह खुद से पूछने लगा, क्या वह मेरे लिए सचमुच मायने रखती है? क्या वह बची हुई दो लड़कियों में से एक है? या वह मेरी दूसरी शिकार बनेगी? क्या मुझे उसे जाने देना चाहिए, या फिर कोशिश करनी चाहिए?

“क्या तुम हमेशा से लेखक बनना चाहती थी?” किरी ने पूछा।
"हम्म, बस इतना कहूँगी कि मैं इसके अलावा कुछ और बनना ही नहीं चाहती थी।"
तो, आपका सपना सच हो गया।
“मुझे आश्चर्य होता है। मैं एक उत्कृष्ट लेखक बनना चाहता था।” जुन्पेई ने अपने हाथों को लगभग एक फुट की दूरी पर फैलाया। “मुझे लगता है कि इन दोनों में काफी अंतर है।”
“हर किसी को कहीं न कहीं से शुरुआत करनी पड़ती है। आपका पूरा भविष्य आपके सामने है। पूर्णता रातोंरात नहीं मिलती।” फिर उसने पूछा, “आपकी उम्र कितनी है?”
तब उन्होंने एक-दूसरे को अपनी उम्र बताई। उम्र में बड़ा होना उसे ज़रा भी परेशान नहीं कर रहा था। जुन्पेई को भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। उसे जवान लड़कियों के मुकाबले परिपक्व महिलाएं पसंद थीं। ज़्यादातर मामलों में, बड़ी उम्र की महिला से रिश्ता तोड़ना आसान होता है।
“आप किस तरह का काम करते हैं?” उसने पूछा।
उसके होंठ एकदम सीधी रेखा में थे, और पहली बार उसके चेहरे पर गंभीरता का भाव आया। आपको क्या लगता है मैं किस तरह का काम करता हूँ?
जुन्पेई ने अपना गिलास हिलाया और उसमें मौजूद रेड वाइन को एक बार घुमाया। "क्या आप मुझे कोई संकेत दे सकते हैं?"
“कोई संकेत नहीं। क्या यह बताना इतना मुश्किल है? अवलोकन और निर्णय लेना आपका काम है।”
“ऐसा बिल्कुल नहीं है,” उन्होंने कहा। “एक लेखक का काम होता है बार-बार अवलोकन करना और निर्णय लेने को अंतिम क्षण तक टाल देना।”
“बिल्कुल,” उसने कहा। “ठीक है, तो ध्यान से देखो, बार-बार देखो, और फिर अपनी कल्पना का इस्तेमाल करो। इससे तुम्हारी पेशेवर नैतिकता पर कोई आंच तो नहीं आएगी?”
जुनपेई ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और किरी के चेहरे को नए सिरे से एकाग्रता से देखा, इस उम्मीद में कि उसे वहाँ कोई गुप्त संकेत मिल जाए। किरी ने सीधे उसकी आँखों में देखा, और जुनपेई ने सीधे उसकी आँखों में देखा।

कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने कहा, "ठीक है, बिना किसी ठोस आधार के, मेरा यही अनुमान है: आप किसी न किसी तरह के पेशेवर हैं। आपका काम हर कोई नहीं कर सकता। इसके लिए किसी विशेष प्रकार की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।"

"बिल्कुल सही! आप सही कह रहे हैं: जो मैं करता हूँ, वो हर कोई नहीं कर सकता। लेकिन थोड़ा और स्पष्ट करने की कोशिश कीजिए।"

"क्या इसका संगीत से कुछ लेना-देना है?"

"नहीं।"

"फैशन डिजाइन?"

"नहीं।"

"टेनिस?"

"नहीं," उसने कहा।

जुन्पेई ने सिर हिलाया। "खैर, तुम्हारा रंग गहरा है, तुम गठीले शरीर के हो, तुम्हारी बांहों में अच्छी खासी मांसपेशियां हैं। शायद तुम बहुत सारे आउटडोर खेल खेलते हो। मुझे नहीं लगता कि तुम कोई मजदूर हो। तुममें वैसी कोई झलक नहीं दिखती।"

किरी ने अपनी आस्तीनें ऊपर उठाईं, अपनी नंगी बाहों को काउंटर पर टिकाया और उन्हें पलटकर ध्यान से देखा। "लगता है तुम सही राह पर हो।"

लेकिन मैं अब भी आपको सही जवाब नहीं दे सकता।

"कुछ छोटे-छोटे राज़ रखना ज़रूरी है," किरी ने कहा। "मैं आपको आपके पेशेवर आनंद से वंचित नहीं करना चाहती—देखने और कल्पना करने से...लेकिन मैं आपको एक संकेत ज़रूर दूंगी। यह मेरे लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आपके लिए।"

"वही कैसे?"

"मेरा मतलब है, मेरा पेशा बिल्कुल वही है जो मैं बचपन से करना चाहती थी। बिल्कुल आपकी तरह। लेकिन यहाँ तक पहुँचना आसान नहीं था।"

"अच्छा," जुन्पेई ने कहा। "यह महत्वपूर्ण है। आपका काम प्रेम का प्रतीक होना चाहिए, न कि सुविधा का विवाह।"

“प्रेम का एक कार्य,” किरी ने कहा। ऐसा लग रहा था कि इन शब्दों ने उस पर गहरा प्रभाव डाला है। “यह एक अद्‌भुत उपमा है।”

“इस बीच, क्या आपको लगता है कि मैंने आपका नाम कहीं सुना होगा?” जुन्पेई ने पूछा।

“शायद नहीं,” उसने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। “मैं इतनी मशहूर नहीं हूँ।”

"खैर, हर किसी को कहीं न कहीं से शुरुआत करनी पड़ती है।"

“बिल्कुल सही,” किरी ने मुस्कुराते हुए कहा। फिर वह गंभीर हो गई। “मेरा मामला आपसे एक मायने में अलग है। मुझसे शुरू से ही पूर्णता की उम्मीद की जाती है। कोई गलती नहीं होनी चाहिए। या तो पूर्णता या कुछ नहीं। बीच का कोई रास्ता नहीं। कोई दूसरा मौका नहीं।”

मुझे लगता है कि यह एक और संकेत है।

"शायद।"

शैम्पेन की ट्रे लेकर घूमता हुआ एक वेटर उनके पास आया। उसने उससे दो गिलास लिए और एक गिलास जुन्पेई को दे दिया।

“वाह!” उसने कहा।

जुन्पेई ने कहा, "अपने-अपने विशेषज्ञता के क्षेत्रों में।"

उन्होंने हल्के और रहस्यमय ढंग से गिलास आपस में टकराए।

“वैसे,” उसने कहा, “क्या आप शादीशुदा हैं?”

जुन्पेई ने अपना सिर हिलाया।

"मैं भी नहीं," किरी ने कहा।



वह रात उसने जुन्पेई के कमरे में बिताई। उन्होंने शराब पी (रेस्तरां की ओर से उपहार), शारीरिक संबंध बनाए और सो गए। अगली सुबह जब जुन्पेई दस बजे उठा, तो वह जा चुकी थी, बस उसके बगल वाले तकिए पर एक धुंधली सी छाप और एक नोट छोड़ गई थी: "मुझे काम पर जाना है। अगर चाहो तो मुझसे संपर्क कर लेना।" उसने अपना मोबाइल नंबर भी साथ में दिया था।

उसने उसे फोन किया और अगले शनिवार को वे एक रेस्टोरेंट में डिनर करने गए। उन्होंने थोड़ी शराब पी, जुन्पेई के कमरे में शारीरिक संबंध बनाए और सो गए। अगली सुबह फिर वह गायब थी। रविवार था, लेकिन उसने एक और छोटा सा नोट छोड़ा: "मुझे काम पर जाना है, मैं जा रही हूँ।" जुन्पेई को अभी भी पता नहीं था कि किरी किस तरह का काम करती थी, लेकिन यह निश्चित था कि उसका काम सुबह जल्दी शुरू होता था। और—कम से कम कभी-कभी—वह रविवार को भी काम करती थी।

उन दोनों के पास बातचीत के लिए विषयों की कभी कमी नहीं होती थी। वह बहुत बुद्धिमान थीं और विभिन्न विषयों की जानकार थीं। उन्हें पढ़ना अच्छा लगता था, लेकिन आमतौर पर वे काल्पनिक कथाओं के अलावा जीवनी, इतिहास, मनोविज्ञान और लोकप्रिय विज्ञान जैसी किताबें पढ़ना पसंद करती थीं, और वह आश्चर्यजनक रूप से बहुत सारी जानकारी याद रख लेती थीं। एक बार, जुन्पेई उनके द्वारा निर्मित आवासों के इतिहास के विस्तृत ज्ञान को देखकर दंग रह गए।

“प्रीफैब्रिकेटेड हाउसिंग? आपका काम निर्माण या वास्तुकला से संबंधित होना चाहिए।”

“नहीं,” उसने कहा। “मुझे बस व्यावहारिक विषयों में रुचि होती है। बस इतना ही।”

हालांकि, उन्होंने जुन्पेई द्वारा प्रकाशित दो कहानी संग्रह पढ़े और उन्हें "अद्‌भुत—मेरी कल्पना से कहीं अधिक आनंददायक" पाया। सच कहूँ तो, मैं चिंतित थी। अगर मैं आपकी रचना पढ़ूँ और मुझे पसंद न आए तो मैं क्या करूँगी? मैं क्या कहूँगी? लेकिन चिंता की कोई बात नहीं थी। मुझे वे बहुत पसंद आए।

“यह सुनकर मुझे खुशी हुई,” जुन्पेई ने राहत भरी सांस लेते हुए कहा। जब उसने उसके अनुरोध पर उसे किताबें दी थीं, तब उसे भी यही चिंता थी।

“मैं ये सिर्फ़ आपको अच्छा महसूस कराने के लिए नहीं कह रही हूँ,” किरी ने कहा, “लेकिन आपमें कुछ खास बात है— वो खास बात जो एक उत्कृष्ट लेखक बनने के लिए ज़रूरी होती है। आपकी कहानियों में एक शांत भाव है, लेकिन उनमें से कई कहानियाँ काफ़ी जीवंत हैं, और शैली सुंदर है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात है आपका लेखन इतना संतुलित है। मेरे लिए, यही हमेशा सबसे महत्वपूर्ण बात होती है—संगीत में, कथा साहित्य में, चित्रकला में। जब भी मुझे कोई ऐसा काम या प्रस्तुति मिलती है जिसमें ये संतुलन नहीं होता—यानी जब भी मुझे

कोई घटिया, अधूरा काम मिलता है—तो मुझे बेचैनी होती है। जैसे चक्कर आने पर होता है। शायद इसीलिए मैं संगीत कार्यक्रमों में नहीं जाती और बहुत कम ही कोई कथा साहित्य पढ़ती हूँ।"

"क्योंकि आप असंतुलित चीजों का सामना नहीं करना चाहते?"

"बिल्कुल।"

और उस जोखिम से बचने के लिए, आप उपन्यास नहीं पढ़ते और संगीत कार्यक्रमों में नहीं जाते?

"यह सही है।"

मुझे तो यह कुछ ज्यादा ही अजीब लग रहा है।

मैं तुला राशि का हूं। मुझे असंतुलन बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होता। नहीं, ऐसा नहीं है कि मुझे यह बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होता, बल्कि—"

सही शब्द ढूंढने के लिए उसने अपना मुंह बंद कर लिया, लेकिन उसे शब्द नहीं मिले, बस कुछ झिझक भरी आहें भर दीं। "खैर, कोई बात नहीं," उसने आगे कहा। "मैं बस इतना कहना चाहती थी कि मुझे विश्वास है कि एक दिन तुम पूरे उपन्यास लिखोगे। और जब तुम ऐसा करोगे, तो तुम एक और भी महत्वपूर्ण लेखक बन जाओगे। इसमें थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन मुझे ऐसा ही लगता है।"

"नहीं, मैं जन्मजात लघु कथा लेखक हूँ," जुन्पेई ने रूखेपन से कहा। "उपन्यास लिखना मेरे बस की बात नहीं है।"

"फिर भी," उसने कहा।

जुन्पेई ने इस विषय पर और कुछ नहीं कहा। वह चुप रहा और एयर कंडीशनर से आती हवा को सुनता रहा। दरअसल, उसने कई बार उपन्यास लिखने की कोशिश की थी, लेकिन हमेशा बीच में ही अटक जाता था। कहानी को लंबे समय तक लिखने के लिए जिस एकाग्रता की ज़रूरत होती है, वह उसमें नहीं रह पाती थी। वह शुरू में आश्वस्त होता था कि वह कुछ अद्भुत लिखने जा रहा है। शैली जीवंत होती थी, और उसका भविष्य सुरक्षित लगता था। कहानी लगभग अपने आप ही आगे बढ़ती जाती थी। लेकिन जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता जाता,

उसकी ऊर्जा और चमक फीकी पड़ती जाती—पहले धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, जब तक कि वह किसी इंजन की तरह गति खोकर रुक न जाए, पूरी तरह से क्षीण न हो जाए।

वे दोनों बिस्तर पर थे। शरद ऋतु का मौसम था। लंबे, प्रेममय मिलन के बाद वे नग्न थे। किरी का कंधा जुन्पेई से सटा हुआ था, जिसकी बाहें उसके चारों ओर लिपटी हुई थीं। नाइटस्टैंड पर सफेद वाइन के दो गिलास रखे थे।

“जुन्पेई?”

"अहां।"

“तुम किसी और औरत से प्यार करते हो, है ना? कोई ऐसी जिसे तुम भूल नहीं सकते?”

“यह सच है,” जुन्पेई ने स्वीकार किया। “तुम्हें कैसे पता चला?”

“बिल्कुल,” उसने कहा। “महिलाएं ऐसी चीजों को लेकर बहुत संवेदनशील होती हैं।”

"मुझे यकीन है कि सभी महिलाएं ऐसी नहीं होतीं।"

मेरा मतलब सभी महिलाओं से नहीं है।

“नहीं, बिलकुल नहीं,” जुन्पेई ने कहा।

लेकिन आप उसे देख नहीं सकते?

"समस्याएं हैं।"

और क्या उन ‘समस्याओं’ का कोई समाधान संभव नहीं है?

“कोई नहीं,” जुन्पेई ने सिर हिलाते हुए कहा।

“ये तो काफी गहराई तक जाते हैं, है ना?”

मुझे नहीं पता कि वे कितने गहरे हैं, लेकिन वे वहां मौजूद हैं।

किरी ने थोड़ी सी शराब पी। "मेरे पास ऐसा कोई नहीं है," उसने लगभग धीमी आवाज़ में कहा। "मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूँ, जुन्पेई। तुम मुझे बहुत प्रभावित करते हो। जब हम इस तरह साथ होते हैं, तो मुझे बहुत खुशी और शांति महसूस होती है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं तुम्हारे साथ कोई गंभीर रिश्ता रखना चाहती हूँ। तुम्हें कैसा लगता है? राहत?"

जुन्पेई ने अपनी उंगलियाँ उसके बालों में फिराईं। उसके सवाल का जवाब देने के बजाय, उसने खुद ही एक सवाल पूछा। "ऐसा क्यों है?"

मैं तुम्हारे साथ क्यों नहीं रहना चाहता?

"अहां।"
"क्या यह आपको परेशान करता है?"
"थोड़ा।"
“मैं किसी के साथ भी गंभीर रोज़मर्रा का रिश्ता नहीं रख सकती। सिर्फ़ आपके साथ ही नहीं, किसी के साथ भी नहीं,” उसने कहा। “मैं पूरी तरह से अपने वर्तमान काम पर ध्यान केंद्रित करना चाहती हूँ। अगर मैं किसी के साथ रहती—अगर मेरा किसी के साथ गहरा भावनात्मक जुड़ाव होता—तो शायद मैं ऐसा न कर पाती। इसलिए मैं चीज़ों को जैसी हैं वैसी ही रखना चाहती हूँ।”
जुन्पेई ने एक पल के लिए इस बारे में सोचा। "तुम्हारा मतलब है कि तुम ध्यान भटकाना नहीं चाहते?"
"यह सही है।"
"अगर आपका ध्यान भटकता है, तो आप अपना संतुलन खो सकते हैं, और यह आपके करियर में बाधा साबित हो सकता है।"
"बिल्कुल।"
और इसलिए इस तरह के किसी भी जोखिम से बचने के लिए, आप किसी के साथ रहना नहीं चाहेंगे।
उसने सिर हिलाया। "जब तक मैं अपने वर्तमान पेशे में शामिल हूं, तब तक नहीं।"
"लेकिन तुम मुझे यह नहीं बताओगे कि वह क्या है।"
"अनुमान लगाना।"
तुम एक चोर हो।
“नहीं,” किरी ने गंभीर भाव से जवाब दिया, जो तुरंत हंसी में बदल गया। “कितना मजेदार अनुमान है! लेकिन एक चोर सुबह-सुबह काम पर नहीं जाता।”
तुम एक भाड़े के हत्यारे हो।
“किराए का हत्यारा,” उसने उसे सुधारते हुए कहा। “लेकिन नहीं। तुम ये घटिया विचार क्यों ला रहे हो?”
तो, आप जो करते हैं वह पूरी तरह से कानूनी है?

"बिल्कुल सही।"

"गुप्त करिन्दा?"

“नहीं। ठीक है, आज यहीं रुकते हैं। मैं आपके काम के बारे में बात करना चाहूँगा। मुझे बताइए कि आप अभी क्या लिख रहे हैं। क्या आप अभी कुछ लिख रहे हैं?”

“हां, एक लघु कहानी।”

“किस तरह की कहानी?”

मैंने इसे अभी तक पूरा नहीं किया है। मैं कुछ समय के लिए ब्रेक ले रहा हूँ।

तो मुझे बताओ कि ब्रेक तक क्या होता है।

जुन्पेई चुप हो गया। उसकी यह नीति थी कि वह किसी से भी अधूरी रचना के बारे में बात नहीं करता था। इससे कहानी पर बुरा असर पड़ सकता था। अगर वह उसे शब्दों में बयां करता और वो शब्द उसके मुंह से निकल जाते, तो कोई महत्वपूर्ण बात सुबह की ओस की तरह गायब हो जाती। अर्थ की सूक्ष्म बारीकियां एक धुंधली पृष्ठभूमि में सिमट जातीं। राज़, राज़ नहीं रह जाते। लेकिन बिस्तर पर लेटे हुए, किरी के छोटे बालों में उंगलियां फेरते हुए, जुन्पेई को लगा कि शायद उसे बता देना ठीक रहेगा। आखिर, वह कुछ दिनों से कहानी को आगे नहीं बढ़ा पा रहा था।

“यह कहानी तीसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से लिखी गई है, और इसकी मुख्य पात्र एक महिला है,” उन्होंने कहना शुरू किया। “वह तीस वर्ष की आयु के आसपास है, एक कुशल दंत चिकित्सक है जो एक बड़े अस्पताल में प्रैक्टिस करती है। वह अविवाहित है, लेकिन उसी अस्पताल में काम करने वाले एक सर्जन के साथ उसका प्रेम संबंध है। वह चालीस वर्ष की आयु के आसपास है और उसकी पत्नी और बच्चे हैं।”

किरी ने नायिका की कल्पना करने के लिए कुछ पल लिए। "क्या वह आकर्षक है?"

“मुझे भी ऐसा ही लगता है। काफी आकर्षक हो,” जुन्पेई ने कहा। “लेकिन तुम्हारे जितनी आकर्षक नहीं।”

किरी मुस्कुराई और जुन्पेई की गर्दन पर चुंबन किया। "यही सही जवाब है," उसने कहा।

मैं जरूरत पड़ने पर सही जवाब देने का पूरा प्रयास करता हूं।

"खासकर बिस्तर में, मुझे लगता है।"

“खासकर बिस्तर पर,” उसने जवाब दिया। “तो खैर, उसकी छुट्टियाँ थीं और वह अकेले ही घूमने चली गई। मौसम पतझड़ का था: बिल्कुल इसी मौसम जैसा। वह पहाड़ों में एक छोटे से गर्म पानी के रिसॉर्ट में ठहरी थी और पहाड़ियों में एक झरने के किनारे टहलने गई। उसे पक्षी देखना बहुत पसंद था, और उसे किंगफिशर देखना विशेष रूप से अच्छा लगता था। वह सूखे नदी के किनारे उतरी और उसे एक अजीब सा पत्थर दिखाई दिया। वह काले रंग का था, जिसमें लाल रंग की हल्की सी झलक थी, चिकना था, और उसकी आकृति जानी-पहचानी सी थी। उसे तुरंत समझ आ गया कि यह गुर्दे के आकार का है। आखिर वह एक डॉक्टर है। इसकी हर चीज असली गुर्दे जैसी थी—आकार, रंग, मोटाई।”

"तो वह उसे उठाती है और घर ले जाती है।"

“हाँ,” जुन्पेई ने कहा। “वह इसे अस्पताल में अपने कार्यालय में ले जाती है और पेपरवेट की तरह इस्तेमाल करती है। इसका आकार और वजन बिल्कुल सही है।”

और यह अस्पताल के लिए एकदम सही आकार है।

“बिल्कुल सही,” जुन्पेई ने कहा। “लेकिन कुछ दिनों बाद, उसे कुछ अजीब सा महसूस होता है।”

किरी चुपचाप उसके कहानी जारी रखने का इंतज़ार करती रही। जुन्पेई ने मानो जानबूझकर अपने श्रोता को चिढ़ाने के लिए थोड़ी देर के लिए रुक गया, लेकिन वास्तव में यह जानबूझकर नहीं था। उसने अभी तक कहानी का बाकी हिस्सा लिखा ही नहीं था। यहीं पर कहानी रुक गई थी। इस सुनसान चौराहे पर खड़े होकर उसने अपने आसपास का जायज़ा लिया और जितना हो सके अपने दिमाग पर ज़ोर डाला। फिर उसने सोचा कि कहानी किस तरह आगे बढ़नी चाहिए।

हर सुबह, उसे पत्थर अलग-अलग जगह पर मिलता है। रात को घर जाते समय वह उसे अपनी डेस्क पर ही छोड़ देती है। वह बहुत ही व्यवस्थित स्वभाव की है, इसलिए वह हमेशा उसे ठीक उसी जगह पर रखती है, लेकिन सुबह वह उसे अपनी घूमने वाली कुर्सी की सीट पर, या फूलदान के बगल में, या फर्श पर पाती है। उसका पहला विचार यही होता है कि उसने पत्थर कहाँ रखा था, इस बारे में वह ज़रूर गलत है। फिर उसे शक होने लगता है कि कहीं उसकी याददाश्त उसे धोखा तो नहीं दे रही। दरवाज़ा बंद है, और किसी और को अंदर नहीं

आना चाहिए। बेशक रात के चौकीदार के पास चाबी है, लेकिन वह सालों से अस्पताल में काम कर रहा है, और वह कभी किसी के दफ्तर में खुद से घुसने की हिम्मत नहीं करेगा। इसके अलावा, हर रात उसके दफ्तर में घुसकर उस पत्थर की जगह बदलने का क्या मतलब है जिसे वह पेपरवेट की तरह इस्तेमाल कर रही है? उसके दफ्तर में और कुछ भी नहीं बदला है, कुछ भी गायब नहीं है, और किसी भी चीज़ के साथ छेड़छाड़ नहीं की गई है। केवल पत्थर की जगह ही बदलती है। वह पूरी तरह से हैरान है। आपको क्या लगता है कि क्या हो रहा है? आपको क्या लगता है कि रात के समय पत्थर अपनी जगह से क्यों हिल जाता है? रात?"

"किडनी के आकार की पथरी जो कुछ भी करती है, उसके अपने कारण होते हैं," किरी ने सरल आत्मविश्वास के साथ कहा।

गुर्दे के आकार की पथरी होने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

“यह उसे झकझोर देना चाहता है। धीरे-धीरे। लंबे समय तक।”

"ठीक है, तो फिर यह उसे क्यों परेशान करना चाहता है?"

“मुझे नहीं पता,” उसने कहा। फिर हंसते हुए बोली, “शायद यह बस उसकी दुनिया को हिला देना चाहता है।”

"मैंने आज तक जितने भी चुटकुले सुने हैं, उनमें से यह सबसे घटिया है," जुन्पेई ने आह भरी।

“आप तो लेखक हैं। क्या निर्णय लेने वाले आप ही नहीं हैं? मैं तो बस एक श्रोता हूँ।”

जुन्पेई ने तेवर चढ़ा लिए। बहुत ज्यादा ध्यान लगाने की वजह से उसकी कनपटी के पीछे हल्का दर्द हो रहा था। शायद उसने कुछ ज्यादा ही शराब पी ली थी। उसने कहा, "विचार आपस में जुड़ नहीं रहे हैं। जब तक मैं अपनी डेस्क पर बैठकर अपने हाथों से वाक्य नहीं बनाता, तब तक मेरी कहानी आगे नहीं बढ़ती। क्या आप थोड़ी देर इंतजार कर सकते हैं? इस तरह बात करते-करते मुझे ऐसा लगने लगा है कि कहानी का बाकी हिस्सा अपने आप ही सुलझ जाएगा।"

“मुझे कोई आपत्ति नहीं,” किरी ने कहा। उसने अपना गिलास उठाया और शराब का एक घूंट लिया। “मैं इंतज़ार कर सकती हूँ। लेकिन कहानी वाकई दिलचस्प होती जा रही है। मैं जानना चाहती हूँ कि गुर्दे के आकार की पथरी का क्या होता है।”

वह उसकी ओर मुड़ी और अपने सुडौल स्तनों को उसकी बगल से सटा दिया। फिर धीरे से, मानो कोई राज़ बता रही हो, उसने कहा, “जानते हो, जुन्पेई, दुनिया में हर चीज़ के अपने काम करने के पीछे कोई न कोई वजह होती है।” जुन्पेई को नींद आ रही थी और वह जवाब नहीं दे सका। रात की हवा में, उसके वाक्य व्याकरणिक संरचना के रूप में अपना आकार खो बैठे और शराब की हल्की सुगंध में घुलमिल गए, इससे पहले कि वे उसकी चेतना के छिपे हुए कोनों तक पहुँचें। “उदाहरण के लिए, हवा के अपने कारण होते हैं। हम अपने जीवन में व्यस्त रहते हुए उन पर ध्यान नहीं देते। लेकिन फिर, किसी समय, हमें उन पर ध्यान देना पड़ता है। हवा एक खास मकसद से आपको घेर लेती है और आपको झुलाती है। हवा आपके अंदर की हर बात जानती है। और सिर्फ़ हवा ही नहीं। सब कुछ, यहाँ तक कि एक पत्थर भी। वे सभी हमें बहुत अच्छी तरह जानते हैं। ऊपर से नीचे तक। यह हमें केवल कुछ खास समय पर ही महसूस होता है। और हम बस उन चीजों के साथ चल सकते हैं। जैसे-जैसे हम उन्हें आत्मसात करते हैं, हम जीवित रहते हैं और गहरे होते जाते हैं।”

अगले पाँच दिनों तक, जुन्पेई मुश्किल से ही घर से बाहर निकला; वह अपनी डेस्क पर बैठा रहा और गुर्दे के आकार के पथरी की बाकी कहानी लिखता रहा। जैसा कि किरी ने भविष्यवाणी की थी, पथरी धीरे-धीरे, समय के साथ, लेकिन निर्णायक रूप से महिला डॉक्टर को झकझोरती रही। एक शाम, एक गुमनाम होटल के कमरे में, वह अपने प्रेमी के साथ जल्दबाजी में शारीरिक संबंध बना रही थी, तभी उसने चुपके से उसकी पीठ पर हाथ फेरा और गुर्दे के आकार को महसूस किया। वह जानती थी कि उसकी गुर्दे के आकार की पथरी वहीं छिपी हुई है। वह गुर्दा एक गुप्त मुखबिर था जिसे उसने खुद अपने प्रेमी के शरीर में दफना दिया था। उसकी उंगलियों के नीचे, वह एक कीड़े की तरह रेंगता था, उसे गुर्दे जैसे संदेश भेजता था। वह गुर्दे से बातें करती थी, जानकारी साझा करती थी। वह अपनी हथेली पर उसकी चिपचिपाहट महसूस कर सकती थी।

महिला डॉक्टर धीरे-धीरे उस भारी, गुर्दे के आकार के पथरी की आदी हो जाती है जो हर रात अपनी जगह बदलती रहती है। वह इसे स्वाभाविक मान लेती है। रात में पथरी के हिलने पर अब उसे आश्चर्य नहीं होता। हर सुबह अस्पताल पहुँचने पर उसे पथरी अपने दफ्तर में कहीं मिल जाती है, वह उसे उठाती है और वापस अपनी डेस्क पर रख देती है। यह उसकी

दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है। जब तक वह कमरे में रहती है, पथरी हिलती नहीं। वह एक ही जगह पर चुपचाप पड़ी रहती है, जैसे धूप में सोती हुई बिल्ली। वह तभी जागती है और हिलना शुरू करती है जब वह कमरे से निकलकर दरवाजा बंद कर देती है।

जब भी उसे थोड़ा सा भी खाली समय मिलता है, वह हाथ बढ़ाकर पत्थर की चिकनी, काली सतह को सहलाती है। कुछ समय बाद, उसके लिए पत्थर से नज़रें हटाना मुश्किल होता जाता है, मानो वह सम्मोहित हो गई हो। धीरे-धीरे उसकी रुचि बाकी सब चीजों में कम होती जाती है। वह किताबें नहीं पढ़ पाती। वह जिम जाना छोड़ देती है। वह मरीजों को देखने के लिए ही एकाग्रता बनाए रख पाती है, लेकिन बाकी सभी काम वह आदत और तात्कालिक उपाय के बल पर करती है। उसे अपने सहकर्मियों से बात करने में कोई दिलचस्पी नहीं रहती। वह अपनी साफ-सफाई के प्रति उदासीन हो जाती है। उसकी भूख खत्म हो जाती है। यहां तक कि उसके प्रेमी का आलिंगन भी उसे परेशान करने लगता है। जब आसपास कोई नहीं होता, तो वह धीमी आवाज़ में पत्थर से बात करती है, और पत्थर के अनकहे शब्दों को सुनती है, जैसे अकेले लोग कुत्ते या बिल्ली से बातें करते हैं। अब वह काला, गुर्दे के आकार का पत्थर उसके जीवन के अधिकांश हिस्से को नियंत्रित करता है।

निश्चित रूप से यह पत्थर उसे बाहर से नहीं मिला है: जुन्पेई को कहानी आगे बढ़ने के साथ-साथ इस बात का एहसास होता है। मुख्य बात उसके भीतर की कोई शक्ति है। उसके भीतर की वही शक्ति उस काले, गुर्दे के आकार के पत्थर को सक्रिय कर रही है और उसे किसी ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित कर रही है। वह शक्ति उसे इसके लिए लगातार संकेत भेजती रहती है—ये संकेत पत्थर की रात की हलचल के रूप में होते हैं।

लिखते समय जुन्पेई किरी के बारे में सोचता रहता है। उसे लगता है कि किरी (या उसके भीतर कुछ) कहानी को आगे बढ़ा रही है; उसका इरादा कभी भी वास्तविकता से इतना अलग कुछ लिखने का नहीं था। जुन्पेई ने पहले जो धुंधली सी कहानी सोची थी, वह एक शांत, मनोवैज्ञानिक कहानी थी। उस कहानी में चट्टानें अपने आप इधर-उधर नहीं हिलती थीं।

जुन्पेई ने कल्पना की कि महिला डॉक्टर अपने विवाहित सर्जन से भावनात्मक संबंध तोड़ लेगी। हो सकता है कि वह उससे नफरत भी करने लगे। शायद यही वह अनजाने में चाह रही थी।

जब उसे पूरी कहानी समझ आ गई, तो उसे लिखना अपेक्षाकृत आसान हो गया। धीमी आवाज़ में महलर के गाने बार-बार सुनते हुए, जुन्पेई अपने कंप्यूटर पर बैठा और अपनी पूरी गति से कहानी का निष्कर्ष लिखने लगा। डॉक्टर अपने सर्जन प्रेमी से अलग होने का फैसला करती है। वह उससे कहती है, "मैं अब तुमसे नहीं मिल सकती।" वह पूछता है, "क्या हम कम से कम इस बारे में बात नहीं कर सकते?" वह दृढ़ता से कहती है, "नहीं, यह असंभव है।" अपने अगले खाली दिन वह टोक्यो हार्बर फेरी पर सवार होती है और डेक से गुर्दे के आकार की पथरी को समुद्र में फेंक देती है। पथरी गहरे, अंधेरे समुद्र की तलहटी में डूबती हुई पृथ्वी के केंद्र की ओर चली जाती है। वह नए सिरे से जीवन शुरू करने का संकल्प लेती है। पथरी को फेंक देने के बाद, उसे एक नई तरह की हल्कापन का एहसास होता है।

लेकिन अगले दिन जब वह अस्पताल जाती है, तो पथरी उसकी मेज पर उसका इंतजार कर रही होती है। वह ठीक उसी जगह पर पड़ी होती है जहाँ उसे होना चाहिए, पहले की तरह ही गहरे रंग की और गुर्दे के आकार की।

कहानी लिखते ही जुन्पेई ने किरी को फोन किया। शायद वो पूरी कहानी पढ़ना चाहेगी, क्योंकि एक तरह से किरी ने ही उसे ये कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया था। लेकिन उसका फोन नहीं लगा। एक रिकॉर्डेड आवाज़ आई, "आपका नंबर डायल नहीं हो पा रहा है। कृपया अपना नंबर बदलकर दोबारा कोशिश करें।" जुन्पेई ने बार-बार कोशिश की। लेकिन नतीजा हमेशा एक जैसा ही रहा। उसने सोचा, शायद किरी के फोन में कोई तकनीकी समस्या आ गई है।

जुनपेई घर के पास ही बैठा रहा, किरी की खबर का इंतज़ार करता रहा, पर कुछ नहीं आया। एक महीना बीत गया। एक महीना दो में बदल गया, दो तीन में। मौसम बदल गया और सर्दी आ गई, और नया साल शुरू हो गया। उसकी कहानी एक साहित्यिक पत्रिका के फरवरी अंक में छपी। पत्रिका के एक अखबार के विज्ञापन में जुनपेई का नाम और शीर्षक, "हर दिन हिलने वाला गुर्दे के आकार का पत्थर" लिखा था। शायद किरी विज्ञापन देखे, पत्रिका खरीदे, कहानी पढ़े और उसे फोन करके अपनी प्रतिक्रिया बताए—कम से कम उसे यही उम्मीद थी। लेकिन उस तक सिर्फ़ खामोशी की नई परतें ही पहुँचीं।

किरी के जीवन से चले जाने पर जुनपेई को जो पीड़ा हुई, वह उसकी कल्पना से कहीं अधिक तीव्र थी। वह अपने पीछे एक ऐसा खालीपन छोड़ गई जिसने उसे सचमुच झकझोर दिया। दिन भर में वह कई बार मन ही मन सोचता, "काश वह यहाँ होती!" उसे उसकी मुस्कान की याद आती, उसके होठों से निकले शब्दों की याद आती, जब वे एक-दूसरे को गले लगाते थे तो उसके स्पर्श की याद आती। उसे अपने पसंदीदा संगीत से या अपने पसंदीदा लेखकों की नई किताबों से भी कोई सांत्वना नहीं मिली। सब कुछ उससे दूर, अलग-थलग सा लगने लगा। जुनपेई ने सोचा, शायद किरी उसकी दूसरी प्रेमिका थी।



जुन्पेई की किरी से अगली मुलाकात वसंत ऋतु के शुरुआती दिनों में एक दिन दोपहर के बाद हुई—हालांकि इसे वास्तव में "मुलाकात" नहीं कहा जा सकता। उसने उसकी आवाज सुनी। वह ट्रैफिक में फंसी एक टैक्सी में था। युवा ड्राइवर एफएम प्रसारण सुन रहा था। रेडियो से किरी की आवाज़ आई। जुन्पेई को पहले तो यकीन नहीं हुआ कि वह किरी की आवाज़ सुन रहा है। उसे बस लगा कि आवाज़ उसकी आवाज़ से मिलती-जुलती है। लेकिन जैसे-जैसे वह सुनता गया, उसे किरी की आवाज़ साफ सुनाई देने लगी, उसके बोलने का तरीका—वही मधुर स्वर, वही सहज अंदाज़, और बीच-बीच में रुकने का उसका खास तरीका।

जुन्पेई ने ड्राइवर से आवाज़ बढ़ाने को कहा।

“ज़रूर,” ड्राइवर ने कहा।

यह इंटरव्यू ब्रॉडकास्ट स्टूडियो में हो रहा था। महिला उद्घोषक उनसे एक सवाल पूछ रही थीं: "—तो क्या आपको बचपन से ही ऊंची जगहें पसंद थीं?"

“यह सच है,” किरी ने जवाब दिया—या ठीक उसी जैसी आवाज़ वाली एक महिला ने। “जब से मुझे याद है, मुझे ऊँचाई पर जाना अच्छा लगता था। मैं जितना ऊपर जाती, उतना ही मुझे सुकून मिलता था। मैं हमेशा अपने माता-पिता से मुझे ऊँची इमारतों पर ले जाने की ज़िद करती रहती थी। मैं एक बहुत ही अजीब सी छोटी बच्ची थी,” आवाज़ ने हंसते हुए कहा।

"मुझे लगता है कि इसी तरह आपने अपने वर्तमान पेशे में शुरुआत की होगी।"

“पहले मैंने एक सिक्योरिटी फर्म में विश्लेषक के तौर पर काम किया। लेकिन मुझे तुरंत पता चल गया कि यह मेरे लिए सही नहीं है। मैंने तीन साल बाद कंपनी छोड़ दी और सबसे पहले ऊंची इमारतों में खिड़कियां साफ करने का काम करने लगी। मैं असल में एक मीनार साफ करने वाली (स्टीपलजैक) बनना चाहती थी, लेकिन वह इतनी मर्दाना दुनिया है कि वहां महिलाओं को आसानी से जगह नहीं मिलती। इसलिए फिलहाल मैंने अंशकालिक रूप से खिड़कियां साफ करने का काम कर लिया।”

“सिक्योरिटीज एनालिस्ट से लेकर खिड़की साफ करने वाले तक—यह तो वाकई बहुत बड़ा बदलाव है!”

सच कहूँ तो, खिड़कियाँ धोना मेरे लिए कहीं कम तनावपूर्ण था: अगर कुछ गिर भी जाता है, तो बस आप ही गिरते हैं, शेयर की कीमतें नहीं। फिर हंसी।

"अब, 'खिड़की साफ करने वाले' से आपका मतलब उन लोगों में से एक है जिन्हें किसी इमारत के किनारे बने चबूतरे से नीचे उतारा जाता है।"

“बिल्कुल सही। बेशक, वे आपको एक लाइफलाइन देते हैं, लेकिन कुछ जगहों तक आप लाइफलाइन हटाए बिना नहीं पहुँच सकते। इससे मुझे ज़रा भी परेशानी नहीं हुई। हम कितनी भी ऊँचाई पर चले गए हों, मुझे कभी डर नहीं लगा। इसी वजह से मैं एक बहुत ही कुशल कर्मचारी साबित हुआ।”

"मुझे लगता है कि आपको पहाड़ चढ़ना पसंद है?"

मुझे पहाड़ों में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं है। मैंने कुछ बार चढ़ने की कोशिश की है, लेकिन मुझे इससे कोई रोमांच नहीं होता। चाहे मैं कितनी भी ऊँचाई पर जाऊँ, मुझे पहाड़ चढ़ने में कोई उत्साह नहीं मिलता। मुझे सिर्फ़ ज़मीन से सीधे ऊपर उठने वाली मानव निर्मित बहुमंजिला इमारतें ही आकर्षित करती हैं। मुझसे यह मत पूछो कि क्यों।

"तो अब आप टोक्यो महानगर क्षेत्र में ऊंची इमारतों की खिड़कियां साफ करने वाली एक कंपनी चलाते हैं।"

“बिल्कुल सही,” उसने कहा। “मैंने पैसे बचाकर लगभग छह साल पहले अपनी छोटी सी कंपनी शुरू की थी। बेशक मैं अपनी टीम के साथ बाहर जाती हूँ, लेकिन असल में अब मैं ही

मालिक हूँ। मुझे किसी से आदेश लेने की ज़रूरत नहीं है, और मैं अपने नियम खुद बना सकती हूँ: यह बहुत सुविधाजनक है।”

"मतलब, आप जब चाहें तब जीवन रेखा हटा सकते हैं?"

“एक शब्द में।” (हंसी)

"सच में, आपको इसे पहनना पसंद नहीं है, है ना?"

“यह सच है। इससे मुझे ऐसा लगता है कि मैं खुद नहीं हूँ। ऐसा लगता है जैसे मैंने कोई सख्त कोर्सेट पहन रखा हो।” (हंसी)

आपको ऊंची जगहें वाकई बहुत पसंद हैं, है ना?

“हाँ, बिल्कुल। मुझे लगता है कि ऊँचाई पर रहना ही मेरा कर्तव्य है। मैं किसी और तरह का काम करने की कल्पना भी नहीं कर सकती। आपका काम प्रेम का प्रतीक होना चाहिए, न कि सुविधा का बंधन।”

“अब गाने का समय है,” उद्घोषक ने कहा। “जेम्स टेलर का गाना ‘अप ऑन द रूफ’। इसके बाद हम रस्सी पर चलने के बारे में और बात करेंगे।”

संगीत बज रहा था तभी जुन्पेई आगे की सीट पर झुककर ड्राइवर से पूछने लगा, "यह महिला क्या करती है?"

“वो कहती है कि वो ऊंची इमारतों के बीच रस्सियां लगाती है और उन पर चलकर पार करती है,” ड्राइवर ने बताया। “संतुलन बनाए रखने के लिए हाथों में एक लंबी छड़ी रखती है। वो किसी तरह की कलाकार है। मुझे तो कांच की लिफ्ट में भी डर लगता है। लगता है उसे इस तरह मज़ा आता है। वो थोड़ी अजीब ज़रूर होगी। और शायद वो ज़्यादा जवान भी नहीं होगी।”

“क्या यही उसका पेशा है?” जुन्पेई ने पूछा। उसने महसूस किया कि उसकी आवाज़ सूखी और बेजान सी थी। ऐसा लग रहा था जैसे टैक्सी की छत के छेद से किसी और की आवाज़ आ रही हो।

“हाँ। मुझे लगता है कि वो कई स्पॉन्सर इकट्ठा करके परफॉर्मेंस देती है। उसने अभी हाल ही में जर्मनी के एक मशहूर गिरजाघर में परफॉर्मेंस दी थी। वो कहती है कि वो और भी ऊँची इमारतों पर परफॉर्मेंस देना चाहती है, पर इजाज़त नहीं मिल रही। क्योंकि इतनी ऊँचाई पर

सेफ्टी नेट काम नहीं आएगा। वो अपने रिकॉर्ड को और बेहतर बनाना चाहती है और हर बार थोड़ी और ऊँची इमारतों पर परफॉर्मेंस देकर खुद को चुनौती देना चाहती है। ज़ाहिर है, इस तरह से उसका गुज़ारा नहीं चल सकता, तो—खैर, आपने सुना ही होगा कि उसकी एक खिड़की साफ़ करने वाली कंपनी है। वो सर्कस में काम नहीं करेगी, भले ही वो रस्सी पर चलना जानती हो। उसे सिर्फ़ ऊँची इमारतों में ही दिलचस्पी है। अजीब लड़की है।"



"इसकी सबसे अद्भुत बात यह है कि जब आप वहां होते हैं, तो आप एक इंसान के रूप में खुद को बदल लेते हैं," किरी ने साक्षात्कारकर्ता से कहा। "आप खुद को बदलते हैं, या यूं कहें कि आपको खुद को बदलना ही पड़ता है, वरना आप जीवित नहीं रह सकते। जब मैं किसी ऊँची जगह पर आती हूँ, तो बस मैं और हवा होती है। और कुछ नहीं। हवा मुझे घेर लेती है, मुझे झुलाती है। वह मुझे समझती है। साथ ही, मैं भी हवा को समझती हूँ। हम एक-दूसरे को स्वीकार करते हैं और साथ रहने का फैसला करते हैं। बस मैं और हवा: किसी और के लिए कोई जगह नहीं। यही वह पल है जो मुझे सबसे प्यारा है। नहीं, मुझे डर नहीं लगता। जैसे ही मैं उस ऊँची जगह पर कदम रखती हूँ और पूरी तरह एकाग्रता की उस अवस्था में पहुँच जाती हूँ, सारा डर गायब हो जाता है। हम वहाँ होते हैं, अपने ही गर्म शून्य में। यही वह पल है जो मुझे किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यारा है।"

किरी ने शांत आत्मविश्वास के साथ बात की। जुन्पेई यह नहीं समझ पाया कि साक्षात्कारकर्ता उसकी बात समझ पाया या नहीं। साक्षात्कार समाप्त होने पर, जुन्पेई ने टैक्सी रोकी और उतरकर बाकी का रास्ता पैदल चलकर अपनी मंजिल तक पहुँचा। बीच-बीच में वह किसी ऊँची इमारत और बहते बादलों को देखता रहता। उसे एहसास हुआ कि कोई भी उसके और हवा के बीच नहीं आ सकता, और उसे तीव्र ईर्ष्या का अनुभव हुआ। लेकिन किससे ईर्ष्या? हवा से? भला हवा से कौन ईर्ष्या कर सकता है?

इसके बाद जुन्पेई ने किरी के संपर्क करने का कई महीनों तक इंतज़ार किया। वह उससे मिलना चाहता था और गुर्दे के आकार की पथरी समेत कई बातों पर चर्चा करना चाहता था। लेकिन किरी का फोन कभी नहीं आया, और उसके फोन कभी भी "डायल किए गए नंबर पर

ही कॉल पूरी" नहीं हुई। जब गर्मी आई, तो उसने अपनी बची-खुची उम्मीद भी छोड़ दी। ज़ाहिर है, किरी का उससे दोबारा मिलने का कोई इरादा नहीं था। और इस तरह रिश्ता शांति से, बिना किसी झगड़े या कहा-सुनी के खत्म हो गया—ठीक वैसे ही जैसे उसने कई दूसरी महिलाओं के साथ रिश्ते खत्म किए थे। एक समय ऐसा आता है जब फोन आने बंद हो जाते हैं, और सब कुछ शांति से, स्वाभाविक रूप से समाप्त हो जाता है।

क्या मुझे उसे भी अपनी सूची में शामिल करना चाहिए? क्या वह मेरी उन तीन महिलाओं में से एक थी जिनका मेरे लिए वास्तव में महत्व था? जुन्पेई इस सवाल पर काफी देर तक सोचता रहा, लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाया। उसने सोचा, मैं छह महीने और इंतज़ार करूँगा। फिर फैसला करूँगा।

उन छह महीनों के दौरान, उन्होंने अत्यंत एकाग्रता से लेखन किया और बड़ी संख्या में लघु कथाएँ रचीं। जब वे अपनी मेज पर बैठकर लेखन शैली को निखार रहे होते, तो वे सोचते, "किरी शायद इस समय किसी ऊँचे स्थान पर हवा के साथ होगी। मैं यहाँ अकेला अपनी मेज पर बैठकर कहानियाँ लिख रहा हूँ, जबकि वह कहीं बिल्कुल अकेली है, सबसे ऊपर—बिना किसी सहारे के। एक बार जब वह एकाग्रता की उस अवस्था में पहुँच जाती है, तो सारा भय गायब हो जाता है: 'बस मैं और हवा।'" जुन्पेई अक्सर किरी के इन शब्दों को याद करते और महसूस करते कि किरी के लिए उनके मन में कुछ खास भावनाएँ जाग उठी हैं, ऐसी भावनाएँ जो उन्होंने किसी और स्त्री के लिए कभी महसूस नहीं की थीं। यह एक गहरी भावना थी, जिसकी स्पष्ट रूपरेखा थी और जिसे हाथों में वास्तविक भार के साथ महसूस किया जा सकता था। जुन्पेई अभी भी इस भावना को क्या नाम दें, इस बारे में निश्चित नहीं थे। कम से कम, यह एक ऐसी अनुभूति थी जिसे किसी और चीज़ से बदला नहीं जा सकता था। भले ही वे किरी को फिर कभी न देखें, यह भावना उनके साथ हमेशा रहेगी। उनके शरीर में कहीं—शायद उनकी हड्डियों के मज्जा में—वे उनकी अनुपस्थिति को महसूस करते रहेंगे।

साल खत्म होते-होते, जुन्पेई ने मन बना लिया। वह उसे दूसरे नंबर पर रखेगा। वह उन महिलाओं में से एक थी जिनका उसके लिए "वास्तविक महत्व" था। दूसरा मौका भी हाथ से निकल गया। अब सिर्फ एक ही बची थी। लेकिन अब उसे डर नहीं था। संख्याएँ मायने नहीं रखतीं। उलटी गिनती का कोई मतलब नहीं। अब वह समझ गया था: मायने रखता है किसी

दूसरे व्यक्ति को दिल से स्वीकार करने का फैसला करना। और यह हमेशा पहली और आखिरी बार होना चाहिए।



एक सुबह, डॉक्टर ने देखा कि उसकी डेस्क से गुर्दे के आकार की काली पथरी गायब हो गई है। और वह जानती है: यह वापस नहीं आएगी।
— जे रूबिन द्वारा अनुवादित

एक शिनागावा बंदर

हाल ही में उन्हें अपना नाम याद रखने में परेशानी होने लगी थी। ऐसा अक्सर तब होता था जब कोई अचानक उनका नाम पूछ लेता था। कभी वो किसी बुटीक में अपनी ड्रेस की आस्तीनें ठीक करवा रही होतीं, और दुकानदार पूछता, "मैडम, आपका नाम क्या है?" या फिर वो ऑफिस में फोन पर बात कर रही होतीं, और सामने वाला उनका नाम पूछ लेता, और वो बिल्कुल भूल जातीं। उन्हें नाम याद रखने का एकमात्र तरीका यही था कि वो अपना ड्राइविंग लाइसेंस निकाल लें, जिससे बात कर रहे व्यक्ति को थोड़ा अजीब सा महसूस होना लाज़मी था। अगर वो फोन पर होतीं, तो पर्स में नाम ढूंढने के दौरान जो अजीब सी चुप्पी छा जाती, उससे सामने वाला व्यक्ति ज़रूर सोचने लगता कि आखिर हो क्या रहा है।

जब वह खुद अपना नाम लेती थी, तो उसे याद रखने में कभी कोई परेशानी नहीं होती थी। जब तक उसे पहले से पता होता था कि क्या होने वाला है, तब तक उसकी याददाश्त में कोई दिक्कत नहीं होती थी। लेकिन जब वह जल्दी में होती थी, या कोई अचानक उसका नाम पूछ लेता था, तो ऐसा लगता था जैसे दिमाग पूरी तरह से सुन्न हो गया हो। जितना ज़्यादा वह याद करने की कोशिश करती, उतना ही वह खालीपन हावी होता जाता और लाख कोशिश करने पर भी उसे याद नहीं आता था कि उसे क्या कहकर पुकारा जाता है।

उसे बाकी सब कुछ याद था। वह अपने आस-पास के लोगों के नाम कभी नहीं भूलती थी। उसका पता, फोन नंबर, जन्मदिन, पासपोर्ट नंबर, ये सब उसे आसानी से याद रहते थे। वह अपने दोस्तों के फोन नंबर और महत्वपूर्ण ग्राहकों के फोन नंबर भी झटपट बता सकती थी। उसकी याददाश्त हमेशा से अच्छी थी—बस अपना नाम ही उसे याद नहीं रहता था। यह समस्या लगभग एक साल पहले शुरू हुई थी, जब पहली बार उसके साथ ऐसा कुछ हुआ था।

शादी के बाद उनका नाम मिज़ुकी एंडो था और शादी से पहले उनका नाम ओज़ावा था। दोनों ही नाम बहुत अनोखे या नाटकीय नहीं थे, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि व्यस्त दिनचर्या के कारण उनका नाम उनकी याददाश्त से गायब हो गया।

तीन साल पहले वसंत ऋतु में, जब उनकी शादी ताकाशी एंडो नाम के एक व्यक्ति से हुई, तो उनका नाम बदलकर मिज़ुकी एंडो हो गया। शुरुआत में उन्हें अपना नया नाम स्वीकार करने में कठिनाई हुई। नाम का रूप और उच्चारण उन्हें ठीक नहीं लगा। लेकिन अपने नए नाम को

कई बार दोहराने और हस्ताक्षर करने के बाद, धीरे-धीरे उन्हें लगने लगा कि यह नाम उतना बुरा भी नहीं है। अन्य संभावित नामों की तुलना में—जैसे मिज़ुकी मिज़ुकी या मिज़ुकी मिकी या कुछ और (दरअसल, उन्होंने कुछ समय के लिए मिकी नाम के एक लड़के को डेट किया था)—मिज़ुकी एंडो नाम उतना बुरा नहीं था। समय लगा, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें अपने नए, शादी के बाद के नाम से सहजता महसूस होने लगी।

एक साल पहले, उसका नाम उससे मिटने लगा। पहले तो ऐसा महीने में एक-दो बार ही होता था, लेकिन धीरे-धीरे यह बार-बार होने लगा। अब तो यह कम से कम हफ्ते में एक बार होने लगा था। "मिज़ुकी एंडो" के नाम से जाने जाने के बाद, वह दुनिया में अकेली रह गई, एक गुमनाम, बिना नाम की औरत। जब तक उसका पर्स उसके पास था, तब तक वह ठीक थी—वह अपना लाइसेंस निकालकर खुद को पहचान सकती थी। लेकिन अगर उसका पर्स खो जाता, तो उसे कुछ भी याद नहीं रहता। बेशक, वह पूरी तरह से गुमनाम तो नहीं हो जाती—कुछ समय के लिए अपना नाम खोने से यह बात खत्म नहीं हो जाती कि उसका अस्तित्व अभी भी है, और उसे अपना पता और फोन नंबर भी याद रहता था। यह फिल्मों में दिखाए जाने वाले पूरी तरह से भूल जाने वाले मामलों जैसा नहीं था। फिर भी, यह बात तो तय थी कि अपना नाम भूलना उसे परेशान करता था। उसे लगता था कि बिना नाम के जीवन जीना एक ऐसे सपने जैसा है जिससे कभी नींद नहीं आती।

मिज़ुकी एक गहनों की दुकान पर गई, एक पतला सा साधारण कंगन खरीदा और उस पर अपना नाम खुदवाया: मिज़ुकी (ओज़ावा) एंडो। पता या फ़ोन नंबर नहीं, सिर्फ़ नाम। उसने आह भरते हुए कहा, "मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कोई बिल्ली या कुत्ता हूँ।" वह घर से निकलते समय हमेशा कंगन पहनती थी, ताकि अगर वह अपना नाम भूल जाए तो बस उस पर एक नज़र डाल ले। अब उसे अपना लाइसेंस दिखाने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, न ही लोगों की अजीब नज़रों का सामना करना पड़ता था।

उसने अपनी समस्या के बारे में अपने पति को नहीं बताया। वह जानती थी कि वह यही कहेगा कि इससे साबित होता है कि वह उनके साथ जीवन से नाखुश है। वह हर बात में हद से ज़्यादा तर्क करता था। उसका इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं था; बस उसका स्वभाव ही ऐसा था, हर चीज़ के बारे में सिद्धांत गढ़ता रहता था। लेकिन दुनिया को देखने का यह तरीका

उसे पसंद नहीं था। उसका पति बहुत बातूनी भी था और एक बार किसी विषय पर बोलना शुरू कर दे तो आसानी से पीछे नहीं हटता था। इसलिए उसने इस पूरे मामले में चुप्पी साधे रखी।

फिर भी, उसने सोचा, उसके पति ने जो कहा था—या अगर उसे पता होता तो शायद कहता—वह बात गलत थी। वह अपनी शादी से न तो चिंतित थी और न ही असंतुष्ट। कभी-कभी उसकी अत्यधिक तार्किकता को छोड़कर, उसे अपने पति से कोई शिकायत नहीं थी, और न ही अपने ससुराल वालों के बारे में कोई खास नकारात्मक भावनाएँ थीं। उसके ससुर एक डॉक्टर थे जो सुदूर उत्तरी यामागाता प्रांत के साकाता शहर में एक छोटा सा क्लिनिक चलाते थे। उसके ससुराल वाले निश्चित रूप से रूढ़िवादी थे, लेकिन उसका पति दूसरा बेटा था, इसलिए वे आम तौर पर मिज़ुकी और उसके पति के जीवन से दूर रहते थे। मिज़ुकी नागोया की रहने वाली थी, इसलिए साकाता की कड़ाके की ठंड से वह पहले तो थोड़ी परेशान हुई, लेकिन वहाँ की एक-दो वार्षिक यात्राओं के दौरान उसे वह जगह पसंद आने लगी। शादी के दो साल बाद, उन्होंने घर पर लोन लेकर शिनागावा में एक नई इमारत में एक अपार्टमेंट खरीदा। उसका पति, जो अब तीस साल का था, एक दवा कंपनी की प्रयोगशाला में काम करता था। मिज़ुकी छब्बीस साल की थी और होंडा डीलरशिप में काम करती थी। वह फोन का जवाब देती थी, ग्राहकों को लाउंज तक ले जाती थी, कॉफी लाती थी, जरूरत पड़ने पर कॉपी बनाती थी, फाइलों का ध्यान रखती थी और उनकी कम्प्यूटरीकृत ग्राहक सूची को अपडेट करती थी।

टोक्यो के एक महिला जूनियर कॉलेज से स्नातक होने के बाद मिज़ुकी के चाचा, जो होंडा में एक कार्यकारी अधिकारी थे, ने उसके लिए यह नौकरी ढूंढ ली थी। यह कोई बहुत रोमांचक नौकरी तो नहीं थी, लेकिन उसे कुछ ज़िम्मेदारी दी गई थी और कुल मिलाकर यह बुरी भी नहीं थी। उसके कर्तव्यों में कार बेचना शामिल नहीं था, लेकिन जब भी सेल्समैन अनुपस्थित होते, वह उनकी जगह ले लेती और ग्राहकों के सवालों के जवाब हमेशा अच्छे से देती। उसने सेल्समैन को देखकर सीखा और जल्दी ही आवश्यक तकनीकी जानकारी और कार बेचने की कला को समझ लिया। उसने शोरूम में मौजूद सभी मॉडलों की माइलेज रेटिंग याद कर रखी थी और उदाहरण के लिए, वह किसी को भी यह समझा सकती थी कि ओडिसी मिनीवैन की

तरह कम और एक साधारण सेडान की तरह ज़्यादा चलती है। मिज़ुकी खुद भी एक अच्छी वक्ता थी और उसकी मुस्कान और बातचीत का अंदाज़ ग्राहकों को हमेशा सहज महसूस कराता था। वह प्रत्येक ग्राहक के व्यक्तित्व को समझकर अपनी बात कहने का तरीका भी बखूबी जानती थी। दुर्भाग्यवश, उसके पास छूट देने, पुरानी गाड़ी के बदले नई गाड़ी लेने पर मोलभाव करने या मुफ्त में अतिरिक्त सुविधाएँ देने का अधिकार नहीं था। इसलिए, भले ही ग्राहक अनुबंध पर हस्ताक्षर करने को तैयार हो, अंत में उसे सौदेबाजी का काम बिक्री कर्मचारियों को सौंपना पड़ता था। उसने भले ही अधिकांश काम किया हो, लेकिन कोई न कोई विक्रेता कमीशन लेकर काम संभाल लेता था। उसे बस कभी-कभार किसी विक्रेता द्वारा दिए गए मुफ्त भोजन का ही इनाम मिलता था।

कभी-कभी उसके मन में यह ख्याल आता था कि अगर उसे बिक्री का काम करने दिया जाए तो वे और भी गाड़ियाँ बेचेंगे और डीलरशिप का कुल रिकॉर्ड बेहतर हो जाएगा। अगर कॉलेज से निकले ये युवा सेल्समैन मन लगाकर काम करें तो वे दोगुनी गाड़ियाँ बेच सकते हैं। हालाँकि, किसी ने उसे यह नहीं बताया कि वह बिक्री में इतनी अच्छी है कि उसे क्लर्कियल काम में अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे बिक्री विभाग में स्थानांतरित कर देना चाहिए। कंपनी का यही तरीका होता है। बिक्री विभाग एक चीज़ है, क्लर्कियल स्टाफ दूसरी, और बहुत ही दुर्लभ मामलों को छोड़कर, ये सीमाएँ अटूट थीं। इसके अलावा, वह इतनी महत्वाकांक्षी भी नहीं थी कि इस तरह से अपने करियर को आगे बढ़ाने की कोशिश करे। उसे सुबह नौ से शाम पाँच बजे तक आठ घंटे काम करना, अपनी सभी छुट्टियों का लाभ उठाना और छुट्टी के समय का आनंद लेना कहीं अधिक पसंद था।

काम पर मिज़ुकी अपना पुराना नाम ही इस्तेमाल करती रही। अगर वह आधिकारिक तौर पर अपना नाम बदल लेती, तो उनके कंप्यूटर सिस्टम में उससे संबंधित सभी जानकारी बदलनी पड़ती, जो काम उसे खुद करना पड़ता। यह बहुत झंझट भरा काम था, इसलिए वह इसे टालती रही और आखिरकार उसने अपना पुराना नाम ही इस्तेमाल करने का फैसला किया। टैक्स के हिसाब से उसे विवाहित के रूप में दर्ज किया गया था, लेकिन उसका नाम नहीं बदला था। वह जानती थी कि ऐसा करना सही नहीं है, लेकिन काम पर किसी ने कुछ नहीं कहा (वे सभी इतने व्यस्त थे कि छोटी-मोटी बातों पर ध्यान देने का उनके पास समय नहीं

था), इसलिए वह अब भी मिज़ुकी ओज़ावा के नाम से ही जानी जाती थी। यही नाम उसके बिजनेस कार्ड, नेम टैग और टाइम कार्ड पर भी था। सभी उसे ओज़ावा-सान, ओज़ावा-कुन, मिज़ुकीसान या फिर परिचित मिज़ुकी-चान कहकर बुलाते थे। वह अपना विवाहित नाम इस्तेमाल करने से बचने की कोशिश नहीं कर रही थी। बस नाम बदलने में बहुत कागजी कार्रवाई करनी पड़ती, इसलिए उसने बिना बदलाव किए ही काम चला लिया। उसने सोचा, अगर कोई और उसके लिए ये सारे बदलाव कर दे, तो वह मिज़ुकी एंडो के नाम से जाने में खुश होगी।

उसके पति को पता था कि वह काम पर अपने मायके का नाम इस्तेमाल करती है (वह कभी-कभी उसे फोन करता था), लेकिन उसे इससे कोई आपत्ति नहीं थी। उसे लगता था कि काम पर वह जो भी नाम इस्तेमाल करती है, वह बस सुविधा की बात है। जब तक उसे इसका कारण समझ आता था, वह शिकायत नहीं करता था। इस लिहाज से वह काफी सहज स्वभाव का था।



मिज़ुकी को चिंता होने लगी कि अपना नाम पूरी तरह भूल जाना किसी भयानक बीमारी का लक्षण हो सकता है, शायद अल्ज़ाइमर का शुरुआती संकेत। दुनिया अप्रत्याशित, जानलेवा बीमारियों से भरी पड़ी है। उसे हाल ही तक यह पता नहीं था कि मायस्थेनिया और हंटिंगटन रोग जैसी बीमारियाँ भी होती हैं। ऐसी अनगिनत बीमारियाँ होंगी जिनके बारे में उसने कभी सुना भी नहीं होगा। और इनमें से ज़्यादातर बीमारियों के शुरुआती लक्षण बहुत मामूली होते हैं। असामान्य, लेकिन मामूली लक्षण जैसे—अपना नाम भूल जाना? जब उसने इस तरह सोचना शुरू किया, तो उसे चिंता सताने लगी कि कोई अज्ञात बीमारी चुपचाप उसके शरीर में फैल रही है।

मिज़ुकी एक बड़े अस्पताल में गई और अपने लक्षण बताए। लेकिन अस्पताल के प्रभारी युवा डॉक्टर—जो इतने पीले और थके हुए थे कि डॉक्टर से ज़्यादा मरीज़ लग रहे थे—ने उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया। उन्होंने पूछा, "क्या आप अपने नाम के अलावा कुछ और भी भूलती हैं?" मिज़ुकी ने कहा, "नहीं। अभी तो बस अपना नाम ही भूल रही हूँ।" उन्होंने बिना

किसी रुचि या सहानुभूति के कहा, "हम्म। यह तो मानसिक बीमारी का मामला लग रहा है। अगर आप अपने नाम के अलावा कुछ और भी भूलने लगें, तो कृपया हमसे दोबारा संपर्क करें। तब हम कुछ जाँच कर सकते हैं।" उनका इशारा था कि हमारे पास आपसे कहीं ज़्यादा गंभीर रूप से बीमार लोगों का इलाज है। कभी-कभार अपना नाम भूल जाना कोई बड़ी बात नहीं है।

एक दिन, डाक से आए स्थानीय वार्ड के समाचार पत्र में, उसे एक लेख मिला जिसमें वार्ड कार्यालय द्वारा एक परामर्श केंद्र खोलने की घोषणा की गई थी। यह एक छोटा सा लेख था, जिसे वह आमतौर पर नज़रअंदाज़ कर देती। केंद्र महीने में दो बार खुलेगा और इसमें एक पेशेवर परामर्शदाता होगा जो बहुत कम शुल्क पर लोगों को व्यक्तिगत रूप से सलाह देगा। लेख में कहा गया था कि शिनागावा वार्ड का अठारह वर्ष से अधिक आयु का कोई भी निवासी इसकी सेवाओं का लाभ उठा सकता है, और सारी जानकारी पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी। मिज़ुकी को संदेह था कि वार्ड द्वारा प्रायोजित परामर्श केंद्र से कोई लाभ होगा या नहीं, लेकिन उसने इसे आज़माने का फैसला किया। उसने सोचा, इससे कोई नुकसान तो नहीं होगा। जिस डीलरशिप में वह काम करती थी, वहाँ सप्ताहांत में बहुत भीड़ होती थी, लेकिन सप्ताह के दौरान छुट्टी लेना मुश्किल नहीं था और वह अपने शेड्यूल को परामर्श केंद्र के शेड्यूल के अनुसार समायोजित कर सकती थी, जो कि आम कामकाजी लोगों के लिए अव्यावहारिक था। केंद्र में अपॉइंटमेंट ज़रूरी था, इसलिए उसने पहले ही फोन कर दिया। तीस मिनट के एक सत्र का शुल्क दो हज़ार येन था, जो उसके लिए ज़्यादा नहीं था। उसने दोपहर एक बजे का अपॉइंटमेंट लिया। अगले बुधवार को।

जब मिज़ुकी वार्ड कार्यालय की तीसरी मंजिल पर स्थित परामर्श केंद्र पहुंची, तो उसने पाया कि वह अकेली मरीज़ थी। महिला रिसेप्शनिस्ट ने बताया, "उन्होंने यह कार्यक्रम अचानक शुरू किया है, और अभी तक ज़्यादातर लोगों को इसके बारे में पता नहीं है। एक बार लोगों को पता चल जाए, तो मुझे यकीन है कि और भी लोग आने लगेंगे। लेकिन अभी हम सबके लिए खुले हैं, इसलिए आप भाग्यशाली हैं।"

परामर्शदाता, जिनका नाम तेत्सुको साकाकी था, लगभग चालीस वर्ष की एक मिलनसार, कद में छोटी और भारी-भरकम महिला थीं। उनके छोटे बाल हल्के भूरे रंग में रंगे हुए थे और चौड़े

चेहरे पर एक सौम्य मुस्कान थी। उन्होंने हल्के रंग का गर्मियों के लिए उपयुक्त सूट, चमकदार रेशमी ब्लाउज, कृत्रिम मोतियों का हार और कम ऊँची एड़ी के जूते पहने हुए थे। वह परामर्शदाता से ज़्यादा किसी मिलनसार और मददगार पड़ोस की गृहिणी जैसी लग रही थीं।
“मेरे पति यहाँ वार्ड कार्यालय में काम करते हैं। वे लोक निर्माण विभाग के सेक्शन प्रमुख हैं,” उन्होंने दोस्ताना परिचय देते हुए कहा। “इसी वजह से हमें वार्ड से सहयोग मिला और हम यह परामर्श केंद्र खोल पाए। दरअसल, आप हमारे पहले मरीज़ हैं और हमें आपको पाकर बहुत खुशी हो रही है। आज मेरी कोई और अपॉइंटमेंट नहीं है, तो चलिए आराम से समय निकालकर दिल खोलकर बातें करते हैं।” महिला बहुत धीरे-धीरे बोल रही थी, उसकी हर बात धीमी और सधी हुई थी।
आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा, मिज़ुकी ने कहा। हालांकि, मन ही मन वह सोच रही थी कि क्या इस तरह का व्यक्ति किसी काम का साबित होगा।
“आप निश्चिंत रहें, मेरे पास काउंसलिंग की डिग्री और बहुत अनुभव है। इसलिए सब कुछ मुझ पर छोड़ दीजिए,” महिला ने कहा, मानो उसने मिज़ुकी के मन की बात पढ़ ली हो।
श्रीमती साकाकी एक साधारण धातु की ऑफिस डेस्क के पीछे बैठी थीं। मिज़ुकी एक छोटे, पुराने सोफे पर बैठी थीं जो देखने में ऐसा लग रहा था मानो अभी-अभी गोदाम से निकाला गया हो। उसके स्प्रिंग खराब होने वाले थे और सीलन भरी गंध से उनकी नाक में खुजली होने लगी।
“मैं तो एक बढ़िया सा सोफा लाना चाहती थी ताकि यह किसी काउंसलर के ऑफिस जैसा लगे, लेकिन अभी तो बस यही मिल पाया है। यहाँ टाउन हॉल मीटिंग चल रही है, इसलिए हमेशा की तरह कागज़ी कार्रवाई तो होगी ही। बहुत ही बेकार जगह है। वादा करती हूँ कि अगली बार आपके लिए बैठने की बेहतर जगह होगी, लेकिन उम्मीद है आज आपको कोई दिक्कत नहीं होगी।”
मिज़ुकी पुराने, कमज़ोर सोफे पर आराम से बैठ गई और बताने लगी कि वह अपना नाम इतनी बार क्यों भूल जाती है। श्रीमती साकाकी बस सिर हिलाती रहीं। उन्होंने कोई सवाल नहीं पूछा, न ही कोई हैरानी दिखाई। उन्होंने मिज़ुकी की बात समझने के लिए कोई उचित आवाज़ भी नहीं निकाली। वह बस मिज़ुकी की कहानी ध्यान से सुनती रहीं, और कभी-कभार कुछ

सोचते हुए माथे पर शिकन आने के अलावा, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला, उनकी हल्की मुस्कान, जैसे शाम के समय वसंत का चाँद, कभी नहीं डगमगाई।

"ब्रेसलेट पर अपना नाम लिखवाने का विचार बहुत अच्छा था," मिज़ुकी के खत्म होने के बाद उसने कहा। "मुझे तुम्हारा तरीका पसंद आया। सबसे पहले तो व्यावहारिक समाधान निकालना चाहिए, ताकि असुविधा कम से कम हो। अपराधबोध से परेशान होने, उस पर सोचते रहने या घबरा जाने से बेहतर है कि समस्या का व्यावहारिक तरीके से समाधान किया जाए। मुझे लगता है तुम काफी समझदार हो। और ब्रेसलेट बहुत खूबसूरत है। तुम पर बहुत अच्छा लग रहा है।"

"क्या आपको लगता है कि अपना नाम भूल जाना किसी गंभीर बीमारी से जुड़ा हो सकता है? क्या ऐसे मामले सामने आए हैं?" मिज़ुकी ने पूछा।

श्रीमती सकाकी ने कहा, "मुझे नहीं लगता कि ऐसी कोई बीमारी है जिसके शुरुआती लक्षण इतने स्पष्ट हों। हालांकि, मुझे थोड़ी चिंता है कि पिछले एक साल में लक्षण और बिगड़ गए हैं। मुझे लगता है कि इससे दूसरे लक्षण भी उभर सकते हैं, या आपकी याददाश्त में कमी शरीर के अन्य हिस्सों में भी फैल सकती है। इसलिए आइए एक-एक करके जांच करें और पता लगाएं कि यह सब कहां से शुरू हुआ। मुझे लगता है कि चूंकि आप घर से बाहर काम करती हैं, इसलिए अपना नाम भूल जाना कई तरह की समस्याओं का कारण बन सकता है।"

श्रीमती साकाकी ने मिज़ुकी के वर्तमान जीवन के बारे में कुछ बुनियादी सवाल पूछकर शुरुआत की। आपकी शादी को कितने साल हो गए हैं? आप क्या काम करती हैं? आपका स्वास्थ्य कैसा है? उन्होंने मिज़ुकी के बचपन, परिवार, शिक्षा आदि के बारे में सवाल पूछे। उन्हें क्या अच्छा लगता था, क्या नहीं। वह किन चीज़ों में अच्छी थीं और किनमें नहीं। मिज़ुकी ने हर सवाल का जवाब यथासंभव ईमानदारी से, जल्दी और सही-सही देने की कोशिश की।

मिज़ुकी का पालन-पोषण एक साधारण परिवार में हुआ, जिसमें उसके माता-पिता और बड़ी बहन थीं। उसके पिता एक बड़ी बीमा कंपनी में काम करते थे, और हालाँकि वे किसी भी तरह से धनी नहीं थे, मिज़ुकी को कभी भी पैसों की कमी याद नहीं आती थी। उसके पिता गंभीर स्वभाव के थे, जबकि उसकी माँ थोड़ी संवेदनशील और थोड़ी टोक-टोक करने वाली थीं। उसकी बहन हमेशा अपनी कक्षा में सबसे आगे रहती थी, हालाँकि मिज़ुकी के अनुसार वह

थोड़ी सतही और चालाक थी। फिर भी, मिज़ुकी को अपने परिवार से कोई खास समस्या नहीं थी और उनके साथ उसके संबंध अच्छे थे। उनके बीच कभी कोई बड़ी लड़ाई नहीं हुई थी। मिज़ुकी खुद भी ऐसी बच्ची नहीं थी जो सबसे अलग हो। वह हमेशा स्वस्थ रहती थी, कभी बीमार नहीं पड़ती थी, जिसका मतलब यह नहीं है कि वह विशेष रूप से खेलकूद में माहिर थी - वह नहीं थी। उसे अपनी सुंदरता को लेकर कोई हिचक नहीं थी, हालाँकि किसी ने कभी उसे सुंदर भी नहीं कहा था। मिज़ुकी खुद को काफी बुद्धिमान मानती थी, लेकिन किसी एक क्षेत्र में वह उत्कृष्ट नहीं थी। उसके अंक ठीक-ठाक थे—अगर आप ग्रेड सूची में उसका नाम ढूंढ रहे होते, तो नीचे से गिनने की बजाय ऊपर से गिनना ज़्यादा आसान होता। स्कूल में उसके कुछ अच्छे दोस्त थे, लेकिन शादी के बाद वे सब अलग-अलग जगहों पर चले गए और अब उनका आपस में संपर्क बहुत कम ही रहता था।
वैवाहिक जीवन को लेकर उसे कोई खास शिकायत नहीं थी। शुरुआत में उसने और उसके पति ने वही आम गलतियाँ कीं जो नवविवाहित जोड़े करते हैं, लेकिन समय के साथ उन्होंने किसी तरह एक ठीक-ठाक जीवन बना लिया था। उसका पति किसी भी तरह से परिपूर्ण नहीं था (उसके झगड़ालू स्वभाव के अलावा, फैशन की समझ बिल्कुल भी नहीं थी), लेकिन उसमें कई अच्छी बातें थीं—वह दयालु, ज़िम्मेदार, साफ-सुथरा था, सब कुछ खा लेता था और कभी शिकायत नहीं करता था। वह काम पर अपने सहकर्मियों और बॉस, दोनों के साथ अच्छे से घुलमिल जाता था। बेशक, कभी-कभी काम पर अप्रिय घटनाएँ भी होती थीं, जो रोज़ाना एक ही लोगों के साथ काम करने का स्वाभाविक परिणाम था, लेकिन फिर भी वह इससे ज़्यादा परेशान नहीं होता था।
इन सभी सवालों के जवाब देते हुए मिज़ुकी को अपनी नीरस ज़िंदगी का एहसास हुआ। नाटकीयता जैसी कोई चीज़ उसे कभी छू नहीं पाई थी। अगर उसकी ज़िंदगी एक फ़िल्म होती, तो वो उन कम बजट वाली पर्यावरण संबंधी डॉक्यूमेंट्री में से एक होती जो आपको नींद दिला देती। क्षितिज तक फैला धुंधला सा नज़ारा। न कोई दृश्य परिवर्तन, न कोई क्लोज़-अप, न कुछ रोमांचक, बस एक नीरस अनुभव जिसमें आपको आकर्षित करने जैसा कुछ भी नहीं था। न कुछ अशुभ, न कुछ संकेत देने वाला। कभी-कभी कैमरे का कोण थोड़ा सा बदल जाता, मानो अपनी सुस्ती से बाहर आ गया हो। मिज़ुकी जानती थी कि एक काउंसलर का काम अपने

मरीज़ों की बात सुनना होता है, लेकिन उसे उस महिला पर तरस आने लगा जिसे इतनी उबाऊ जीवन कहानी इतनी ध्यान से सुननी पड़ रही थी। यकीनन वो हमेशा के लिए उबासी नहीं रोक सकती थी। मिज़ुकी ने सोचा, अगर मैं होती और मुझे अपनी जैसी नीरस ज़िंदगी की अंतहीन कहानियाँ सुननी पड़तीं, तो किसी न किसी बिंदु पर मैं बोरियत से बेहोश हो जाती।
टेट्सुको साकाकी ने मिज़ुकी की बातें ध्यान से सुनीं और कुछ संक्षिप्त नोट्स बनाए। कभी-कभार वह कोई छोटा सा सवाल पूछ लेतीं, लेकिन ज़्यादातर समय वह चुप रहीं, मानो मिज़ुकी की कहानी सुनने में पूरी तरह मग्न हों। जब कभी उन्होंने बात की, तो उनकी आवाज़ में बोरियत का कोई निशान नहीं था, बल्कि एक ऐसी गर्माहट थी जो उनकी सच्ची चिंता को दर्शाती थी। टेट्सुको की विशिष्ट धीमी आवाज़ सुनकर मिज़ुकी को अजीब सी शांति मिली। उन्हें एहसास हुआ कि इससे पहले किसी ने भी इतनी धैर्य से मेरी बात नहीं सुनी थी। जब उनकी एक घंटे से थोड़ी ज़्यादा चली मुलाकात खत्म हुई, तो मिज़ुकी को लगा जैसे उन पर से एक बोझ उतर गया हो।
"श्रीमती एंडो, क्या आप अगले बुधवार को भी इसी समय आ सकती हैं?" श्रीमती सकाकी ने चौड़ी मुस्कान के साथ पूछा।
“हां, मैं कर सकती हूं,” मिज़ुकी ने जवाब दिया। “अगर मैं ऐसा करूं तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?”
“बिल्कुल नहीं। जब तक आपको इससे कोई आपत्ति न हो। परामर्श में प्रगति देखने से पहले कई सत्र लगते हैं। यह उन रेडियो कॉल-इन शो की तरह नहीं है जहाँ आप आसानी से बातचीत समाप्त कर दें और कॉलर को बस 'हिम्मत मत हारो!' कह दें। इसमें समय लग सकता है, लेकिन हम पड़ोसी की तरह हैं, दोनों शिनागावा से हैं, इसलिए आइए अपना समय लें और अच्छे से काम करें।”



“क्या आपको कोई ऐसी घटना याद है जिसका संबंध नामों से हो?” श्रीमती साकाकी ने दूसरे सत्र के दौरान पूछा। “आपका नाम, किसी और का नाम, किसी पालतू जानवर का नाम, किसी

ऐसी जगह का नाम जहाँ आप गए हों, कोई उपनाम, शायद? नाम से जुड़ी कोई भी बात। अगर आपको नाम से जुड़ी कोई भी याद हो, तो कृपया मुझे बताएं।"
"नामों से कुछ लेना-देना है क्या?"
"नाम, नामकरण, हस्ताक्षर, उपस्थिति दर्ज करना... यह कोई मामूली बात भी हो सकती है, बशर्ते इसका संबंध नाम से हो। याद रखने की कोशिश करें।"
मिजुकी ने इस बारे में काफी देर तक सोचा।
"मुझे नहीं लगता कि मुझे किसी नाम की कोई खास याद है," उसने आखिरकार कहा। "कम से कम अभी तो कुछ याद नहीं आ रहा है। ओह... मुझे नाम की पट्टी के बारे में कुछ याद है।"
"नाम का टैग। बहुत बढ़िया।"
"लेकिन वह मेरा नेम टैग नहीं था," मिज़ुकी ने कहा। "वह किसी और का था।"
"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे इसके बारे में बताओ," श्रीमती सकाकी ने कहा।
"जैसा कि मैंने पिछले हफ्ते बताया था, मैंने जूनियर और सीनियर दोनों ही पढ़ाई एक निजी लड़कियों के स्कूल से की," मिज़ुकी ने बात शुरू की। "मैं नागोया से थी और स्कूल योकोहामा में था, इसलिए मैं स्कूल के छात्रावास में रहती थी और सप्ताहांत में घर जाती थी। मैं हर शुक्रवार रात को शिंकांसेन ट्रेन से घर जाती और रविवार रात को वापस आ जाती। नागोया तक सिर्फ दो घंटे लगते थे, इसलिए मुझे कभी अकेलापन महसूस नहीं हुआ।"
श्रीमती सकाकी ने सिर हिलाया। "लेकिन नागोया में अच्छे निजी लड़कियों के स्कूल तो थे ही, है ना? आपको अपना घर छोड़कर योकोहामा तक जाने की क्या ज़रूरत थी?"
"मेरी माँ ने वहीं से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी और चाहती थीं कि उनकी एक बेटी भी वहीं पढ़े। मुझे लगा कि माता-पिता से अलग रहना अच्छा रहेगा। वह स्कूल एक मिशनरी स्कूल था, लेकिन काफी उदार था। वहाँ मेरी कुछ अच्छी दोस्त बन गईं। वे सभी मेरी तरह ही थीं, अलग-अलग जगहों से आई थीं, और उनकी माताएँ भी उसी स्कूल से स्नातक थीं। मैं वहाँ छह साल रही और कुल मिलाकर मुझे अच्छा लगा। हालाँकि, खाना बहुत खराब था।"
श्रीमती सकाकी मुस्कुराईं। "आपने कहा कि आपकी एक बड़ी बहन है?"
"हाँ, बिल्कुल सही। वह मुझसे दो साल बड़ी है।"
वह उस स्कूल में क्यों नहीं गई?

“वह घर में रहना ज़्यादा पसंद करती है। बचपन से ही वह थोड़ी बीमार भी रहती थी। इसलिए वह पास के ही एक स्कूल में पढ़ती थी और घर पर ही रहती थी। इसीलिए मेरी माँ चाहती थी कि मैं भी उसी स्कूल में पढ़ूँ। मैं हमेशा से स्वस्थ रही हूँ और अपनी बहन से कहीं ज़्यादा आत्मनिर्भर हूँ। जब मैंने प्राथमिक स्कूल से पढ़ाई पूरी की और मुझसे पूछा गया कि क्या मैं योकोहामा के स्कूल में जाऊँगी, तो मैंने हाँ कह दी। हर सप्ताहांत शिंकानसेन ट्रेन से घर आने का विचार भी मुझे बहुत अच्छा लगता था।”

श्रीमती सकाकी ने मुस्कुराते हुए कहा, "मुझे बीच में टोकने के लिए क्षमा करें। कृपया जारी रखें।"

“छात्रावास में ज़्यादातर लोगों के साथ रूममेट होते थे, लेकिन जब आप सीनियर हो जाते थे तो आपको अपना कमरा मिल जाता था। जब यह सब हुआ, मैं भी ऐसे ही एक सिंगल कमरे में रह रहा था। सीनियर होने के कारण मुझे छात्रावास का छात्र प्रतिनिधि बना दिया गया। छात्रावास के प्रवेश द्वार पर एक बोर्ड लगा था जिस पर हर छात्र के नाम के टैग लटके हुए थे। टैग के आगे वाले हिस्से पर आपका नाम काले रंग में और पीछे वाले हिस्से पर लाल रंग में लिखा होता था। जब भी आप बाहर जाते थे, आपको टैग को पलटना पड़ता था और वापस आने पर उसे सीधा करना पड़ता था। इसलिए, जब किसी का नाम काले रंग में होता था, तो वह छात्रावास में होता था; अगर लाल रंग में होता था, तो इसका मतलब था कि वह बाहर गया है। अगर आप कहीं रात भर रुकने वाले थे या कुछ समय के लिए छुट्टी पर जा रहे थे, तो आपका नाम बोर्ड से हटा दिया जाता था। छात्र बारी-बारी से फ्रंट डेस्क संभालते थे और जब किसी छात्र का फोन आता था, तो बोर्ड पर एक नज़र डालकर ही उनकी स्थिति का पता लगाना आसान होता था। यह बहुत ही सुविधाजनक व्यवस्था थी।”

श्रीमती सकाकी ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन के कुछ शब्द कहे।

खैर, यह अक्टूबर में हुआ था। रात के खाने से पहले का समय था और मैं अपने कमरे में होमवर्क कर रही थी, तभी युको मात्सुनाका नाम की एक जूनियर मुझसे मिलने आई। वह पूरे छात्रावास में सबसे खूबसूरत लड़की थी—गोरी त्वचा, लंबे बाल, सुंदर, गुड़िया जैसी सूरत। उसके माता-पिता कनाज़ावा में एक मशहूर जापानी सराय चलाते थे और काफी संपन्न थे। वह मेरी कक्षा में नहीं थी, इसलिए मुझे ठीक से याद नहीं है, लेकिन मैंने सुना था कि उसके अंक

बहुत अच्छे थे। दूसरे शब्दों में, वह कई मायनों में सबसे अलग थी। कई जूनियर छात्राएं तो मानो उसकी पूजा करती थीं। लेकिन युको मिलनसार थी और बिल्कुल भी घमंडी नहीं थी। वह शांत स्वभाव की लड़की थी जो अपनी भावनाओं को ज्यादा जाहिर नहीं करती थी। अच्छी लड़की थी, लेकिन कभी-कभी मैं समझ नहीं पाती थी कि वह क्या सोच रही है। जूनियर लड़कियां शायद उसे अपना आदर्श मानती होंगी, लेकिन मुझे शक है कि उसके कोई करीबी दोस्त होंगे।



मिज़ुकी अपने कमरे में डेस्क पर बैठी रेडियो सुन रही थी, तभी उसे अपने दरवाजे पर हल्की सी दस्तक सुनाई दी। उसने दरवाजा खोला तो देखा कि युको मात्सुनाका वहाँ खड़ी है, जिसने टाइट टर्टलनेक स्वेटर और जींस पहनी हुई है। युको ने कहा, "अगर आपके पास समय हो तो मैं आपसे बात करना चाहती हूँ।" मिज़ुकी ने सचमुच चौंकते हुए कहा, "ठीक है। मैं अभी कुछ खास नहीं कर रही हूँ।" मिज़ुकी ने युको से कभी अकेले में बात नहीं की थी, और उसने कभी सोचा भी नहीं था कि युको किसी निजी बात पर सलाह लेने के लिए उसके कमरे में आएगी। मिज़ुकी ने उसे बैठने का इशारा किया और अपने थर्मस में रखे गर्म पानी से चाय बनाई।
“मिज़ुकी, क्या तुम्हें कभी जलन हुई है?” युको ने अचानक कहा।
मिज़ुकी इस अचानक पूछे गए सवाल से हैरान रह गई, लेकिन उसने इस पर गंभीरता से विचार किया।
“नहीं, मुझे लगता है मैंने कभी नहीं किया,” उसने जवाब दिया।
“एक बार भी नहीं?”
मिज़ुकी ने सिर हिलाया। “कम से कम, जब तुम मुझसे अचानक इस तरह पूछते हो तो मुझे कोई भी मौका याद नहीं आता। ईर्ष्या... तुम्हारा मतलब किस तरह की ईर्ष्या से है?”
“जैसे आप किसी से प्यार करते हैं, लेकिन वह किसी और से प्यार करता है। जैसे कोई चीज़ आप बहुत शिद्दत से चाहते हैं, लेकिन कोई और उसे छीन लेता है। या कोई काम आप करना चाहते हैं, और कोई और उसे बिना किसी मेहनत के कर लेता है... इस तरह की बातें।”

“मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी ऐसा महसूस किया है,” मिज़ुकी ने कहा। “क्या आपने कभी किया है?”

"बहुत।"

मिज़ुकी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। भला ऐसी लड़की को ज़िंदगी में और क्या चाहिए? वो बेहद खूबसूरत थी, अमीर थी, पढ़ाई में अच्छी थी और सबकी चहेती थी। उसके माता-पिता उसे बहुत प्यार करते थे। मिज़ुकी ने सुना था कि वीकेंड पर वो एक हैंडसम कॉलेज स्टूडेंट के साथ डेट पर जाती थी। भला उसे और क्या चाहिए?

“जैसे कि, उदाहरण के लिए?” मिज़ुकी ने पूछा।

“मैं कुछ कहना नहीं चाहूंगी,” युको ने सोच-समझकर शब्दों का चुनाव करते हुए कहा। “वैसे भी, यहाँ सारी बातें बताने का कोई फायदा नहीं है। मैं तुमसे यह सवाल काफी समय से पूछना चाहती थी—कि क्या तुमने कभी जलन महसूस की है?”

"वास्तव में?"

"हाँ।"

मिज़ुकी को इस सब के बारे में कुछ भी पता नहीं था, लेकिन उसने यथासंभव ईमानदारी से जवाब देने का निश्चय किया। उसने कहना शुरू किया, "मुझे नहीं लगता कि मुझे कभी इस तरह का अनुभव हुआ है। मुझे नहीं पता क्यों, और शायद अगर आप इसके बारे में सोचें तो यह थोड़ा अजीब लगे। मेरा मतलब है, ऐसा नहीं है कि मुझमें बहुत आत्मविश्वास है, या मुझे हर मनचाही चीज़ मिल जाती है। असल में, ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जिनसे मुझे निराश होना चाहिए, लेकिन किसी भी कारण से, इसने मुझे दूसरों से ईर्ष्या नहीं दिलाई है। मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसा क्यों है।"

युको मात्सुनाका ने हल्की सी मुस्कान बिखेरी। “मुझे नहीं लगता कि ईर्ष्या का वास्तविक, वस्तुनिष्ठ परिस्थितियों से कोई खास संबंध है। जैसे कि अगर आप भाग्यशाली हैं तो आपको ईर्ष्या नहीं होती, लेकिन अगर जीवन ने आपको सुख-सुविधाएँ नहीं दी हैं तो आपको ईर्ष्या होती है। ईर्ष्या इस तरह काम नहीं करती। यह तो हमारे अंदर चुपके से बढ़ने वाले ट्यूमर की तरह है जो तर्क से परे बढ़ता ही जाता है। अगर आपको पता भी चल जाए कि यह मौजूद है, तो इसे रोकने के लिए आप कुछ नहीं कर सकते। यह ऐसा कहने जैसा है कि भाग्यशाली लोगों

को ट्यूमर नहीं होते, जबकि दुखी लोगों को आसानी से हो जाते हैं—यह सच नहीं है, है ना? बात बिल्कुल एक जैसी है।"

मिज़ुकी चुपचाप सुनती रही। युको शायद ही कभी एक साथ इतना कुछ कहती थी।

"जिसने कभी ईर्ष्या का अनुभव नहीं किया, उसे यह समझाना मुश्किल है कि ईर्ष्या क्या होती है। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानती हूँ कि इसके साथ जीना आसान नहीं होता। यह ऐसा है मानो हर दिन अपने साथ नरक का छोटा सा रूप ढो रहे हों। आपको शुक्रगुजार होना चाहिए कि आपने कभी ऐसा महसूस नहीं किया।"

युको ने बोलना बंद कर दिया और मिज़ुकी की ओर सीधे देखने लगी, मानो उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान हो। मिज़ुकी ने फिर सोचा, "सच में कितनी प्यारी है वो! अच्छे कपड़े, शानदार फिगर। उसके जैसी खूबसूरती का एहसास कैसा होगा—ऐसी सुंदरता जिसे देखकर हर कोई रुक जाए? क्या यह गर्व करने लायक बात है? या फिर यह एक बोझ जैसा है?"

इन सब विचारों के बावजूद, मिज़ुकी को युको से कभी ईर्ष्या नहीं हुई।

"मैं अब घर जा रही हूँ," युको ने अपनी गोद में रखे हाथों को घूरते हुए कहा। "मेरे एक रिश्तेदार का निधन हो गया है और मुझे अंतिम संस्कार में जाना है। मैंने छात्रावास प्रमुख से अनुमति ले ली है। मैं सोमवार सुबह तक वापस आ जाऊँगी, लेकिन मेरे जाने के दौरान क्या आप मेरे नाम का टैग संभाल लेंगे?"

उसने अपनी जेब से अपना नेम टैग निकाला और मिज़ुकी को दे दिया। मिज़ुकी को समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है।

"मुझे इसे आपके लिए रखने में कोई आपत्ति नहीं है," मिज़ुकी ने कहा। "लेकिन मुझसे पूछने की क्या ज़रूरत थी? क्या आप इसे डेस्क की दराज में नहीं रख सकते थे?"

युको ने मिज़ुकी की आँखों में और भी गहराई से देखा, जिससे मिज़ुकी असहज महसूस करने लगी।

"इस बार बस इतना चाहूँगी कि तुम इसे मेरे लिए संभाल कर रखो," युको ने सीधे-सीधे कहा। "कोई बात मुझे परेशान कर रही है, और मैं उसे अपने कमरे में नहीं रखना चाहती।"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है," मिज़ुकी ने कहा।

"मैं नहीं चाहती कि मेरे जाने के दौरान कोई बंदर इसे लेकर भाग जाए," युको ने कहा।

“मुझे शक है कि यहाँ कोई बंदर होंगे,” मिज़ुकी ने उत्साह से कहा। युको का मज़ाक करना उसकी आदत नहीं थी। और फिर युको कमरे से चली गई, अपने पीछे नेम टैग, बिना छुई चाय का प्याला और उस जगह पर एक अजीब खालीपन छोड़ गई जहाँ वह गई थी।



“सोमवार को युको अभी तक छात्रावास नहीं लौटी थी,” मिज़ुकी ने अपनी काउंसलर, श्रीमती साकाकी को बताया। “उसकी कक्षा के प्रभारी शिक्षक चिंतित थे, इसलिए उन्होंने उसके माता-पिता को फोन किया। वह घर ही नहीं लौटी थी। उसके परिवार में किसी की मृत्यु नहीं हुई थी, और न ही उसके लिए कोई अंतिम संस्कार हुआ था जिसमें वह शामिल हो सके। उसने सारी बात झूठ बोल दी और फिर गायब हो गई। अगले सप्ताह, सप्ताहांत में उसका शव मिला। मुझे इसके बारे में तब पता चला जब मैं नागोया में अपने घर पर सप्ताहांत बिताकर वापस आई। उसने कहीं जंगल में जाकर अपनी कलाई काटकर आत्महत्या कर ली थी। जब उसे पाया गया तो वह मृत थी, खून से लथपथ थी। किसी को नहीं पता था कि उसने ऐसा क्यों किया। उसने कोई सुसाइड नोट नहीं छोड़ा, और कोई स्पष्ट मकसद भी नहीं था। उसकी रूममेट ने कहा कि वह हमेशा की तरह ही लग रही थी। वह किसी बात से परेशान नहीं लग रही थी। युको ने किसी को कुछ बताए बिना आत्महत्या कर ली।”

“लेकिन क्या मिस मात्सुनाका आपको कुछ बताने की कोशिश नहीं कर रही थीं?” श्रीमती साकाकी ने पूछा। “इसीलिए तो वो आपके कमरे में आई थीं, आपके पास अपना नेम टैग छोड़ गईं और अपनी ईर्ष्या के बारे में बात की।”

"यह सच है कि उसने मुझसे ईर्ष्या के बारे में बात की थी। मैंने उस समय इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, हालांकि बाद में मुझे एहसास हुआ कि मरने से पहले वह किसी को इसके बारे में बताना चाहती होगी।"

"क्या आपने किसी को बताया था कि मरने से ठीक पहले वह आपके कमरे में आई थी?"

नहीं, मैंने ऐसा कभी नहीं किया।

"क्यों नहीं?"

मिज़ुकी ने अपना सिर झुकाया और कुछ देर सोचा। "अगर मैंने लोगों को इसके बारे में बताया, तो इससे और भी भ्रम पैदा होगा। कोई भी इसे समझेगा नहीं, और इससे कोई फायदा भी नहीं होगा।"

"आपका मतलब है कि ईर्ष्या उसकी आत्महत्या का कारण हो सकती है?"

“हाँ। अगर मैं लोगों को यह बता देती, तो वे शायद सोचने लगते कि मुझमें कुछ गड़बड़ है। युको जैसी लड़की भला किससे ईर्ष्या करेगी? उस समय सब लोग बहुत उलझन में थे और परेशान भी, इसलिए मैंने चुप रहना ही बेहतर समझा। आप लड़कियों के स्कूल के छात्रावास का माहौल समझ सकते हैं—अगर मैंने कुछ कहा होता तो ऐसा लगता जैसे गैस से भरे कमरे में माचिस जला दी हो।”

“नेम टैग का क्या हुआ?”

“यह अभी भी मेरे पास है। यह मेरी अलमारी के पीछे एक डिब्बे में रखा है। साथ में मेरा अपना नाम टैग भी है।”

आप इसे अभी भी अपने पास क्यों रखते हैं?

“उस समय स्कूल में बहुत हंगामा मचा हुआ था और मैं उसे लौटाने का मौका चूक गई। जितना ज़्यादा इंतज़ार करती गई, उसे यूँ ही यूँ ही लौटाना उतना ही मुश्किल होता गया। लेकिन मैं उसे फेंक भी नहीं सकती थी। इसके अलावा, मुझे लगने लगा कि शायद युको चाहती थी कि मैं वह नेम टैग अपने पास रखूँ। इसीलिए मरने से ठीक पहले वह मेरे कमरे में आई और उसे मेरे पास छोड़ गई। उसने मुझे ही क्यों चुना, यह मुझे बिल्कुल नहीं पता।”

“यह कुछ अजीब सा है। आप और यूको बहुत करीबी दोस्त नहीं थे, है ना?”

“छोटे से छात्रावास में रहने के कारण, स्वाभाविक रूप से हमारी मुलाकात हो जाती थी,” मिज़ुकी ने कहा। “कभी-कभार हमारी कुछ बातें हो जाती थीं। लेकिन हम अलग-अलग कक्षाओं में थे, और हमने कभी भी निजी बातों पर चर्चा नहीं की थी। शायद वह मुझसे मिलने इसलिए आई थी क्योंकि मैं छात्रावास में छात्र प्रतिनिधि थी। मुझे इसके अलावा कोई और कारण समझ नहीं आता।”

"शायद युको को आपमें किसी वजह से दिलचस्पी थी। हो सकता है वह आपकी तरफ आकर्षित हुई हो। हो सकता है उसने आपमें कुछ ऐसा देखा हो जिसकी तरफ वह खिंची चली गई हो।"

"मुझे इसके बारे में पता नहीं होगा," मिज़ुकी ने कहा।

श्रीमती सकाकी चुप रहीं और कुछ देर तक मिज़ुकी को देखती रहीं, मानो किसी बात की पुष्टि करने की कोशिश कर रही हों।

“इन सब बातों को छोड़ दें तो, क्या आपने सच में कभी जलन महसूस नहीं की? अपने जीवन में एक बार भी नहीं?”

मिज़ुकी ने तुरंत जवाब नहीं दिया। "मुझे ऐसा नहीं लगता। कभी नहीं।"

"इसका मतलब यह है कि आप ईर्ष्या क्या होती है, यह समझ ही नहीं सकते?"

“आम तौर पर मुझे लगता है कि मैं इसका कारण समझ सकता हूँ। लेकिन मुझे नहीं पता कि वास्तव में यह कैसा महसूस होता है। यह कितना तीव्र होता है, कितने समय तक रहता है, और इसकी वजह से कितना कष्ट सहना पड़ता है।”

“आप सही कह रही हैं,” श्रीमती सकाकी ने कहा। “ईर्ष्या कई चरणों से गुज़रती है। सभी मानवीय भावनाएँ ऐसी ही होती हैं। जब यह ज़्यादा गंभीर नहीं होती, तो लोग इसे चिंता या ईर्ष्या कहते हैं। तीव्रता में अंतर हो सकता है, लेकिन ज़्यादातर लोग इन कम तीव्र भावनाओं का अनुभव स्वाभाविक रूप से करते हैं। जैसे मान लीजिए कि आपके किसी सहकर्मी को आपसे पहले पदोन्नति मिल जाती है, या आपकी कक्षा का कोई छात्र शिक्षक का चहेता बन जाता है। या आपके पड़ोसी लॉटरी जीत जाते हैं। यह बस ईर्ष्या है। यह अन्यायपूर्ण लगता है, और आपको थोड़ा गुस्सा आता है। एक बिल्कुल स्वाभाविक प्रतिक्रिया। क्या आपको यकीन है कि आपने कभी ऐसा महसूस नहीं किया? क्या आपने कभी किसी और से ईर्ष्या भी नहीं की?”

मिज़ुकी ने कुछ देर सोचा। “मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी ऐसा महसूस किया है। बेशक, मुझसे ज़्यादा खुशकिस्मत लोग बहुत हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैंने कभी उनसे ईर्ष्या की हो। मेरा मानना है कि हर किसी का जीवन अलग होता है।”

"चूंकि हर कोई अलग है, इसलिए उनकी तुलना करना मुश्किल है?"

"मुझे ऐसा लगता है।"

“एक दिलचस्प दृष्टिकोण...,” श्रीमती सकाकी ने मेज पर हाथ जोड़कर कहा, उनकी सहज आवाज में हंसी झलक रही थी। “खैर, ये तो बस मामूली मामले हैं, जैसा कि हमने कहा, ईर्ष्या। तीव्र ईर्ष्या के मामलों में चीजें इतनी सरल नहीं होतीं। ईर्ष्या के साथ एक परजीवी आपके दिल में जड़ जमा लेता है, और जैसा कि आपके दोस्त ने कहा, यह एक कैंसर की तरह हो जाता है जो आपकी आत्मा को खा जाता है। कुछ मामलों में यह व्यक्ति को मृत्यु तक भी ले जा सकता है। वे इसे नियंत्रित नहीं कर सकते, और उनका जीवन सचमुच नरक बन जाता है।”



घर लौटने के बाद मिज़ुकी ने अपनी अलमारी के पीछे से टेप से लिपटा एक पुराना गत्ते का डिब्बा निकाला। उसने युको का नाम टैग और अपना नाम टैग एक लिफाफे में डालकर उसमें रखा था, इसलिए वे अभी भी वहीं होने चाहिए थे। डिब्बे में मिज़ुकी की ज़िंदगी की कई यादगार चीज़ें भरी हुई थीं—प्राथमिक विद्यालय के पुराने पत्र, डायरी, फोटो एल्बम, रिपोर्ट कार्ड। वह इसे फेंकना चाहती थी, लेकिन हमेशा व्यस्त रहने के कारण हर बार जगह बदलते समय इसे अपने साथ ले जाती थी। लेकिन लिफाफा कहीं नहीं मिला। उसने डिब्बे का सारा सामान उलट दिया और ध्यान से छाँटा, लेकिन कुछ नहीं मिला। वह हैरान रह गई। जब वह इस अपार्टमेंट में आई थी, तब उसने डिब्बे के अंदर की चीज़ों को जल्दी से देखा था और उसे लिफाफा साफ-साफ याद था। उसने तब सोचा था, "तो यह अभी भी मेरे पास है," और उसे अच्छा लगा था। उसने नाम टैग वापस लिफाफे में बंद कर दिए थे और तब से उसने डिब्बा एक बार भी नहीं खोला था। तो लिफाफा यहीं होना चाहिए। आखिर यह कहाँ गायब हो गया?



जब से मिज़ुकी ने वार्ड काउंसलिंग ऑफिस में हफ्ते में एक बार जाना और श्रीमती साकाकी से बात करना शुरू किया, तब से उसे अपना नाम भूलने की चिंता उतनी नहीं रही। वह अब भी पहले की तरह ही अपना नाम भूल जाती थी, लेकिन लक्षण स्थिर हो गए थे और उसकी

याददाश्त से कुछ और नहीं निकला था। अपने ब्रेसलेट की बदौलत वह शर्मिंदगी से बच गई थी। उसे कभी-कभी ऐसा लगने लगा था कि अपना नाम भूलना जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है।

मिज़ुकी ने अपने काउंसलिंग सेशन के बारे में अपने पति से छुपाकर रखा था। उसका इरादा तो इसे छुपाने का नहीं था, लेकिन पूरी बात समझाना उसे झंझट भरा लगता था। उसे पता था कि उसका पति विस्तार से स्पष्टीकरण मांगेगा। और वैसे भी, उसका नाम भूल जाना और वार्ड द्वारा प्रायोजित काउंसलर के पास हफ्ते में एक बार जाना उसे ज़रा भी परेशान नहीं कर रहा था। फीस भी बहुत कम थी।

दो महीने बीत गए। हर बुधवार को मिज़ुकी परामर्श के लिए वार्ड कार्यालय की तीसरी मंज़िल पर स्थित दफ्तर जाती थी। मरीज़ों की संख्या थोड़ी बढ़ गई थी, इसलिए उन्हें अपने एक घंटे के सत्र को घटाकर तीस मिनट करना पड़ा। हालाँकि, समय कम होने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था, क्योंकि वे पहले से ही एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते थे और साथ बिताए समय का भरपूर फ़ायदा उठाते थे। कभी-कभी मिज़ुकी चाहती थी कि वे ज़्यादा देर तक बात कर सकें, लेकिन इतनी कम फीस के कारण वह शिकायत नहीं कर सकती थी।

“यह हमारा नौवां सत्र है,” श्रीमती सकाकी ने एक सत्र समाप्त होने से पांच मिनट पहले कहा। “आप अपना नाम भूलने की आदत में कोई कमी नहीं आई है, लेकिन स्थिति और खराब तो नहीं हुई है, है ना?”

“नहीं, ऐसा नहीं हुआ है,” मिज़ुकी ने कहा। “लक्षण स्थिर बने हुए हैं।”

“यह बहुत बढ़िया है,” श्रीमती सकाकी ने कहा। उन्होंने अपना काले रंग का बॉलपॉइंट पेन वापस अपनी जेब में रखा और डेस्कटॉप पर अपने हाथों को कसकर पकड़ लिया। वह एक पल के लिए रुकीं। “शायद—बस शायद—जब आप अगले हफ्ते यहाँ आएँगी, तो हम जिस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं, उसमें काफी प्रगति कर पाएँ।”

"आपका मतलब मेरे अपना नाम भूल जाने से है?"

“बिल्कुल सही। अगर सब कुछ ठीक रहा, तो हम निश्चित कारण का पता लगा पाएंगे और यहां तक कि आपको दिखा भी पाएंगे।”

मैं अपना नाम क्यों भूल रहा हूँ?

"एकदम सही।"

मिज़ुकी को उसकी बात पूरी तरह समझ नहीं आई। "जब आप किसी निश्चित कारण की बात करती हैं... तो आपका मतलब है कि वह कुछ दिखाई देने वाला है?"

“बिल्कुल, यह दिख रहा है,” श्रीमती सकाकी ने संतुष्टि से अपने हाथ मलते हुए कहा। “यह ऐसी चीज है जिसे हम थाली में परोसकर कह सकते हैं, लीजिए! मैं अगले हफ्ते तक विस्तार से नहीं बता सकती। अभी मुझे पक्का नहीं पता कि यह सफल होगा या नहीं। मैं बस यही उम्मीद कर रही हूँ कि यह सफल हो जाए। और अगर यह सफल होता है, तो चिंता मत कीजिए; मैं आपको सब कुछ समझा दूँगी।”

मिज़ुकी ने सिर हिलाया।

खैर, कहने का मतलब ये है कि इस मामले में उतार-चढ़ाव तो आए, लेकिन अब आखिरकार समाधान की ओर बढ़ रहे हैं। आप जानते ही हैं ना, ज़िंदगी में तीन कदम आगे और दो कदम पीछे होते हैं? तो चिंता मत कीजिए। बस श्रीमती सकाकी पर भरोसा रखिए। फिर अगले हफ्ते मिलते हैं। और जाते समय अपॉइंटमेंट लेना मत भूलिएगा।

श्रीमती सकाकी ने अपनी इस बात को आंख मारकर समाप्त किया।



अगले सप्ताह दोपहर एक बजे जब मिज़ुकी काउंसलिंग कार्यालय में दाखिल हुई, तो श्रीमती साकाकी अपनी डेस्क के पीछे बैठी थीं और उनके चेहरे पर अब तक की सबसे बड़ी मुस्कान थी जो मिज़ुकी ने कभी देखी थी।

“मुझे पता चल गया है कि तुम अपना नाम क्यों भूल जाते हो,” उसने गर्व से घोषणा की। “और हमने इसका समाधान भी ढूंढ लिया है।”

"तो अब मैं अपना नाम नहीं भूलूंगी?" मिज़ुकी ने पूछा।

“बिल्कुल सही। अब आप अपना नाम नहीं भूलेंगे। हमने समस्या का समाधान कर दिया है और इसे संभाल लिया है।”

"आखिर इसका कारण क्या था?" मिज़ुकी ने संदेह से पूछा।

श्रीमती सकाकी ने अपने बगल में रखे काले एनामेल वाले हैंडबैग से कुछ निकाला और उसे मेज पर रख दिया।
मुझे लगता है यह आपका है।
मिज़ुकी सोफे से उठी और मेज की ओर चली गई। मेज पर दो नाम टैग रखे थे। एक पर मिज़ुकी ओज़ावा और दूसरे पर युको मात्सुनाका लिखा था। मिज़ुकी का चेहरा पीला पड़ गया। वह वापस सोफे पर बैठ गई और कुछ देर तक अवाक रही। उसने अपने दोनों हाथों से अपना मुंह ढक लिया, मानो शब्दों को बाहर निकलने से रोक रही हो।
“आपकी हैरानी की कोई बात नहीं,” श्रीमती सकाकी ने कहा। “लेकिन चिंता न करें, मैं सब कुछ समझा दूंगी। निश्चिंत रहें। डरने की कोई बात नहीं है।”
“लेकिन तुमने ये कैसे किया—?” मिज़ुकी ने कहा।
"तुम्हारे हाई स्कूल के नेम टैग मेरे पास कैसे आ गए?"
“हां। मुझे बस समझ नहीं आ रहा—”
समझ नहीं आया?
मिज़ुकी ने सिर हिलाया।
श्रीमती सकाकी ने कहा, "मैंने ये आपके लिए वापस दिलवाए हैं। ये नाम टैग आपसे चोरी हो गए थे और इसी वजह से आपको अपना नाम याद रखने में परेशानी होती है। इसलिए हमें ये नाम टैग वापस दिलवाने पड़े ताकि आप अपना नाम याद रख सकें।"
लेकिन कौन करेगा—?
“कौन आपके घर में घुसकर ये दो नेम टैग चुराएगा? और किस मकसद से?” श्रीमती सकाकी ने कहा। “इसका जवाब मुझसे लेने के बजाय, बेहतर होगा कि आप सीधे उस व्यक्ति से पूछें जो इसके लिए ज़िम्मेदार है।”
"जिसने यह किया है, वह यहाँ है?" मिज़ुकी ने आश्चर्य से पूछा।
“बिल्कुल। हमने उसे पकड़ लिया और उसके नाम टैग वापस ले लिए। ध्यान रहे, मैंने उसे खुद नहीं पकड़ा। मेरे पति और उनके एक साथी ने उसे पकड़ा। याद है मैंने आपको बताया था कि मेरे पति शिनागावा लोक निर्माण विभाग के अनुभाग प्रमुख हैं?”
मिज़ुकी ने बिना सोचे समझे सिर हिला दिया।

तो क्या कहते हो, हम अपराधी से मिलने चलें? फिर तुम उसे आमने-सामने खरी-खोटी सुना सकते हो।
मिज़ुकी, श्रीमती साकाकी के पीछे-पीछे काउंसलिंग कार्यालय से बाहर निकलीं, गलियारे से गुज़रीं और लिफ्ट में चढ़ गईं। वे तहखाने में उतरीं, एक लंबे सुनसान गलियारे से गुज़रीं और बिल्कुल अंत में एक दरवाज़े पर पहुँचीं। श्रीमती साकाकी ने दरवाज़ा खटखटाया, एक आदमी की आवाज़ ने उन्हें अंदर आने को कहा और उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया।
अंदर लगभग पचास साल का एक लंबा, पतला आदमी और लगभग पच्चीस साल का एक हट्टा-कट्टा आदमी था, दोनों ने हल्के खाकी रंग के काम के कपड़े पहने हुए थे। बड़े आदमी की छाती पर "साकाकी" नाम का टैग लगा था, जबकि छोटे आदमी के टैग पर "साकुराडा" लिखा था। साकुराडा के हाथों में एक काली लाठी थी।
“श्रीमती मिज़ुकी एंडो, मेरा अनुमान है?” श्री साकाकी ने पूछा। “मेरा नाम योशियो साकाकी है, मैं तेत्सुको का पति हूँ। मैं यहाँ लोक निर्माण विभाग का अनुभाग प्रमुख हूँ। और ये श्री सकुरादा हैं, जो मेरे साथ काम करते हैं।”
"आपसे मिलकर अच्छा लगा," मिज़ुकी ने कहा।
"क्या वह आपको कोई परेशानी दे रहा है?" श्रीमती सकाकी ने अपने पति से पूछा।
“नहीं, मुझे लगता है कि उसने स्थिति को स्वीकार कर लिया है,” श्री साकाकी ने कहा। “साकुरादा सुबह से उस पर नज़र रख रहा है, और जाहिर तौर पर वह ठीक से व्यवहार कर रहा है।”
श्री सकुराडा ने निराशा भरे स्वर में कहा, "वह शांत रहा है। अगर वह हिंसक होने लगता तो मैं उसे सबक सिखाने के लिए पूरी तरह तैयार था, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।"
श्री सकाकी ने कहा, "सकुरादा मेइजी विश्वविद्यालय में कराटे टीम के कप्तान थे, और वह हमारे उभरते हुए युवा खिलाड़ियों में से एक हैं।"
"तो आखिर कौन मेरे घर में घुसकर वो नेम टैग चुरा ले गया?" मिज़ुकी ने पूछा।
“अच्छा, क्यों न हम आपको उनसे मिलवा दें?” श्रीमती सकाकी ने कहा।

कमरे के पीछे एक और दरवाजा था। श्री सकुरादा ने उसे खोला और बत्ती जला दी। उन्होंने कमरे का एक त्वरित अवलोकन किया और बाकी लोगों की ओर मुड़े। "सब ठीक लग रहा है। कृपया अंदर आ जाइए।"

सबसे पहले श्री सकाकी अंदर गए, उनके पीछे उनकी पत्नी और सबसे पीछे मिज़ुकी थीं।

कमरा किसी छोटे से भंडारगृह जैसा लग रहा था। उसमें कोई फर्नीचर नहीं था, बस एक कुर्सी थी जिस पर एक बंदर बैठा था। वह बंदरों के हिसाब से काफी बड़ा था—एक वयस्क इंसान से छोटा, लेकिन प्राथमिक विद्यालय के छात्र से बड़ा। उसके बाल बंदरों के सामान्य बालों से थोड़े लंबे थे और उनमें जगह-जगह सफेद बाल भी थे। उसकी उम्र का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था, लेकिन वह निश्चित रूप से अब जवान नहीं था। बंदर के हाथ-पैर एक पतली रस्सी से लकड़ी की कुर्सी से कसकर बंधे थे और उसकी लंबी पूंछ ज़मीन पर लटक रही थी। जैसे ही मिज़ुकी अंदर आई, बंदर ने उसे एक नज़र देखा, फिर ज़मीन की ओर देखने लगा।

“एक बंदर?” मिज़ुकी ने आश्चर्य से पूछा।

“जी हां,” श्रीमती सकाकी ने जवाब दिया। “एक बंदर आपके अपार्टमेंट से नाम के टैग चुरा ले गया।”

युको ने कहा था, "मैं नहीं चाहती कि कोई बंदर इसे लेकर भाग जाए।" मिज़ुकी को एहसास हुआ कि यह कोई मज़ाक नहीं था। युको को इस सब के बारे में पता था। मिज़ुकी की रीढ़ में सिहरन दौड़ गई।

लेकिन आप ऐसा कैसे कर सकते हैं—?

“मुझे इसके बारे में कैसे पता चलेगा?” श्रीमती सकाकी ने कहा। “जैसा कि मैंने आपसे पहली मुलाकात में कहा था, मैं एक पेशेवर हूँ। लाइसेंस प्राप्त चिकित्सक, जिसके पास बहुत अनुभव है। लोगों को उनके बाहरी रूप से मत आंकिए। यह मत सोचिए कि वार्ड कार्यालय में सस्ती काउंसलिंग देने वाला व्यक्ति किसी आलीशान इमारत में काम करने वाले व्यक्ति से कम कुशल है।”

“नहीं, बिलकुल नहीं। बस मैं बहुत हैरान हो गया था, और मैं—”

“चिंता मत करो। मैं तो बस मज़ाक कर रही थी!” श्रीमती सकाकी हँसी। “सच कहूँ तो, मैं जानती हूँ कि मैं थोड़ी सनकी हूँ। इसीलिए संगठनों और शिक्षा जगत से मेरा तालमेल ठीक

नहीं बैठता। मुझे ऐसी जगह पर अपनी मर्ज़ी से चलना ज़्यादा पसंद है। क्योंकि, जैसा कि आपने देखा है, मेरा काम करने का तरीका काफ़ी अनोखा है।”

“लेकिन बहुत प्रभावी,” उनके पति ने कहा।

“तो इस बंदर ने नाम के टैग चुरा लिए?” मिज़ुकी ने पूछा।

“हाँ, वह चुपके से आपके अपार्टमेंट में घुस गया और आपकी अलमारी से नाम के टैग चुरा ले गया। ठीक उसी समय जब आप अपना नाम भूलने लगे थे, लगभग एक साल पहले, मुझे लगता है?”

"हां, लगभग उसी समय की बात है।"

"मुझे बहुत खेद है," बंदर ने पहली बार बोलते हुए कहा, उसकी आवाज धीमी लेकिन जोशीली थी, जिसमें लगभग एक संगीतमय गुणवत्ता थी।

“वह बोल सकता है!” मिज़ुकी ने अचंभित होकर कहा।

“हाँ, मैं कर सकता हूँ,” बंदर ने बिना कोई भाव बदले जवाब दिया। “एक और बात के लिए मुझे माफ़ी माँगनी है। जब मैं नाम के टैग चुराने के लिए आपके घर में घुसा था, तो मैंने दो केले उठा लिए थे। मैंने नाम के टैग के अलावा कुछ और लेने का इरादा नहीं किया था, लेकिन मुझे बहुत भूख लगी थी, और हालाँकि मुझे पता था कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, फिर भी मैंने मेज पर रखे दो केले उठा लिए। वे इतने स्वादिष्ट लग रहे थे कि मैं उन्हें छोड़ नहीं पाया।”

“इस आदमी की हिम्मत तो देखो,” श्री सकुरादा ने अपने हाथों में पकड़ी काली लाठी को दो-तीन बार पटकते हुए कहा। “पता नहीं इसने और क्या-क्या चुराया होगा। क्या मैं इससे थोड़ी पूछताछ करके पता लगाऊं?”

श्री सकाकी ने उनसे कहा, “शांत रहो। उसने खुद केले वाली बात कबूल कर ली है, और वैसे भी, वह मुझे इतना क्रूर आदमी नहीं लगता। जब तक हमें और तथ्य पता नहीं चल जाते, तब तक कोई बड़ा कदम न उठाएं। अगर उन्हें पता चल गया कि हमने वार्ड कार्यालय के अंदर किसी जानवर के साथ दुर्व्यवहार किया है, तो हम बड़ी मुसीबत में पड़ सकते हैं।”

“तुमने नाम के टैग क्यों चुराए?” मिज़ुकी ने बंदर से पूछा।

“यही तो मेरा काम है। मैं एक बंदर हूँ जो लोगों के नाम चुराता है,” बंदर ने जवाब दिया। “यह मेरी एक बीमारी है। एक बार कोई नाम दिख जाए तो मैं खुद को रोक नहीं पाता। और कोई

भी नाम नहीं, बल्कि कोई भी नाम। मुझे कोई ऐसा नाम दिखता है जो मुझे आकर्षित करता है, खासकर किसी व्यक्ति का नाम, और फिर मुझे वह नाम चाहिए ही होता है। मैं चुपके से लोगों के घरों में घुसकर ऐसे नाम चुरा लेता हूँ। मुझे पता है यह गलत है, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं पाता।"

"क्या तुम ही वो व्यक्ति थे जो हमारे छात्रावास में घुसकर युको का नेम टैग चुराने की कोशिश कर रहे थे?"

"हाँ, बिल्कुल सही। मैं मिस मात्सुनाका के प्यार में पूरी तरह डूबा हुआ था। ज़िंदगी में कभी किसी के प्रति इतना आकर्षित नहीं हुआ था। लेकिन मैं उन्हें अपना नहीं बना पाया। एक बंदर होने के नाते, मेरे लिए यह असहनीय था, इसलिए मैंने तय किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, कम से कम उनका नाम तो मुझे मिलना ही चाहिए। अगर उनका नाम मेरे पास होता, तो मैं संतुष्ट हो जाता। एक बंदर को और क्या चाहिए? लेकिन इससे पहले कि मैं अपनी योजना को अंजाम दे पाता, उनका देहांत हो गया।"

क्या उसकी आत्महत्या में आपका कोई हाथ था?

"नहीं, मैंने नहीं किया," बंदर ने सिर हिलाते हुए ज़ोर से कहा। "मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं था। वह आंतरिक अंधकार से घिरी हुई थी, और कोई भी उसे बचा नहीं सकता था।"

"लेकिन इतने सालों बाद आपको कैसे पता चला कि यूको का नेम टैग मेरे घर पर था?"

"इसे ढूंढने में बहुत समय लगा। मिस मात्सुनाका की मृत्यु के तुरंत बाद, मैंने उनका नेमटैग हासिल करने की कोशिश की, इससे पहले कि वे उसे ले जाएं, लेकिन वह पहले ही गायब हो चुका था। किसी को भी पता नहीं था कि वह कहां है। मैंने उसे ढूंढने के लिए जी तोड़ मेहनत की, लेकिन चाहे मैंने कुछ भी किया हो, मैं उसे ढूंढ नहीं पाई। उस समय मुझे यह ख्याल भी नहीं आया था कि मिस मात्सुनाका ने अपना नेमटैग आपके पास छोड़ा होगा, क्योंकि आप दोनों के बीच कोई खास करीबी रिश्ता नहीं था।"

"सच है," मिज़ुकी ने कहा।

"लेकिन एक दिन अचानक मेरे मन में एक विचार आया कि शायद—बस शायद—उसने अपना नेम टैग तुम्हारे पास छोड़ दिया हो। यह पिछले साल वसंत ऋतु की बात है। तुम्हें ढूंढने में बहुत समय लगा—यह पता लगाने में कि तुम्हारी शादी हो चुकी है, तुम्हारा नाम अब

मिज़ुकी एंडो है, और तुम शिनागावा में एक कॉन्डो में रह रहे हो। जैसा कि तुम समझ सकते हो, बंदर होने के कारण ऐसी जांच धीमी हो जाती है। खैर, इसी वजह से मैं तुम्हारे अपार्टमेंट में घुसकर उसे चुरा लाया।"

"लेकिन तुमने मेरा नेम टैग भी क्यों चुराया? सिर्फ़ यूको का ही क्यों नहीं? तुम्हारी वजह से मुझे बहुत तकलीफ़ हुई। मैं अपना नाम तक भूल गई थी!"

"मुझे बहुत-बहुत खेद है," बंदर ने शर्म से सिर झुकाते हुए कहा। "जब मुझे कोई नाम पसंद आता है, तो मैं उसे छीन लेता हूँ। यह थोड़ा शर्मनाक है, लेकिन आपका नाम मेरे प्यारे से दिल को छू गया। जैसा कि मैंने पहले भी कहा, यह एक तरह की बीमारी है। मुझ पर ऐसी इच्छाएँ हावी हो जाती हैं जिन्हें मैं नियंत्रित नहीं कर सकता। मुझे पता है कि यह गलत है, लेकिन फिर भी मैं ऐसा करता हूँ। मैंने आपको जो भी परेशानियाँ दीं, उसके लिए मैं तहे दिल से माफी मांगता हूँ।"

श्रीमती सकाकी ने कहा, "यह बंदर शिनागावा के सीवरों में छिपा हुआ था, इसलिए मैंने अपने पति से कहा कि वे अपने कुछ युवा सहयोगियों से उसे पकड़वाएं। यह कारगर साबित हुआ, क्योंकि वे लोक निर्माण विभाग के अनुभाग प्रमुख हैं और सीवरों की देखरेख उन्हीं की जिम्मेदारी है।"

श्री सकाकी ने आगे कहा, "यहाँ युवा सकुराडा ने अधिकांश काम किया।"

"जब हमारे सीवरों में इस तरह का कोई संदिग्ध जीव छिपा हो, तो लोक निर्माण विभाग को सतर्क हो जाना चाहिए," सकुरादा ने गर्व से कहा। "ऐसा लगता है कि उस बंदर का ताकानावा के नीचे एक ठिकाना था, जिसका इस्तेमाल वह पूरे टोक्यो में भोजन की तलाश के लिए करता था।"

"शहर में हमारे रहने की कोई जगह नहीं है," बंदर ने कहा। "यहाँ ज़्यादा पेड़ नहीं हैं, दिन के समय छायादार जगहें भी कम हैं। अगर हम ज़मीन के ऊपर आते हैं, तो लोग हम पर टूट पड़ते हैं और हमें पकड़ने की कोशिश करते हैं। बच्चे हम पर चीज़ें फेंकते हैं या बीबी गन से हम पर गोलियाँ चलाते हैं। बड़े-बड़े कुत्ते हमारा पीछा करते हैं। अगर हम पेड़ पर आराम करते हैं, तो टीवी क्रू आ जाते हैं और हम पर तेज़ रोशनी डालते हैं। हमें कभी आराम नहीं मिलता, इसलिए हमें ज़मीन के नीचे छिपना पड़ता है। कृपया मुझे माफ़ कर दीजिए।"

"लेकिन आपको यह कैसे पता चला कि यह बंदर सीवर में छिपा हुआ था?" मिज़ुकी ने श्रीमती साकाकी से पूछा।
श्रीमती सकाकी ने कहा, “पिछले दो महीनों में हमारी बातचीत के दौरान, कई बातें धीरे-धीरे मेरे लिए स्पष्ट होती गईं, जैसे कोहरा छंट गया हो। मुझे एहसास हुआ कि कोई ऐसी चीज जरूर है जो नाम चुरा रही है, और जो भी हो, वह यहीं कहीं जमीन के नीचे छिपी हुई होगी। और अगर आप किसी शहर के नीचे की बात कर रहे हैं, तो संभावनाएं सीमित हो जाती हैं—यह या तो सबवे होगा या सीवर। इसलिए मैंने अपने पति से कहा कि मुझे लगता है कि सीवर में कोई जीव रहता है, इंसान नहीं, और उनसे इसकी जांच करने को कहा। और वाकई, उन्हें इस बंदर का पता चला।”
मिज़ुकी कुछ देर तक अवाक रह गई। "लेकिन—सिर्फ मेरी बातें सुनकर आपको ऐसा कैसे लग गया?"
श्री सकाकी ने गंभीर भाव से कहा, “शायद पति होने के नाते यह कहना मेरा अधिकार नहीं है, लेकिन मेरी पत्नी एक असाधारण व्यक्तित्व हैं, जिनके पास अनोखी शक्तियां हैं। बाईस साल के वैवाहिक जीवन में मैंने कई बार अजीबोगरीब घटनाएं घटित होते देखी हैं। इसीलिए मैंने वार्ड कार्यालय में परामर्श केंद्र खोलने में उनकी मदद करने के लिए इतनी मेहनत की। मुझे पता था कि जब तक उन्हें अपनी शक्तियों का सदुपयोग करने के लिए एक जगह मिल जाएगी, शिनागावा के निवासियों को लाभ होगा। लेकिन मुझे सच में खुशी है कि हमने रहस्य सुलझा लिया है। मुझे सच में राहत मिली है।”
“तुम इस बंदर का क्या करोगे?” मिज़ुकी ने पूछा।
“उसे ज़िंदा नहीं छोड़ सकते,” सकुरादा ने बेपरवाही से कहा। “चाहे वो कुछ भी कहे, एक बार ऐसी बुरी आदत लग जाए तो वो तुरंत अपनी पुरानी हरकतें फिर से शुरू कर देगा, इस बात पर यकीन मानो। चलो उसे खत्म कर देते हैं। यही सबसे अच्छा तरीका है। उसे डिसइंफेक्टेंट का इंजेक्शन लगा दो और काम तमाम।”
“ज़रा रुकिए,” श्री सकाकी ने कहा। “चाहे हमारे पास कोई भी कारण क्यों न हो, अगर किसी पशु अधिकार समूह को पता चल गया कि हमने एक बंदर को मार डाला है, तो वे शिकायत दर्ज कराएंगे और यकीन मानिए, इसके गंभीर परिणाम होंगे। आपको याद है जब हमने उन

सभी कौवों को मार डाला था, उस पर कितना हंगामा हुआ था? मैं नहीं चाहता कि ऐसा दोबारा हो।”
बंधे हुए बंदर ने सिर झुकाते हुए कहा, “मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया मुझे मत मारिए। मैंने जो किया है वह गलत है। मैं यह समझता हूँ। मैंने मनुष्यों को बहुत कष्ट पहुँचाया है। मैं आपसे बहस नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मेरे कार्यों से कुछ अच्छा भी हुआ है।”
श्री सकाकी ने तीखे स्वर में कहा, "लोगों के नाम चुराने से भला क्या फायदा हो सकता है? अपनी बात स्पष्ट करो।"
“मैं लोगों के नाम चुराता हूँ, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन ऐसा करने से मैं उन नामों से जुड़ी कुछ नकारात्मक बातों को भी दूर कर पाता हूँ। मैं शेखी नहीं बघारना चाहता, लेकिन अगर मैं उस समय युको मात्सुनाका का नाम चुरा पाता, तो शायद उसने आत्महत्या न की होती।”
“तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?” मिज़ुकी ने पूछा।
“अगर मैं उसका नाम चुराने में कामयाब हो जाता, तो शायद मैं उसके अंदर छिपे कुछ अंधेरे को दूर कर पाता,” बंदर ने कहा। “उसके अंधेरे को, उसके नाम के साथ, वापस धरती के नीचे की दुनिया में ले जाता।”
“यह तो बहुत ही सुविधाजनक है। मुझे इस पर यकीन नहीं होता,” सकुराडा ने कहा। “इस बंदर की जान खतरे में है, इसलिए ज़ाहिर है कि वह अपने कृत्यों को सही ठहराने के लिए हर संभव चाल चलेगा।”
“शायद नहीं,” श्रीमती सकाकी ने कुछ देर सोचने के बाद हाथ बाँधकर कहा। “हो सकता है उसकी बात में दम हो।” फिर वह बंदर की ओर मुड़ी। “जब तुम नाम चुराते हो तो अच्छे और बुरे दोनों ही नाम अपना लेते हो?”
“हाँ, बिल्कुल सही,” बंदर ने कहा। “मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। अगर उनमें कुछ बुरी बातें भी शामिल हैं, तो हम बंदरों को उन्हें भी स्वीकार करना होगा। हम सब कुछ अपने ऊपर ले लेते हैं। मैं आपसे विनती करता हूँ—मुझे मत मारो। मैं एक बंदर हूँ और मेरी एक बुरी आदत है, मैं यह जानता हूँ, लेकिन शायद मैं एक उपयोगी काम कर रहा हूँ।”
"अच्छा—मेरे नाम में किस तरह की बुरी बातें शामिल थीं?" मिज़ुकी ने बंदर से पूछा।
“मैं तुम्हारे सामने नहीं बोलना चाहता,” बंदर ने कहा।

“कृपया मुझे बताइए,” मिज़ुकी ने ज़ोर देकर कहा। “अगर आप मुझे बता देंगे, तो मैं आपको माफ़ कर दूंगी। और मैं यहाँ मौजूद सभी लोगों से भी आपको माफ़ करने के लिए कहूँगी।”
"आप का यह मतलब है?"
“अगर यह बंदर मुझे सच बता दे, तो क्या आप उसे माफ़ कर देंगे?” मिज़ुकी ने श्री साकाकी से पूछा। “वह स्वभाव से दुष्ट नहीं है। वह पहले ही बहुत कष्ट झेल चुका है, इसलिए पहले उसकी बात सुन लीजिए और फिर आप उसे माउंट ताकाओ या कहीं और ले जाकर छोड़ दीजिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो मुझे नहीं लगता कि वह फिर कभी किसी को परेशान करेगा। आपका क्या विचार है?”
श्री सकाकी ने कहा, "जब तक आपको कोई आपत्ति न हो, मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" उन्होंने बंदर की ओर मुड़कर पूछा, "कैसा रहेगा? अगर हम तुम्हें पहाड़ों में छोड़ दें, तो तुम कसम खाओ कि टोक्यो शहर की सीमा में वापस नहीं आओगे?"
“जी साहब। मैं कसम खाता हूँ कि मैं वापस नहीं आऊँगा,” बंदर ने नम्रता से कहा। “मैं अब कभी आपके लिए कोई परेशानी खड़ी नहीं करूँगा। मैं फिर कभी नालियों में नहीं भटकूँगा। मैं अब जवान नहीं हूँ, इसलिए यह जीवन में एक नई शुरुआत करने का अच्छा मौका है।”
“पक्का करने के लिए, क्यों न हम उसकी पीठ पर एक निशान लगा दें ताकि हम उसे फिर से पहचान सकें,” सकुराडा ने कहा। “मुझे लगता है कि हमारे पास यहाँ एक सोल्डरिंग आयरन है जिससे शिनागावा वार्ड की आधिकारिक मुहर लगाई जा सकती है।”
“कृपा करके, महोदय—ऐसा मत कीजिए!” बंदर ने नम आँखों से विनती की। “अगर आप मेरे नितंब पर कोई अजीब सा निशान लगा देंगे तो दूसरे बंदर मुझे कभी अपने साथ नहीं आने देंगे। मैं आपको सब कुछ बता दूँगा, बस मुझे निशान मत लगाइए!”
“ठीक है, तो चलिए दाग लगाने वाली लोहे की बात छोड़ देते हैं,” श्री साकाकी ने मामले को शांत करने की कोशिश करते हुए कहा। “अगर हमने शिनागावा की आधिकारिक मुहर का इस्तेमाल किया होता, तो बाद में हमें इसकी जिम्मेदारी लेनी पड़ती।”
"मुझे डर है कि आप सही कह रहे हैं," सकुराडा ने निराशा से कहा।
"ठीक है, तो फिर तुम मुझे यह क्यों नहीं बताते कि मेरे नाम के साथ कौन-कौन सी बुरी बातें जुड़ गई हैं?" मिज़ुकी ने बंदर की छोटी-छोटी लाल आँखों में सीधे देखते हुए कहा।

अगर मैं तुम्हें बताऊँ तो शायद तुम्हें बुरा लगे।
मुझे परवाह नहीं। आगे बढ़ो।
कुछ देर तक बंदर इस बारे में सोचता रहा, उसके माथे पर गहरी शिकन आ गई। "मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि तुम यह बात न सुनो।"
मैंने तुमसे कहा था कि सब ठीक है। मैं सचमुच जानना चाहता हूँ।
“ठीक है,” बंदर ने कहा। तो मैं तुम्हें बताती हूँ। तुम्हारी माँ तुमसे प्यार नहीं करती। जब से तुम छोटे थे, उसने कभी तुमसे प्यार नहीं किया। मुझे नहीं पता क्यों, पर यह सच है। तुम्हारी बड़ी बहन भी ऐसी ही है। वह तुम्हें पसंद नहीं करती। तुम्हारी माँ ने तुम्हें योकोहामा के स्कूल में इसलिए भेजा क्योंकि वह तुमसे छुटकारा पाना चाहती थी। तुम्हारी माँ और बहन तुम्हें जितना हो सके दूर भगाना चाहती थीं। तुम्हारे पिता बुरे इंसान नहीं हैं, लेकिन उन्हें दबंग व्यक्तित्व नहीं कहा जा सकता, और वह तुम्हारे लिए खड़े नहीं हो सके। इन्हीं कारणों से, जब से तुम छोटे थे, तुम्हें कभी भी पर्याप्त प्यार नहीं मिला। मुझे लगता है कि तुम्हें इसका थोड़ा-बहुत एहसास था, लेकिन तुमने जानबूझकर इससे आँखें फेर लीं, इस दर्दनाक सच्चाई को अपने दिल के एक छोटे से अंधेरे कोने में बंद कर दिया और ढक्कन बंद कर लिया, इसके बारे में न सोचने की कोशिश की। किसी भी नकारात्मक भावना को दबाने की कोशिश की। यह रक्षात्मक रवैया तुम्हारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन गया है। इन सब कारणों से, तुम कभी भी किसी और से गहराई से, बिना शर्त प्यार नहीं कर पाए।
मिज़ुकी चुप रही।
“आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल और समस्याओं से मुक्त लगता है। और शायद ऐसा ही हो। लेकिन आप अपने पति से सच्चा प्यार नहीं करतीं। क्या मैं सही कह रही हूँ? अगर आपका बच्चा भी हो जाए, और हालात न बदलें तो सब कुछ पहले जैसा ही रहेगा।”
मिज़ुकी ने एक शब्द भी नहीं कहा। वह ज़मीन पर बैठ गई और आँखें बंद कर लीं। उसका पूरा शरीर बिखर रहा था। उसकी त्वचा, उसके अंदरूनी अंग, उसकी हड्डियाँ मानो टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे। उसे बस अपनी साँसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
“बंदर के लिए ऐसी बात कहना बहुत ही शर्मनाक है,” सकुरादा ने सिर हिलाते हुए कहा। “मुखिया, अब और बर्दाश्त नहीं हो रहा। चलो उसकी जमकर पिटाई करते हैं!”

“रुको,” मिजुकी ने कहा। “यह बंदर जो कह रहा है, वह सच है। मैं इसे बहुत पहले से जानती हूँ, लेकिन मैंने हमेशा इसे अनसुना करने की कोशिश की है। मैंने हमेशा इस पर आँखें बंद कर लीं, कान बंद कर लिए। यह बंदर सच कह रहा है, इसलिए कृपया इसे क्षमा कर दो। बस इसे पहाड़ों पर ले जाओ और इसे छोड़ दो।”

श्रीमती सकाकी ने धीरे से मिजुकी के कंधे पर हाथ रखा। "क्या आपको वाकई इससे कोई आपत्ति नहीं है?"

मुझे कोई आपत्ति नहीं है, बस मुझे मेरा नाम वापस मिल जाए। अब से मैं जो भी नाम सामने आएगा, उसी के साथ जीऊंगा। यही मेरा नाम है, और यही मेरी जिंदगी है।

श्रीमती सकाकी ने अपने पति की ओर मुड़कर कहा, “प्रियजन, अगले सप्ताहांत क्यों न हम माउंट ताकाओ चलें और बंदर को खुला छोड़ दें? आपका क्या ख्याल है?”

श्री सकाकी ने कहा, "मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है। हमने अभी-अभी एक नई कार खरीदी है और यह एक अच्छा छोटा परीक्षण अभियान साबित होगा।"

“मैं बहुत आभारी हूँ। मुझे नहीं पता कि आपका धन्यवाद कैसे करूँ,” बंदर ने कहा।

"तुम्हें कार में उल्टी तो नहीं आती, है ना?" श्रीमती सकाकी ने बंदर से पूछा।

“नहीं, मैं ठीक रहूंगा,” बंदर ने जवाब दिया। “मैं वादा करता हूं कि मैं आपकी नई कार की सीटों पर न तो उल्टी करूंगा और न ही पेशाब करूंगा। मैं पूरे रास्ते अच्छा व्यवहार करूंगा। मैं बिल्कुल भी परेशान नहीं करूंगा।”

जब मिजुकी बंदर को अलविदा कह रही थी, तो उसने उसे युको मात्सुनाका का नाम टैग सौंप दिया।

“यह तुम्हें मिलना चाहिए, मुझे नहीं,” उसने कहा। “तुम्हें युको पसंद थी, है ना?”

“हाँ, मुझे वो पसंद थी। मैं उसे सच में पसंद करता था।”

“उसके नाम का अच्छे से ख्याल रखना। और किसी और का नाम मत चुराना।”

“मैं इसका बहुत अच्छे से ख्याल रखूंगा। और मैं फिर कभी चोरी नहीं करूंगा, मैं वादा करता हूं,” बंदर ने गंभीर चेहरे के साथ कहा।

"लेकिन युको ने मरने से ठीक पहले यह नेम टैग मेरे पास क्यों छोड़ा? उसने मुझे ही क्यों चुना?"

“मुझे जवाब नहीं पता,” बंदर ने कहा। “लेकिन क्योंकि उसे पता था, कम से कम हम दोनों मिल तो पाए और बात कर पाए। किस्मत का खेल ही समझ लीजिए।”

“तुम सही होगे,” मिज़ुकी ने कहा।

"क्या मेरी कही बात से तुम्हें चोट पहुंची?"

“हाँ, ऐसा ही था,” मिज़ुकी ने कहा। “बहुत दर्द हुआ।”

मुझे बहुत खेद है। मैं आपको बताना नहीं चाहता था।

"कोई बात नहीं। मुझे लगता है कि मैं यह सब पहले से ही जानती थी। यह एक ऐसी चीज है जिसका सामना मुझे कभी न कभी करना ही था।"

“यह सुनकर मुझे राहत मिली,” बंदर ने कहा।

“अलविदा,” मिज़ुकी ने कहा। “मुझे नहीं लगता कि हम फिर कभी मिलेंगे।”

“अपना ख्याल रखना,” बंदर ने कहा। “और मुझ जैसे प्राणी की जान बचाने के लिए धन्यवाद।”

“अब शिनागावा में दोबारा अपना चेहरा मत दिखाना,” सकुरादा ने चेतावनी देते हुए लाठी से हथेली पर मारा। “मुखिया के आदेश पर हम तुम्हें इस बार छोड़ रहे हैं, लेकिन अगर मैंने तुम्हें दोबारा यहाँ पकड़ा, तो तुम यहाँ से ज़िंदा नहीं निकल पाओगे।”

बंदर जानता था कि यह कोई खोखली धमकी नहीं थी।



परामर्श केंद्र लौटने के बाद श्रीमती सकाकी ने पूछा, "तो अगले सप्ताह के लिए हमें क्या करना चाहिए? क्या आप अभी भी मुझसे कुछ बातें करना चाहते हैं?"

मिज़ुकी ने सिर हिलाया। “नहीं। आपकी वजह से, मुझे लगता है मेरी समस्या हल हो गई है। आपने मेरे लिए जो कुछ भी किया है, उसके लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ।”

"बंदर ने जो बातें बताईं, उन्हें बीच में बोलने की क्या ज़रूरत है?"

“नहीं, मैं इसे खुद ही संभाल लूंगा। यह ऐसी चीज है जिसके बारे में मुझे कुछ समय तक अकेले ही सोचना होगा।”

श्रीमती सकाकी ने सिर हिलाया। “तुम इसे संभाल लोगे। अगर तुम ठान लो, तो मुझे पता है तुम और मजबूत बन सकते हो।”

"लेकिन अगर मैं नहीं आ सकती, तो क्या मैं फिर भी आपसे मिलने आ सकती हूँ?" मिज़ुकी ने पूछा।
“बिल्कुल!” श्रीमती सकाकी ने कहा। उनके कोमल चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान खिल उठी। “हम साथ में कुछ और भी पकड़ सकते हैं।”
दोनों ने हाथ मिलाया और एक दूसरे को अलविदा कहा।



घर पहुँचने के बाद मिज़ुकी ने "मिज़ुकी ओज़ावा" नाम का नेम टैग और मिज़ुकी (ओज़ावा) एंडो खुदा हुआ ब्रेसलेट लिया, उन्हें एक सादे भूरे रंग के लिफाफे में रखा और उसे अपनी अलमारी में रखे गत्ते के डिब्बे के अंदर रख दिया। आखिरकार उसे अपना नाम वापस मिल गया था और वह एक सामान्य जीवन फिर से शुरू कर सकती थी। शायद सब ठीक हो जाए। और शायद न भी हो। लेकिन कम से कम अब उसके पास अपना नाम था, एक ऐसा नाम जो सिर्फ उसका था।
— फिलिप गैब्रियल द्वारा अनुवादित

***** समाप्त *****

हारुकी मुराकामी

अंधी विलो, सोती हुई औरत

हारुकी मुराकामी का जन्म 1949 में क्योटो में हुआ था और अब वे टोक्यो के पास रहते हैं। उनकी रचनाओं का अड़तीस भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, और उनके कई सम्मानों में सबसे हालिया योमियूरी साहित्यिक पुरस्कार है, जिसके पूर्व प्राप्तकर्ताओं में युकिओ मिशिमा, केंजाबुरो और कोबो आबे शामिल हैं।



हारुकी मुराकामी की अन्य रचनाएँ

अंधेरे के बाद

भूकंप के बाद

नाचो नाचो नाचो

हाथी गायब हो जाता है

कठोर रहस्यमयी वंडरलैंड और दुनिया का अंत

किनारे पर काफ्का

नॉर्वे की लकड़ी

सीमा के दक्षिण में, सूर्य के पश्चिम में

स्पुतनिक स्वीटहार्ट

भूमिगत: टोक्यो गैस हमला और जापानी मानसिकता

विंटेज मुराकामी

एक जंगली भेड़ का पीछा

विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल

हारुकी मुराकामी की प्रशंसा

अंधी विलो, सोती हुई औरत

"मुरकामी की अविश्वसनीय प्रतिभा का एक उत्कृष्ट प्रदर्शन... रोमांचक, हास्यपूर्ण, दुखद, मार्मिक, डरावना - सब कुछ एक साथ।"

— द अटलांटा जर्नल-कॉन्स्टिट्यूशन

“[ये] कहानियां एक बेहद मोहक आवाज में बोलती हुई प्रतीत होती हैं। स्वयं के विचित्र, धुंधले क्षेत्र में इन विविध यात्राओं में से प्रत्येक में, वह आवाज कहती है कि हारुकी मुराकामी नाम का कोई व्यक्ति अभी भी सनकीपन से, सड़क पर हम जिन सामान्य व्यवस्थाओं से काम चलाते हैं, उनसे कहीं अधिक नाजुक, कहीं अधिक अस्थायी चीज़ की तलाश में है।”

— न्यूयॉर्क टाइम्स बुक रिव्यू

"हारुकी मुराकामी की कहानियों की खासियत यह है कि उन्हें पढ़ने के बाद आप उनकी एक और कहानी पढ़ने के लिए उत्सुक हो जाते हैं... उनकी सभी कहानियाँ उनकी उस उत्कृष्ट कल्पनाशीलता को दर्शाती हैं जो पाठक को लगभग अनजाने में ही वास्तविकता से स्मृति, कल्पना या सपने की दुनिया में ले जा सकती है।"

— द डलास मॉर्निंग न्यूज़

"ब्लाइंड विलो, स्लीपिंग वुमन एक संतोषजनक, मनोरंजक संग्रह है [और] इस महान कहानीकार की बहुमुखी प्रतिभाओं का एक ठोस परिचय है।"

— द सिएटल टाइम्स

"रहस्यमय और क्षणभंगुर... एक कुशल कहानी संग्रह जो इस शैली की व्यापकता और जीवंतता को दर्शाता है।"

-मनोरंजन साप्ताहिक पत्रिका

"इन सभी कहानियों में जो बात सबसे अधिक चमकती है, वह है अस्तित्व के मूल में निहित अनसुलझे रहस्य के प्रति मुराकामी का प्रेम और रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ जादू को पकड़ने के लिए 'प्रवाह के साथ बहने' की उनकी तत्परता।"

—क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर

हारुकी मुराकामी के इस असाधारण नए कहानी संग्रह में, वास्तविकता अपने बंधनों से मुक्त होने के खतरे में है... इन अद्भुत कहानियों में महत्वहीन चीजें भी महत्वपूर्ण हो जाती हैं, क्योंकि लोग यह समझने के लिए संघर्ष करते हैं कि उन्हें कैसे जीना चाहिए और 'सामान्य' का क्या अर्थ है, यदि कोई अर्थ है भी तो।

—द बाल्टीमोर सन

"एक अंतरंग आनंद।"

—द टाइम्स (लंदन)

"मुरकामी के लेखन की असली ताकत... उसका सौंदर्यबोध है: उसकी मनमोहक कल्पना, उसकी विश्वसनीय आवाजें, उसका प्रतीकात्मक खेल, और आश्चर्यचकित करने की उसकी कुशलता।"

—द न्यू रिपब्लिक

"मुरकामी सहजता से आधुनिक परियों की कहानियों की ऐसी रचना करते हैं जो मनमोहक होती हैं... ये कहानियाँ ज्ञान से भरपूर हैं, जो हमें अप्रत्याशित परिस्थितियों से रूबरू कराकर हमारी अंतर्मन की भावनाओं को समझने के लिए प्रेरित करती हैं।"

—रॉकी माउंटेन न्यूज़



पहला विंटेज इंटरनेशनल एडिशन, अक्टूबर 2007

न्यूयॉर्क स्थित रैंडम हाउस, इंक. के एक प्रभाग, विंटेज बुक्स द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित। मूल रूप से 2006 में न्यूयॉर्क स्थित रैंडम हाउस, इंक. के एक प्रभाग, अल्फ्रेड ए. नोपफ द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्डकवर में प्रकाशित।
विंटेज एक पंजीकृत ट्रेडमार्क है और विंटेज इंटरनेशनल और कोलोफ़ोन रैंडम हाउस, इंक. के ट्रेडमार्क हैं।

“द सेवंथ मैन” मूल रूप से ग्रांटा में प्रकाशित हुआ; “ब्लाइंड विलो, स्लीपिंग वुमन”, “बर्थडे गर्ल” और “चांस ट्रैवलर” हार्पर में; “डैबचिक” मैकस्वीनी में; “एयरप्लेन: ऑर, हाउ ही टॉक्ड टू हिमसेल्फ एज़ इफ रिसाइटिंग पोएट्री” (मूल रूप से “एयरप्लेन” के रूप में प्रकाशित), “द फोकलोर ऑफ माई जेनरेशन: ए प्री-हिस्ट्री ऑफ लेट-स्टेज कैपिटलिज्म” (मूल रूप से “द फोकलोर ऑफ आवर टाइम्स” के रूप में प्रकाशित और अल्फ्रेड बिर्नबाम द्वारा अनुवादित), “हंटिंग नाइफ”, “द आइस मैन” (रिचर्ड पीटरसन द्वारा अनुवादित), “द किडनी-शेप्ड स्टोन दैट मूव्स एवरी डे”, “मैन-ईटिंग कैट्स”, “न्यूयॉर्क माइनिंग डिजास्टर”, “ए ‘पुअर आंट’ स्टोरी”, “टोनी ताकितानी”, “ए शिनागावा मंकी”, “व्हेयर आई एम लाइकली टू फाइंड इट” और “द ईयर ऑफ स्पेगेटी” द न्यू यॉर्कर में; “क्रैब्स” स्टोरी मैगज़ीन में प्रकाशित हुए। और येल रिव्यू में "द मिरर"। "फायरफ्लाई" मूल रूप से हारुकी मुराकामी के उपन्यास नॉर्वेजियन वुड (न्यूयॉर्क: विंटेज, 2000) में प्रकाशित हुआ था।
लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने नॉफ संस्करण को निम्नानुसार सूचीबद्ध किया है: मुरकामी, हारुकी, [दिनांक]
अंधी विलो, सोती हुई औरत: चौबीस कहानियाँ / हारुकी मुराकामी द्वारा।—प्रथम संस्करण।

पी. सेमी.
I. शीर्षक।
PL856.U673A23 2006
895.6'35—dc22 2005044544
www.vintagebooks.com
ईआईएसबीएन: 978-0-307-38762-2
v3.0